

लेखक
राहुल सांकृत्यायन
प्रकाशक
किताब महल, इलाहाबाद
सुद्रक
राम प्रिंटिंग प्रेस
इलाहाबाद

प्राक्कथन

नवीन मानव-समाजके विधार्ता कार्ल मार्क्सके जीवन और सिद्धान्तोंके सम्बन्धमें हिन्दीमें छोटी-मोटी पुस्तकोंका बिल्डुल अभाव नहीं है, लेकिन जिसमें पर्याप्त स्थान मार्क्सिकी जीवनी, सिद्धान्त और प्रयोग मौजूद हो, ऐसी पुस्तकका अभाव जरूर खटक रहा था, केवल इसीकी पूर्ति के लिये यह पुस्तक लिखी गई। यह मेरिंगकी पुस्तक “कार्ल मार्क्स” पर आधारित है, इसके अतिरिक्त कुछ और पुस्तकों से भी मैंने सहायता ली है। मुझे संतोष होगा, यदि इस प्रयाससे मार्क्सिकों समझनेमें हिन्दी पाठ्यक्रमों सहायता मिले।

यह पुस्तक, उन चार जीवनियोंमें है, जिनको मैंने इस साल (१९५३ ई० में) लिखनेका सकल्प किया था। “सालिन”, “लेनिन” और “कार्ल मार्क्स” के समाप्त करनेके बाद अब जौरी पुस्तक “माओ-चे तुंग” ही बाकी थी, जिसे जुलाई में समाप्त कर दिया।

लिखनेमें डा० महादेव साहा, साथी रमेश सिनहा और साथी सन्त्तिदानन्द शर्माने पुस्तकोंके जुटनेमें बड़ी मेहनत की। श्री मंगलसिंह परियारने टाइप करके कामको हल्का किया, एतदर्थे इन सभी माहयोंका आभार मानते हुये धन्यवाद देता हूँ।

राहुल साहृत्यायन

विषय-सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१—विषय-प्रवेश		१
२—बाल्य और स्कूली जीवन (१८१८-३५ ई०)		४
३—युनिवर्सिटी-जीवन (१८३५-४१ ई०)		६
१—प्रेम		
२—वर्लिन युनिवर्सिटीमें (१८३६-४१ ई०)		१२
३—हेगलका दर्शन		१७
४—कार्ल कोपेन		२०
५—ब्रूनो बावर		२२
६—पी०एच० डी० का निवन्ध (१८४१ ई०) (१) एपिक्रू (३४१-२७० ई० पू०) (२) स्तोइक दर्शन		२६ २७ "
७—प्रथम कर्मकैव्र (१८४२ ई०)		३३
१—"राइनिशे जाइटूंग"		३३
२—रेनिश डीट (राइन संसद्)		३५
३—संघर्षके पॉच मास		३७
४—फ्वारवालके सम्पर्कमें		४२
५—विवाह (१८४३ ई०)		४५
६—पेरिसमें (१८४३-४४ ई०)		४६
१—"जर्मन-फ्रेच-वर्षपत्र"		४६
२—दो लेख		४८
(१) वर्ग-संघर्षकी दार्शनिक रूपरेखा		"
(२) "यहूदी-समस्या"		"
३—फ्रेच सम्यता		५७

अध्याय	विषय	पृष्ठ
४—पेरिसके अन्तिम मास और निष्कासन		६०
(१) प्रथम संतान		"
(२) "फोरवेंस"		६१
(३) सर्वहाराका पक्षपात		"
५—फ्रूडरिख एगोलस		६६
१—बाल्य, शिक्षा		६६
२—इंगलैंडमें		७१
३—“पवित्र परिवार”		७५
४—इंगलैंडके मजूर		७६
६—ब्रुशेल्समें निर्वासित (१८४३-४८ ई०)		८२
१—“जर्मन विचारधारा” (१८४५-४८ ई०)		८३
२—“सच्चा समाजवाद” (१८४५-४६ ई०)		८४
३—कवि और स्वप्नद्रष्टा		८६
(१) वाइटिंग		"
(२) प्रधों		८७
(३) “ऐतिहासिक भौतिकवाद”		८८
४—“द्वाशे ब्रूसेलेर जाइटुंग” (१८४७ ई०)		८६
७—कानूनिस्ट लीग (१८४७-४८ ई०)		९८
१—लीगका काम		९६
२—“कानूनिस्ट घोषणापत्र”		१०४
८—क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति (१८४८ ई०)		११६
१—फ्रैंच-क्रान्ति (१८४८ ई०)		११६
२—जर्मनीमें क्रान्ति (१८४८-४९)		११८
३—कोलोन जनतांत्रिकता		१२४
४—दो सार्थी		१२८

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	(१) फर्डिनाड फ्राइलिग्रथ	१२८
	(२) फर्डिनाड लाजेल	१२९
५—प्रतिक्रान्ति		१३४
१०—लन्दनमें निर्वासित जीवन (१८४६-५०)		१३८
१—विदा जन्मभूमि		१४०
२—“नोदे गड़निशे जाइटुंग”		१४१
३—किकेल कारण		१४३
४—कम्युनिस्ट लीगमें फूट		१४४
५—आर्थिक कठिनाइयाँ		१४८
६—“अठारहवाँ वर्ष”		१५५
७—कोलोनमें कम्युनिस्ट मुकदमा		१५६
११—मार्क्स और एंगेल्स		१६५
१—अद्भुत प्रतिभा		१६६
२—अनुपम मित्रता		१७१
३—भारतपर मार्क्स		१७८
(१) ग्रामीण गणराज्यका स्वरूप		”
(२) ग्राम गणराज्यके कारण अर्कमंगठता		१८०
(३) सामाजिक परिवर्तनका आरम्भ		१८१
(क) आक्रमणोंकी ब्रीडाभूमि,		”
(ख) अंग्रेज विजेताओंकी विशेषता		१८२
(ग) अंग्रेजी शासनका परिणाम सामाजिक क्रांति		१८३
(घ) ध्वसात्मक काम चर्ली		”
(४) भारतीय समाजकी निर्बलताये		१८४
(क) अंग्रेजी शासनके दो काम		१८५
(ख) स्वार्थसे भजबूर		१८७

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	(५) भविष्य उज्ज्वल	१८८
१२—युरोपीय स्थिति (१८५३-५८ ई०)		१८८
१—चार्टिस्ट	१६४	
२—परिवार और मित्रमंडली	१६६	
३—१८५७ ई० का आर्थिक संकट	२००	
४—“राजनीतिक आर्थशास्त्रकी आलोचना” (१८५८-६६ ई०) ग्रंथ-संक्षेप	२०४	
१३—मतभेद		२०६
१—लाजेलसे भग़डा	२०६	
२—“डास-फोल्क”	२१०	
३—“हेर फोट”	२११	
४—घरेलू रिथित	२१६	
५—लाजेल-आन्दोलनके काम	२२२	
१४—प्रथम इन्टर्नेशनल (१८६४ ई०)	२२६	
१—इन्टर्नेशनलकी स्थापना	२२६	
२—प्रथम कान्फ्रेंस (लन्दन)	२३७	
३—आस्ट्रिया-प्रशिया-युद्ध (१८६४ ई०)	२४०	
४—जेनेवा कान्फ्रेस (१८६६ ई०)	२४५	
१५—“डास कपिटाल” (१८६६-७८ ई०)	२५०	
१—प्रसव-बेदना	२५०	
२—प्रथम जिल्द	२५५	
(१) पूँजीका आरंभ	२५६	
(२) अतिरिक्त-मूल्य	२५८	
(३) पूँजी-संचयन	२६४	
(४) सर्वहारा	२६६	

आध्याय	विषय	पृष्ठ
१—द्वितीय और तृतीय जिल्द		२६८
(१) द्वितीय जिल्द		२७०
(२) तृतीय जिल्द		२७२
४—“कपियल” का स्वागत		२७३
१६—इन्टर्नेशनलका मध्यान्द		२७८
१—पश्चिमी यूरोपमें		२७८
२—मध्य यूरोपमें		२८२
३—ब्रिटेन		२८५
४—चौथी काग्रेस (१८६८ ई०)		२८०
५—आयलैंड और फ्रान्स		२८५
१७—पेरिस कम्यून		२९७
१—सेंदॉकी पराजय (१८७० ई०)		२९७
. २—फ्रान्समें घह-युद्ध		३०३
३—कम्युनकी स्थापना		३०४
४—इन्टर्नेशनल और पेरिस कम्यून		३१०
१८—इन्टर्नेशनल की अवनति		३१४
१—अवसाद		३१४
२—हेग-काग्रेस (१८७२ ई०)		३१५
३—इन्टर्नेशनलका अन्त		३१८
१९—जीवन संध्या		३२१
१—बीमारी		३२१
२—मित्रों की दृष्टिमें मार्क्स		३२३
(१) लाफार्गेकी दृष्टिमें मार्क्स		"
(२) लोबकनेस्टकी दृष्टिमें		३२६
३—विरोधी		३३२

पृष्ठ	विषय	आधार
३३८		४—पत्नी-विशेष (१८८१ ई०)
३४३		५—मार्क्सका निधन (१८८३ ई०)
३४८		६—आन्तिम विश्वामरण
३५३		७—हेलेन देसुर
३५६		८—मार्क्सके समन्वयमें
३५८		२०—एंगेल्स (१८५०-६५ ई०)
३५९		१—ग्रोथ सहकर्मी
३६१		२—मैन्चेस्टरमें (१८५० ई०)
३६०		३—पिताके स्थानपर (१८३० ई०)
३६४		४—क्लाइक मनमुटाव (१८६३ ई०)
३६५		५—मित्रके पास
३६६		(१) सामाजिक लेख
३६७		(२) “ड्रॉरिंग-लंडन” (१८७५ ई०)
३७१		६—मार्क्सके नाम (१८८३-८५ ई०)
”		(१) “कपियल” का समापन
३७४		(२) “पारिवारकी उत्पत्ति” (१८८४ ई०)
३७६		(३) फ्लारदाल (१८८८ ई०)
३७७		७—मृत्यु
३७८—३८१		परिशिष्ट

अध्याय १

विषय-प्रवेश

वर्ग-शासन शुरू हुये हजारों वर्ष हो गये। जिस वर्गके हाथमें आर्थिक साधन तथा समर्प्ति थी, उसीके हाथमें शासन था और उसने अपनी इसी शक्तिके बल पर निर्वलोका शोषण और उत्पीड़न किया। हन हजारों वर्षोंमें समाजके तरह-तरहके विकास होते भी हमने जनताकी अधिक संख्याको सारे संसारके भरण-पोषणके भार बहन करते, भूख और दीनताकी चक्कीमें पिसते देखा, जब कि उन्हींके अमरके बलपर चन्द्र व्यक्ति वडे सुख और विलासका जीवन विवाते रहे। इन चन्द्र व्यक्तियोंने दूसरेके धन, स्त्री या स्वतंत्रताके अपहरणके लिये युद्ध घोषित किया और बहुसंख्यक जन मृत्युके मुँहमें पडे। इन चन्द्र व्यक्तियोंने जनोंके लिये कानून बनाये—तुम्हें इस परिस्थितिमें यह काम करना होगा, तुम्हें अमरके लिये इस तरहसे वेतन निलेगा, तुम्हें इस तरह सोचना, बोलना और चलना होगा, और वह वैसा करते रहे। उन्होंने हालतक, असह होने पर चन्द्र छोटी-छोटी वगावतोंको छोड़, चुपचाप सारे अत्याचारोंको सहा।

लेकिन, इन हजारों वर्षोंमें वह-संख्यको पर होते दारूण अत्याचारोंके विस्फुट आवाज उठानेवाले, उत्तीर्ण-शूद्ध नये समाजका स्वप्न देखनेवाले भी जहर पैदा हुये, यद्यपि उनकी संख्या कम थी, उनकी आवाज क्षीण थी, किन्तु शोषण, उत्पीड़नके बढ़ावके साथ-साथ वह क्षीण आजाव भी ऊँची होती गई। मगर, जब तक वह आवाज अवास्तविक तथा आकाशसे आती रही, तब तक उसमें वह तोकत नहीं आई, जो कि ठोस पृथ्वी-तलसे उसके धने वायुमंडलमें गेंजने पर पिछली एक शताब्दीके भीतर देखी गई।

मानव-समाजकी आर्थिक विषमताये ही वह मर्ज है, जिसके कारण मानव-समाजमें दूसरी विषमताये और असह वेदनाये देखी जाती हैं। इन वेदनाओंका अनुभव हर देश-कालमें मानवता-प्रेमियों और महान् विचारकोंने दुखके साथ

अनुभव किया और उसके हटानेका यथासंभवे प्रयत्न भी किया। भारतमें बुद्ध (५६३-४८३ ई० पू०), चीनमें मो-ती (४८०-४०० ई० पू०), ईरानमें मज्दक (५२६ ई०), तिब्बतमें सुने-चुने पाँ (१८४६-४७), यहूदी संतोंमें अमाँ (८०० ई० पू०), इसैया (७४६-७०० ई० पू०), यूरोपमें अफलातूं (४२७-३४७ ई० पू०), सैनेका (ई० पू०-६५ ई०), सबोनरोला (१४५-२६८ ई०), आन्द्रेयाये, पीटर चेम्बरलैंड (१६४६ ई०), बोल्टूर (१६४६-१७७८ ई०), यामस स्पेन्स (१७५०-१८१४ ई०), विलियम गाडविन (१७६३ ई०), सेन्ट साइमन (१७६०-१८२५), फ़रिये (१७७२-१८३७) प्रौढ़ो (१८०६-३५ ई०), चार्ल्स हाल (१८०५ ई०) रार्बट आवेन (१७७१-१८८० ई०) जैसे अनेक विचारक प्रायः दाइ सहस्राब्दियों तक उस समाजका स्वप्न देखते रहे, जिसमें मानव समान होंगे, उनमें कोई अर्थिक विषमता नहीं होगी, लूट-खस्ट, शोषण-उत्पीड़नसे बर्जित मानव-संसार उस वर्गका रूप धारण करेगा, जिसका लोभ भिन्न-भिन्न धर्म मरनेके बाद देते हैं।

लेकिन, विषमताके हटाने और साम्यवादको स्थापित करनेका स्वप्न देखनेवाले उस साधनको नहीं पा सके, न बतला सके, जिसके द्वारा मनुष्यकी सामाजिक विषमता हटाई जा सके। पूर्वी और पश्चिमी संतोंने इसका उपाय हृदय परिवर्तनको बतलाया। पुराने युगके लोगोंकी बात छोड़िये, इस २० वीं शताब्दी में भी गांधीजी जैसे और बहुत पुरुष हृदय-परिवर्तन द्वारा समानताकी स्थापना करना चाहते थे, और गांधी-सम्प्रदायके एक संत विनोबा भावे हृदय-परिवर्तन कर लोगोंसे जमीन दानमें ले समानता स्थापित करनेका स्वप्न देखते गाँव-गाँव पैदल धूम रहे हैं। संतोंकी आइमें आपना उल्लू साधनेवाले भी जोरसे प्रोपेंडामें लगे हुये हैं। वह समझते हैं कि कम्युनिज्मसे बचनेका यह बहुत अच्छा उपाय है। उनमेंसे कितने ही यह समझते भी होंगे, कि जिन समस्याओं—रोटी, कपड़े, वासका अभाव—के हलको अब तक दुनियामें कम्युनिज्मको छोड़कर किसीने नहीं किया, और विनोबाका भूदान यज्ञ भी उसके हल करनेमें सहायक नहीं हो सकेगा, लेकिन, वह समझते हैं कि जब तक नैया अभी पूरी तौरसे भरकर समुद्रके गर्भमें चली गई है, तब तक इस प्रोपेंडेसे लोगोंकी

आँखोंमें धूल तो भोकी जा सकती है। अपनी महंगी जमीनको दान देने वाले पुराने सामन्तों और जमीदारोंमें भी बिले ही मिलेंगे। “उड़ता सत्त पितरोंको” की कहावत को पूरा करनेवाले भले ही मिल जायें। किसानों के संघर्षसे परेशान कुछ लोग अपने हाथसे पहले ही निकल सी गईं भूमिका दान करके पुण्य लूट रहे हैं, कुछ लोग ऐसी भूमिको दे रहे हैं, जिसका आबाद होना असम्भव या अत्यन्त व्यवसाध्य है, कुछ लोग नाम कमानेके लिये भूदानकी घोषणा करके फिर उसे अपनोंमें ही वितरण कर देनेकी आशासे वैसा कर कहे हैं। इस तरह की भूमियोंको निकल देने पर कितनी भूमि बच रहती ? यदि उसमें कुछ अच्छी भूमि है, और उसे दलित जातिके बेखेतवाले मजूरोंको दे दिया जाय, तो यह अच्छी बात है, इसे कोई नहीं इन्कार करता। लेकिन भूदान-यज्ञ न जमीनके भूखे लोगोंकी समस्या हल कर सकता न अनाजके भूखे लोगोंको। उसी जमीन को एक हाथसे दूसरे हाथमें जानेमें कितना छट्टौंक अधिक अनाज पैदा होगा ?

वैज्ञानिक समाजवादके युगसे पहले यदि कोई दृद्य-परिवर्तन या भूदान-यज्ञ जैसी बातोंको करता, तो कोई बात भी थी, लेकिन आज जब सम्यवादका सर्व मव्याह्नपर पहुँचकर अपनी प्रखर किरणोंको फैला रहा है, उस समय इस तरह की बातें करना या तो निरा बचपन है, या उसके भीतर भारी घोखा छिपा हुआ है।

दाई हजार वर्षोंसे भिज्ज-भिज्ज स्वप्नहृष्टओने साम्यवादी समाजको लानेके लिये जो भी सोचा-किया था, उसके लिये मौखिक ही नहीं बहुतोंने क्रियाके रूप में भी परिणत करना चाहा और भारी बलिदानके साथ। दूरानके मल्दकने अपनी और अपने लाखों अनुयायियों की जाने इसी प्रयत्नमें गँवाई। लेकिन विषमता हटानेकी समस्या वैसीकी वैसी बनी रही। इस समस्याको हल करने का जिसने वैज्ञानिक दग निकाला, जिसने इस रोगका बारीकीके साथ निदान किया, और उसकी औपचिको भी परख-परखकर देखा, वह मार्कर्स वस्तुतः नये युगका विधाता है, नये ससारके निर्माताओंमें वह प्रथम है, और उसकी पैनी सूक्ष्म तथा परख उसे दुनियाका सर्वश्रेष्ठ विचारक सिद्ध करती है।

अध्याय २

बाल्य और स्कूली जीवन (१८१८-३५ हॉ)

कार्ल मार्क्स का जन्म ५ मई १८१८ हॉ को ट्रीर (ट्रेव्स) नगरमें हुआ था, जो पश्चिमी जर्मनी के राइनलैंड के बेस्फालिया हलाकेमें है। औद्योगिक युग के लिये सभी सामग्री वहाँ भौजूद है, क्योंकि लोहे, कोयले आदिकी बड़ी-बड़ी खानें वहाँ पर हैं, इसीलिये आगे चलकर राइनलैंड जर्मनी का हथियारखाना बन गया। १८३८ के सदी के प्रथम पादमें सामन्तवाद के भारी प्रभावमें होते भी जर्मनी लोहे, कोयले आदिके बारेमें उदासीन कैसे रह सकता था? इसीलिये राइनलैंड उद्योग-प्रधान होने लगा था, जिसका परिणाम था वहाँ पूँजी-वाद और पूँजी-पतियों के प्रभावमें बृद्धि। वर्लिन, लाइप्जिग, कोइनिंग्सबर्ग के पुराने नगर अब कोलोनसे पीछे पड़ते जा रहे थे, जो औद्योगिक राजधानी होनेसे प्रमुख स्थान ग्रहण करने लगा था। राइनलैंड जहाँ एक और जर्मनी का हथियारखाना है, वहाँ वह फ्रांस की सीमापर पड़ता है, इसीलिये आगे लोहे कोयलेकी यह भूमि फ्रांस के साम्राज्यवादियों के लिये सिर दर्द का कारण बन गई। इस प्रकार अपनी ज्ञाल्य आँखोंसे ही कार्ल को नई पूँजीवादी दुनिया के बातावरणमें साँस लेनेका मौका मिला।

कार्ल मार्क्स जातितः यहूदी थे। उनके दादा मार्क्स लेवी ट्रीर के यहूदियों के ऋत्री (स्वामी या पुरोहित) थे, जिनका देहान्त १७६८ हॉ में हुआ था। कार्ल की दादी इवा मार्क्स मोजेज-परिवारमें पैदा हुई थीं, और वह कार्ल के सात वर्ष होनेके समय मरी थीं। दादीका वंश एक शताब्दीसे अधिकसे रच्ची होता आया था। इस प्रकार कार्ल का जन्म ऐसे वंशमें हुआ था, जिसे कहरपंथी ब्राह्मण का वंश कहा जा सकता है यद्यपि इस कट्टरतासे कार्ल का पाला नहीं पड़ा था। मार्क्स लेवी—पीछे लेवी ह्या दिया, और उसकी संतानोंने केवल मार्क्स ने ही शपने वंशका नाम रखा—के दो पुत्र सामुयेल और हर्शल तथा दूसरी कितनी ही संतानें हुईं, जिनका विद्या से अधिक सम्बन्ध हुआ। सामुएल कार्ल का चचा था, जो १७८१ हॉ में पैदा होकर १८२६ हॉ में—कार्ल की ११ वर्षकी अवस्थामें

मरा । बापके मरने पर यही द्वीरका रब्बी बना था । कार्लका पिता हर्शल मार्क्स १७८२ ई०में पैदा हुआ, और कार्ल वीस वरसमें होनेके समय १८३८ ई०में मरा । मार्क्सके होश संभालते ही (१८२४ ई० में) हर्शल मार्क्सने यहूदी धर्म छोड़ ईसाई धर्मको स्वीकार किया, और अब उसका नाम हाइनरिख मार्क्स पड़ गया । हर्शल यह पीछेके हाइनरिखकी पत्नी हेनरिटा प्रेसबुर्ग (हालैड)के यहूदीकी लड़की थी, जिसके बाप-दादा एक शताव्दीसे अपने यहौं यहूदी शुरू (रब्बी) होते आये थे । हेनरिटा १८६३ ई० में मरी, अर्थात् जब कार्ल मार्क्स ४८ वर्ष के हो कर अपने क्रातिकारी काममें पूरी तौरसे जुट गये थे । यद्यपि वह अपनी बेसरो-सामानीकी जिन्दगीमें माँकी उतनी सहायता नहीं कर सकते थे, लेकिन उसके प्रति ' उनका सदा भारी स्नेह रहा । कार्ल मार्क्सके और भाई बहनें थीं, जिनमें कार्लके अतिरिक्त उनकी तीन बहनों में, साफी मास्ट्रिलट में शमालहाउजेन नामक बकीलकी पत्नी मई एमिली द्वीरके कोनराडी इंजीनियरकी पत्नी, लुइसी दक्षिणी-अफ्रीकामें केपटोनके यूटा नामक व्यापारीकी पत्नीका पता लगता है ।

छोटा-बड़ा व्यापार और पुरोहिती (रब्बीगिरी) आम तौरसे यूरोपमें यहूदियोंका व्यवसाय रहा है, लेकिन मार्क्सके पिता हाइनरिख उसे छोड़ चुके थे । वह द्वीरके एक अच्छे बकील थे । पिता-माताका जीवन बड़ा ही शान्ति और सुखका था, इसलिये कार्लका बाल्यकाल वही स्वतन्त्रता और निश्चन्ततामें बीता । यद्यपि माँ शिक्षा-दोषा और शायद बुद्धिमें भी पिछड़ी हुई थी—वह जन्मभर दूटी-फूटी ही जर्मन बोल सकती थी—लेकिन पिता-माताका स्नेह और घरकी खुशहाली बालक कार्लको वरसतमें मिली थी । माँ स्वप्न देखा करती थी, कि मेरा लड़का आगे चलकर भारी लक्ष्मीपात्र बनेगा, लेकिन पिता लक्ष्मीसे ज्यादा सरस्वतीके भक्त थे । अपने लड़केकी अद्भुत प्रतिभाको देखकर उनकी कल्पना दूसरी ही थी, यद्यपि वह भी यह नहीं चाहते थे कि उनका अद्भुत पुत्र युग-प्रवर्तक होते हुये भी जीवनभर आर्थिक कष्टोंमें पड़ा प्रतिगामी सरकारों द्वारा उत्पीड़ित हो दर-दर मारा फिरे । कार्ल मार्क्सका अपने परिवारके लोगों हीसे स्नेह-सम्बन्ध नहीं था, बल्कि अपने मातृकुलके साथ भी वह बहुत घनिष्ठताएँ रखते थे, विशेषकर अपने मामा फिलिप्प (हालैड) के साथ ।

उस समय भी जर्मनीमें युरोपकी और जगहोंकी तरह यहूदियोंकी स्थिति अच्छी दृश्यनीय थी। इस प्रतिभाशाली जातिने कला, शान-विज्ञानके हरेक क्षेत्रमें अद्भुत प्रतिभाग्योंको जन्म दिया—युरोपीय दर्शनका पिता स्पिनोजा यहूदी बंशमें पैदा हुआ। आधुनिक और भावी संसारका नव-निर्माता कार्ल मार्क्स भी यहूदी माता-पिताका पुत्र था, आधुनिक संसारका सबसे बड़ा विज्ञानवेत्ता आइनस-टाइन भी इसी जातिमें पैदा हुआ, लेकिन इतिहासके आरम्भसे ही यहूदियोंको अछूतकी तरह देश-देशमें अधिकार-बंचित और सम्मानरहित होकर मारे-मारे फिरना पड़ा। यहूदी खेती नहीं कर सकते थे, क्योंकि उन्हें खेत मिल नहीं सकते थे। विद्यालयोंमें भी उनके साथ भेद-भाव रखकर जाता था, इसलिये बुद्धिजीवी तथा सरकारी नौकरियोंमें जाना उनके लिये सम्भव नहीं था। नीच जाति समझ उनके साथ ब्याह-शादी करना भी लोग बहुत कम पसन्द करते। लेकिन, यहूदी भी अपनेको इसाइयोंसे कम नहीं समझते थे, इसलिए हमारे यहाँकी तरह उन्होंने भी अपनी अलग-अलग जात बना ली थी, और जातसे बाहर शादी करने-बालोंको पारसियोंकी तरह जाति-बहिष्कृत कर दिया जाता था। दूसरोंके दुर्व्यवहार और अपनी जाति-पाँतकी संकीर्णताने यहूदियोंको केवल नीचा ही नहीं बना दिया था, बल्कि उनके लिये छोटी-मोटी दूकान और व्यापार छोड़कर जीविकाका कोई रास्ता नहीं छोड़ रखा था। इसी जबर्दस्तीका यह फल हुआ, कि इस जातिने व्यापार और उद्योगके हेत्रमें आगे चलकर प्रमुखता हासिल की। पर ऐसी प्रमुखता राशचाइल्ड, राकफेलर आदि कुछ इने-गिने परिवारोंको ही हो सकती थी, अधिकांश यहूदी पूर्वी और पश्चिमी युरोपके नगरोंके सबसे गरीब मुहळों और कस्तोंमें भारी दरिद्रताकी जिन्दगी विताते रहे। दूकानके साथ वह पहले हीसे सद्दर पर स्थित भी लगाते थे, और सद्दखोरोंके प्रति लोगोंकी जैसी घृणा सभी देशोंमें देखी जाती है, वही यहूदियोंके ऊपर हो गई। इस प्रकार केवल जाति-पाँत, सामाजिक बिलगाव तथा स्ववंशी ईसा मसीहके खूनका अपराध ही युरोपके इसाई जन-साधारणको यहूदियोंके खिलाफ होनेका कारण नहीं बना, बल्कि उनकी सद्दखोरी और बनियावृत्ति भी इसमें प्रधान कारण हुई। पीढ़ियोंसे चले आते ऐसे अपमानसे मुक्त होनेका एक ही रास्ता था। यहूदी धर्मको छोड़कर

बाल्य और स्कूली जीवन (१८१८-३५५ ई०)

इसाई धर्मको स्वीकार करना । लेकिन, धर्म-परिवर्तनका अर्थ या सभी संग्रह-सम्बन्धियोंसे हमेशाके लिए विच्छेद, तथा अपनी कुलागत परम्पराओं और मान्यताओंका परित्याग । यह भावनाये कितनी शक्तिशाली हैं, इसे हिन्दू अच्छी तरह समझ सकते हैं, इसाई या मुसलमान होनेपर उनकी क्या गति होती है, इसे वह जानते हैं । यहूदी धर्म छोड़कर इसाई होनेका मतलब केवल यही नहीं था, कि अब एक धर्मके सभी बन्वनोंसे आदमी मुक्त हो गया, अब वह सुश्रावको भी खा सकता है, और दूसरे कालातीत रीति-रवाजोंका भी पावन नहीं, बल्कि इसाई होनेका मतलब या सामाजिक दासतासे मुक्ति—अब वह अपने देशवासी बूसरे ईसाइयोंकी तरह अपने वर्गके अनुसार स्थान पानेका अधिकारी था । उधर यहूदी पुरोहित वर्ग और समाज भी इतना जड़ था, कि धर्म-ग्रंथों और रीति-रवाजोंमें जरा भी अविश्वास प्रकट करनेपर जातिच्युत कर दिया करता था । काले मार्क्स्ट्सके पिताका सम्बन्ध वकील होनेसे अब व्यापारियों और बड़ीके समाजसे मिल साधारण जर्मन समाजसे अधिक पड़ता था । हाइनरिख मार्क्स्ट्सको यहूदी जातिसे अधिक एशियाके प्रति भक्ति थी । वह एशियाके वीरतापूर्ण इतिहास और उसके वीरोंको बड़ी आत्मीयताके साथ देखते थे । यह वह समय था, जब कि कितने ही यहूदी जर्मनीमें अपने बाप-दादोंका धर्म छोड़ इसाई बन रहे थे । हाइनरिख हाइन (महाकवि), एडवर्ड गाज आदिने भी सामाजिक मुक्ति तथा जन्ममूर्मिकी साधारण जनतामें मिल जानेके ख्यालसे इसाई धर्मको स्वीकार किया था । इस प्रकार १८२४ ई० में अपने बेटेकी ६ सालकी उमरमें हाइनरिख मार्क्स्ट्सका ईसाई बनना बिलकुल नई घटना नहीं थी । राइनलैंडमें यहूदियोंकी सूदखोरी और बनियापनके कारण लोगोंकी जो अपार धृणा यहूदियोंके प्रति थी, उससे मुक्त होनेका यही सबसे आसान रास्ता था । काले अमी क-ख सीखने लगा था, जब कि यह परिवर्तन परिवारमें हुआ । पिता पहले हीसे उदार विचारके थे, उसपर यह धर्म-परिवर्तन, फिर यदि मार्क्स्ट्सको घरमें यहूदी कहरताकी गन्ध भी देखनेको न मिली हो, तो आश्चर्य क्या ? यहूदी धर्म और उसकी कहरताको तो कालेसे घरके बापने ही विदा कर दी थी । हाइनरिखने अपने प्रतिभाशाली पुत्रको बहुतसे पत्र लिखे थे, जिनमें कहीं भी यहूदीपनकी

गन्ध नहीं मिलती। मार्क्स को आगे बढ़नेके लिये पुराने पक्षपातोंसे उलझने या लड़नेकी जरूरत नहीं थी।

कार्ल ट्रीरके स्कूलमें पढ़ने वैठा दिया गया, शायद उसी समय जबकि परिवासने ईसाई धर्म स्वीकार किया। २५ अगस्त १८३५, १० को सत्रह सालकी उम्रमें मार्क्सने ट्रीरके कालेजकी अपनी पढ़ाई स्थान करके प्रमाणपत्र पाया। इस सत्रह वर्षके जीवनमें कोई ऐसी उल्लेखनीय घटनायें नहीं थीं, अथवा उन्हें जान करनेका मौका नहीं मिला, इसलिए मार्क्सके इस जीवनके बारेमें बहुत बातें ज्ञात नहीं हैं। मार्क्सके स्कूलके सहपाठियोंसे भी इस विषयमें सहायता नहीं मिली, जिसका एक कारण यह है, कि लेखकोंने बहुत पीछे, प्रायः मार्क्सकी मृत्युके बाद सामग्री संचय करनेका प्रयत्न किया। ट्रीरके विद्यार्थी-जीवनके बारेमें कहा जाता है, श्रीक और लातिनके महान् ग्रंथोंके अत्यन्त कठिन शास्त्रोंको लगा देना कार्लका बाएँ हाथका खेल था। लातिन भाषापर विषय और भाव दोनोंकी दृष्टिसे कार्लका असाधारण अधिकार था। धर्म और इतिहासके प्रति शायद अभी कालकी उतनी दिलच्सी नहीं थी, लेकिन उसके जर्मन निवन्धको परीक्षकोंने दिलच्स्य बतलाया था, जिसका विषय था “व्यवसाय चुननेसे पहले एक तरहएके विचार” कार्लने अपने विचार इस विषयपर गतानुगतिक तौरसे नहीं प्रकट किये थे। उसने लिखा था : हम सदा ऐसे पेशेको अखिलयार नहीं कर सकते, जिसके बारेमें हम अपनेको योग्य समझते हैं। हम जब इसके बारेके निश्चय करनेकी स्थितिमें होते हैं, उससे पहले ही समाजके साथ हमारे सम्बन्ध परिपक्व (रूपान्तरित) होने लगते हैं। समाज और उसके सम्बन्धोंके बारेमें इस तरहके परिवर्तनका ख्याल बतलाता है, कि तरसाईके आरंभिक दिनोंमें ही कार्लका दिमाग कितना दूर तक सोच सकता था।

अध्याय ३

यूनिवर्सिटी-जीवन (१८३४-४१ ई०)

बकील पिता अपने पुत्रको भी शायद एक सफल बकील बनाना चाहता था, इसलिये द्वीरकी पढाई समाप्त करनेके बाद पिता की सलाहसे कार्ल मार्क्स १८३४ ई० के शरदमे बोन युनिवर्सिटीमे दाखिल हुआ, जहाँपर वह एक साल तक कानून पढ़ता रहा। बोनके इस विद्यार्थी-जीवनके बारेमें बहुत कम बातें मालूम हैं। पिताकी चिट्ठियोमें इस बातकी शिकायत देखी जाती है, कि कार्ल ऐसोको वरबाद करता है।

१. प्रेम

कार्ल अब अठारह वर्षका था। ऐसे प्रतिमाशाली पुरुषके विचारोका इस अवस्थामे भी अधिक परिपक्व होना स्वभाविक है। मार्क्स आगे चलकर कभी गतानुरागिक नहीं रहा। उसके इस स्वभावका परिचय इन आरंभिक दिनोमें भी लग सकता था। हाइनरिख मार्क्स बकील और द्वीरके सामन्त तथा प्रीवी कौसिलर छुडविग फान बेस्फालेनका आपसमे घनिष्ठ परिचय था। यह परिवार उन कुलीन सामन्तों या प्रशियाके प्रतापी नौकरशाहोसे सम्बन्ध नहीं रखता था, बल्कि वह अपनी असैनिक सेवाओसे आगे बढ़ा था। छुडविग पहले बुन्सविकके ड्यूक फाइनाइका असैनिक-सेक्टरी रह चुका था। ड्यूक पश्चिमी जर्मनीकी ओरसे पन्द्रहवें छुइके सातसाला युद्धोमे लड़ा था, जिसमें फिलिपवेस्ट-फालेन ड्यूकका चीफ-आफ-स्टाफ रहा था। उसकी सेवाओसे प्रसन्न होकर इगलैंडके राजाने फिलिपको सूम्मानित करते हुये सेनाका अड्जूटें-जेनरल बनाना चाहा, लेकिन उसने उसे स्वीकार नहीं किया। यह मालूमही है, कि फ्रांसकी छेड़ी लडाइयोमें इगलैंड और जर्मनी (उस समय संयुक्त जर्मनी अभी दूरका सम्पन्न था) एक दूसरेके साथी थे। इगलैंडके इसी सम्बन्धके कारण फिलिपने एक स्कान्ध बैरनकी लड़कीसे व्याह किया था। अपनी सेवाओके लिये उसे

सामन्ती उपाधि फानवेस्टफालेन मिली थी। फिलिपके पुत्रोंमें एकका नाम लुडविग फानवेस्टफालेन था, जो पिताजी सफ़ज़ताओंके कारण और साधारण कुलका न होकर एक छोटा-मोटा सामन्त समझा जाने लगा था। यद्यपि लुडविग धन, प्रभुता और मानमें दूसरे जर्मन सामन्तोंकी स्थितिमें था, लेकिन भिखर्मगे युकरोंका भी दिमाग जैसे आसमानपर रहता है, वह रोग उसे नहीं लगा था। इसी लुडविगकी लड़की जैनी थी, जो सालूजवेडलमें १२ फर्वरी १८२४ ई० को— अर्थात् कार्ल मार्क्सके जन्मसे चार साल पहले—पैदा हुई थी। उस समय जैनीका पिता सालूजवेडलमें लांडराट (मजिस्ट्रेट, शरीफ) था। दो वर्ष बाद वहाँसे उसकी बदली द्वीरमें हो गई, और अब वह सरकारका परामर्शदाता था।

राहनलैंड जर्मनीके दूसरे भागोंसे भिन्नता रखता था। वह सामन्तों नहीं, उद्योगपतियोंका प्रदेश बनता जा रहा था। वह जर्मनीके चिरप्रतिद्वंद्वी फ्रांसकी सीमापर पड़ता था, इसलिये वहाँ असाधारण योग्यतावाले ही आदमीको शासक बनाकर भेजा जाता था। प्रशिवाके महामंत्री हार्डेनवेर्गकी इसीलिये लुडविग फानवेस्टफालेनपर खास तौरसे नजर पड़ी। लुडविग साधारण सामन्तोंसे कितना विलक्षण था, वह इसीसे मालूम होगा, कि कार्ल मार्क्स जीवनके अन्त तक अपने संसुखका नाम बड़े सम्मान और कृतज्ञापूर्वक लिया करते थे, और लिखते वक्त उसे प्रिय पितृहुल्य मित्र करके सम्मोऽधित करते थे। लुडविग सुशिक्षित था, वह होमरकी कविताओंके पृष्ठके पृष्ठ दोहरा सकता था, शेक्सपियरके बहुतसे नाटक उसे कंठस्थ थे—अँग्रेजी और जर्मन दोनोंमें। लुडविगके घरमें विद्या और साहित्यका बड़ा ही सुन्दर बातावरण था। उसके पास पुस्तकोंका अच्छा संग्रह था। कार्ल जैसे प्रतिभाशाली तरुणकी जिज्ञासाओंकी पूतिके लिये वह साधन-सम्पन्न था। ऐसी अवस्थामें यदि वच्चपनसे ही कार्ल मार्क्सका लगाव वेस्टफालेन परिवारसे हो जाय, तो कोई आश्चर्य नहीं। लुडविग इस मेधावी बच्चेको बहुत प्यार करता था। उसकी पुत्री जैनी और कार्ल वच्चपनसेही साथ खेला करते थे। उन्हें पता नहीं लगा कि कब वच्चपनका वह स्नेह दो तरण-हृदयोंके प्रेममें परिवर्तित हो गया। जैनी एक असाधारण सुन्दरी लड़की थी, लेकिन उसका स्वभाव दूसरी सामन्त-कुमारियोंसे विल्कुल अलग था। उसके बाहनेवाले बहुतसे थे।

वह अपने पिताके कुल और दर्जेके प्रभावसे किंतु धनी और प्रभावशाली समन्त-कुमारसे व्याह करके सुख और विलासका जीवन बिताती। जेनीने यदि अपने ऐसे बालायनके साथी के साथ अपने जीवनका गठबंधन किया, जिसका भविष्य 'खतरेसे भरा और अनिश्चित' (मार्क्सके पिताके शब्दोमें) था, तो इसे यही कहना चाहिये कि जेनी बिल्कुल दूसरी ही तरहकी लड़की थी। मार्क्सका पिता उसके लिये "देव कन्या जादूगरनी" जैसे शब्द इस्तेमाल करता था और साथ ही वह उसके प्रेमको इतना पक्का समझता था कि कोई राजकुमार भी उसे कार्रा से छीन नहीं सकता था। पिताने मार्क्सके जीवनको जिस तरहका खतरेसे भरा और अनिश्चित समझता था, वह उसके सामने कुछ भी नहीं था, जैसा कि जेनीको भुगतना पड़ा। लेकिन जेनीको इस अद्भुत पुरुषका अखंड प्रेम मिला था, जिसे वह बहुमूल्य समझती थी। मार्क्स-जेनीके बाल्य-प्रेम और उसके परिवारको ऐतालीस वर्ष (१८६३ ई०) की उमरमें भी अत्यन्त मधुर शब्दोमें याद करता था। वह उस साल अपनी माँकी अन्त्येष्टिके लिये दीर गया था, जबकि लिखा था : प्रतिदिन मैं पुराने घंसफालेन भवन (रोमेर स्टार्स) की तीर्थ-यात्रा करने जाता था। वह सारे रोमन घंसावशेषोंसे भी अधिक मेरे लिये मनोहर मालूम होता था, क्योंकि वह मुझे अपनी तरुणाईके सुखमय दिनोंकी याद दिलाता था, और इसीने मेरी निधिको एक समय अपने भीतर सुरक्षित रखता था। प्रतिदिन दाहिने-बायेंसे मुझसे लोग दीरकी अत्यन्त मुन्द्री लड़की, 'नृत्यकी रानी' के बारेमें पूछते थे। एक आदमीके लिये यह अत्यन्त प्रसन्नताकी बात है, कि उसकी पली सारे नगरकी सूतिमें 'जादूगर राजकुमारी' के तौर-पर याद की जाती हो। मृत्युके समय तक मार्क्स अपनेसे पहले ही दुनिया छोड़ गई जेनी को अपार रनेहके साथ याद करता था।

बचपनसे बढ़ते-बढ़ते दोनोंका स्नेह तरुणाईके प्रेममें बदल गया था। ऐसी स्थितिमें दोनों तरुण हृदयोंको विछोह असृष्ट मालूम होता था, लेकिन पढ़ाई तो पूरी करनी थी। मार्क्स पढ़नेके लिये जब बोन गया उसी समय बिना अपने माता-पिताओंकी अनुमतिके दोनोंने विवाह-बन्धनसे बँधनेका संकल्प कर लिया। वकील हाइनरिख मार्क्ससे लुडविग फानवेस्फालेनका दर्जा, कुल और मर्यादा

बहुत ऊँची थी लेकिन जब उसे मालूम हुआ, तो उसने बड़ी प्रसन्नतासे खीकृति देदी। किंतु इसका यह अर्थ नहीं था, कि दोनोंका व्याह अभी हो गया। जैनीका पीहर पीछे भी जर्मनीमें बहुत प्रभावशाली था। उसका सौतेला बड़ा भाई फार्डिनेंड फानवेस्फालेन प्रशियाका यह-मन्त्री, सामन्तोंका कट्टर पद्धपाती था। वह जैनीसे पन्द्रह वर्ष बड़ा था। जैनीका सगा भाई एडगर फानवेस्फालेन था। वह अपने यशस्वी बहनोईके साथ अच्छा सम्बन्ध रखता था, वैयक्तिक ही नहीं राजनीतिक भी। यद्यपि वह पक्षा मार्क्सवादी नहीं बन सका, लेकिं उसने कम्युनिस्ट घोषणापर हस्ताक्षर किये थे। उसके दिलमें अपनी बहन और बहनोईके प्रति सदा स्लेह रहा और इसीके उपलक्षमें बहन और बहनोईने अपने लड़केका नाम एडगर रखा था।

२. वर्लिन युनिवर्सिटीमें (१८३६-४१ ई०)

बोनकी पढ़ाई वेटेसे भी अधिक बापको नापसन्द थी। बाप एक प्रशियन देशाभिमानी था और प्रशियाका केन्द्र था वर्लिन। इसालिये, जैसा कि उसने १८३६ के पत्रमें लिखा था, अपने पुत्रको वर्लिन युनिवर्सिटीमें राजनीतिक अर्थशाल और कानून पढ़नेके लिये भेजा। शायद पिताको ऐसा करना इसालिये भी जरूरी समझ पड़ा, कि सामन्त कुमारीसे व्याह करना टट्ठा नहीं है, उसे दुखी रखनेके लिये कार्लको अधिक धन और पद्की आवश्यकता होंगी। जिसके लिये प्रशियाकी राजधानीमें जाकर उसकी यिन्हाँ और परिचय प्राप्त करना अधिक सहायक होगा। मार्क्स अब अपनी प्रेमिकासे दूर जा रहा था, जोकि उसके लिये मिय नहीं था। जहाँ तक मार्क्सका सम्बन्ध था वह राइनलैंडको जाओ पसन्द करता था, अधिक सदं वर्लिन उसे पसन्द नहीं थी। मार्क्सकी प्रार्थनापर दोनोंके पिता-माताओंने जैनीके साथ पत्र-व्यवहार करनेकी उसे अनुमति दें दी थी, तो भी जैनीका पहला पत्र वर्लिनमें उसे तब मिला, जबकि वहाँ रहने उसे एक चाल हो गये।

नन् १८३७ ई०—जशकि वह उन्नीस सालका हो गया था—उस मार्क्सके दैनिक प्रकाश दालगेवाली समग्री हमें भिलने लगती है, जिसमें उसके अपने

पत्र भी सम्प्रसित हैं। १० नवम्बर १८३७ को मार्क्सने घरपर एक पत्र मेजा था। उससे उसके साल भरके बलिनके जीवनके बारेमें कितनी ही बातें मालूम होती हैं : उसे ज्ञानकी अपार पिपासा थी। वह अपना सारा समय उसीको तृष्ण करनेमें लगाता था। वह अपने उच्च विचारों पर पहुँचनेके लिये अपार मेहनत करनेमें सद्गम होते भी अपनी कड़ी आलोचना करता था। २२ अक्टूबर १८३८ को कालैने युनिवर्सिटीकी प्रवेशिका परीक्षा पास की। प्रोफेसरोंके लेक्चरोंकी वह कोई पर्व नहीं करता था, और कानूनके अनिवार्य व्याख्यानोंमें ही शामिल होता था। युनिवर्सिटीके प्रोफेसरोंमें केवल एडवर्ड गाज ही एक पैसा व्यक्ति था, जिसका प्रभाव मार्क्सके मानसिक विकासपर पड़ा। वह गाज फौजदारी कानून और प्रशियाके दीवानी कानूनके व्याख्यानोंको सुनने जाता, और गाज भी अपने विद्यार्थिके मेहनती स्वभावकी प्रशंसा करता था। लेकिन मार्क्सने कानूनके ऐतिहासिक सम्प्रदायकी जितनी कड़ी खबर अपने आरम्भिक लेखोंमें ली थी, उससे ही मालूम होता है कि कानूनके प्रति उसकी आस्था कैसी थी। गाज दर्शनका भी पड़ित था, वह भी उस सम्प्रदाय का विरोधी था, इस प्रकार स्पष्ट है कि गाजके ऐसे विचारोंका प्रभाव तरुण मार्क्सके ऊपर पड़ा था। मार्क्सके कथनानुसार वह इतिहास और दर्शनके साथ कानूनको केवल सहायक-अनुशासनके तौरपर ही पढ़ता था। अब उसकी इतिहास और दर्शनमें बहुत दिलचस्पी थी, लेकिन युनिवर्सिटीके प्रोफेसरोंके लेक्चर ऐसे नहीं होते थे, जिनसे मार्क्सके हृदयमें कोई आकर्षण पैदा होता। हेगेलकी गदीपर अवस्थित गवलर-के तर्कशास्त्र-सम्बन्धी व्याख्यानोंको अनिवार्य होने हीसे वह सुनने जाता था। गवलरको वह हैगलका अत्यन्त निकृष्ट अनुयायी मानता था। कार्ल मार्क्स वस्तुतः स्वतंत्र विचारका था। उसके दिलमें ज्ञानकी प्यास और लगन भी अत्यधिक थी, लेकिन वहोंके प्रोफेसर उसकी तुष्टि नहीं कर सकते थे। दस वर्षमें युनिवर्सिटी जो उसे नहीं दे सकती थी, वह एक सालके भीतर अपने अव्यवसायसे प्राप्त दर सकता था।

प्रतिभाशाली तरुणके हृदयमें एक बार कविता-कामिनीका प्रेम जलर पैदा होता है। तरुण कार्ल मार्क्स भी उससे बच नहीं सका। उसने तीन कापियाँ

अपनी कविताओंसे भरली थीं, जिनको मेरी प्यारी और सदाकी प्रियतमा जेनी फान वेस्टफानको समर्पित किया था। दिसम्बर १८३६ में ये कवितायें जेनीके हाथमें थीं, जिसने मार्क्सकी वहन साफीके लेखानुसार हर्ष, विषादके अश्रुओं के साथ उनका स्वागत किया था। लेकिन जान पड़ता है तरुण प्रेमीका प्रेमिकाके वियोगके प्रथम वर्षने कविताकी ओर जो प्रेरणा दी थी, वह आगे सूख गया, क्योंकि उसके एक साल बादके पिताको लिखते हुये अपने पत्रमें उसने अपनी कविताको तीन कौड़ीका बतलाते हुये कहा था : चौरस और आकृतिहीन कल्पना है कोई स्वाभाविकता नहीं, सभी बातें हवाई, अस्ति (है) और भवति (होता), जो है और जो होगा दोनोंमें जर्बदस्त विरोध। कभी कल्पनाकी जगह केवल अलंकारोंकी प्रतिध्वनि। इतने दोषोंके गिनानेके बाद वह इतना स्वीकार करता है कविताकी ज्वालाके लिये अनुभूति और प्रथनकी शायद कुछ लालसा। सभी दोषोंके रहते हुये भी इसमें सन्देह नहीं, मार्क्स अलंकारिक भाषाके प्रयोगमें जर्मन साहित्यके महान् निर्माताओंके बराबर पहुँचा था। शायद कवितादेवीकी यह आरंभिक आराधना ही थी, जिसने उसे अपनी गम्भीर लेखनीको कितने ही अंशोंमें मुगम बनानेमें सहायता प्रदान की।

मार्क्सने अपने पत्रमें घरको लिखा था : कविताकी ओर तो मेरी मामूली सी यों ही दिलचस्पी है, मुझे तो दर्शनसे मिछना है। वह अब दर्शनकी जो भी पुस्तकें मिलतीं, उनके गम्भीर अध्ययनमें डूबा रहता था।

यूरोपका अद्वितीय दार्शनिक हेगेल (१७७०-१८३१) की कर्मभूमि जर्मनीकी यही नगरी बर्लिन थी। अब भी बर्लिन युनिवर्सिटीमें उसकी मेधाकी प्रतिध्वनि तुनाई पड़ती थी, लेकिन जैसा कि ऊपर बतलाया, अब उसकी गदीपर चापलूस तीसरी श्रेणीके आदमी बैठाये गये थे। १८३७-३८ ई० में मार्क्सको कितनी ही बार यह ख्याल आता रहा होगा, यदि मैं छ-सात वर्ष पहले यहाँ आया होता। जर्मन दर्शनके अतिरिक्त वह ग्रीक दर्शनको भी बड़े ध्यानसे पढ़ रहा था। पुस्तकोंके पढ़ते समय उसकी एक आदत यह भी हो गई थी, कि वह उनका सार उतार लेता। मार्क्सने इतिहास, कला और दर्शनकी कितनी ही अपनी |पढ़ी हुई पुस्तकोंका संचेप कर लिया था। तैकितंसकी सारी गेरमानियाँ

को उसने जर्मन भाषामें अनुवाद कर डाला। ग्रीक, लेटिन और जर्मनको पर्याप्त न समझकर उसी समय उसने ग्रेग्रीजी और इतालियन पढ़नेकी भी अवश्यकता समझी और उसके लिये कुछ प्रयत्न भी किया। उस समयके आरंभिक प्रयत्न और सफलताके बारेमें उसने लिखा था : बहुत सी राते जागते बीती, बहुत सी लड़ाइयाँ लड़ी और बहुतसा भीतरी और बाहरी प्रेरणाये प्राप्त कीं।

वह जिस तरहसे तन्मय होकर परिश्रम कर रहा था, उसका स्वास्थ्यपर बुरा असर पड़ा और डाक्टरोंकी सलाहसे उसे बर्लिनके पडोसके मल्लुओंके गाँव स्ट्रालाउड में जाकर रहना पड़ा। वहाँ जलदी ही उसका स्वास्थ्य ठीक हो गया। युनिवर्सिटी के दूसरे वर्ष (टर्म) के लिये तैयार होकर वह फिर जुट पड़ा। यद्यपि उसकी जिज्ञासाका क्षेत्र बहुत विस्तृत था, लेकिन धीरे-धीरे उसका ध्यान हेगेलके दर्शनकी ओर विशेष तौरसे केन्द्रित होने लगा। पहले जब हेगेलको उठाया, तो वह उसे विलकुल पसन्द नहीं आया। लेकिन अस्वस्थ रहनेके समय उसने फिर उसको पढ़ना शुरू किया, और अब उसमें उसे रस आ रहा था। हेगेलके दर्शनकी बारीकियाँ उसे अपनी ओर खोंच रही थीं।

मार्क्सने घर आनेके लिये पिताकी अनुमति माँगी, लेकिन पिता समझता था, कि जेनीके पास रहनेपर लड़केकी पढ़ाईमें बाधा होगी, इसीलिये उसने अगले वर्षकी ईस्टरकी छुट्टियोंमें आनेके लिये कहा। पुत्र कितना ही कहता रह गया, कि मुझे आपसे कितनी ही बातोंपर विचार करना है, लेकिन पिता माननेके लिये तैयार नहीं हुआ। १८३७ ई० में अब पिताका स्वास्थ्य भी उतना अच्छा नहीं था। प्रश्न पूछ कर पिताने स्वयं मार्क्सकी बर्लिनकी दिनचर्याकी बारेमें लिखा था : भगवान् हमें बचाये। कोई व्यवस्था नहीं,। विज्ञानके सभी क्षेत्रोंमें द्विसना और धूमना तेलके चिरागके मन्द प्रकाशमें सिर मारना। विद्यार्थियोंके ड्रैसिंग गौनमें बालोंमें चिना कंबी किये पाठमें जाना फिर हाथमें चियरका ग्लास लेकर मन परिवर्तन करना। सामाजिक मेल-जोल से विमुखता और सभी उचित बातोंका परिचया, यहाँ तक कि अपने पिताको भी गौण स्थान देना। सामाजिक कलाको एक गन्दी कोठरीमें सीमित करना, जहाँ जेनीके ग्रेमपत्र भयकर अस्त-व्यस्त रूपमें पढ़े हैं तथा जहाँपर पिताके सदाशयपूर्ण शिक्षा वाले

पत्र, शायद आँसुओंके साथ लिखे गये पिताके पत्र, पाइप जलानेके लिये ईस्ट-माल होते हैं इससे कहीं अच्छा है, यदि वह इस अस्त-व्यस्ततामें न पड़ किन्हीं तीसरे प्रकारके आदमियोंके हाथमें पड़ जाते । मार्क्सके पिताको पुत्रकी फज्जल-खर्चीकी बड़ी शिकायत थी : मेरा लायक पुत्र प्रतिवर्ष सात सौ थालर खर्च करता है, मानों हम पैसेसे बने हों । और वह सभी हिदायतोंके विस्तृत तथा सभी नवाजोंके खिलाफ, क्योंकि धनीसे-धनी विद्यार्थीको पाँच सौ थालरसे अधिककी जरूरत नहीं पड़ती । यद्यपि पिता यह भी मानता था, कि कार्ल साधारण अर्थोंमें फज्जलखर्च नहीं है, बल्कि हरेक आदमीका हाथ लूटनेके लिये कार्लकी पाकिट पर रहता है । इसी पत्रमें पिताने घर आनेकी अनुमति न देते हुये लिखा था : इस बक्त घर आना बेवकूफी होगी । मुझे यह अच्छी तरह मालूम है, कि तुम क्लासके व्याख्यानों—जिनके लिये पैसा देना पड़ता है—की कोई पर्वा नहीं करते, तो भी मैं जोर देता हूँ कि तुम्हें शिष्याचारको पालन करना चाहिये । अन्तमें पिताने ईस्टरके समय घर आनेकी अनुमति देते लिखा था, वह इच्छा होनेपर दस दिन पहले भी आ सकते हो ।

यद्यपि पिता अपने पत्रोंमें अक्सर पुत्रकी हृदयहीनताकी शिकायत करता था, लेकिन वस्तुतः मार्क्सका यह स्वभाव नहीं था । पिता या किसीके साथ भी वह हृदयहीन नहीं हो सकता था । अपने सम्बन्धियोंके साथ तो आजीवन उसका सौहार्द रहा । मार्क्स अपने पिताको अपने पत्रोंमें समझानेकी कोशिश करता था । इन पत्रोंकी पंक्तियोंमें उसके नवाजित ज्ञान और स्वतंत्र प्रतिभाकी भी छाप होती थी, लेकिन शायद अब पिताके लिये उन पंक्तियोंका समझना आसान नहीं था । पिताके लिखनेपर उसी साल नहीं, बल्कि अगले ईस्टरमें भी आनेका ख्याल मार्क्सने छोड़ दिया । वस्तुतः जेनीको छोड़ देने पर ब्रिलिन-में अब अपनी ओर खींचनेके लिये जितने आकर्षण थे, उतने द्वीरमें नहीं हो सकते थे । और यह भी कहना मुश्किल है, कि जेनी और विद्या दोनोंके आकर्षणमें कौन अधिक शक्तिशाली है । मार्क्सने अपने निश्चयकी सूचना १० फरवरी १८३८ के पत्र द्वारा दी थी । उस समय अभी-अभी हाइनरिख मार्क्स पाँच सप्ताहकी बीमारीसे उठे थे । लेकिन यह स्वास्थ्य-सुधार देर तक

कायम नहीं रहा । पेटकी बीमारी थी, जो फिर बिगड़ गई और तीन महीने बाद १० मई १८३८ को बूढ़ा पिता चल बसा । वह अपने पुत्रको नहीं समझ सका । उसने विद्यामें तन्मय तथा पैसोंका कोई मूल्य न समझनेवाले पुत्रको हृदय-हीन समझा था, लेकिन असली बात यह नहीं थी, माकर्सका स्नेह अपने पिताके प्रति सदा रहा ।

३. हेगेलका दर्शन

पिताकी मृत्युके बाद भी तीन वर्ष तक माकर्सने अपने अध्ययनको बर्लिनमें जारी रखा । हेगेलके दर्शनने उसे अपनी ओर हतना खींचा था, कि वह उसके अध्ययनके हरेक साधनको ढूँढ़नेमें लगा रहता । यद्यपि हेगेलकी गद्दीपर कोई योग्य प्रोफेसर नहीं था, लेकिन बर्लिनमें तस्य हेगलियोका एक गरोह था, जिसने माकर्सको बल्दी ही अपनी ओर खींच लिया । उस समय हेगेलका दर्शन प्रशियाका सरकारी दर्शन माना जाता था, और संस्कृति-मन्त्री अलटेन-स्टाइन और उसके प्रीबी कौसिलर (निजी पार्षद) योहानेज शुल्जे का उस ओर विशेष ध्यान था । हेगेल राज्यकी बड़ी महिमा गाता था, और कन्फूशीकी तरह व्यक्ति के विशद् राज्यको सर्वोपरि मानना उचित समझता था । ऐसे दार्शनिकका राज्य क्यों न ख्याल करता ? हेगेलने राजतन्त्रको शासनकी सबसे अच्छी व्यवस्था बतलाया था, और यह भी कहता था कि प्रभुताशाली वर्गको शासन करनेमें कुछ अग्रत्यक्ष अधिकार मिलने चाहिये, तो भी राजाकी शक्तिको निर्बल नहीं करना चाहिये । वह आजकलके संविधानोंकी तरह जनताके प्रति-निधियोकी शासन-समारोंपर जरूरत नहीं समझता था । यद्यपि राजनीतिमें इस तरह वह प्रतिक्रियावादी था, लेकिन जिस द्वन्द्वात्मक दर्शनको वह मानता था, उसकी धारा बिल्कुल दूसरी ओर लेजा रही थी । हेगेलके दर्शनके अनुसार अस्ति (है, भाव) एक चीज है, जिसकी प्रतिद्वंद्वी नास्ति है । इन दोनोंके विरोधी समागमसे एक तीसरी उच्च धारणा भवति (होती है) निकलती है । उसके अनुसार हरेक चीज उसी एक ही समय “है” भी और “नहीं” भी है क्योंकि हरेक चीज दीपककी लौकी तरह सदा परिवर्तनकी स्थितिमें सदा विकास

और पतनकी स्थितिमें है। इस दर्शनके अनुसार विकासकी प्रक्रिया निम्नसे उच्चतर रूपमें निरन्तर परिवर्तित होती रहती है।

हेगेल यद्यपि राजसत्ताका पक्षपाती था, लेकिन उसने धर्मके प्रति उस तरहके भाव नहीं दिखलाये, इसीलिये प्रशियन शोषक धर्मको मुख्य स्थान देनेके लिये तैयार नहीं थे। हेगेलके दर्शनको राजनीतिमें लाकर उसे क्रांतिकारी विचारधाराका रूप देना मार्क्सिका काम था, लेकिन उससे पहले ही इस दर्शनने धार्मिक क्षेत्रमें अपनी तोड़फोड़की नीति शुरू करदी थी। हेगेलने घोषित किया था कि वाइबलकी कहानियोंको भी वैसी ही मानना चाहिये, जैसी दूसरी आम कहानियोंको। उनके लिये सन्देश ऐतिहासिक आधारकी आवश्यकता नहीं है। इस विचारधाराने डेविड स्ट्रास नामक एक तरुणको ईसाकी जीवनी लिखनेकी प्रेरणा दी, जो १८३५ ई० में प्रकाशित हुई। इस पुस्तकके निकलते ही वडी खलबली मन गई। उसने ईसाको ऐतिहासिक पुरुष मानते हुये ऐतिहासिक सामग्रीके तौरपर ही इंजीलके कथानकोंकी कसौटीपर रखा। स्ट्रासका इससे कोई भी राजनीतिक उद्देश्य नहीं था, लेकिन वाइबलके विश्वासपर उसे चोट अवश्य पहुँची।

पीढ़ियाँ वहीं नहीं रहना चाहती हैं, जहाँ पर उन्हें पूर्वजोंने ला पहुँचाया। स्ट्रासने यद्यपि अभी धार्मिक क्षेत्रमें ही हेगेलके दृष्टिकोणका उपयोग किया था, लेकिन अब उसे राजनीतिक क्षेत्रमें भी इस्तेमाल करनेवाले पैदा हो गये थे। तरुण हेगेलियोंने १८३८ ई० में अपने विचारोंके लिये “हालिशे या रखुदेर” (हाल वर्ष-पत्र) निकाला। जर्मनीमें ऐसे वर्ष-पत्रोंके प्रकाशित करनेकी प्रणाली सी निकल पड़ी थी, जिनमें अनेक लेखोंको संग्रहीत कर दिया जाता था। उस वक्त वहाँ सेन्सरकी नादिरशाही चल रही थी, किन्तु वह मासिक-साप्ताहिक-दैनिक पत्रोंके लिये ही थी, इसलिये सेन्सरसे बचनेके लिये वर्ष-पत्र निकालने का रास्ता ढूँढ़ निकाला गया था। इस वर्ष पत्रमें साहित्य और दर्शन-सम्बन्धी लेख निकलते थे। पुराण हेगेलीय पुराने बनकर अपना “बर्लिन र याखुदेर” निकालते थे, जिसके जवाबमें अर्नाल्ड रूगे और फ्लोडोर एक्टेरसेयर ने तरुण हेगेलियोंके इस नये वर्ष-पत्र को निकाला था। १८१५ ई० में—

हेगेलके जीते समय ही—जेनमें “बुरशोन्यापट्” के नामसे बुर्जुआ जनतांत्रिक विद्यार्थियोंका आन्दोलन शुरू हुआ था, जो बहुत कुछ अपने समकालीन लड़ी दिसम्बरियों जैसी विचारधारा रखता था। रुगेने इस आन्दोलनमें भाग लिया था और परिणामस्वरूप उसे छँ बर्ष तक जेलकी हवा खानी पड़ी। आगे चलकर उसके रैवेमें फर्क हुआ, जब कि व्याहके सम्बन्धसे उसे हाले युनिवर्सिटी में प्रोफेसरका स्थान मिल गया। अब वह प्रशियाकी राजव्यवस्था को स्वतंत्र और न्यायोचित बताया था। इससे मालूम है कि रुगेने न स्वतंत्र विचारोंकी भावना थी, न क्रातिके लिये लगान। लेकिन, लिखनेकी उसमें शक्ति थी, और अपने पाठकोंके लिये हर तरहकी सामग्री उपस्थित करने में वह कुशल था, इसीलिये “हालिशे याखुदेर” धीरे-धीरे तरह पाठक-मंडलीको अपनी ओर खींचनेमें सफल हुआ। रुगेके वर्षपत्रमें “ईसाकी जीविनी” के लेखक स्ट्रासकीकी लेखनी का चमकार देखनेमें आने लगा। स्ट्रास बाइबलके निर्भान्त होनेकी कही आलोचना कर रहा था। जब अधिकारियोंका ध्यान इस ओर गया, तो रुगेने यह कहकर समाधान करना चाहा, कि हम “हेगलीय ईसाहयत और हेगलीय प्रशिया” का प्रचार करते हैं। अभी तक रुगेको सरकारकी ओरसे प्रोफेसर पदकी स्वीकृत नहीं मिली थी। मन्त्री आल्डेनस्टाइनको उसकी बातोपर विश्वास नहीं हुआ, इसलिये उसने स्वीकृत नहीं दी। इससे रुगेकी राजभक्ति पर चोट पहुँची, इसमें सन्देह नहीं।

कार्ल मार्क्सके जीवनके तीन साल बर्लिनके जिन तरह हेगलियों में जीते, वह सभी रुगेके वर्षपत्रमें लिखा करते थे। उनकी कलबमें मुख्यतः अध्यापक, लेखक और युनिवर्सिटीके लेखकर मेम्बर थे। रुटेनबर्ग बर्लिनके सैनिक-विद्यालय में भूगोलका अध्यापक था, जिसका मार्क्सके साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। उसे यह कहकर नौकरी से निकाल दिया गया था, कि एक दिन वह शराबमें बैहोश हो मेरीमे पड़ा था, लेकिन असली बात कुछ और ही थी। उसने दत्तों में कुछ ऐसे लेख लिखे थे, जिसे अधिकारी पसन्द नहीं करते थे। मार्क्स अभी बीस ही सालका था, जब कि वह तरह हेगलीय बलवक्ता मेम्बर बना था, और आसुमें उससे वडे कितने ही मेम्बर उसकी प्रतिभा और लेखनीका लोहा मानते

थे। एडवर्ड मेयेनका सम्बन्ध एक पत्रिकाके साथ था, जो ज्यादा दिन तक जी नहीं सकी। इसी पत्रिका में मार्क्सकी दो कवितायें छापी—मार्क्सकी कविताओं में सिर्फ यही दो प्रकाशित हो पाईं। कलबके दो सुख्ख मेम्बर थे म्युनिसिपल हाई स्कूलका अध्यापक कार्ल फ्रीडरिख कोपेन और बर्लिन युनिवर्सिटीका लेक्चरर बूनो बावर। इन दोनोंका मार्क्सके ऊपर बहुत प्रभाव पड़ा और दोनों दस वर्ष बढ़े होने पर भी अपने तरुण मित्रकी प्रतिभाकी श्रेष्ठताको स्वीकार करते थे। मार्क्स बाईस वर्ष हीका था, कि १८४० ई० में कोपेनने प्रशियाके राजा महान् फ्रीडरिककी जन्म-शताब्दीके अवसरपर जो लेख लिखा था, उसे “मेरे मित्र ट्रीरके कार्ल मार्क्स” को समर्पित किया था, जिससे मालूम होगा, कि मार्क्सकी योग्यता अब स्वीकार की जाने लगी थी।

४. कार्ल फ्रीड्रिक कोपेन

कोपेन बड़ा मेधावी विद्वान था, इतिहासमें उसकी भारी गति थी। वर्षपत्र में छपे उसके लेखोंको बड़ी चावसे पढ़ा जाता था। कोपेनने ही पहले पहल मासकी महाक्रांतिके समयके शासनका ऐतिहासिक तौरसे विवेचन किया था। उसने अपने समसामयिक इतिहास-लेखकोंकी क्रांति-सम्बन्धी गलत धारणाओंका जर्बदस्त खंडन किया, और कितने ही नये क्षेत्रों में ऐतिहासिक खोज की। कोपेन और बावरके घनिष्ठ समर्कमें तरुण मार्क्सको आनेका पौका मिला था, इनसे मार्क्स के विचारोंके आगे बढ़नेमें सहायता मिली थी। इन दोनोंमें भी कोपेन अधिक गम्भीर लेखक और विचारक तथा अपने पथपर दृढ़ रहने वाला व्यक्ति था। कोपेनने नोडिंक (जर्मन) जातियोंकी पौराणिक परम्पराओंकी एक बड़ी सुन्दर साहित्यिक भूमिका लिखी थी। बुद्धके ऊपर उसने जो ग्रंथ लिखा था, उसकी शोपनहावरने भी बड़ी प्रशंसा की थी, यद्यपि यह दार्शनिक पुराने हेगेलियोंके साथ कोई सहानुभूति न रखता था। कोपेनने १८ वीं शताब्दीके बुर्जुआ पुनरुज्जीवन-आन्दोलनको और आगे बढ़ाया। रूगेनेर बावर, कोपेन और मार्क्सको इसी आन्दोलनकी उपज बतलाया था। कोपेनने १८ वीं शताब्दी के दर्शनके बारेमें की जाने वाली विरोधियोंको जवाब दिया। पुराण-हेगेलियोंकी

मी कोपेनने विचारोके एकान्तवासी तपत्ती, तर्कशास्त्रके पुराने ब्राह्मणोकी तरह आसन मारकर पुनः तीनो पवित्र वेदोंको निरन्तर और एकमात्र जपते रहना, जब-तब मायाकी दुनियाको लोमभरी आँखोंसे देखना बतलाया था। उसने इन लोगोंको दलदलका मेंढक बतलाया, और यह भी कि यह ऐसे सरीसूप है जिनका न कोई धर्म है, न कोई पितृमूर्मि है, न कोई विचारधारा है, न आत्मा है, न हृदय है। जो न सर्दी महसूल करते हैं न गर्मी, न शुख न दुख, न प्रेम न धृणा। उनके न ईश्वर है न शैतान। ये अभागे प्राणी नर्कके फाटकोंकी चारो तरफ मँडरा रहे हैं, और अत्यन्त नीच होने के कारण उन्हें भीतर जानेकी इजाजत नहीं। फ्रीडरिक महान् जर्मनीका देवता बन गया था, क्योंकि उसने जर्मन सैनिक-शक्तिको सगठित और सुशिक्षित करनेमें बड़ा काम किया था। कोपेनने उसका “बड़ा दार्शनिक” के तौरपर ही सन्मान किया। यही नहीं बल्कि उसने यह भी कहा काटसे उलटे हो फ्रीडरिक महान् दो प्रकारके तकों को स्वीकार नहीं किया : एक सैद्धान्तिक (परमार्थ) जो सन्देहों, विरोधों तथा प्रतिशोधोंको बिलकुल ईमानदारीके साथ और धृष्टतापूर्वक सामने लाता है और दूसरा व्यावहारिक (साधृतिक), जो कि दूसरेके किये हुये पापोकी लीपा-पोती करता है। साथ ही राजा (फ्रीडरिक) दार्शनिक (काट) से मनु पीछे नहीं था।”

कोपेनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। बर्लिनके जीवन में वैसे भी कोई आकर्षण नहीं था। बर्लिनमें उस शक्तिशाली मेश्डंडका अभाव था, जो कि उद्योग-धरोंके रूपमें राइनलैंडमें पाया जाता था। बस्तुतः बर्लिन फौजी छावनीवाले एक शहरसे बढ़कर नहीं था।

मार्क्स कोपेनके साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रखता था, यह बतला चुके हैं। इसमें शक नहीं, कि आरभिक विचारोके निर्माण और लेखन-शैलीमें भी कोपेन से उसे सहायता मिली थी। यद्यपि आगे चलकर दोनोंके रास्ते दो हो गये, लेकिन वह सदा आपसमें मित्र बने रहे। बीस वर्ष ब्राद जब मार्क्स बर्लिन गया, तो उसने कोपेनको “सदा जैसा” पाया। दोनों एक दूसरेसे मिलकर बहुत प्रसन्न

हुये और आगस्ती मेल-मुलाकातमें घंटों बिताये। इसके थोड़े ही दिनों बाद १८६३ ई० में कोपेनकी मृत्यु हो गई।

५. ब्रूनो बावर

कोपेन कई बातोंमें विशिष्टता रखता था, लेकिन बर्लिनके तरुण हेगलियोंका वास्तविक नेता बावरको समझा जाता था। बावरपर राज्यके संस्कृति-मंत्री अल्टेन्स्टा की कृपा थी, क्योंकि उसे वह भारी मेधावी तरुण समझता था। ब्रूनो बावर अवसरवादी नहीं सिद्ध हुआ, यद्यपि स्ट्रासने वडे सम्बन्धोंके कारण इसकी भविष्यद्वाणी की थी। १८३६ ई० के ग्रीष्ममें बावर विरोधी हो गया, जबकि हैंगस्टेनबर्गने बाइब्लके कठोर और क्रोधी यहेबाको इसाइयतका भगवान् बनाना चाहा। अल्टेन्स्टाइनने उसी सालकी शरदमें उसे बोन युनिवर्सिटीमें इस ख्यालसे भेज दिया, कि वर्षके अन्त तक उसको लेक्चररसे प्रोफेसर बना दिया जायगा। लेकिन राज्यका कृपापात्र रहनेके लिए उसके पास हृदय और योग्यता नहीं थी। स्ट्रासने ईसाकी जीवनीमें इंजीलकी कहानियोंमें इतिहास ढूँढ़नेकी कोशिशकी थी, लेकिन बावरने स्पष्ट कह दिया कि इंजीलकी कहानीमें इतिहासका एक कण भी नहीं है, यह सारी कपोल-कल्पना है। इसाई धर्म ग्रीस-रोमके पुराने संसारपर विश्वधर्मके तौरपर लादा नहीं गया, बल्कि वह दुनियाकी एक स्वाभाविक उपज थी। जिस समय इस तरहके विचार बावरके दिमागमें परिपक्व हो रहे थे, उसी समय उससे नौ वर्ष छोटे कार्ल मार्क्स और बावरका ब्रावरका साथ था, वे दोनों भरके लिए भी एक दूसरेसे अलग न होनेवाले साथी थे। बोन जानेके बाद बावरकी यह कोशिश थी कि मार्क्स भी वहाँ आ जाये। बोनका वौद्धिक जीवन उसे निम्न श्रेणीका मालूम होता था, इसलिए वह मार्क्सको बुलाना चाहता था। बावरके पत्रोंसे मालूम होता है, कि वह काफी क्रान्तिकारी था, लेकिन उसके दिमागमें सदा क्रान्तिसे मतलब था दार्शनिक क्रान्तिका। प्रशियाके होहेनजोलेन राजवंशके प्रति उसकी बड़ी श्रद्धा थी, क्योंकि उसके ख्यालसे इस वंशके उदारमना राजाओंने चार शताब्दियों तक धर्म और राज्यके सम्बन्धोंको ठीक करनेका प्रयत्न किया। इस चापलूसीका यही फ़ावदा

हुआ, कि प्रशियाके नये राजा बावरके संरक्षक अल्टेन्स्टा इनको हटाकर उसकी जगह आइलहोर्नको राज्य-मंत्री बनाया, जो कि विज्ञान और दर्शन किसी क्षेत्रमें मी स्वतन्त्रताकी गन्धको वर्दाश्त करनेके लिए तैयार नहीं था। यद्यपि बावर कोपेनसे कहीं अधिक हेगेलीय विचारोंका और दर्शनका पड़ित था, लेकिन उसमें कोपेन जैसी दृढ़ता नहीं थी।

ग्रीक दार्शनिक सम्प्रदाय ग्रीक जीवनके राजनीतिक विश्वालनसे पैदा हुए। सन्देहवादी, भोगवादी एपिकुरीय तथा संयमवादी स्तोइक उसीसे अस्तित्वमें आये, जिन्होने इसाई धर्मके लिये रास्ता साफ किया। ये पीछेके दार्शनिक ज्ञातोन और अरिस्तातिलके विचारों और ज्ञानकी गम्भीरता तक नहीं पहुँच सके थे। हेगेलने उनको बड़ी तुच्छ दृष्टिसे देखने हुये उपेक्षित कर दिया था। इन ग्रीक दार्शनिकोंकी कोशिश थी कि व्यक्तिको उसके बाह्य परिस्थिति और बातावरणसे अलग करके अन्तर्मुखी कर दिया जाय, जहाँपर कि उनके विचारोंके अनुसार शान्तिमें वास्तविक सुख मौजूद है—ऐसी शान्ति, जिसका बाल भी बॉका नहीं हो सकता, चाहे सारी वायु दुनियामें धंस लीला क्यों न मची हो। यह आत्मचेतन, स्विज्ञानका ग्रीक दर्शन था, जो कि इसाई धर्मके स्वीकार करनेसे पहले रोमके उच्च वर्गमें सर्वत्र सम्मानित था। ग्रीक दर्शनके इस सिद्धान्त (आत्मचेतना) ने बावर, कोपेन और तश्ण मार्क्सको अपनी ओर बहुत आकृष्ट किया था। पुराने ग्रीक दर्शन (आत्मचेतना) ने किसी ऐसे प्रतिभाशाली दार्शनिकोंको नहीं पैदा किया, जैसे कि उसके पुराने स्वामाविक दर्शनने देमोक्रियु और हेराक्लिनु अथवा उनसे कुछ पीछेके ज्ञातोन अरिस्तातिल जैसोंको पैदा करके किया था। तो भी इस आत्मचेतना-दर्शनका एक महत्व भी था। इसने जातीय (हेलनिक) और सामाजिक (दासता-सम्बन्धी) उन सीमाओंको तोड़ दिया, जिनके तोड़नेका ख्याल भी ज्ञातोन और अरिस्तातिल नहा कर सकते थे। इस कामने पुराणे ईसाई धर्मको आगे बढ़ानेका भौका दिया, जो कि उस समय दलितों और उत्पीड़ितोंका धर्म था, वह दासों और कमकरोंको अपनी ओर खींच रहा था। इसमें शक नहीं, जब रोमके उच्च वर्गने भी ईसाई धर्मको स्वीकार कर लिया, तो उसका वह पुराना रूप जाता रहा, और वह फिर उन्हीं

पुरानी सीमाओंको पुनः स्थापित करनेमें सहायक होने लगा। फिर सामन्त ऐसे धर्मके लिए धर्म-युद्धोंमें तत्परता क्यों न दिखाते ? युरोपके सभी देशोंमें कभीला-शाहीके अनुकूल पुराने धर्मोंको बलपूर्वक नष्ट करके ईसाई धर्मको फैलानेकी क्यों न कोशिश करते ? ईसाइयत इस तरह भारी बन्धनका कारण बन गई। फिर १८वीं सदीके सामन्त-विरोधी बूज्या पुनरुज्जीवन-आनंदोलनने ग्रीक दर्शनकी आत्मचेतनाको फिरसे उज्जीवित करना चाहा, जिसमें धर्मके प्रति सन्देहवादियोंके सन्देह, एपिकुरियोंकी वृणाको अपनाया और स्तोइक लोगोंसे गणतन्त्री भावनायें उधार ली गई थीं।

बावर फ्रीडरिक महान्को पुनरुज्जीवन-आनंदोलनके बड़े नायकोंमेंसे मानता था। जिसमें कोपेन भी उससे सहमत था। मार्क्स अपने दोनों पुराने साथियोंके विचारोंसे इतने अंशमें सहमत था, कि ये तीनों दर्शन ग्रीक जीवनके लिए गम्भीर महत्व रखते थे। जो समस्या कोपेन और बावरके सामने थी, वह मार्क्सके सामने भी आई, लेकिन उसने इसका जवाब दूसरी ही तरहसे दिया। वह मानवी आत्मचेतनाको ही परम भगवान् कहता, जिसके सामने वह किसी भगवान्को सहन करनेके लिए तैयार नहीं था, चाहे वह धर्मके विकृतकारी दर्पण द्वारा उपस्थित किया जाता, या दार्शनिक अनुभूतिके तौरपर।

अपने पिताके जीवनमें ही मार्क्सने निश्चय कर लिया था, कि अपना भावी जीवन स्वतन्त्रापूर्वक अध्ययन-अध्यापनमें बिताऊँगा। उस समय तक युनिवर्सिटी और शिक्षा-संस्थान ही ऐसे स्थान थे, जहाँ दर्शन और साइंसके सम्बन्धमें स्वतन्त्र विचार रखनेवालोंके लिए स्थान था। १८३६ ई० के शरदमें मार्क्सको बर्लिनमें पढ़ते आठ सत्र हो चुके थे। उसे अन्तिम परीक्षा देकर छुट्टी लेनेकी जल्दी नहीं थी। जहाँ तक ज्ञानार्जनका सम्बन्ध था, वह अपने प्रयत्नों द्वारा काफी आगे चढ़ रहा था। मार्क्समें जीवनके अन्तिम क्षणों तक ज्ञानकी पिपासा और विद्याके प्रति असाधारण प्रेम था। उसने बर्लिनके जीवनमें ग्रीक दर्शनका बहुत गहराई तक प्रवेश करके सांगोपांग अध्ययन किया था, और ‘आत्मचेतनाके’ तीनों दार्शनिक सम्प्रदायोंको खूब पढ़ा। अपनी किसी कल्पनाको भी वह तुरन्त माननेके लिए तैयार नहीं था, और आत्मआलोचनाकी तो सीमा

नहीं थी । जैसे-जैसे विद्याके सूत्रोंको पकड़ते वह और गहराईमें उत्तरता जाता था, वैसे ही वैसे नवीन चिन्हासा उसके हृदयको अधिकृत करती जाती थी ।

बावरके बोन चले जाने और उसके आग्रहपर मार्क्सको भी वहाँ जानेकी इच्छा हुई । लेकिन जल्दी ही मालूम हो गया कि प्रशियामे अब कहीं भी विचार स्वातन्त्र्यके लिये जगह नहीं है । मई १८४० में अल्टेनस्याइन मर गया, संस्कृति-मञ्चालयको प्रीवी-कौसिलर लाइनर्वर्गने सँभाला और अपने पुराने अध्यक्षकी भावनाओंका काफी ख्याल रखना चाहा । बावरको उसने स्थायी पदपर नियुक्त करनेके लिये लिख भी दिया, लेकिन थोड़े ही समय बाद आइखहोर्न संस्कृति-मंत्री बना दिया गया । बोनके धर्म-विद्या-विभागने बावरके प्रोफेसरके तौरपर नियुक्तिको माननेसे इन्कार कर दिया । बावर शरद की छुट्टियोंमें बर्लिन आया था । वह बोन लौटनेको सोचही रहा था, कि उसको इस घटनाकी खबर लगी । वह निराश न हो इस आशासे लड़ने का मन करके लौट्य, कि मार्क्सके भी जल्दी आजानेसे हम दोनों मिलकर कुछ कर सकेंगे । लेकिन यह आशा सफल नहीं हुई । मार्क्स समझता था, कि बावरके मित्र और सहायक होनेके कारण बोनकी एडव-बन्दी मुक्ते पैर जमाने नहीं देगी, और जहाँ तक ऊपरका सम्बन्ध था, वह आइखहाने या लाइनर्वर्गकी सहानुभूति प्राप्त करनेके लिये अपनेको अयोग्य समझता था । जहाँ भी उदार विचारोंको सम्भावना थी, वहाँ आइखहोर्न रुदिवादियोंकी नियुक्ति करता जा रहा था । शेर्लिंगको उसने बर्लिनका रैक्टर (कुलपति)-नियुक्त किया, जोकि बुद्धापेमे अलहाम (भगवान्की ओरसे दिये जानेवाले शान) पर विश्वास करने लगा था, और स्ट्रासको हाल युनिवर्सिटीमें प्रोफेसर बनानेकी भी कोशिशकी ।

ऐसी स्थितिमें मार्क्स जैसे तरह हेगेलीयको क्या आशा हो सकती थी । उसे यह भी विश्वास नहीं था, कि बर्लिन युनिवर्सिटी उसे परीक्षामें सफल होने देगी, इसीलिये बर्लिनका ख्याल छोड़कर उसने किसी दूसरी छोटी युनिवर्सिटीमें पी० एच० डी० (दर्शनाचार्य) का निवन्ध पेश करनेका निश्चय किया । अभी भी उसके हृदयमें प्रोफेसर बनानेकी आकाशा थी, इसीलिये बावरके साथ मिल-

कर पत्रिका निकालनेका ख्याल छोड़ दिया, क्योंकि पत्रिकामें अपने उग्र विचारोंके कारण प्रकट हो जानेके बाद उसे प्रोफेसरी नहीं मिल सकती थी।

६. पी० एच० डी० का निवन्ध (१८४१ ई०)

मार्क्सने अपना पी० एच० डी० का निवन्ध जैना युनिवर्सिटीमें दिया, जिसपर १५ अप्रैल (१८४१ ई०) को उसे डाक्टरी उपाधि मिली। निवन्धका विषय था दैमोक्रितीय और एपीकुरीय स्वामाविक दर्शनके भेद। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि यह निवन्ध केवल डिग्रीके लिये अध्ययनका परिणाम नहीं था, बल्कि इसके लिये जो परिश्रम मार्क्सने किया था, वह स्वयं उसके तीव्र जिज्ञासाका फल था और उसके द्वारा स्वयं उसके भीतर परिवर्त्तन होता रहा था। ग्रीक दर्शनके गंभीर अध्ययनकी यह भूमिका मात्र थी। मार्क्सको ग्रीक दर्शन और उसके एपिकुरीय, स्तोइक तथा संदेहवादी दर्शनोंके सम्बन्धके बारेमें विस्तृत ग्रंथ लिखने की इच्छा थी। इस निवन्धमें उसने पुगण कल्पना -मूलक दर्शनके सम्बन्धमें सिर्फ एक ही उदाहरणका आधार लिया था।

मार्क्सके इस निवन्धकी कुछ बातें निम्न प्रकार हैं :

पुराने ग्रीक स्वामाविक दार्शनिकोंमें दैमोक्रेतुही ऐसा था, जो कि भौतिक-ज्ञादसे बहुत घनिष्ठ समीपता रखता था। उसका कहना था अमावसे कोई वस्तु नहीं निकल सकती (न भावो विद्यतेऽभावात्) और किसी वस्तु (भाव) का व्यंस भी नहीं हो सकता। दुनियाके सारे परिवर्त्तन भिन्न-भिन्न परमाणुओंके संयोग और विभाग मात्र हैं। कोई वस्तु या घटना अकस्मात् नहीं पैदा होती, हरेक घटना किसी कारण या आवश्यकतासे होती है। उसके विचारसे परमाणु और शून्य आकाश छोड़कर दुनियामें और कोई चीज अस्तित्व नहीं रखती, वह केवल कल्पना मात्र है। परमाणु असंख्य और अनन्त रूपमें अनन्त प्रकारके हैं। वह अनन्त आकाशमें निरन्तर गिरते रहते हैं। बड़े परमाणुके पतनका चेग अपेक्षाकृत अधिक होता है, इसलिये वह गिरते वक्त अपनेसे अपेक्षाकृत कम गति रखनेवाले छोटे परमाणुसे टकराते हैं। इस संयोगके कारण जो भौतिक गति और चक्कर शुरू होता है, उसीसे संसारकी सृष्टि आरम्भ होती है। पर-

माणुओंके इस तरहके सयोग-वियोगके असंख्य जगत् एक साथ या बारी-त्रारीसे क्वनते और लुप्त होते हैं ।

(१) एपिकुर (३४१-२७० ई० पू०)—एपिकुरुने देमोक्रिटके परमाणु-बादी दर्शनको लेकर उसमें थोड़ासा परिवर्तन किया । खास तौरका परिवर्तन यही था, कि एपिकुरु परमाणुओंके पननको सीधी रेखामें न मान चक्रकरणार मानता था । एपिकुरी-दर्शन पुराने जगत्का बड़ी ही उन्नत भौतिकवाद था, जिसकी रक्षा करके उसे लुकरेतियुक्ती कविता दे रेखम नहुराने हमारे पास पहुँचाया । काने एपिकुरुके परमाणुओंकी कल्पनाका उपहास किया, लेकिन तब भी उसने उसे ऐन्ड्रियक दार्शनिकोंमें उसी तरह सर्वोत्तम माना, जैसेकि बौद्धिक दार्शनिकोंमें प्लातोनको । इस प्रकार देमोक्रेत् और एपिकुरु दो महान् भौतिकवादी दार्शनिक थे । मार्क्सने एपिकुरुकी बातोंकी आलोचना करते हुये भी इस बातका उल्लेख किया, कि एपिकुरु केवल इन्द्रियोंके प्रत्यक्षोंही ही प्रमाण मानता था । देमोक्रिटुके लिये जो लक्ष्य था, वह एपिकुरुके लक्ष्यका एक साधन मात्र था । एपिकुरु प्रकृतिका बोध प्राप्त करना नहीं चाहता था, बल्कि प्रकृतिके सम्बन्धमें ऐसे दृष्टिकोणको खोजना चाहता था, जोकि उसके दर्शनका समर्थन करे । यह बतला चुके हैं, कि प्लातोनके बादके ग्रीसमें तीनोही प्रधान दार्शनिक सम्प्रदाय आत्मचेतनावादी थे । हेगेलके अनुसार एपिकुरीय दर्शन आत्माकी वैयक्तिक चेतनाका निराकार सार था । स्तोइक दर्शन उसीका निराकार समष्टिगत चेतना है । दोनों ही एकाग्री (एकात) कल्पना मात्र हैं, जिनके इसी एकातवादके कारण संदेहवादी उनके विरुद्ध थे ।

यह बहुत कुछ भारतीय दर्शनमें सौत्रान्तिकोंके ब्रह्मार्थवाद, योगाचारोंके विज्ञानवाद पर नागार्जुनके शून्यवादकी तरह दो अन्तों और दोनोंपर सन्देह उत्पादन करते हुये तीसरे वादकी सुष्ठि थी ।

(२) स्तोइक-दर्शन—एलियातिक जैनो (४६०-४३० ई० पू०) और साइप्रेसी (कुप्री) जैनो (३०४ ई० पू०) । इस दर्शनके बड़े-बड़े आचार्य थे । स्तौश्रा पौइकिले (नुकीली अटारीमें) द्वितीय जैनोने अपना विद्यालय स्थापित किया था, इसीलिये इस सम्प्रदायका नाम स्तौइक पड़ा । यद्यपि एपिकुरीय और

स्तोइक दोनोंका लक्ष्य एक था, लेकिन जहाँ एपिकुरीय परमाणुवादी और व्यक्ति-भावीये, वहाँ स्तोइक सामान्य (अवयवोंको) सबोंपरि मानते हुए। कहते थे : अवयव अवयवीके सर्वथा अर्धान है। इस प्रकार उनका दर्शन नियति-भाग्यवादकी ओर ले जाता था। राजनीतिक तौरसे वह गणतंत्रके पक्षपाती थे और धार्मिक तौरसे पुराने मिथ्या-विश्वासों और रहस्यवादसे अपनेको मुक्त नहीं कर सके थे। वह दार्शनिक हेराक्लितु (५३५-४७५ ई० पू०)के दर्शन-को अपनाते थे, जोकि बुद्धका समकालीन औरहाँ विचारोंमें कितनीही समानता रखता था। जैसे एपिकुरीय देमोक्रिटुका अन्धा-धूम्ख अनुगमन करनेके लिये तैयार नहीं थे, उसी तरह स्तोइक भी हेराक्लितुके दर्शनको केवल साधनके तौर-पर इत्तेमाल करते थे। इसीलिये व्यक्तिके पृथक् होनेके सिद्धान्तके कारण एपिकुरीय दर्शन नियतिवादसे मुक्त हो प्रत्येक व्यक्तिके धैर्य-धारी दुखिया त्वीकार करता था। अपने ऊपर शासन करनेवाले अधिकारियोंका अनुसरण करो, इसको कहते हुये भी एपिकुरुने धर्मके वन्यनोंसे स्वतंत्र होनेकी घोषणा की थी।

मार्क्सने इसके बाद दोनों प्राकृतिक दर्शनोंके भेदकी व्याख्याकी। देमो-क्रिटु केवल परमाणुओंसे भौतिक अस्तित्व तकही अपनेको सीमित रखना चाहता था, लेकिन एपिकुरु उससे आगे बढ़कर कल्पना, आकृति तथा उपादान-सामग्री, सार और अस्तित्वके तौरपर भी परमाणुपर विचार करता था। एपिकुरु वास्तव संसारका केवल भौतिक आधार ही परमाणुको नहीं मानता था, बल्कि वह भी कि परमाणु पृथक्-भूत व्यक्तिका प्रतीक, तथा निराकार व्यक्ति (आत्म-चेतना)का साकार नियम भी है। देमोक्रेतूने परमाणुके सरल रेखामें नीचे पतनसे सभी घटनाओंका होना सिद्ध किया, जबकि एपिकुरुने परमाणुओंको सरल रेखा छोड़ चक्कर काटते गिरते हुये मानकर नियतिवादसे मुक्ति प्राप्तिको जैसाकि एपिकुरीय दर्शनके सर्वश्रेष्ठ भाष्यकार लुकरेतियूने बतलाया है : यदि परमाणुओंकी चक्करदार गति न होती, तो विचार-स्वार्तन्यकी कहाँ गुंजाइश रहती ? सृष्टि और कल्पना-सम्बन्धी परमाणुके विचारोंके बीचमें जो विरोध देखा जाता है, वह सारे एपिकुरीय दर्शनमें मिलता है। तोभी एपिकुरीय प्राकृ-

तिक दर्शनने भौतिक जड़ताको त्याग कर दिया । एपिकुरुको मार्क्सने “सर्वश्रेष्ठ ग्रीक विचारक माना है, जिसने धर्मकी स्वेच्छावारितासे मनुष्यको मुक्त करनेका प्रयत्न किया । मार्क्सने एपिकुरीय मूल विचारधाराको उससे भी अधिक आगे और स्पष्टताके साथ विकसित किया, जितना कि स्वयं एपिकुरुने किया था । हेगेलने एपिकुरीय दर्शनको सिद्धान्तके तौरपर विचारहीन बतलाया था : इसमें शक नहीं कि एपिकुर स्वनिर्भित पुरुष था, वह अपने विचारोंको जनसाधारण-की भाषामें रखना चाहता था । मार्क्सने एपिकुरुके दर्शनको इतनी हल्की नजरसे नहीं देखा, बल्कि उसने कहा, कि एपिकुर अपने द्वद्वादी शैलीको बड़े अधिकारपूर्वक इस्तेमाल करता है । हेगेलके शिष्य मार्क्सकी भाषा इस निवन्धमें बड़ी परिपूर्ण मालूम होती है । वह द्वद्वादी शैलीको अपनी इस कृतिमें बड़े अधिकारपूर्वक इस्तेमाल करता है, और जहाँ तक इसका सम्बन्ध है, हेगेलके दूसरे अनुयायियोंसे वह कहाँ बढ़कर अपने शुद्धकी नपी-तुली और भावों भरी भाषाका उपयोग करता है ।

इस समय (१८४६ ई०) तक यद्यपि मार्क्स स्वतन्त्र विचारकके तौरपर कुछ आगे बढ़ा था लेकिन हेगेलीय दर्शनका विज्ञानवादी आधार अब भी उसपर पूरा छाया हुआ था, जिसका एक परिणाम था देमोक्रित्के विपक्षमें उसकी सम्मति । परमाणुवादको उसने बाहरी तजवेंका परिणाम बतलाकर एपिकुरीयकी प्रशसा करते हुये उसे परमाणुवादके साइन्सका संस्थापक माना । यद्यपि वात्त-विकाता यह है, कि परमाणुवादके प्रथम प्रतिष्ठापक देमोक्रित्तु था, न कि एपिकुरु । हेगेलके विज्ञानवादका प्रभावही उससे ऐसा करा रहा था । मार्क्सके अपने विचार ये : जीवनका मतलब कर्म करना और कर्म करनेका मतलब सर्वर्थ है । सर्वर्थ करनेके लिये शक्ति देनेवाले तत्वकी आवश्यकता थी, जिसे मार्क्स एपिकुरुके दर्शनमें पा रहा था । उसने धर्मके बन्धनोंको तोड़नेके लिये विद्रोह करनेका प्रचार किया : न विजलीकी कड़क-चमकसे न देवताओंके भयसे, न द्यौके नज़ोंकी गरगराहटसे भयमीत हो ।

अपने निवन्धके प्रावक्षयनको जिसेकि मार्क्स अपने निवन्धके साथ प्रका-

शित करना चाहता था—उसने अपने समुद्रको बड़े भावुकतापूर्ण शब्दोंमें समर्पित किया था।

मार्क्सके इस निबन्धकी अन्तिम पंक्तियोंमें उसके भविष्यके कर्मज्ञेत्रकी भी कुछ-कुछ भलक मालूम होती है। उसने लिखा था: जब तक कि विश्व-विजयी और अपराजित हृदयमें एक भी बँड हरकत कर रही है, तब तक वह एपिकुरुके इन शब्दोंमें शत्रुओंकी सदा अवहेलना करता रहेगा: ‘वह अनी-श्वरवादी नहीं है, जो कि पामर जन-समूहके देवताओंकी अवमानना करता है, बल्कि अनीश्वरवादी वह है, जो कि जन-समूहके देवताओंके सम्बन्धी रायोंको स्वीकार करता है। प्रोमेथियोंके कथनानुसार: सीधा सत्य यह है, कि मैं सभी देवताओंके प्रति घृणा रखता हूँ। तथा प्रोमेथियोंने देवताओंके चाकर हेरमीको जैसा उत्तर दिया था, उन्हीं शब्दोंमें:

निश्चित रहो, तुम्हारी निकृष्ट दासतासे,
मैं अपने दुखोंको कभी नहीं बदलूँगा।

प्रोमेथियों दार्शनिक जगतका सर्वश्रेष्ठ संत और शाहीद है। मार्क्सके इन विचारोंको पढ़कर उसके मित्र बावरको भी बहुत भय लगने खगा। इस द्वितीय प्रोमेथियोंके लिये भला अब प्रशिया-राज्यकी युनिवर्सिटीमें जगह कैसे मिल सकती थी? प्रशियनशाही तो हर जगह विचार-स्वातंत्र्यको खत्म कर रही थी। १८४१ई० के वसंतमें आइकहोर्नने ब्रूनो बावरके विरुद्ध बोनके धर्मविद्याविभागको इसलिये निर्लज्जतापूर्वक खड़ा किया, कि बावरने इंजीलकी आलोचना की थी। प्रशियाका नया राजा विल्हेल्म अपनेको स्वतंत्र प्रेस और स्वतंत्र विचारोंका समर्थक कहता था। उसने सेन्सर करनेमें फिलाई करनेका आदेश निकाला। लेकिन यह विल्कुल दिखावेकी बात मालूम दुई, जब कि १८४२ई० के ग्रीष्ममें रूगेको अपनी पत्रिकाको सेन्सर करानेका हुक्म मिला। इससे बचनेके लिये रूगेको १ जुलाई १८४१ई० से अपनी पत्रिका ड्वाशे यारबुखेर (जर्मन वर्षपत्र) को डेस्डेनसे निकालना पड़ा। इस कड़ाईने मार्क्स और बावरको बतला दिया, कि अपना पत्र निकालनेकी जगह यही बेहतर है, कि रूगेके पत्रोंमें ही लेख दिया जाय।

यद्यपि डाक्टरका निबन्ध युनिवर्सिटीमें स्वीकृत हो गया, लेनिन मार्क्सने शायद प्रेसकी इन्ही कठिनाइयोंके कारण उसे प्रकाशित करनेका ख्याल छोड़ दिया, या कम से कम उसकी जल्दी नही समझी, और आगेके कामोंकी तत्परताने फिर उसे बैसा अवसर पानेका मौका नही दिया।

इसी साजके नवम्बरमें बीगंडने एपिकुरही नहीं हेगेलको भी पक्का अनीश्वर-वादी बतलाते हुये एक पुस्तक नास्तिक, खीस्ट-विरोधी हेगेलके विरुद्ध न्यायका अन्तिम द्रम्य प्रकाशित किया। एक शुष्ट लेखकके तौरपर बीगंडने अन्तिम द्रम्य में अपनेको पक्का धर्मविश्वासी दिखालाते हुये हेगेलकी नास्तिकतापर बाहबलकी मविष्यद्वाणियोंको उद्धृत करते हुये अफसोस प्रकट किया। माझा और शैली इतनी सुन्दर थी, तक एक बार पठित जनतामें इस पुस्तिकाने बड़ी सन-सनी फैला दी, और किने ही धर्मविश्वासी तो सच्चसुच धोखा खा गये। प्रकाशक बीगंड था, लेकिन पुस्तिकाका गुमनाम लेखक ब्रूनो बावर था। देर नहीं लगी, अन्तिम द्रम्य के खिलाफ निषेधाज्ञा निकल गई। बीगंडके लिये उसका और प्रकाशित करना कठिन हो गया। इसी समय मार्क्स बीमार हो गया, और उसके सुसुर लुडविग फान वेस्ट फालेनकी भी तीन महीना बीमार रहकर ३ मार्च १८४२ को मृत्यु हो गई। ऐसी स्थितिमें मार्क्स कुछ नहीं कर सका। १० फरवरीको उसने एक मामूली लेख सबसे नई राजाज्ञाके बारेमें लिखा। यद्यपि यह लेख सेन्सरकी कठिनाईजो हल्का कर्नेके ख्यालसे लिखा गया था, और उसका उस समय कोई महत्व नही समझा गया, लेकिन बस्तुतः इसी लेखके द्वारा मार्क्सने राजनीतिक जीवनमें प्रवेश किया। मार्क्सने उस लेखके साथकी चिट्ठीमें लिखा था, यदि सेन्सर मेरे लेखका सेन्स्युर (खड़न) न करे तो इस लेखको जितना जल्दी हो सके छाप दे। मार्क्सका अनुमान ठीक निकला। २५ फरवरीको रुग्ने लिखा कि ड्रूवार्श यारकुखेरको सेन्सरके कारण हृदये अधिक कठिनाई हो रही है, इसलिये तुम्हारे लेखका छपना असम्भव है। रुग्ने यह भी लिखा, कि सेन्सरने जिस सामग्रीको रद्द कर दिया है, उसमेसे कई सुन्दर चीजें मैंने जमा कर ली हैं, जिन्हें अनेकोटी फिलोसोफिका दार्शनिक उपाख्यानके नामसे देशसे बाहर स्वीजलैंडमें छपवाना चाहता हूँ। मार्क्सने

अपने पुराचके पत्रमें इसका बड़े उत्साहके साथ स्वागत किया, क्योंकि इसी समय खिलौनी कलाके ऊपर लिखे गये उसके निवन्धके छापनेमें सक्सनी प्रदेशके सेन्सरने रक्खट डाल दी थी। यह लेख 'अन्तिम ट्रम्प' के द्वितीय भागके तौरपर निकाला जानेवाला था। मार्क्सने लेखको फिर दोहराया और उसे हेगेलीय प्राकृतिक नियमकी आलोचनाके साथ अनेकडोटमें छाप देनेके लिये लिखा। हेगेलने प्राकृतिक नियम कहकर राजतन्त्रका समर्थन किया था। उसीका खंडन करते मार्क्सने संवैधानिक राजतंत्रपर आक्षेप करते हुये लिखा था, यह पूर्णतया परस्पर-विरोधी और वर्षासंकरी विचार-धारा है। रुग्नेने उसे लेना स्वीकार किया था, लेकिन सेन्सर-सम्बन्धी लेखको छोड़कर दूसरा उसे कोई नहीं मिला।

२० मार्चको मार्क्सने बतलाया कि मैं अपने क्रिस्तानी-कला-सम्बन्धी निवन्धको "अन्तिम ट्रम्प" की शैली, तथा हेगेलीय परिभाषाओंकी बेकारकी सीमाओंसे मुक्त करके अधिक स्वतन्त्र और व्यापक चाहता हूँ। इस कामको उसने अप्रैलके मध्य तक खत्म कर देनेका वचन देंदिया था। २७ अप्रैलको निवन्ध प्रायः समाप्त कर चुका था, और उसने रुग्नेसे कुछ दिन और ठहरनेकी प्रार्थना करते, यह भी कहा था, कि मैं उसका संक्षेप ही भेज सकूँगा, क्योंकि अब निवन्ध बढ़ते बढ़ते एक पुस्तकका रूप ले चुका है। २९ अक्टूबरको रुग्नेने सूचित किया था, कि अनेकडोटा तैयार हो गया है, और यह जूनिच (स्वीजलैंडमें) 'लितेरारिश्चेस्क-कोन्टोर' द्वारा प्रकाशित किया जायगा। उसने अभी भी मार्क्सके निवन्धके लिए जगह छोड़ रखती थी, लेकिन वह यह भी जानता था, कि मार्क्स जब ऐसी काममें लग जाता है, तो उसे आधेपर छोड़ना नहीं चाहता। रुग्ने मार्क्ससे सोलह वर्ष बड़ा था, लेकिन वह बावर और कोपेनकी तरह ही उसकी प्रतिभा और योग्यताका जबर्दस्त समर्थक था। रुग्ने बेचारा प्रतीक्षा ही करता रह गया। इसी समय मार्क्सने अपनी दिलचस्पी दर्शनसे भी ज्यादा एक दूसरे चेत्रमें दिखलाई, जिससे रुग्ने संतुष्ट हुआ। सेन्सर-सम्बन्धी लेख द्वारा राजनीतिके चेत्रमें प्रवेश करनेके बाद मार्क्स अनेकडोटमें दर्शनके ताने-जाने बुननेकी जगह अब अपने जीवनके मूल कर्मक्षेत्र राजनीतिमें प्रवेश करनेके लिये तैयार था।

अध्याय ४

प्रथम कर्मकेन्द्र (१८४२ ई०)

१. राइनिश जाइटुंग

राइनलैंड जर्मनीका उद्योग-प्रधान प्रदेश था, जहाँ अबूज्वारी एक नया वर्ग पैदा हो चुका था। वह सामन्ती निरंकुश शासनको बैसे भी पसन्द करनेके लिये तैयार नहीं था, ऊपरसे फ्रासकी सीमापर होनेसे फ्रैंच-कातिका प्रभाव उसपर पड़ना जरूरी था। १८८८ ई०की फ्रैंच-महाकांति और १८३० ई०की घटनाओंने फ्रांसमे सामन्तवादको खत्म कर पूँजीवादी शासनको स्थापित कर दिया था। पढ़ोसी बूर्जार्वा वर्गकी तरह राइन-उपत्यकाके जर्मन भी सड़ी सामन्ती व्यवस्थाका विरोध करनेके लिये तैयार हो गये। आम तौरसे निहित स्वार्थवाले वर्गोंका जैसा रखैया है बैसे ही यहाँके कुछ लोगोंने पहले सरकार-समर्थक एक पत्र निकालनेका ख्याल किया, लेकिन उसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। सरकारी समर्थक 'कोलानिशो जाइटुंग' वहाँके पत्रोंके क्षेत्रमें अपनेको इजारेदार समझता था, और उसे बल्लिनकी सरकार का समर्थन प्राप्त था। इस इजारेदारीको हटानेके लिये कई पत्रोंने कोशिश की, लेकिन उन्हें अकालमें ही कालके गालमे पड़ना पड़ा। कई मर्टबे असफल होनेके बाद अब कुछ धनी-भानी नागरिकोंने पूँजीका प्रबन्ध करके नये आधारपर एक पत्र निकालनेका निश्चय किया। राइनिश अल्गेमाइन जाइटुंग (१८३८ ई०में स्थापित) को 'राइनिश जाइटुंग' के नामसे निकालनेकी सरकारसे अनुमति मिल गई। कोलोनके बूर्जार्वा प्रशिया-सरकारको दिक करनेकी इच्छा नहीं रखते थे, यद्यपि राइनलैंडके लोग प्रशियनोंको विदेशी जैवा ही मानते थे और कितनी ही मर्टबे वह प्रशियाकी अपेक्षा फ्रासके साथ अपनी सहानुभूति दिखलाते थे। लेकिन अब उद्योग-घरेमें वडी तेजीसे विकास हो रहा था, और प्रशियन भी राइनलैंडकोके साथ कुछ रियायत करनेके लिये तैयार थे। राइनवालोंकी माँग थी—राजकीय कोषका

मितव्ययताके साथ प्रबन्ध, रेलवेका विस्तार, कोर्ट-फीस और स्टाम्प-करोंमें कमी करना आदि ।

कालोनमें १ जनवरी १८४२ में राइनिश ज़ाइटुंग (राइन समाचार) को विरोधी पत्रके तौरपर ही निकालना पड़ा । जल्दी ही पत्रकी ग्राहक-संख्या आठ हजार तक पहुँच गई, और उसके प्रभावसे सरकार भी आशंकित हो पड़ी । राइनलैंडके कैथलिक पादरियोंको प्रोटेस्टेंट जर्मन, सरकार दबाना चाहती थी । नये पत्रके सम्पादक-मंडलमें थे तरुण बैरिस्टर जार्ज युंग, तरुण असेसर डागोवर्ट ओपेनहाइन औपेनहाइन मोजेज इसके प्रभावमें आकर फ्रैंच समाजबादसे परिचित हो गया था । दोनों सम्पादक तरुण हेगेलियोंसे प्रभावित थे । उनके लिये यह स्वाभाविक था, कि अपने समान विचारके तरुणोंसे लेख लिखवायें । अपने जन्मप्रदेशका पत्र होनेके कारण भी मार्क्सका आरम्भ हीसे राइनिश ज़ाइटुंग के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था । मार्चके अन्तमें द्विरसे कलोन जाना चाहता था, लेकिन वहाँका जीवन मार्क्सको अधिक अशांत मालूम होता था । इस समय तक बाबर बोनसे हट चुका था, लेकिन मार्क्स नहीं चाहता था, कि प्रतिक्रियावादी वहाँ चैनकी बंसी बजावें, इसलिये उसने बोनमें रहते कोलोनके नये पत्रके लिये उन लेखोंको लिखना शुरू किया, जिन्हें जल्दी ही सभी लेखोंसे श्रेष्ठ माना जाने लगा ।

यद्यपि तरुण हेगेलियोंके लेखोंको पत्रमें स्थान देना सम्पादकद्वयके कारण था, लेकिन यह निश्चित ही है, कि बिना भागीदारोंकी अनुमतिके ऐसे उग्र लेख पत्रमें नहीं छापे जा सकते थे । भागीदार समझते थे, कि उनके जैसे अतिभाशाली सम्पादक और लेखक जर्मनीमें दूसरे नहीं मिल सकते । मार्क्सकी सिफारिशपर रुटेनबर्गको भी सम्पादकीय-विभागमें लिया गया, जिसे बर्लिन सरकार भयंकर क्रांतिकारी समझती थी और उसपर बराबर खुफिया-विभागकी निगाह रहती थी । मार्च १८४८ में फ्रीडरिक विलियम (विल्हेल्म) चतुर्थ यह समझकर काँप गया, कि उस सालकी क्रांतिका वास्तविक ग्रेक रुटेनबर्ग था । यद्यपि बर्लिन सरकार असंतुष्ट थी लेकिन तो भी वह नहीं चाहती थी,

कि कोलनिशे जाइगको राइनलैंडमें एकच्छुत्र राज्य करनेके लिये छोड़ दिया जाय। इस प्रकार राइनिश जाइटुंग जल्दी अकाल कवलित नहीं हो सका। पहले लेखके कुछ ही महीने बाद १८४२ ई० में मार्क्सिको पत्रका सम्पादक बना दिया गया। इसीसे मालूम होगा, कि पत्रकारिताके पहले ही प्रयासमें उसने अपनी प्रतिमामें कितना चमल्कार दिखाया था! उसने भी इसे सौभाष्यकी बात समझी, व्योकि अब उसके हाथमें जबर्दस्त लेखनीके साथ-साथ एक जबर्दस्त पत्र भी आ गया था।

२. रेनिश डीट (राइन संसद्)

राइनलैंडमें एक अलग प्रादेशिक डीट (डाइट, संसद्) थी। १८४१ ई० में नौ सप्ताह तक उसका अधिवेशन हुसेलडोर्फमें होता रहा। मार्क्सिने इसकी कार्यवाइयोपर पॉच लम्बे निवन्ध लिखकर बतलाया कि प्रादेशिक संसदें नपुंसक नकली प्रतिनिधि-सम्पत्याये हैं, जिन्हें प्रशियाके राजाने १८१५ ई० में सविधान्न प्रदान करनेवाली प्रतिज्ञाके भगको छिपानेके लिये कायम किया है। इन परिसिद्धों-की बैठकें बन्द कमरेमें होती, और अधिक से अधिक छोटी-छोटी साम्प्रदायिक बातों पर ही बहस करने की उन्हें स्मरणन्तरा थी। १८३७ ई० में कोलोन और पोजेनमें केशलिंग चर्चसे झगड़ा हो जानेके बाद से संसदका अधिवेशन नहीं हुआ था। इन संसदोंके सदस्य वही होते थे, जो जर्मीनियारे थे। देहातसे आए मेम्बर लिये जाते थे, शहरी जर्मीनियारोंके एक-तिहाई और हर जर्मीनियारोंके एक-चौथाई। साथ ही यह भी शर्त थी, कि कोई भी निर्णय बिना दो-तिहाई बहुमतके वैध नहीं माना जायेगा। ऐसी संसदोंके प्रति लोगोंकी वृणा क्यों न होती, लेकिन अपनी गदीपर बैठनेके बाद १८४१ ई० में फ्रेडरिक विलियम चतुर्थने संसदोंका अधिवेशन करवाया, इस प्रकार वह कर्ज लेनेमें सुमीता प्राप्त करना चाहता था। लेकिन बन्द कमरेमें अधिवेशन होना नागरिकोंको पसन्द नहीं था। कोलोनके हजारों निवासियोंने हस्ताक्षर करके आवेदनपत्र भेज कर कहा, कि संसदके अधिवेशनमें साधारण जनताको भी जानेका अधिकार हो, उसकी कार्य-वाई रोज प्रकाशित की जाय, बिना काटे-छाँटे सारी रिपोर्ट संसदकी कार्यवाइयोंमें

छापी जायें। संसद और सभी प्रादेशिक बातों पर प्रेसमें बहस करनेका अधिकार हो, और सेन्सरको, हटाकर एक निश्चित प्रेस-कानून बनाया जाय। संसदने नागरिकोंकी माँगोंका समर्थन करनेमें अच्छम हो राजासे केवल यही प्रार्थना की, कि अपने अमिलेखोंमें वक्ताओंके नामों को प्रकाशित करनेकी आशा दी जाय, और मनमानी हयकर सेन्सर करनेका एक कानून बना दिया जाय। राजाने उनकी विनम्र प्रार्थनाओं भी ढुकरा दिया। संसदके सदस्य कितने प्रतिक्रियावादी थे, यह इसीसे मालूम होगा, कि संसद् सभी प्रतिगामी बातोंका समर्थन करती थी। हाँ, कोलोन और राइनलैंडके आर्थिक ढाँचेमें कितने ही परिवर्तनों के कारण वह ऐसी बातोंको मानना पसन्द करती थी, जो कि नये बूर्जा वर्गके अनुकूल हो। सरकारने भू-सम्पत्ति के बटवारेमें एक सीमा निश्चित करनेका ग्रस्ताव सकता था, जिसमें कि शक्तिशाली किसान-वर्ग कायम रहें। संसदने आठ बोर्डोंके विरुद्ध ४६ बोर्डोंसे उसे अस्वीकार कर दिया।

मार्क्सने अपने लेखोंमें संसद्की बड़ी कड़ी आलोचना की : संसद् दिनके उजालेमें मुँह नहीं दिखा सकती। अपनी मंडलीकी गोपनीयता उसके लिए बहुत अनुकूल है। मार्क्सने उसे बकलोल संसद कहा था। मार्क्सने अपने लेखोंमें अपनी जनभूमि राइनलैंडके जलवायु और भूभागका बड़ी भावुकताके साथ नाम लिया था। उन लेखोंमें आज भी राइन तटके द्राक्षाउदानों और सुखद धूपका आनन्द और गर्मी मिलती है। इसी समय मार्क्सने लेखकके धर्मके सम्बन्धमें लिखा था : एक लेखकको जीवित रहनेके लिये पैसा कमानेके ख्यालसे लिखना चाहिये, लेकिन उसे पैसा कमानेके लिये जीना और लिखना नहीं चाहिये।...प्रेसकी पहली स्वतंत्रता यह है, कि उसे व्यापारसे मुक्त करना। जो लेखक प्रेसको केवल धन कमानेका साधन बना छोड़ता है, उसे इस आंतरिक दासताका दण्ड मिलना उचित है, बाहरी दासता अर्थात् सेन्सरकी रोक...उसके लिये दंड है। मार्क्सने अपने जीवन भर लेखकके इस धर्मका पालन किया।

मार्क्सने कोलोनके कैथलिक लार्ड पादरीकी गिरफूतारीको गैर-कानूनी चतुलाकर उसकी कड़ी आलोचना की। अभी भी वह मार्क्सके विचार जितने कानून और न्यायकी दृष्टिसे थे, उतने आर्थिक कारणों पर निर्भर नहीं करते थे।

अभी भी वह कानून और राज्यके सम्बन्धमें हेगेलीय दर्शनकी सीमासे बाहर नहीं निकल सका था ।

३. संघर्षके पांच मास

“राइनिश जाइटुंग” जर्मनीके उद्योगप्रधान प्रदेशका पत्र था । यद्यपि पहले उसका उद्देश्य वह नहीं था, लेकिन वह जनताकी सहायतासे ही फूल-फल सकता था, इसलिये जनप्रिय बननेके लिये आवश्यक था, कि वह कुछ गर्म-गर्म भी चीजे दे, इसीलिये उस सालकी गर्मियोंमें पत्रमें सम्बन्धतः मोजेज हेतुकी प्रेरणासे, बर्लिनमें आवासोंकी कठिनाइयोंके बारेमें एक या दो लेख निकले, जिनमेंसे एक बाइट्लिंगके लेखका उद्धरण था, दूसरा स्ट्रासबुर्गके पंडित काग्रेसकी रिपोर्टके तौरपर था, जिसमें समाजवादी समस्याओंका जिक्र करते हुए कहा गया था, कि हीन वर्ग जो मध्यम वर्गकी सम्पत्तिकी ओर ईर्ष्या-की दृष्टिसे देख रहा है, उसकी तुलना १७८८ ई० की फ्रेच-क्रांतिमें सामन्तोंके विस्फूर्त मध्य वर्गके संघर्षसे किया जा सकता है, फर्क इतना ही है कि इस समय समस्याका हल शान्तिपूर्वक हो सकता है । लेखमें कोई ऐसी उग्र क्रान्तिकारी बात नहीं थी, लेकिन इसके कारण ‘राइनिश जाइटुंगपर’ कम्युनिज्म (साम्यवाद) की ओर झुकनेका आन्दोलन किया गया । आगस्टबुर्गके ‘अल्लोमाइन जाइटुंगने’ अपने राइनके सहयोगीकी कड़े शब्दोंमें आलोचना की—धनी-मानी व्यापारियोंके पुत्र, इस बातका जरा भी ख्याल किये बिना—कि हम इस प्रकार अपने धनमें क्लोनके गिर्जोंमें काम करनेवाले आदमियों या जहाजी-कुलियोंके सहभागी बनाए रहे हैं—समाजवादी विचारोंसे बच्चोंकी । तरह आगके साथ खेल रहे हैं । ‘राइनिश जाइटुंगकी’ बातको लड़कपन कहते हुए लिखा, कि जर्मनी जैसे आर्थिक तौरसे पिछड़े हुये देशमें मध्य-वर्गकी १७८८ ई० के फ्रासके सामन्तोंके भाग्यसे तुलना करना निरो मूर्खता है । मास्टर्का पहला सम्पादकीय कर्त्तव्य था, इस तरहके आनेपोका जवाब देना । यद्यपि तथाकथित समाजवादी विचारोंके ऊपर हुये प्रहारके जवाबमें कलम उठानेकी उसकी इच्छा नहीं होती थी, तो भी, उसने कुछ लिखना जरूरी समझा और सविस्तार आलोचनाके लिये अधिक अध्ययनके बाद लिखनेका बादा किया ।

मार्क्सने उस समय जो लिखा, उससे उसे सन्तोष नहीं हुआ। वह बड़ी उत्सुकतापूर्वक ऐसे अवसरकी प्रतीक्षा करने लगा, जब कि वह फिर अध्ययनमें लग सकेगा। लेकिन इस समय तो वह 'राइनिश जाइदूज़में' दिलोजानसे, इच्छा लगा था, कि अपने बर्लिनके पुराने साथियोंसे सम्बन्ध तोड़नेके लिये भी तैयार था। बर्लिनमें अब हेगेलीय क्लबके उसके साथी अब 'मुक्त मानव' समाजवालोंके रूपमें बदल गये थे। मार्क्सको उनकी यह बात पसंद नहीं आई, क्योंकि उसमें इसे आत्म-विज्ञापन और अहमन्यताकी बू आती थी। तब भी अभी जावरपर उसका विश्वास था। बर्लिनके उसके पुराने साथी अब ऐसे लेख मेजते थे, जिनमें कुछको सम्पादक और कुछको सेन्सर काट देते थे। अभी तक रूटेनबर्गका बर्लिनके तरण लेखकोंके साथ जैसा वर्ताव था, उससे वह समझते थे कि 'राइनिश जाइदूज़' हमारे विचारोंका बाहक है; लेकिन अब सम्पादकी कुर्सीपर मार्क्स बैठा था। मार्क्स और बर्लिनके पुराने साथियोंका सम्बन्ध-विच्छेद जवाबदर १८४२में हुआ। इस समय हेरवेग और लगे बर्लिन गये। हेरवेग उस समय अपनी सफलतापर फूला नहीं समाता था। क्लोन जानेपर बड़ी जल्दी वह मार्क्सका मित्र बन गया था। ड्रेसडेनमें रुगेसे उसकी मुलाकात हुई, जिसके साथ वह बर्लिन पहुँचा। 'स्वतन्त्र मानव' की कलावाजियाँ उसको बिल्कुल फीकी और बेकार मालूम हुईं। रुगे अपने सहयोगी ब्रूनो बावरसे खासकर 'स्वतन्त्र मानवके' इस विचारपर उल्लभ पड़ा। व्यावहारिक पहलूपर बिना विचार किये हुये राज्य, वैयक्तिक-सम्पत्ति और परिवारको उठा देने जैसी बात बहुदी है—हेरवेगने जब इस तरहकी नुक्ताचीनीकी, तो उसके विरोधियोंने भी छिप ढूँढ़ते राजा से उसकी मुलाकात एवं एक धनी लड़कीसे मँगनीकी बात लेकर आक्षेप किया। अन्तमें दोनों पक्षोंने 'राइनिश जाइदूज़का' सहारा लिया। रुगेकी सहमतिसे हेरवेगने एक वक्तव्य लिखकर कहा, कि 'स्वतन्त्र मानव' व्यक्तिके तौरपर बहुत भले आदमी हैं, लेकिन आत्म-विज्ञापनके लिये उनका राजनीतिक रूपानीपन (रोमांचकता) आदि उनके लक्ष्य और स्वतन्त्रताके पक्षको नुकसान पहुँचाता है। मार्क्सने इस वक्तव्यको छाप दिया, इसपर मेयेनने 'स्वतन्त्र मानवकी' तरफसे खूब कड़े लेख लिखे। पहले मार्क्सने इनका जवाब

बड़ी नर्मासे दिया और कोशिशकी कि 'स्वतन्त्र मानवका' उपयोगी सहयोगी बना रहे—मैं चाहता हूँ, कि शिकायतोंमें इतनी अधिक अस्पष्टता न हो, शब्दाङ्कव, आत्म-प्रशंसा कम और पतेकी बातें ज्यादा हो, वास्तविक स्थितियोका सविस्तर वर्णन हो और कथनीय विषयके सम्बन्धमें व्यावहारिक ज्ञानका अधिक परिचय दिया जाय। मेरी रायमें यह ठीक नहीं है, बल्कि इसे नैतिकताके विरुद्ध भी कहा जा सकता है, कि साधारणत्सी आलोचना आदिमें संसारको एक बिल्कुल नई दृष्टिसे देखनेवाले कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट मतवादोंको खामखा डाला जाय। अगर कम्युनिज्मपर बहस करनी ही है, तो उसे विस्तारपूर्वक और एक बिल्कुल दूसरे ढंगसे करना चाहिये। मैंने उनसे कहा कि अगर धर्मका खण्डन करना है तो उसे दूसरी तरह नहीं बल्कि राजनीतिक स्थितिके साथ खण्डन करना चाहिये, क्योंकि ऐसा करना एक समाजारपत्रके अधिक अनुरूप होगा और इससे हमारी जनताकी ज्ञान-बृद्धि होगी। धर्म अपने आत्मिक बिल्कुल खूब स्वर्गके सहारे नहीं, बल्कि पृथ्वीके सहारे जीता है। वह अपने आप लुप्त हो जायगा, जब वह उस्ती वास्तविकता एक बार विलीन हो जायेगी, जिसके विचारांका वह प्रतिनिधित्व करता है। अन्तमें मैंने उनसे यह भी कहा, कि अगर वह दर्शनके सम्बन्धमें कुछ कहना चाहते हैं, तो नास्तिकवादके विचारांके साथ खेलना कम करें—उनका ऐसा करना उन बच्चोंकी याद दिलाता है, जो सुननेके लिये तैयार हो। किसी आदमीसे बड़े लंचे स्वरसे कहते हैं, कि हम भूतसे नहीं डरते। मार्क्सके इस उद्घरणसे मालूम होगा कि अपने सम्पादकके फर्जको अदा करते हुये वह किस नियमपर चलता था।

मार्क्सके उपरोक्त शब्दोंको स्वतन्त्र मानव क्यों पसन्द करने लगे ! उनके प्रतिनिधि मेरेनने बहुत डिठाईके साथ एक पत्र मार्क्सको लिखा जिसपर मार्क्सने रुग्नोंको लिखा था : यह सत्र एक हद दर्जेकी अहम्मन्यताको दिखलाता है। वह इस ब्रातको नहीं अनुभव करते, कि एक राजनीतिक मुख्यपत्रकी रक्षाके लिये हमें ब्रिंलिनकी, इस तरहकी वहकोको छोड़ना होगा, जो कि अपनी गुह्यको, छोड़कर और किसी बातसे सम्बन्ध नहीं रखती।...रोज—रोज सेन्सरकी जुद्दता, मन्त्रियोंके पत्रों, प्रादेशिक गर्वनरकी शिकायतों, ढीट (ससद्) की हाय-तोबा,

शेर-होल्डरों (भागीदारों) के विरोधों आदि-आदिसे काम पड़ रहा है। इसपर भी मैं अपने स्थान को इसीलिये पकड़े हुये हूँ, क्योंकि जहाँ तक हो सके, स्वेच्छाचारियों के इरादोंको निष्फल करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। तुम समझ सकते हो, कि इस पत्रसे मैं भल्ला उठा, और मेरेनको एक काफी कड़ा जवाब दिया।

अबसे मार्क्सका सदाके लिये स्वतंत्र मानव से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। स्वतंत्र मानव में सबकी गति अन्तमें स्वतंत्रताके मार्गसे भ्रष्ट होनेमें ही हुई। बावर और एडवर्ड मेरेन ऐसे पत्रोंके सम्पादक बने, जिनमें उन्हें मालिकोंकी हाँमें हाँ मिलाते हुये ही कुछ लिखनेका अवसर मिलता था।

१८४२ ई० के शरदमें रूटेनवर्ग, को अब भी सरकार भयंकर आदमी समझती थी। और उसने राइनिश जाइटुंगसे उसे हटानेकी माँग की। सारी गर्भियोंमें सरकार पत्रके लिये कठिनाइयाँ पैदा करती रही, जिनसे वह समझती थी, कि वह अपने आप मर जायेगा। द अग्रस्तको राइनलैंडके गर्वनर फान शापरने ऊपर सरकारको लिखा था, कि पत्रके दद्धू ग्राहक हैं। १५ अक्टूबरको मार्क्सने सम्पादक पदको संभाला था। १० नवम्बरको शापरने अपनी रिपोर्टमें स्वीकार किया, कि गाहकोंकी संख्या लगातार बढ़ रही है, जो अब १८२० तक पहुँच गई है, पत्रकी नीति सरकारके सम्बन्धमें विरोधी और धृष्टतापूर्ण है। सरकारकी कोपानिमें घीका काम करनेके लिये इसी समय राइनिश जाइटुंगने एक अत्यन्त प्रतिक्रियावादी ढंगके विवाह-बिल (विवेयक) की कापी प्राप्त करके उसे अधिकारियोंकी इच्छाके विरुद्ध छाप दिया। इसके कारण प्रशियाके राजाको बहुत शुस्ता आया और उसने माँग की, कि उक्त मसौदा जिससे मिला, उसका नाम प्रकट किया जाय, नहीं तो पत्रको तुरन्त बन्द कर दिया जायेगा। लेकिन राजाके मंत्री राइनिश जाइटुंगको इस प्रकार शहीद बनाना नहीं पसन्द करते थे, इसलिये उन्होंने सिर्फ यही माँग की, कि रूटेनवर्गको हटा कर कोई जिम्मेवार सम्पादक नियुक्त किया जाय। साथ ही डोलेशालकी जगह वीट्हाउसको उन्होंने सेन्सर नियुक्त किया। मार्क्सने, जैसा कि ३० नवम्बरके अपने पत्रमें, उसने रूरोंको लिखा था, रूटेनवर्गको खतरनाक आदमी नहीं समझता था। बर्लिनके

स्वतंत्र मानव से जो विरोध चल रहा था, वह इस स्थितिमें और भी उत्र हो चला ।

गवर्नर शापरने रूटेन्बेर्गको हृदयकर दूसरे सम्मादको नियुक्त करनेके लिये १२ दिसम्बर तककी मियाद दी । इसी समय आपसी फूटके नये कारण पैदा हो गये । वेर्नकास्टेलके एक संवाददाताने मोजेलके किसानोंकी गरीबी और तकलीफोंके बारेमें दो लेख लिखे, जिनके संबंधमें शापरने, दो संशोधन मेजे । संशोधन बिलकुल मद्दे और हल्के थे, लेकिन तब भी पत्रने उन्हें कुछ प्रशंसाके साथ ही प्रकाशित किया । इस बीच काफी सामग्री जमा कर जनवरीके मध्यसे पत्रने पाँच लेख छापे, जिसमें प्रमाणके सहित बतलाया कि सरकारने मोजेलके किसानोंकी शिकायतोंको बड़ी पाश्विक कबाईके साथ दबा दिया । गवर्नरको इससे संतोष हुआ कि २१ जनवरी १८४३ को मंत्रिमंडलने राजाकी उपस्थितिमें पत्रको दबा देनेका निश्चय कर लिया है । शेयर होल्डरोंका रूपया लगा हुआ था, और वैयक्तिक सम्पत्ति शोषकों के राज्यमें पवित्र थाती भानी जाती है, इसलिये पत्रको तिमाहीके अन्त तक जारी रखनेकी इजाजत मिली । सरकार द्वारा इस तरह जर्दस्ती अपने प्रदेशके निर्भीक पत्रका दबाया जाना राहन निवासियोंने पसन्द नहीं किया । उन्होंने एक ओर ग्राहकोंकी संख्याको एकाएक ३२०० तक पहुँचाकर अपनी सहानुभूति प्रकट की और दूसरी तरफ हजारोंने हस्ताक्षर करके अपने पत्रकी जान बचानेके लिये राजधानीमें अर्जी भेजी । शेयरहोल्डरोंका प्रतिनिधिमंडल भी राजासे मिलने वर्लिन गया, लेकिन उनको इजाजत नहीं दी गई, और जनताके हस्ताक्षरसे मेजे गये आवेदन पत्रोंको रद्दीकी टैकीरी में फेंक दिया गया । शेयर होल्डरोंको अपनी पूँजीका ख्याल था, कहीं वह छूट न जाये, इसलिये उन्होंने पत्रसे अधिक नर्मी बरतनेकी माँग की, जिसपर १७ मार्चको मार्क्सने इस्तीफा दे दिया । इस्तीफा देनेसे पहले उसने सरकारी सेन्सरको काफी परेशान भी किया ।

नया सेन्सर सेन्टपाल एक चेक (बोहेमियन) तरुण था । मार्क्सके नैतिक चल, बुद्धि, प्रतिभाका उसपर बड़ा प्रमाण पड़ा था । २ मार्चको उसने राजधानीमें रिपोर्ट भेजी कि वर्तमान परिस्थितिमें मार्क्सने “गश्निशा जाइटंगसे”

सन्त्रिव टोइने, और प्रशियाको छोइनेका निश्चय किया है। १८ मार्चको सेन्ट पालने रिपोर्ट भेजी : डाक्टर मार्क्स निश्चित तौरसे कल सम्पादक पदसे हट गया और उसकी जगह एक मायूली दथा नमै विचारोंवाले आदनी ओपेन हाइमने सम्पादक पदको सँमाल लिया। मुझे इससे बड़ी प्रसन्नता हुई, क्योंकि आज लेखोंके सेन्सर करनेमें मुझे मुश्किलसे चौथाई समय लगाना पड़ा। सेन्सरने अपने आकाशोंसे सिफारिश की, कि मार्क्सके हट जानेपर अब पत्रको चालू रखनेकी इजाजत दी जाय।

“राइनिश जाइटुंग” के द्वानेके २५ जनवरीके सरकारी निश्चयका जैसे ही पता लगा, मार्क्सने रुग्नको लिखा था : “मुझे इसके लिये आश्चर्य नहीं हुआ। आरम्भसे ही सेन्सरकी हिदायतोंके बारेमें मेरी क्या राय थी, यह तुम जानते हो। जो कुछ हो रहा है, उसे मैं त्वाभाविक परिणाम ही समझता हूँ। “राइनिश जाइटुंग” का द्वाया जाना मेरी रायमें राजनीतिक चेतनाकी प्रगतिकी सूचना है। मैं अब इतीफा दे रहा हूँ। जो भी हो, वातावरण मेरे लिये बड़ा ही पीड़ाकर था। अन्वनमें रहते काम करना कुरी बात है, और त्वतंत्रताके लिये मी तलवारकी जगह सुईसे लड़ना कुरी बात है। मैं अधिकारियोंकी के पालंड, नूरता और पशुता और अपनी आज्ञानुवर्तीता...से ऊब गया हूँ। अब जब कि सरकारने मुझे मेरी स्वतंत्रता लौटा दी...जर्मनीमें मेरे लिये करनेको कुछ नहीं है। आदमी को यहाँ रहकर खोदा बनना पड़ता है।

इस प्रकार मार्क्सके राजनीतिक जीवनका पहला भाग खत्म हुआ, जब कि अभी वह अपने पञ्चीसवें वर्षमें था।

४. फ्रारवाख्के सम्पर्कमें

मार्क्सने रुग्नको लिखे उक्त पत्रमें अपनी पहली छपी पुस्तकके प्राप्ति-स्वीकारके बारेमें लिखा था। वह उसके लेखोंका संग्रह अनेकडोटा जुर नो एस्टेन द्वाशेन “फ़िलोसोफी उंट पुस्तिज़िस्टिक्” (दो जिल्डोंमें) मार्च १८४३ के आरम्भमें लूरिच (स्वीट्जरलैंड) में छुपा। जुलियस फोवेलने जर्मन सेन्सर द्वारा पीड़ित लेखकोंकी कृतियोंको लिटेरारिशे कॉन्ट्रोर नामसे प्रकाशित

करनेका प्रबन्ध किया था। इस संग्रहमें तरशु हेगेलियोके कितने ही लेख सम्मिलित थे, जिनमें लुड्विग् फ्रारबाझ्का नाम सबसे पहले था। फ्रारबाझने हेगेलके सारे दर्शनको रहीकी टोकरीयें फैक्टते घोषित किया था, कि यह निष्पाण विचार है, इसमें धर्म-विद्याकी रोगी आत्माके सिवा और कुछ नहीं है। दर्शन-सुधारपर प्रारम्भिक निबन्ध में फ्रारबाझने अपने जिन विचारोंको प्रकट किया था, मार्क्सको बिलकुल नयेसे मालूम हुये। एंगेल्सने पीछे स्वीकार किया, कि मार्क्सके बौद्धिक विकासमें फ्रारबाझ्की श्रमर कृति ईसाइयत-सार (१८४१ ई० में प्रकाशित)ने बड़ा प्रभाव डाला था। एंगेल्सने भी इस ग्रंथके मुकिदायक प्रभावके बारेमें लिखा था : सर्वत्र उत्साह था। हम सभी तुरन्त फ्रारबाझ्के अनुयायी बन गये। लेकिन “राइनिशे जाइटंगके” लेखोंमें इसका जरा भी चिन्ह नहीं मिलता, कि उस बक्त मार्क्सके ऊपर फ्रारबाझ्का कोई प्रभाव था। तो भी मार्क्सने वडे उत्साहके साथ फ्रारबाझ्के नये विचारोंका स्वागत किया था। फर्वरी १८४४ में ड्वाश-फॉजोशिशे यारबुखर (जर्मन-फ्रैंच वर्ष-पत्र) के निकलनेके समय मार्क्सपर जरूर फ्रारबाझ्के विचारोंके प्रभाव को देखा गया। प्रारम्भिक निबन्ध में फ्रारबाझ्के ईसाइयत-सार के विचार सूक्ष्म रूपमें पाये जाते हैं, शायद इसीलिये एंगल्सको अप हुआ और उन्होंने तुरन्त अनुयायी बननेकी बात कही। लुड्विग् फ्रारबाझ (१८०४-३२ ई०) हेगेलका शिष्य था। हेगेलके बाद उसका दर्शन दो शाखाओंमें बँट गया, जिनमें छूरिंग जैसे लोग भौतिकवादके कहूर विरोधी और हेगेलीय विज्ञान-वादको लेकर प्रतिक्रियावादी दर्शनकी धारा चलाने लगे। दूसरी शाखा हेगेल-के दर्शनको रहस्यवाद और विज्ञानवादसे छुड़ा उसके वास्तविक लक्ष्य द्वन्द्व-त्वक भौतिकवादकी ओर लेजा रही थी। इस दलका अगुवा फ्रारबाझ था। इस प्रकार मार्क्सका हेगेलीय दर्शनके इस विशिष्ट रूपके साथ सम्बन्ध स्थापित करनेमें फ्रारबाझ्का हाथ था इसमें सन्देह नहीं। फ्रारबाझ्को दीहातका एकान्त जीवन पसन्द था, लेकिन तब भी वह हथियार डालनेवाला निकन्मा पुरुष नहीं, बल्कि सच्चाईके लिये लड़नेवाला योद्धा था। वह गलेलियोकी तरह नगरको कल्यनाशील दिमागोका जेलखाना मानता था, जब कि देहाती

जीवनकी स्वतंत्रताको प्रकृतिके खुले गंथको पढ़नेका चुन्दर अवसर देनेवाला मानता था । फूवारबाझ जैसे विचारकके लिये नगरके शोर-गुलासे भरे बातावरणसे अलग शान्त स्थानमें रहना शायद इसीलिये पसन्द था, कि उसके एकाग्रतापूर्ण स्वभावके वह अधिक अनुकूल था । एकान्तवासी होते हुये मी फूवारबाझ अपने समयके बड़े-बड़े संघर्षोंमें अगली पाँतीमें रहता था । ईसाइयत, सार में उसने लिखा था, मनुष्य धर्मको बनाता है, धर्म मनुष्यको नहीं । और मनुष्यकी कल्पना जिस उच्चतम सत्ताको बनाती है, वह उसकी अपनी सत्ताका कल्पित प्रतिबिम्ब छोड़ और कुछ नहीं है । जिस समय उसकी यह पुस्तक प्रकाशित हुई, मार्क्सका ध्यान उसी समय राजनीतिक संघर्षकी ओर गया था । इसने मार्क्सके संघर्षमय जीवनमें दृढ़तापूर्वक पैर रखनेमें सहायता की, इसमें शक नहीं । प्रारंभिक निवन्ध ने हेगेलीय दर्शनके प्रतिक्रियावादी रूपको विलकुल नंगा और वेकार कर दिया, और अब उसका दृन्दात्मक दृष्टिकोण भौतिकवाद और समाजवादकी सेवाके लिये तैयार था । “प्रारंभिक निवन्ध” ने मार्क्सके ऊपर भारी प्रभाव डाला । १३ मार्च १८४३ ई० को रूपोंको पत्र लिखते समय मार्क्सने घोषित किया था : फूवारबाझकी सिर्फ एक बात मुझे पसन्द नहीं है, वह यही कि वह प्रकृतिकी बहुत अधिक पर्वा करता है और राजनीतिसे बहुत कम, यद्यपि राजनीतिसे मित्रता स्थापित करके ही समसामयिक दर्शन सच्चा बन सकता है । लेकिन मैं मानता हूँ, कि इसे वैसा ही होना पड़ेगा जैसा कि सोलहवीं शताब्दीमें प्रकृतिके उत्साही भक्तोंको राज्यके उत्साही भक्तोंके साथ लोहा लेकर करना पड़ा था । मार्क्सका कहना विलकुल ठीक था, क्योंकि “प्रारंभिक निवन्ध” में फूवारबाझने सिर्फ एक ही बार राजनीतिका नाम लिया है, सो भी गौण रूपसे । मार्क्सने अब हेगेलके विधान-दर्शनकी और राज्य-दर्शनकी पूरी तौरसे परीक्षा करनेका निश्चय किया, जैसे कि फूवारबाझने उसके प्रकृति-धर्म-दर्शनकी परीक्षा की थी । उसी पत्रमें लिखे दूसरे बाक्यसे भी मार्क्सके ऊपर पड़े फूवारबाझके प्रभावको देखा जा सकता है ।

प्रशियन सेन्सरके कारण प्रशियामें रहते हुये कुछ लिखना सम्भव नहीं है, इसीलिये मार्क्सने जर्मनी छोड़नेका निश्चय किया ।

५. विवाह (१८४३ ई०)

लेकिन जर्मनीको वह बिना जेनीको लिये छोड़ना नहीं चाहता था । २५ जनवरीको उसने रुग्गे से पूछा था, कि हेरबेग द्वारा जूरिच्से भविष्यमें निकाले जानेवाले ड्वाशेरबोटे में कोई काम मिल सकता है या नहीं । पर हेरबेगको स्वयं जूरिच्से निकलनेके लिये मजबूर किया गया, जिसके कारण वह वहाँसे पत्र नहीं निकाल सका । इसपर दोनोंके संयुक्त सम्पादकत्वमें यारबुखेर (वर्ष पत्र) के नामसे एक पत्र निकलनेका सुझाव रुग्गे रखा और कोलनो छोड़नेके बाद लाइप्जिङमें आकर बात करनेके लिये बुलाया । उस समय जर्मनीमें पत्र-पत्रिकाओंके ऊपर सेन्सरका बहुत जोर था, उससे बचनेके लिये वर्षपत्र निकाले जाते थे, जिनमें मिन्न-मिन्न लेखोंका संग्रह रहता, और पत्र-पत्रिकाओंमें न सम्प्रिलिपि होनेके कारण उसे सेन्सर कराके छुपानेकी आवश्यकता नहीं थी । लेकिन मार्क्स जैसे विचार रखनेवाले लेखकोंके लेख वर्षपत्र में भी आसानीसे प्रकाशित होने पाते, इसमें सन्देह था । १३ मार्चके अपने पत्रमें रुग्गोंको मार्क्सने लिखा था : यदि ड्वाशे यारबुखेर को फिर प्रकाशित होनेकी इजाजत मिल जाय, तो अधिकसे अधिक विगत कामोंका ही हम हल्का सा अनुकरण कर सकेंगे, जो कि वर्तमानके लिये पर्याप्त नहीं है । पर “ड्वाश-फॉज़ोशिशे यारबुखेर” (जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र) एक सिद्धान्तकी चीज होगी, एक महत्वपूर्ण घटना और ऐसा अध्यवसाय होगा, जो कि हमें उत्साहित करेगा । मार्क्सने इस प्रकार जर्मनीके भीतर जर्मन वर्षपत्र न निकाल बाहरसे “जर्मन-फ्रेंच वर्ष-पत्र” निकलनेका प्रस्ताव रखा, जिसे १६ मार्चके अपने पत्रमें रुग्गे स्वीकार किया ।

पिताके मरने और डाक्टरकी डिग्री प्राप्त करनेके बाद जिस समय मार्क्सने अपने राजनीतिक संघर्षमय जीवनको आरम्भ किया था, उसी बक्त उसके सामने कितनी ही घरेलू कठिनाइयाँ भी उपस्थित हुई थीं, लेकिन मार्क्स उनको कोई महत्व नहीं देता था । वह मानवजातिके सारे समाजके दुःखोंके हटानेकी चिन्तामें था, जिसके सामने घरेलू कठिनाइयाँ उसके लिये नगण्य सी थीं ।

उसने इन कठिनाइयोंका शायद ही कभी जिक्र किया। पहली बार तुच्छ निजी मामले कहते उसके वाक्य उस पत्र द्वारा हमारे पास पहुँचे हैं, जिसे कि ६ जुलाई १८४२ को रुगेको लिखा था : ‘अनेकडोटा’ के लिये लिखनेका वचन दे कर भी मैं क्यों नहीं कुछ कर सका, “मेरा अवशिष्ट समय अत्यन्त असचिकर पारिवारिक भराडोंके कारण वरबाद और वेकार गया। यद्यपि वह काफी अच्छी हालतमें है, तो भी मेरे परिवारने मेरे रास्तेमें ऐसी कठिनाई डाली, जिसने मुझे कुछ समयके लिये अत्यन्त परेशान करनेवाली स्थितियोंमें डाल दिया। शायद मैं तुम्हें इन तुच्छ निजी मामलोंका वर्णन करके परेशान करना नहीं चाहूँगा। यह वस्तुतः सौमान्यकी बात है, कि हमारे सार्वजनिक मामले किसी नैतिक बल वाले पुरुषको घरेलू कठिनाइयों द्वारा परेशान नहीं कर सकते। इन शब्दोंसे मार्क्सके दृढ़ चरित्रबलका पता लगता है, जो कि उसके कंटकाकीर्ण दीर्घी जीवन पथके लिये हमेशा बहुत बड़ा संबल रहा। उसकी क्या घरेलू कठिनाइयाँ थीं, इसका विवरण कहीं नहीं मिलता है। रुगेको उसने लिखा था : जैसे ही हमारी सारी योजनायें ठीक रूप ले लेंगी, मैं क्रोज्नाइ जाऊँगा, जहाँ जेनीकी माँ अपने पतिके मरनेके बाद जाकर रहती थी। व्याह करके मार्क्स अपनी सासके घरमें कुछ समय बिताना चाहता था। मार्क्सके शब्दोंमें “जिसमें कि हमारे काम शुरू करनेसे पहले हमारे पास कुछ सामग्री रहे।... बिना किसी भावुकताके मैं तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता हूँ, कि मैं प्रेममें गम्भीरताके साथ पूरी तरह छवा हुआ हूँ। हम दोनों कुछ अधिक सात वर्षसे मँगनी किये हुये हैं। मेरी भावी पत्नीको मेरे कारण अपने धर्मभीर सामन्ती सम्बन्धियोंसे संघर्ष करना पड़ा, अपने उन धर्मभीर सामन्ती सम्बन्धियोंके साथ, जो कि स्वर्गमें पिता और ब्रह्मिनमें सरकारको समान रूपेण पूज्य समझते हैं, और कुछ मेरे अपने परिवारके साथ, जिसपर पुरोहित लोगों तथा मेरे दूसरे शत्रुओंने प्रभाव कायम कर रखा है। इन संघर्षोंने उसके स्वास्थ्यको प्रायः खतरेमें डाल दिया। इसीलिये वर्षों तक मैं और मेरी भावी पत्नी अनावश्यक परेशान करने वाले भराडोंमें पड़नेके लिये मजबूर हुये।

यहाँ घरेलू कठिनाइयोंकी कुछ भनक मिलती है। अब मार्क्स देश छोड़नेके

लिये तैयार था और व्याह करके अपने भविष्यका भी कोई प्रबन्ध करना चाहता था। यह प्रबन्ध आसानीसे हो गया, और माकर्सको लाइपज़िग जानेकी ज़खरत भी नहीं पड़ी। रुगे अच्छा खासा पैसेवाला आदमी था, उसने लिटेरारिशे कोन्ट्रोके छ हजार थालर (६ हजार पौंड) का शेयर लेना स्वीकार किया। फोबेलने प्रकाशनका काम अपने ऊपर लिया। यह निश्चय हुआ, कि माकर्सको सम्पादनके कामके लिये ५०० थालर वार्षिक वेतन दिया जाय।

१६ जून १८४३ के स्मरणीय दिनको जेनीसे व्याह किया। जेनी विचारोमें पति से अभिन्नता रखती थी, उसका सारा जीवन पुराणवर्षित किसी परम तपस्विनी सती जैसा मालूम पड़ता है।

जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र को छापनेके लिये तीन जगहें सामने थी, ब्रुशेल्स (बेल्जियम) पेरिस (फ्रास) और स्ट्रासबुर्ग (अलस्ट्की राजधानी)। माकर्स दम्पती स्ट्रासबुर्गको अधिक पसन्द करते, लेकिन रुगे और फोबेलके पेरिस और ब्रुशेल्स के देल आनेके बाद पेरिसको ही अधिक अनुकूल समझा गया। यद्यपि ब्रुशेल्समें पैरिसकी अपेक्षा कानूनी कठाइयों कम थी, लेकिन पैरिस जर्मन जीवनके नज़दीक पड़ता था, और रुगेने यह भी लिखा कि वहाँपर माकर्स तीन हजार फ्रांक या कुछ कममें भी आरामसे रह सकता है।

माकर्सको मधुमास बितानेके लिये कुछ महीने मिले, जिन्हें उसने अपनी सास-के घरमें बिताया। फिर २५ वर्षके माकर्स और २६ वर्षकी जेनीने वहाँसे उठकर पैरिसमें डेरा डाला। जर्मनीके इस जीवनके सम्बन्धमें माकर्सका आखिरी लेख जो मिलता है, वह २३ अक्टूबर १८४३ को फ्वारबालके नाम लिखा एक पत्र है, जिसमें उसने जर्मन कवि शेलिंगकी आलोचनाके सम्बन्धमें अपने वर्ष पत्रके प्रथम अंकके लिये एक लेख माँगा था। फ्वारबालने ईसाइयतसारके दूसरे संस्करणमें जो भूमिका लिखी थी, उसे पढ़कर माकर्सको स्याल आया, कि फ्वारबाल शायद इस कामके लिये अपनी कलम उठाये। उसने पत्रमें लिखा था हेरशेलिंगने कितनी चतुराईसे फ्रासीसियोंको ठगा : पहले दिल और दिमागके निर्वत कूजिनको और बादमें चमत्कारी लारूको। पियर लारू और उसके सहकारी अब भी शेलिंगको एक ऐसा आदमी समझते हैं, जिसने अतिलौकिक विज्ञान-

बादके स्थानपर बुध्यनुसारी यथार्थवाद, निराकार विचारोंकी जगहपर रत्तमांसके विचारोंको बाहरी दर्शनकी जगह विश्वदर्शनको स्थापित किया ।... इसलिए आप हमारे प्रकाशन तथा सत्यकी भारी सेवा करेंगे, अगर आप हमारे प्रथम अंकके लिये शेलिंगकी रूपरेखाको प्रदान करें । आप ही इस कामके लिये उचित पुष्ट हैं, क्योंकि आप शेलिंगसे बिल्कुल उलटे हैं । जहाँ तक शेलिंगका सम्बन्ध है, अपनी तरुणाईके ईमानदार विचारोंके कारण वह हमारा सबसे अच्छा प्रतिद्वन्द्वी कहा जा सकता है । अपने इन विचारोंके लिये उसके पास क्त्वना छोड़ कोई दूसरे साधन नहीं, अहम्मन्यता छोड़ कोई दूसरी शक्ति नहीं, अफीम छोड़ कोई प्रेरणादायक बल नहीं, स्त्रैण गहणक्षमता के अनुकूलपनके सिवा कोई ज्ञान-साधन नहीं । उसके पास तरुणाईके स्वप्नसे बढ़कर कभी कुछ नहीं थे, लेकिन तुम्हारे भीतर वह सत्य, वास्तविकता और पौरुषपूर्ण गम्भीरता बन गये...इसीलिये मैं आपको प्रकृति और इतिहासकी यमल शक्तियों द्वारा नियुक्त शेलिंगका आवश्यक और स्वाभाविक प्रतिद्वन्द्वी मानता हूँ । इन पंक्तियोंसे फ्वारबाखके प्रति मार्क्सके उस समयके भाव प्रकट होते हैं । लेकिन फ्वारबाखने मार्क्सकी प्रार्थनाको स्वीकार करनेमें आनाकानी की । उसने पहले रूपोंको सहायता करनेका वचन दिया था, लेकिन यीछे इन्कार कर दिया । इसका यह अर्थ नहीं समझना चाहिये, कि फ्वारबाख पलायनवृत्तिवाला आदमी था । लेकिन, इस समय उसके पास काफी हिम्मत नहीं थी, कि जर्मनीके घोर प्रतिक्रियापूर्ण वातावरणमें फिर अपनी लौह लेखनी लेकर लड़नेके लिये तैयार हो जाता । उसने मार्क्सको यद्यपि बड़े सौहार्दपूर्ण शब्दोंमें जवाब दिया, लेकिन, वह इन्कार छोड़ और कुछ नहीं था ।

अध्याय ५

पैरिसमें (१८४३-४५ ई०)

१. “जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र”

मार्क्सने बड़े उत्साहके साथ वर्षपत्रके सम्पादनको अपने हाथमें लिया, लेकिन पत्रका केवल एकही अंक दोहरी जिल्डमें फरवरी १८४४ ई० के अन्तमें प्रकाशितहो सका। यही उसका आदिम और अन्तिम अंक था। जैसा कि नामसे मालूम होता है, इस पत्र द्वारा फ्रास और जर्मनी दोनों देशोंके मनीषियोंके बौद्धिक सहयोगकी आशाकी गई थी। जर्मनीकी विशेषता थी उसका हेगेलीय दर्शन, जोकि फ्रांसीसियोंको केवल विज्ञानवादकी धूमधर्में भटकनेको प्रोत्साहन दें सकता था, और फ्रांसकी जर्मनीको विशेष देन हेगेलीय दर्शन के तीक्ष्ण तथ्की और कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह निश्चयही अध्यात्म और रहस्य-वादकी मरुभूमिमें भटकनेमें सहायत होता। रुजोने फ्रासके तल्कालीन मनीषियों लामारतीन लामेने, लुई ब्लाक, लाल, प्रूधोसे इसके बारेमें बातचीत की थी। केवल लाल और प्रूधो जर्मन दर्शनके बारेमें कुछ चानकारी रखते थे, उनमें मी एक पैरिससे बाहर रहता था, और दूसरेने लीनोटाइप मशीनके आविष्कारमें दिमागको खपाते अपनी लेखनीको विश्राम दे रखा था। अराजकतावादी लुई ब्लाक और दूसरोंने किसी तरहके सहयोग देनेसे इन्कार कर दिया। इस प्रकार जहाँ तक फ्रेंच लेखकोंका सम्बन्ध था, वर्षपत्रको निराश होना पड़ा। लेकिन जर्मन लेखकोंके सहयोगमें जरूर सफलता मिली। सम्पादकोंके अतिरिक्त कवि हाइने, हेरबेग, और योहान याकोबी जैसे प्रथम श्रेणीके लेखकोंने अपने लेख में, द्वितीय श्रेणीके लेखकोंमें मोजेज-हेस, पलाटिनेटके तस्ण वकील फू० सी० बैनेज, तथा सबसे तस्ण लेखक फ्रेडरिक (फ्रीडरिक) एगेल्स जैसोंके चुन्दर लेख मिले। एंगेल्सने कई तरहके लेखनक्षेत्रमें धूमते हुये अब्र प्रथम बार पूरा हथियारवन्द होकर राजनीतिक क्षेत्रमें पैर रखता था। यद्यपि वर्षपत्रका उद्देश्य

क्रांतिकारी विचारधाराका समर्थन करना था, लेकिन और भी वह हेगेलीय दर्शन की कल्पामें ही घूमना चाहता था।

प्रथमग्रास मान्यकापातः हुआ, वर्षपत्रके युगल नम्बरके निकलते देर नहीं हुई, कि भगड़ेका बीजारोपण हो गया। वर्षपत्रमें पत्र-व्यवहार छापा था, जो लगे, पवरबाल, बकुनिनके पत्र-व्यवहारसे शुरू हुआ था। बकुनिन तरण स्त्री क्रांतिकारी था, जो ड्रेसडेनमें लोके साथ आकर रहने लगा था। पत्र-व्यवहारमें आठ चिट्ठियाँ थीं, जिनमें लेखकोंके हस्ताक्षर-संकेत दर्ज थे, जिनसे मालूम होता है कि उनमेंसे तीन-दीन पत्र मार्क्स और रूपोके थे और बकुनिन तथा पत्र-व्यवहारके एक-एक। पीछे रुपोने दावा किया, कि पत्र-व्यवहार सारा मेरा लिखा हुआ है और केवल जहाँ-तहाँ ही वास्तविक पत्रोंसे उद्धरण लिये गये हैं: लेकिन वस्तुतः पत्र उन्हींके लिखे हुये थे, जिनके हस्ताक्षर-संकेत उनपर मिलते हैं।

वर्षपत्रके सम्बन्धमें कुछ उत्साहवर्द्धक सन्देश भी मिले थे, लेकिन उनका स्वागत वैसा नहीं हुआ। पहले तो फ्रैंच मनीषियोंका सहयोग न होनेसे उसका जर्मन-फ्रैंच वर्षपत्र नाम ही उचित नहीं मालूम होता। मार्क्सने तब भी कहा था, “इसमें कुछ उल्लेखनीय बातें हैं, जो कि जर्मनीमें सनसनी पैदा करेंगी।” लेकिन सनसनी पैदा करनेसे पहला काम यह हुआ, कि संचित निधि जल्दीही खतम हो गई। फ्रोबलने साफ कह दिया, कि जब तक और पैसा नहीं मिलता, मैं कुछ नहीं कर सकता। इसके बाद वर्षपत्रके प्रकाशित होतेही प्रशियाकी सरकारने उसके विरुद्ध जहाद बोल दी। उसने बाहरके राज्योंपर भी दबाव डालना चाहा, लेकिन उसमें सफलता नहीं हुई। पिर अपने सभी प्रदेशोंके गवर्नरोंको १८ अप्रैल १८४४ को सूचित किया, कि यारखुखरसें देशद्रोह और राजनीतिक अपराधवाली बातें हैं; साथही गवर्नरोंको यह भी हुक्म दिया, कि जिना हस्तागुल्ता किये जैसे ही प्रशियाकी सीभाके भीतर आवैं उनके कागज-पत्रोंको जब्त करके रुपे, मार्क्स, हाइने और बुर्नीको गिरफ्तार कर लिया जाय। सीमालंपर भी सावधानी रखनेके लिये राजाशा निकाली गई और जैसेही वर्षपत्र भीतर आया, उसे जब्त कर लिया गया। राजन नदीके एक स्प्रिंगरसे वर्षपत्रकी सौ

कापियों जन्तकी गईं और बेर्गजावेन के पास फ्रांसीसी सीमान्तपर दो सौसे अधिक कापियों हाथ लगीं। यह आर्थिक चपत सीमित साधनोवाले प्रकाशकोंके बदाश्टसे बाहरकी बात थी।

पहले ही रुग्ने मार्कर्स को लिखा था : याखुखेर मर गया और हेगेलीय दर्शन अब अतीतकी चीज़ है। आओ पैरिसमें ऐसे एक पत्रका प्रबन्ध करें, जिसमें हम पूर्ण स्वतंत्र और निर्भी हो, इमानदारीके साथ अपनी और जर्मनी की पूर्णतया आलोचना कर सकें। लेकिन मार्कर्स ही वर्षपत्र जैसे प्रथलके मुख्य केन्द्र थे। सोचनेवाले स्वतंत्र दिमागोंके लिये एक नये केन्द्रकी आवश्यकता वह मानते थे। यद्यपि अतीतके बारेमें सन्देहकी गुंजाइश नहीं थी, लेकिन वही बात भविष्यके बारेमें नहीं कही जा सकती थी। मार्कर्सके शब्दोंमें : सुधारकोंमें आम आराजकता और फूट पड़ी है। वह सभी यह स्वीकार करनेके लिये मजबूर हैं, कि भविष्यके बारेमें उनके पास कोई यथार्थ विचार नहीं है। तो भी नये आन्दोलनको यही एक बड़ा सुभोता है, कि हम नई दुनियाको रुढिवश पहलेसे कलित करना नहीं, बल्कि उसे पुराणकी आलोचनामें खोजना चाहते हैं। अब तक पहेलियोंके हलको दार्शनिक अपने लिखनेकी मेजपर तैयार रखते पाते थे, सारी बाहरी मूर्ख दुनियाको बस यही करना था, कि आँखोंको मूँद ले, और पक्की-पक्काई परम-साहस्रकी पूँछीको लेनेके लिये मुँह खोल दे। फिलासफीने अपनेको बाद-निष्ठन् कर लिया है, जिसका सबसे बड़ा सुबूत यही है, कि दार्शनिक चेतनाने सिर्फ़ ऊपरी तौरसे नहीं, बल्कि पूरी तौरसे युद्धकी ज्वालामें अपनेको ढाल दिया है। हमारा कार्य यह नहीं है, कि पहले हीसे भविष्यको निर्माण करे और सभी समयकी सभी समस्याओंका हल तैयार करें; बल्कि निश्चय ही हमारा काम है साथ ही वर्तमान दुनियाकी निष्ठुरतापूर्वक आलोचना करना भी। निष्ठुरतासे मेरा मतलब यही है, कि न हम अपने निष्कर्षोंसे ही लोहा लेनेमें भय खाये और न वर्तमान राज्य-शक्तियोंसे लोहा लेनेमें।

यहाँ मार्कर्सका वैशानिक दृष्टिकोण अपने भविष्यके कृत्योंके बारेमें स्पष्ट है। वह कावेत, देजामी और वाइटलिंगकी तरह पहलेसे पक्के-पक्काये साम्यवाद (कम्युनिज्म) की तरहके किसी वादका झंडा फहरानेकी इच्छा नहीं रखते।

ऐसे सोशलिस्टोंकी विचारधारा मार्क्सको बिल्कुल पसन्द नहीं थी, जोकि सामयिक राजनीतिक प्रश्नोंको तुच्छ समझते थे। वह मानते थे कि राज्यके पारस्परिक विरोध आदर्श और व्यावहारिक कल्पनाओंके संघर्ष द्वारा सब कहीं सामाजिक सत्यको खोज निकाला जा सकता है। इसलिये हमें राजनीतिक आलोचना—राजनीतिक वास्तविक संघर्षमें-भाग लेनेसे अपनेको रोकना नहीं चाहिये। इस तरीकेसे हम दुनियाके सामने सिद्धान्तशास्त्रीके रूपमें पेश होनेसे अपनेको बचा सकेंगे। ‘यह सत्य है, सिर नधाओ और इसकी पूजा करो’ कहते एक नये सिद्धान्तको दुनियाके सामने उपस्थित करनेसे हम अपनेको बचा सकेंगे। हमें दुनियाके लिये नये सिद्धान्त (नियम) उसके पुराने सिद्धान्तोंसे निकालकर विकसित करने होंगे। हमें दुनियाको यह नहीं कहना है: ‘अपने भगड़ोंको छोड़ो, वह मूर्खतापूर्ण हैं। हमारी बात सुनो, क्योंकि हमारे पास वास्तविक सत्य है।’ इसकी जगह हमें दुनियाको यह दिखलाना है, कि क्यों तुम्हें संघर्ष करना पड़ता है, इस तरहकी चेतनाको चाहे दुनिया पसन्द करे या न करे उसे प्राप्त करना होगा। संचेपमें मार्क्सने अपने नये पत्रके सामने प्रोग्राम रखता था: संघर्षों और आकांक्षाओंको अनुभव करनेमें युगको सहायता देना।

मार्क्स इस बातको अनुभव करने लगे थे, लेकिन रुग्न अभी वहाँ नहीं पहुँचा था। मार्क्स वस्तुतः चालक थे और रुग्न चालित, वर्षपत्रके निकालनेके समय यही बात साफ देखी गई। रुग्न ऐसे भी पैरिसमें पहुँचनेके बाद बीमार हो जानेसे सम्पादकीय कामोंमें अधिक भाग नहीं ले सका, और सारा काम मार्क्सके ऊपर पड़ा। रुग्न वर्षपत्रके बारेमें उन बातोंको नहीं कर सका, जिन्हें उसने सोच रखता था, तो भी उसने प्रथम अंकसे असंतुष्ट होकर कहा “कुछ उल्लेखनीय बातें इसमें हैं जो जर्मनीमें सनसनी पैदा करेंगी।”

पैसोंके अभावके कारण वर्षपत्रको आगे निकालना सम्भव नहीं था। रुग्न और मार्क्समें मतभेद हों जानेके समय पैसेकी बात आई। पैसोंके सम्बन्धमें मार्क्सकी सदा उपेक्षा रही, जबकि रुग्न एक-एक पैसेके लिये मरता था। उसने मार्क्सके बेतनमें पैसेकी जगह वर्षपत्रकी कापियाँ देनी चाही, लेकिन मार्क्सको

उस व्यापारका कोई अनुभव नहीं था। मार्क्सने रुगेको व्यर्थ ही समझाना चाहा, कि पहलीही असफलतापर हथियार छोड़ बैठना नहीं चाहिये।

रुगेके अनुसार इस मगडेका तुरन्त कारण था हेरबर्गके बारेमे मार्क्सका विशेष पक्षपाती रुगे उसे बद्दाश कहता था, जब कि मार्क्स उसे बड़ा होनहार समझते थे। रुगेके विचार आगे चलकर अधिक सत्य सांकेत हुये। तो भी इसका यह अर्थ नहीं, कि मार्क्स हेरबेर्गसे पूर्णतया प्रसन्न थे। कुछ भी हो, ज्यादातर पैसे और वर्षपत्रकी असफलताने रुगे और मार्क्सको सदाके लिये एक बूसरेसे अलग कर दिया।

२. दो लेख

मार्क्सने 'जर्मन-फ्रेच वर्षपत्रमें' अपने दो लेख प्रकाशित किये थे, जिनमें एक था 'हेगेलीय विधान-दर्शनकी आलोचनाकी भूमिका' और दूसरा या यहूदी समस्यापर ब्रूनो बावर द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकोंपर टिप्पणी। यह दोनों ही लेख मार्क्सके नीचनके उषाकालकी प्रगतिशील विचार-धारापर प्रकाश डालते हैं।

(१) वर्ग-संघर्षकी दार्शनिक रूपरेखा—मार्क्सके पहले लेखमे सर्वहारा वर्ग-संघर्षकी दार्शनिक रूपरेखा पेश की गई है, जब कि दूसरे लेखमे समाजवादी समाजकी दार्शनिक रूपरेखा दी गई है। मार्क्सने बताया, कि दर्शनका भौतिक हथियार सर्वहारा है, उसी तरहसे सर्वहाराका बैंडिक हथियार दर्शन है—यहाँ दर्शनसे मार्क्सका मतलब है द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दर्शन। जनसाधारणमें जब इस दर्शनकी गहरी जड़ जम जायेगी, तो जर्मनोकी मानवके रूपमें सुकिं होगी। जर्मनोकी सुकिं मनुष्यकी सुकिं है। दर्शनकी अनुभूति सर्वहारा वर्गके समाप्त किये बिना नहीं हो सकती और सर्वहारा बिना दर्शनकी अनुभूतिके अपनेको समाप्त नहीं कर सकता। तरण मार्क्सका यह लेख महत्वपूर्ण है, यद्यपि दर्शनपर उनका काफी जोर है, जिसका अर्थ है हेगेलका प्रभाव अभी पूरी तौरसे हटा नहीं है।

(२) यहूदी समस्या—जर्मन-फ्रेच वर्षपत्रमें ब्रूनो बावरकी इस विपक्षकी दो पुस्तकोंके सम्बन्धमें यह लेख मार्क्सने लिखा, जिसमें इस समस्याको द्वन्द्वात्मक

हृष्टिसे देखनेकी कोशिश की गई है। मार्क्सने कहा, कि विशेष आर्थिक स्थितिमें पड़े रहनेके कारण यहूदी लोग सूदखोर और बनिये बननेके लिये मजबूर हुये। फ्रेडरिक महान्ते ईसाई वैंकरों (महाजनों) को प्राप्त सुविधायें पैसेवाले यहूदियोंको दीं, जिन्होंने पैसा पैदा कर उससे अपने मेहरबान राजाकी सहायता की। यहूदी बड़े खुश थे, जब नई रोशनीके लोगोंने ईसाई धर्मकी आलोचना करनी शुरू की, क्योंकि यहूदी हमेशा ईसा और उसके धर्मको अच्छी नजरसे नहीं देखते थे। विचारस्वातंत्र्यकी उनकी माँग केवल दूसरोंके लिये थी, जहाँ तक अपना सम्बन्ध था, वह यहूदी मनोवृत्तिको छोड़नेके लिये तैयार थे। लेकिन तरुण हेगेलियोंने ईसाई धर्म तक ही अपनी आलोचनाको सीमित नहीं रखा। फ्रांसवाखने यहूदी धर्मको अहंताका धर्म बतलाया—यहूदी अपनी खास विशेषताओंको आज तक कायम रखे हुये हैं। उनका सिद्धान्त, उनका ईश्वर संसारका व्यावहारिक सिद्धान्त है, अर्थात् धर्मके रूपमें अहंता। अहंता मनुष्यको अपने भीतर केन्द्रित रखती है, साथ ही वह उसके सैद्धान्तिक हृष्टिकोणको सीमित कर देती है, क्योंकि जो भी चीज उसके अपने हितसे सीधे सम्बन्ध नहीं रखती, उसके प्रति वह उदासीन रहता है। बावर यहूदी समस्याको केवल धर्म-विद्याके चर्चमें से देखना चाहता था। वह कहता था, कि इसाईयोंकी तरह ही अपने धर्मको बराबर यहूदी भी स्वतन्त्रता प्राप्त करते हैं। बावरकी रायमें यहूदियोंको पहले इसाइयत और हेगेलीय दर्शनका अध्ययन करना चाहिये, फिर स्वतन्त्र होनेकी बात सोचनी चाहियें। मार्क्स बावरके इस विश्लेषणको दोषपूर्ण समझते थे। उनका कहना था—यहूदियों, ईसाईयों या सभी धार्मिक मनुष्योंकी राजनीतिक मुक्तिका अर्थ है राज्यको यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और सभी धर्मोंसे मुक्ति, राज्यके तौरपर वैयक्तिक सम्पत्तिका प्रतिषेध करना। उत्तरी अमेरिकाके राज्योंकी तरह जहाँ मतदानमें धनकी योग्यताको उठा दिया गया है—उसका यही अर्थ हो सकता है, कि राज्यने जन्म, सामाजिक स्थिति, शिक्षा और पेशेके भेदभावको छोड़, सार्वजनिक मताधिकार देकर वैयक्तिक सम्पत्ति आदिको हटा दिया है, लेकिन तो भी वह वैयक्तिक सम्पत्ति रखनेकी इजाजत देता है। शिक्षा और पेशेको भी उसने वैयक्तिक सम्पत्ति, वैयक्तिक शिक्षा और वैयक्तिक पेशेके तौरपर कायम

रखता है। इन मेदोंको हटानेकी बात तो अलग राज्यका अस्तित्व पहले हीसे इन्हें मान लेता है। बूज्वा राज्यमें जिसे पूर्णतया विकसित राजनीतिक राज्य कहते हैं, उसका भी प्रभाव भौतिक जीवनमें विरोधके साथ मानवजातिके सामाजिक जीवन तक ही सीमित रहता है। राज्यके क्षेत्रसे बाहर अहंता भरे इस जीवनकी सारी बातें बूज्वा-समाजके गुणोंके रूपमें बनी रहती हैं। राजनीतिक राज्यका सम्बन्ध अपनी कल्पनाओंके साथ—चाहे वह कल्पनाये (सिद्धान्त) भौतिक तत्त्वों सम्बन्धी हों, जैसे कि वैयक्तिक सम्पत्ति, अथवा विचारिक तत्त्वों सम्बन्धी जैसे कि धर्म वस्तुतः सार्वजनिक और वैयक्तिक हितोंके बीचका विरोध ही है। अपने राज्यकी नागरिकताके साथ मनुष्य किसी खास धर्मके अनुयायी होनेके कारण एक विशेष सम्भदाय या धर्मके अनुयायीके तौरपर दूसरे आदमियोंसे जो विरोध रखता है, वह राजनीतिक राज्य और बूज्वा-समाजके बीचका मेद भर है। बूज्वा-समाज आजकलके राज्यका आधार है, जैसे कि प्राचीन समाजका आधार तत्कालीन दास-ग्रथा थी। आधुनिक राज्य अस्तित्वमें आनेके साथ मनुष्यके आम अधिकारोंकी घोषणा करता है, जिनके भोगनेके लिये यहूदियोंको भी उतना ही अधिकार है, जिनना दूसरोंको। मनुष्यके आम अधिकारकी यह स्वीकृति अहंतापूर्ण बूज्वा-व्यक्ति और बौद्धिक तथा भौतिक तत्वोंकी अनाध गतिको स्वीकार करता है। यही बौद्धिक और भौतिक तत्त्व समसामयिक बूज्वा-समाजके साथ उसके जीवनके सार हैं। वह मनुष्यको धर्मसे मुक्त नहीं करते, वल्कि उसे धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं; वह मानवको सम्पत्तिसे स्वतन्त्र नहीं करते, वल्कि सम्पत्ति रखनेकी स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं। वह उसे व्यापारकी छुट्टासे स्वतन्त्र नहीं करते, वल्कि उसे व्यापारकी स्वतन्त्रता देते हैं। राजनीतिक क्रान्तिने सामन्तवादी व्यवस्था, तथा सभी शिल्पी संघों, सभाओं, परिषदोंके—जो कि जनताके विलासके मिश्र मिश्र वास्त्र रूप थे—पैदान्दोंको नष्ट करके बूज्वा समाजको पैदा किया।

मार्क्स उपसहायमें लिखता है—राजनीतिक मुक्तिका अर्थ है मानवको बूज्वा-समाजके एक मेम्बरके रूपमें परिणत करना, उसे एक और अहंतापूर्ण स्वतन्त्र व्यक्ति तथा दूसरी ओर राज्यका नागरिक—एक नैतिक प्राणीके—रूपमें

परिणत करना। मानवता तभी पूर्णतया सुक्ष हो सकेगी, जब कि वास्तविक, वैयक्तिक मानवके रूपमें राज्यका निराकार नामारिक बदल जायेगा और अपने प्रायोगिक जीवनमें वैयक्तिक मानव, अपने वैयक्तिक काम, अपनी वैयक्तिक स्थितियोंमें एक सामाजिक प्रारी बन जायेगा, जब कि मनुष्य सामाजिक शक्तिके तौरपर अपनी निजी शक्तियोंको स्वीकार और संगठित करेगा, जिसके कारण सामाजिक शक्तिको राजनीतिक शक्तिके रूपमें अपनेसे अलग नहीं रखेगा।

यहूदियोंके बारेमें मार्क्स पूछते हैं—यहूदी धर्मका धर्म-निरपेक्ष कौन सा आधार है? व्यावहारिक आवश्यकता, स्वार्थ। यहूदियोंका धर्म-निरपेक्ष कौन सा सम्प्रदाय है? खरीदना और बेचना। उसका धर्म-निरपेक्ष कौन सा ईश्वर है? पैदा। इसके बाद मार्क्स कहते हैं—तो बहुत अच्छा—बेचने-खरीदनेसे पैसेसे मुक्ति अर्थात् व्यावहारिक, वास्तविक यहूदियतसे मुक्ति हमारे समयमें है यहूदियोंकी आत्म-मुक्ति। समाजका जो संगठन बेचने-खरीदनेकी आवश्यक स्थितियों अर्थात् बेचने-खरीदनेकी सम्भावनाको उठा देगा, वही यहूदीपनको असम्भव कर देगा। मार्क्सका यहूदियतके बारेमें विचार था, कि ऐतिहासिक विकार तथा स्वयं यहूदियोंके उत्साहपूर्ण सहयोगके कारण साधारण यहूदियतका सामयिक समाज-विरोधी तत्व आजकी ऊँचाई तक पहुँचा। इस ऊँचाईपर उसे अवश्य अपनेको समाप्त करना होगा। मार्क्सने अपने इस लेखमें बतलाया, कि आजकी धार्मिक समस्याएँ सामाजिक विशेष समस्यासे अधिक कुछ नहीं हैं। उन्होंने यहूदियतके विकासको धार्मिक कल्पनाओं और मतवादमें नहीं, बल्कि औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्रमें दिखलाया, जिसका विचित्र प्रतिबिम्ब यहूदी धर्ममें पाया जाता है। यद्यपि मार्क्सने इस लेखमें सामाजिक और व्यावहारिक कारणोंको बतलाकर नीचे उत्तरनेकी कोशिश की है, लेकिन अभी भी वह दार्शनिक क्षेत्रके सैर करनेसे बाच नहीं आये। मेरिंगके शब्दोंमें जर्मन-फ्रैंच वर्षपत्रमें मार्क्स अभी भी दार्शनिक खेतको जोत रहे हैं, लेकिन उनके हल्के-पैने फालरे जो हराई बनी है, उसका पहला अंकुर है इतिहासकी भौतिक धारणा, जो कि फ्रैंच सम्यताके उष्ण सूर्यके नीचे जल्दी ही फूलने लगा।*

३. फ्रेंच सभ्यता

जर्मनी दर्शन विज्ञानवादी दर्शनकी भूमि समझी जाती थी क्योंकि उसने काट और हेगेल जैसे एकसे एक महान् दार्शनिक पैदा किये। उसी तरह फ्रांस सामाजिक क्रान्ति, समाजवाद और भौतिकवादी दर्शनकी भूमि समझा जाता था। मार्क्स और एगेलसने हेगेलके दर्शनसे द्वन्द्वात्मकताको लिया और फ्राससे भौतिकवाद और समाजवादको। इसलिये फ्रांसकी राजधानीमें पहुँचकर मार्क्सका और भी इस ओर ध्यान जाना स्वाभाविक था। महान् फ्रेंच-क्रान्तिने फ्रासमें समाजवादकी स्थापना नहीं की, लेकिन तब भी उसने सामन्तवादको खत्म कर उसकी जगह बूर्जावाद या पूँजीवादकी स्थापना करके समाजवादके लिये सम्भावनाये जल्द पैदा कर दी। विचार-ज्ञेयमें तो इस क्रान्तिने और भी जबर्दस्त प्रभाव डाला। जिस समय मार्क्स पैरिसमें पहुँचे, उस समय पूँजीवादी (बूर्जी) सभ्यताकी अगुआ सचमुच ही पैरिस थी। यद्यपि १७८९ ई० में ही बूर्ज-वर्गशिकाय-रुद्ध होने लगा था, लेकिन उसे पूर्ण सफलता १८३० ई० की जुलाईवाली क्रातिमें हुई। अधिकार प्राप्त कर अब बूर्ज-वर्ग आरामके साथ विश्राम ले रहा था। जब वहाँ बौद्धिक (विचारी)का सघर्ष अनवरत चल रहा था, उसी समय जर्मनीमें बौद्धिक मृत्युकी नीरवता दिखाई पड़ती थी। मार्क्सके बारेमें १८४४ ई० में रुग्ने फ्रांसवालोंको सूचित किया था : वह बहुत भारी परिमाणमें ग्रथोको पदता थोर परिश्रम कर रहा है। मार्क्सने सचमुच ही अपने दूसरे कामोंको छोड़-कर बार-बार किताबोंके अनन्त समुद्रमें हुबकी लेनी शुरू की थी। कमी-कमी तीन-चाँचीन, चार-चार रात वह चारपाईका सहारा नहीं लेते और लगातार अध्ययन में लगे रहते। ऐसे समय उनके स्वभावमें चिङ्गचिङ्गापन पाया जाना अचरणकी बात नहीं थी। हेगेलके दर्शनकी आलोचना मार्क्स लिखना चाहते थे, लेकिन फ्रेंच महाक्रातिके ऐतिहासिक महत्वोंके भीतर जितना ही वह भीतर छुसते जाते थे, उतना ही उसकी ओरसे उनकी उपेक्षा होती गई। फ्रेंच क्रातिके अध्ययनके बाद वह बूर्जो-वर्शकी युन-स्थापना-सम्बन्धी साहित्यके ऊपर पढ़े। फ्रासके इतिहासको पीछेकी ओर ११ बीं शताब्दी तक पढ़नेके बाद उन्होंने देखा, कि

फ्रेंच इतिहास लगातार होते वर्ग-संघर्षोंका एक प्रवाह है। इसके बाद वर्गोंके आर्थिक ढाँचेका अध्ययन किया, जिसमें रिकादोंकी ओर उन्होंने विशेष तौरसे ध्यान दिया। आज कम्युनिस्टों मार्क्सवादियोंको वर्ग-संघर्षके सिद्धान्तका आरंभक माना जाता है, जिसका अर्थ है, कि यह मार्क्सका आविष्कार था। लेकिन, मार्क्सने इसका श्रेय लेनेसे हमेशा इन्कार किया। हाँ, मार्क्सने यह जरूर किया, कि वर्ग-संघर्षके लिये ऐतिहासिक प्रमाण जमा करके उसे अकाट्य बना दिया। मार्क्सने पता लगाया कि 'फ्रेंच तृतीय राज्य'ने १८ वीं शताब्दीमें शासक-वर्गके विरुद्ध जिस जबर्दस्त हथियारोंको सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया; वह भौतिक-वादका दर्शन था। मार्क्सने पेरिसमें रहते समय इस दर्शनका विशेष तौरसे अध्ययन किया, हेलवेसियो, होलवाशने किस तरह भौतिकवादको सामाजिक जीवनके साथ जोड़ा और मानव बुद्धियोंकी स्वाभाविक समानता, बुद्धि और उद्योगकी प्रगतिके बीच अनिवार्य एकता, मानवताकी स्वाभाविक भले होने और शिक्षाकी सर्वशक्तिमत्ताका तत्व समझाया। मार्क्सने उनकी शिक्षाको वास्तविक मानवतावाद कहा, जैसाकि उन्होंने फ्रेंचवालके दर्शनके बारेमें कहा था। ऐसे इतना ही था, कि हेलवेसियो और होलवाशका भौतिकवाद साम्यवादका सामाजिक आधार बन गया, जबकि फ्रेंचवालके दर्शनमें यह क्षमता नहीं थी।

पेरिसमें मार्क्सको साम्यवाद और समाजवादके अध्ययनके लिये सभी तरहके सुभीते प्राप्त थे। वहाँ एकसे एक प्रतिभाशाली पुरुष उस वक्त मौजूद थे, उसका चातावरण समाजवादके कीटाणुओंसे भरा हुआ था। लेकिन जो अनेक तरहके समाजवाद पेरिसमें लोगोंको अपनी ओर खींचते देखे जाते थे, उनमें सबसे बड़ा दोष यह था, कि वह अपनी सफलताके लिये सम्पत्तिवाले वर्गोंकी शुभेच्छा और अपनी युक्तिप्रवीणतापर विश्वास करते थे। वहाँके समाजवादी विचारक अपने सामाजिक सुधारों या क्रांतिको सफलताके लिये शान्तिपूर्ण प्रचार द्वारा स्वामियों-को मनवा लेना भर पर्याप्त समझते थे। क्रांतिकर-करके भी सफलताका मुँह न देख अब वह वस्तुतः निराश से हो गये थे, और नहीं समझते थे, कि फिर उस तरहका कदम उठानेसे कुछ हाथ लगेगा। वह दुखोत्पीड़ित जनसाधारणकी सहायता करना चाहते थे, क्योंकि जनता अपनेको उतारनेके लिये

कुछ करनेमें असमर्थ थी । १८३० ई० में कम्करोंके विद्रोहके असफल होनेसे उनके नेता सामाजिक क्रातिके लिये कोई सफल साधन नहीं देख पा रहे थे ।

लेकिन, मज्जूर-आन्दोलन और भी तेजीसे बढ़ता ही गया, कभी जर्मन कवि हाइनरिख हाइनेके शब्दोंमें : फ्रासमें सम्पानके योग्य केवल कम्युनिस्ट ही एक दल है । मैं वही माव सेट-साइमनके अवशिष्ट अनुयायियों...या फूरियेवादियोंके बारेमें भी रखता हूँ । —फूरिये अब भी जीवित तथा सक्रिय है । लेकिन यह लोग केवल शब्दसेही प्रेरित होते हैं...यह परम विश्वात्मा द्वारा नियतिनिष्ठ शुलाम उसके विराट निर्णयोंको पूरा करनेवाले दात नहीं हैं । देर या जल्दीमें सेंट साइमनकी सारी विखरी सेना और फूरियेवादियोंका सारा जेनरल-स्टाफ सम्बवादकी बढ़ती हुई सेनाकी ओर चला जायगा । हाइनेने उसी साल इन पंक्तियोंको लिखा था, जिस साल कि मार्क्स पैरिसमें पहुँचे । राइनिशे जाइट्स का सम्मानन करते समयही मार्क्स फ्रासके दो प्रसिद्ध विचारकों लारू और प्रूघोसे परिचित थे, ये दोनों ही मज्जूरवर्गके आदमी थे । उसी बक मार्क्सने उनकी कृतियोंको अच्छी तरह पढ़नेका निश्चय कर लिया था । दोनों लेखक इसलिये भी मार्क्स को अपनी ओर आकृष्ट करनेमें समर्थ हुये, क्योंकि वह जर्मन दर्शनको अपने उद्देश्योंके साथ सम्मिलित करना चाहते थे, यद्यपि उन्हें जर्मन भाषामेंही मौजूद उस दर्शनको पढ़नेमें बहुत कठिनाइयाँ थीं । मार्क्सने हेरोलीय दर्शनका परिचय करानेके लिये प्रूघोके साथ घटो बिताये । कभी-कभी दोनों विचारमें एक-दूसरेके साथ हो जाते, लेकिन फिर जल्दी ही मतमेद हो जाता । प्रूघोके मरनेके बाद मार्क्सने स्थीकार किया, कि प्रूघोने मज्जूर-आन्दोलनको जबदस्त प्रेरणा दी, और उसके द्वारा स्वयं मार्क्सको भी उसने प्रभावित किया । प्रूघोंकी पहली कृतिको मार्क्सने आधुनिक सर्वहाराकी प्रथम वैज्ञानिक घोषणा (मेनिफेस्टो) बतलाया । मार्क्सने फ्रेच-क्राति और उसके पीछेकी विचारधाराका अध्ययन किया । फ्रेच समाजवादका ऊहापोह किया, फिर उन्होंने सर्वहाराका अध्ययन आरम्भ किया ।

इस प्रकार फ्रेच सम्यताका अध्ययन मार्क्सने हल्के दिलसे नहीं, बल्कि बड़ी चतुरता, गम्भीरता के साथ सारी शक्ति लगाकर किया ।

४ पेरिसके अन्तिम मास और निष्कासन

(१) प्रथम सन्तान—पैरिसमें रहते समय मार्क्स और जेनीकी पहली सन्तान पैदा हुई, जिसे अपने सम्बन्धियोंको दिखलाने वह जर्मनी गये। कोलोन-के पुराने मित्रोंका अब भी मार्क्सके साथ वैसा ही घनिष्ठ और सुन्दर सम्बन्ध था। उनके लिए एक हजार थालरोके कारण मार्क्सको पेरिसमें निश्चिन्त रहकर अध्ययन करनेका बहुत सुभीता हुआ। हाइनरिख हाइनेसे मार्क्सका घनिष्ठ सम्बन्ध था। १८४४ ई० में मार्क्ससे जो प्रेरणा हुई, उससे प्रभावित हो कविने जर्मन निरंकुश शासकोंके व्यंगके रूपमें अपनी महत्वपूर्ण कृति हेमन्ती कहानियाँ, जुलाहोंको गीत लिखी। यद्यपि देर तक दोनों एक साथ नहीं रहे, लेकिन मार्क्स हमेशा हाइनेके समर्थक रहे। मार्क्सने स्वयं तख्ताईमें कवि बननेकी चेष्टा की थी, यद्यपि जल्दी ही अपने क्षेत्रसे बाहर समझकर उस प्रयासको छोड़ ही नहीं दिया, बल्कि अपनी उन रचनाओंको भी नष्ट होने दिया; लेकिन मार्क्सकी सहानुभूति आजन्म कवियोंके साथ रही। वह मानते थे, कि कवि एक विशेष प्रकारके मनुष्य हैं, जिन्हें साधारण मनुष्योंके गजसे नहीं नापना चाहिये। अगर हम उनसे गीत चाहते हैं उन्हें कड़ी आलोचनासे परास्त करना नहीं बल्कि उनकी चाढ़कारिता करनी होगी। लेकिन जहाँ तक हाइनेका सम्बन्ध था, उसे मार्क्स कविसे और भी अधिक समझते थे। हाइने प्रतिभाशाली कविके साथ-साथ योद्धा था; दीनों, दुखियों, सर्वहारोंके पक्षमें वह प्रभुओंसे लोहा लेनेके लिये तैयार था, ऐसे सोनेमें सुगन्धजाले कविके साथ मार्क्सकी घनिष्ठता क्यों न होती? १८३४ ई० में ही—जब कि मार्क्स अभी सोलाह वर्षके विद्यार्थी थे—हाइनेने घोषित किया था, “हमारे शिष्ट (कलासिकल) साहित्यमें जो स्वतंत्रताकी भावना व्याप्त है, वह हमारे विद्वानों, कवियों और साहित्यिक पुरुषोंमें उससे कहीं कम सक्रिय है, जितनी कि हमारे शिल्पियों और कमकरोंकी साधारण जनतामें। मार्क्स दस साल बाद जिस बक्त पेरिसमें थे, हाइनेने फिर कहा था: वर्तमान स्थितिके विरुद्ध संघर्ष करनेमें सर्वहारा प्रगति-शील आत्माओं, महान् दार्शनिकोंको अपने नेताके तौरपर पानेकी माँग कर

सकते हैं। मार्क्स और हाइनेको आपसमें घनिष्ठ बनानेके लिये कारण थे जर्मन दर्शन, फ्रेच समाजवाद, और वह धृष्णा जो कि उस भूठे ट्यूट्यूनवादके प्रति थी, जो कि जर्मन बेवकूफीके पुराने चोरोंको उग्रवादी वाक्यों द्वारा नवीन बनाना चाहता था।

(२) फोरवेड्स—आरम्भमें रूसी सामन्ती वर्गका भिखाइल बकुनिन रूसोंका कृपापत्र था। जब मार्क्स और रूसोंमें मतभेद पैदा हुआ, तो उसने मार्क्सीका पक्ष लिया। १८४४ ई० के नववर्षसे फोरवेड्स के नामसे एक अर्ध-साप्ताहिक पत्र पेरिससे निकलने लगा था। “जर्मन फ्रेच वर्षपत्र” के निकलने-का स्वागत “फोरवेड्स” ने गालियोंसे किया, इसीसे मालूम हो सकता है, कि उसकी नीति क्या थी। इस पत्रने प्रशियन सरकारके कृपापत्र बनानेकी बड़ी कोशिश की, लेकिन अपने अन्धेपनके कारण सरकारने पत्रकी विक्री देशमें निषिद्ध कर दी थी। पत्रको भी खब बंदलना पड़ा। वेनेज नामके एक तरुण लेखकने अपना एक गर्मार्गम लेख भेजा। इसका इतना स्वागत हुआ, कि कुछ समय बाद वेनेज सम्पादक बना दिया गया। इसी पत्रमें एक प्रशियन के नामसे रूसोंने प्रशियन सरकार के खिलाफ शाराबी राजा और लॉगबी रानी जैसे शब्दोंका उपयोग करते कई कड़े लेख लिखे। रूसों प्रशियन नहीं था, वह ड्रेस्डेन नगर परिषद्का एक सदस्य था, और बवेरियावासी बेनेज—राइन-लैंड-वेस्टफ़ालियासे आया था। दूसरा लेखक ब्रोन्स्टाइन हमर्वर्गका था। ऐसी परिस्थितिमें फोरवेड्स के इस लेखके लेखक मार्क्स ही समझे जा सकते थे। रूसोंका सम्बन्ध मार्क्ससे कितना खराब हो गया था, यह उसके मार्क्सके प्रति इस्तेमाल किये पूरी तौरसे दुष्ट, ढीठ यहूदी जैसे शब्दोंसे ही मालूम होगा। दो साल बाद उसने प्रशियाके गृह-मन्त्रीके पास क्षमा-प्रार्थना करते हुये पेरिसके अपने निर्बासित साथियोंके का भेद खोलकर विश्वासघात किया था, इसीलिये चिल्कुल सम्भव है, कि रूसोंने जान-बूझकर लेखको मार्क्सको बदनाम करनेके लिये प्रशियन के नामसे छुपवाया हो।

(३) सर्वहाराका पक्षपात—१८४४ ई० में सिलेसियाके बुनकरोंने विडोह कर दिया। मार्क्स सर्वहाराको ही क्रातिका असली वाहक समझते

ये, इसलिये वह सर्वहाराकेकिसी संघर्षको महत्व दिये बिना नहीं रह सकते थे। लेकिन, खगे कोई महत्व नहीं देता था। उसका कहना था : इसमें कोई राजनीतिक आत्मा नहीं है, और बिना राजनीतिक आत्माके कोई सामाजिक क्रांति सम्भव नहीं है। मार्क्सने बतलाया कि बूज्वा और सर्वहाराकी मुक्तिमें गहरा भेद है। बूज्वा-मुक्ति सामाजिक कल्याणकी भावनासे उत्पन्न होती है, जब कि सर्वहाराकी मुक्ति सामाजिक वेदनाओंके कारण पैदा होती है। बूज्वा-क्रांति राजनीतिक राज्य और कामनवेल्थ (समान राज) से अलग रहकर होती है, जब कि सर्वहारा क्रांति मानवता और मानवताके वास्तविक कामनवेल्थ (समान राज्य) से बिलगावके कारण होती है। मानवतासे बिलगाव उससे कहीं अधिक गहरा, कहीं अधिक असह्य, कहीं अधिक भयंकर और कहीं अधिक सहज विरोधी है, जितना कि राजनीतिक कामनवेल्थ से बिलगाव, और इसीलिये इस बिलगावको खत्म करने की भावना चाहे आंशिक रूपसे ही क्यों न हो, सिलेसियाके बुनकरोंके विद्रोह में है, अतएव वह कहीं अधिक जबर्दस्त घटना है। इस प्रकार खगोसे मार्क्सके दृष्टिकोणका भेद होना स्वाभाविक है। मार्क्सके शब्दोंमें : बुनकरोंके केवल गीतको ले लो। कैसे बिलक्षण, जबर्दस्त, निष्ठुर और शक्तिशाली तरीकेसे सर्वहारा वैयक्तिक सम्पत्तिवाले समाजके प्रति अपने विरोधके नारेको पेश करता है। सिलेसीय विद्रोह वहाँ आरम्भ होता है, जहाँ फैंच और अंग्रेज विद्रोह (क्रांतियाँ) खत्म हुईँ; वहीसे एक वर्गके तौरपर सर्वहारा-चेतनाके साथ सिलेसियाके बुनकरोंका विद्रोह आरम्भ होता है। इसकी सारी कार्रवाई इस विशेषताको रखती है। इन विद्रोहियोंने केवल मशीनों और कमकरोंके प्रतिद्वन्द्वियोंको ही नहीं नष्ट किया, बल्कि व्यापारियोंके बहीखातों और उनके सम्पत्तिके दस्तावेजोंको भी नष्ट कर दिया। कमसे कम आरम्भमें सभी दूसरे आन्दोलन केवल उद्योगपतियों, दिखाई देनेवाले शत्रुओंके विरुद्ध हुये, लेकिन यह आन्दोलन अदृश्य शत्रु बैंकरोंके विरुद्ध भी है। अन्ततः सबसे बड़ी बात यह है, कि कोई भी अंग्रेजी विद्रोह इतनी हिम्मत, इतनी दृढ़ता और इतनी लगनके साथ नहीं किया गया था।

इसी सम्बन्धमें मार्क्सने वाइटलिंगके चमत्कारपूर्ण लेखोंका भी जिक्र किया,

जो कि अपने सिद्धान्तिक विचारोंमें प्रधासे भी बढ़-चढ़कर था, यद्यापि जहाँ तक क्रियाका सम्बन्ध है, वह उससे पीछे रहा। मार्क्सने कहा : अपने दर्शनिकों और लेखकोंको लेते क्या बूज्जबी अपनी मुक्ति, राजनीतिक मुक्तिके सम्बन्धमें कोई ऐसी कृति पेश कर सकती है, जिसकी तुलना वाइटर्लिंगके हारमनी (स्वरस्ता) और स्वतंत्रताकी गारंटियों से की जा सके ? इस जर्मन कमकरकी सराहना करते हुये मार्क्सने बतलाया, कि इसके सामने दूसरा जर्मन राजनीतिक साहित्य बिल्कुल दरिंदा सा मालूम होता है, और यह भी, कि युरोपीय सर्वहारोंमें जर्मन सर्वहारा उसी तरह सिद्धान्तवादी है, जैसे कि अंग्रेज सर्वहारा अर्थशास्त्री और फ्रेंच सर्वहारा राजनीतिज्ञ। मार्क्सिका एिलेसियाके बुनकरोंके विद्रोहका मूल्यांकन अति रंजित कहा जा सकता है, लेकिन इसमें तो शक नहीं, कि वह उस शक्ति-खोतको पकड़नेमें समर्थ हुये थे, जो कि अन्तमें वास्तविक सामाजिक क्रांति करके समाजवादी स्थापना करनेमें समर्थ होगा। समाजवादी दिमाग और सर्वहारके शास्त्रबलपर हुई रूसी क्रांतिने इसी बातको प्रमाणित किया।

पैरिसमें “न्यायी सघ” (लीग आफ दी जस्ट) के नामसे कुछ कमकरोंने अपना एक संघ स्थापित किया था, जो कि १८३० ई० के बादवाले सालोंमें उनके १८३८ ई० में अन्तिम पराजयके बाद फ्रासीसी शुत सभाओंसे पैदा हुआ था। संगठनके लिये यह पराजय अच्छी साक्षित हुई, क्योंकि उसके बाद संघके येम्हर अपने विचारोंके लिये पैरिस ही नहीं इगलैंड और स्वीट्जलैंडके दूसरे केन्द्रोंमें विखर गये, जहाँ पर उन्होंने अपनी शाखायें कायम कीं। पैरिसके संगठनका नेता डिजिंग-निवासी हेरमान इवेबेक था। वह कैबेटके उद्योगियन सिद्धान्तोंके जालमें फँसा था, जिनका उसने जर्मन भाषामें अनुवाद भी किया था। वाइटर्लिंग स्वीट्जलैंडमें आन्दोलनका नेता था और वह इवेबेकसे बुद्धि-में कहाँ बढ़-चढ़कर था। लीगकी लन्दन-शाखाके नेता थे घड़ीसाज जोज़ेफ मोल, मोर्की हाइनरिज़ बाबर और भूतपूर्व जंगलातका विद्यार्थी कार्ल शापर, जो कि लन्दनमें प्रेसमें कमोजीट और कभी भाषाग्रोका शिक्षक रहकर अपनी जीविका चलाता था। मार्क्सने इन तीनों “वास्तविक मनुष्यों” के बारेमें एरोत्ससे सुना, जब कि इगलैंड जाते समय सितम्बर १८४४ में पैरिसमें वह मार्क्ससे मिले,

और उन तीनोंका जिक्र बड़े आदरसे किया। उस बार एंगेल्स दस दिन तक पैरिसमें रहे, और उन्होंने अपना सारा समय मार्क्सके साथ बिताया। दोनोंने अपनी समान विचारधारा पर बहुत देर तक विचार किया और विचारोंमें दूर तककी एकता स्थापित करनेमें सफल हुये। इसी समय उनका पुराना मित्र बूनो बाबरने मार्क्स और एंगेल्सके नये विचारोंका जबर्दस्त समालोचक बन उस पर एक पुस्तिका प्रकाशित की। इसी समय पता लगने पर दोनोंने जबाब देनेका निश्चय किया। एंगेल्सने तुरन्त बैठकर उसके बारेमें लिख डाला। मार्क्सने उस काममें हाथ लगा, अपने स्वभावसे मजबूर होकर और गहराईमें गाये बिना नहीं रह सकते थे, इसलिये कई महीना लगाकर उन्होंने तीन सौ पृष्ठोंका एक ग्रंथ लिख डाला, जिसकी समाप्ति जनवरी १८४५ ई० में हुई, और उसीके साथ मार्क्सका पैरिसका निवास भी समाप्त हो गया।

फोरबेडर्ससे रुट्ट होकर बर्लिनकी सरकारने फ्रांसकी सरकारसे पत्रको दबानेके लिये कहा, लेकिन मंत्री शुइज़ो उसे माननेके लिये तैयार नहीं था। प्रशियन निरंकुशता अक्खड़ और असंस्कृत थी, जब कि फ्रांसके बूज्बा-शासक काफी सम्भ और संस्कृत थे, इसलिये शुइज़ोने बर्लिनको संतुष्ट करनेके लिये ऐसा कोई कदम उठाना पसन्द नहीं किया। लेकिन, जब मैयरं श्चेष्जने तत्कालीन प्रशियन राजा फ्रेडरिक विलियम चतुर्थके ऊपर जुलाई १८४४ ई० में हत्याके उद्देश्यसे हमला किया, जिसके लिये स्टोरकौके मैयेर हाइनरिख लुडविग श्चेष्जको उसी साल फाँसी पर चढ़ाया गया, तो जर्मन निर्वासितोंकी कार्रवाइयाँ उपेक्षापूर्वक नहीं देखी जा सकती थीं। शुइज़ोके मंत्रिमंडलने निश्चय किया, कि “फोरबेडर्स” के खिलाफ दो कामोंके लिये कार्रवाई की जाय : जिम्मेवार सम्पादक पर पर्याप्त पैसा अधिकारियोंके पास न जमा करनेके और राजाकी हत्याके लिये भड़कानेके अपराधमें मुकदमा चलाया जाय।

बेनेज़को जमानत न जमा करनेके लिये दो महीनेकी सजा और २०० फ्रांकका जुरमाना हुआ, लेकिन तुरन्त ही “फोरबेडर्स” ने घोषित कर दिया, कि भविष्यमें अब वह पत्र मासिक निकला करेगा। अब उस पर जमानतका कानून लागू नहीं हो सकता था। बर्लिन फिर भी पेरिस पर दबाव डालती रही और

अन्तमें गुहजोको उक पत्रके सम्पादकों और लेखकोंको फ्रांससे निष्कासित करने-की बात माननी पड़ी। पंगोल्सने जेनी मार्क्सकी अर्थीके समय जो भाषण दिया था, उसमें बतलाया था, कि शुद्धजोने अलेक्जेंडर फान हमबोल्टकी बातमें पढ़कर ऐसा किया था, जिसका कि व्याह द्वारा प्रशियाके वैदेशिक मत्रीके साथ सम्बन्ध था। बर्लिन सरकार हाइनेसे खास तौरसे नाराज हुई थी, क्योंकि कविने प्रशिया-की स्थिति पर खास करके उसके राबाके ऊपर बहुत कड़े घ्यारह व्यगपूर्ण लेख लिखे थे। हाइने सारे युरोपमें प्रसिद्ध कवि था। फ्रैंच लोग भी उसे करीब-करीब एक राष्ट्रीय कविके तौर पर मानते थे। ऐसे आदमीके साथ गुहजो—जो कि स्वयं भी साहित्यमें दखल रखता था—बर्लिनके आदेशके अनुसार अतीव नहीं कर सकता था, इसलिये कवि पत्रके सम्पादकीय विभागका सदस्य नहीं है, यह कहकर उसने छुट्टी ले ली।

हाइनेको यथापि छुट्टी मिल गई। ११ जनवरी १८४५ को “फोरवेद्स” से सम्बन्ध रखनेके सन्देहमें कितने ही निर्वासितोंको देश निष्कासनका दुक्कुम मिला, जिनमें मार्क्स, रूसो, बर्कनिन, बोर्नस्टाइन और बेनेज भी थे। बोर्नस्टाइनने “फोरवेड्स” के प्रकाशनको बद्द कर देनेका चन्चन देकर छुट्टी ले ली। रूसो अपनेको राजभक्त सावित करनेकी कोशिश करता रहा। मार्क्स ऐसा कुछ भी करनेके लिये तैयार नहीं था, क्योंकि समाजवाद, सर्वहाराकी मुक्ति और सामाजिक क्रांतिकी सेवाका संकल्प उन्होंने हलके दिलसे नहीं किया था। इस प्रकार एक सालसे कुछ अधिक पेरिसमें रहनेके बाद मार्क्सने बुसेल्स जानेकी तैयारी की। यह अवसर मार्क्सके लिये और समाजवादके लिये बड़ा महत्वपूर्ण सावित हुआ। इससे उनके अनुमत और ज्ञानकी बड़ी वृद्धि हुई। इस समयका उन्होंने पूरा उपयोग किया, इसमें शक नहीं। साथ ही उन्होंने इसी समय अपने कितने ही आजन्म साथियोंको प्राप्त करनेमें भी सफलता पाई।

अध्याय ६

फ्रीडरिक एंगेल्स

मार्क्स और एंगेल्सका पारस्परिक सम्बन्ध—वैयक्तिक और क्रांतिकारी जीवन-दोनों का ही—ब्रसाधारण था। एंगेल्स मार्क्ससे दो वर्ष बाद २८ नवम्बर १८३० को जर्मनीके वर्मेन शहरमें पैदा हुये थे, लेकिन वह जमल भाइसे भी बढ़कर थे। विचारोंमें, भावोंमें और पारस्परिक स्नेहमें इतना भेल और एकता दुनियामें शायद ह कभी दिखाई पड़ता हो। मार्क्सकी सारी जीवनीमें एंगेल्स साथ-साथ आते हैं। यहाँ एंगेल्सके अब तकके जीवनके बारेमें हम कुछ कह देना चाहते हैं।

१. बाल्य शिक्षा—एंगेल्सका पिता धनी और एक कारखानेका मालिक था, इसलिये मार्क्ससे भी अच्छी हालतमें बाल्य-जीवनके ब्रितानेके लिये वहाँ सारे साधन मौजूद थे। मार्क्सके पिताकी तरह उदार विचारोंके बातावरणमें पलनेका एंगेल्सको मौका नहीं मिला, इसलिये धार्मिक संस्कारोंसे अपनेको मुक्त करनेमें एंगेल्सको काफी मेहनत करनी पड़ी। साधारण पढ़ाईके बाद एंगेल्स एल्वरफेल्टके कालेजमें दाखिल हुए, जहाँ एक वर्ष रहकर अपनी पढ़ाई खत्म करके वह पिताके कास्वारमें शामिल हो गये। बहुत बारों तक लगे रहे, लेकिन उसमें उनका मन लग नहीं सकता था, क्योंकि वह सर्वहाराके मुक्तिका रास्ता ढूँढ़ रहे थे। एंगेल्सके १८ वर्षकी उमरमें लिखे पत्रसे मालूम होता है, कि वह शराबको पसन्द करते थे और शराबका प्रेम उनका आजीवन रहा, यद्यपि वह हाईनेकी तरह पीकर बदमस्त हो गाने नहीं लगते थे।

मार्क्सकी तरह एंगेल्सने भी तस्खाईमें कविता-सरस्वतीकी आराधना शुरू की, लेकिन अपने ज्येष्ठ साथीकी तरह उन्हें भी जल्दी ही मालूम हो गया, कि वह अधिकारसे बाहरकी चीज है। जर्मन महाकवि गोथेकी तरह तस्ख कवियों की सलाहको एंगेल्सने पसन्द किया, जिसकी अन्तिम पंक्तियाँ थीं :

तरण लिखनीचन्द, ज्ञान दो उन क्षणोंमें,
जब हृदय और आत्मा दोनों हँसॉंटुल्स हैं,
कि सरस्वती हो सकता है तुम्हारे साथ जाये,
लेकिन वह कभी तुम्हारी पथ-प्रदर्शिका नहीं होगी ।

एंगेल्सने गोथेकी सीख भविष्यके लिये मन मान ली, लेकिन अपनी एक कविताको प्रकाशित किये बिना नहीं रहे, क्योंकि दूसरे पट्टे, जो कि मुझ जैसे या अधिक बड़े गढ़हे (ऐसा करते) हैं इस तरह मैं जर्मन साहित्यके तलको न उठा सकता हूँ, न गिरा सकता हूँ। फिर अपनी कविताको प्रकाशित करनेमें क्या हृज़ ? एंगेल्सने खिस्तान पुराण के नामसे चार सर्गोंमें अपनी कविताको उसी समय प्रकाशित किया था, जिस समय कि ब्रूनों बावरको प्रोफेसरीसे निकाला गया । यह व्यंग्यपूर्ण खड़ कान्ध खिस्तान पुराण जूरिचके पास नो मुन्स्टर (स्वीट्जलैंड) में प्रकाशित किया गया । इसकी कुछ पक्षियोंमें एंगेल्सने अपने और मार्कसके बारेमें भी लिखा है । उस समय तक अभी मार्कसके साथ एंगेल्सका साक्षात परिचय नहीं हुआ था :

किन्तु जो लम्बी टाँगवाला बायें बहुत दूर तक नाचता है,
वह ओसवाल्ड है जिसकी कोट मट्सैली और बीचस् काली मिर्चके रंगकी है,
मिर्च बाहर और मिर्च भीतर घोट्नाटवाला ओसवाल्ड ।

खोपड़ीसे एडी तक पूरा अत्यंत उग्रवादी,
वह एक हथियार छोड़ता है, जो गिलोटिन है,
और उसके तारों पर वह कवादीन गाता ।

सदा नारकीय गीत बजाता, स्ककर चिल्लाता
बनाओ तुम बटालियन ।

कौन बैपर्चा हो अपने रास्तेपर आक्रमण करता है ?

द्वीरका एक काली भौवाला, एक पक्का टट्ठा,
जो न चलता न फुदकता, बल्कि ऐडी लगानेपर कूदता है,
और अपने हाथोंको हवामें ऊपर तानता है,
मानो उसका शुस्ता तुरंत पकड़ लेगा,

खर्गके प्रतापी खेमेको और उसे धरतीपर फाड़ फेंकेगा
मुट्ठी बाँधे भयदायक मुक्केसे वह बिना रुके धमकाता है,
मानों दस हजार शैतान उसकी छापीपर नाच रहे हों ।

१० जनवरी १८३६ के एक पत्रसे मालूम होता है, कि १६ वर्षकी उमरमें अब यह प्रतिमाशाली तरुण “तरुण जर्मनी” के उथले साहित्यसे ऊब गया था । उसने उस समयके फैशनेबल कवियों और साहित्यकारोंका मजाक उड़ाते हुये कहा था : यह पट्टा थ्योडोर मुंडट सुन्दरी तेगलियोनके बारेमें कूड़ा—करकट काफी परिमाणमें लिपिबद्धकर रहा है, जो कि गोथेकी कविताकी व्याख्याके रूपमें नृत्य करती है । वह अपनेको गोथे, हाइने, राहेल और स्टीगलिट्जसे उधार लिये हुये सूक्ष्म पक्षोंसे अलंकृत करता है । बुटिनाके बारेमें बड़ी कीमती मूर्खताओंको लिखता है । और हाइनरिख लौवे । यह पट्टा एकके बाद एक अविद्यमान पात्र और ऐसी यात्राकी कहानियाँ लिखता है जो कि यात्राकहानियाँ नहीं हैं, मूर्खता के ऊपर मूर्खताको बिलोता जा रहा है । यह भयंकर है ।

बर्मीन धर्मभीस्ताका गढ़ है, इसलिये एंगेल्सको उसके फ़देसे निकलनेमें काफी मेहनत करनी पड़ी, जैसा कि तरुण एंगेल्सके एक पत्रके निम्न उद्धरणोंसे मालूम होता है : मैं प्रतिदिन, बल्कि प्रतिदिन, बल्कि प्रायः सारे दिनभर सत्यके लिये प्रार्थना करता हूँ, और यह तबसे बराबर करता आ रहा हूँ, जबसे कि मेरे भीतर सन्देह उत्पन्न होने लगा, लेकिन तब भी भगवान मैं तुम्हारे विश्वासकी ओर लौट नहीं सकता ।.. इन पंक्तियोंके लिखते समय आँसू निकल रहे हैं । मेरे हृदयमें गहरा मन्थन हो रहा है, लेकिन मैं अनुभव करता हूँ, कि मैं खोया नहीं गया हूँ । मैं जरूर उस भगवानका रास्ता पाऊँगा, जिसको कि मैं अपने सम्पूर्ण हृदयसे चाहता हूँ ।

एंगेल्सके मनमें जब इस तरहके संघर्ष चल रहे थे, उसी समय अपने सन्देहोंको दूर करनेके लिये वह धार्मिक नेताओंकी पुस्तकोंको पढ़ने लगे, जिससे वह डेविड स्ट्रॉसके चिचारों तक पहुँचे । स्ट्रासने जरूर प्रभाव डाला । दलदलसे निकलनेकी पहली सूचना उनके एक पत्रसे मिलती है : “मैं अब हेगेलीय होने

वाला हूँ । मुझे नहीं मालूम, मैं वह हो सकूँगा यह नहीं, लेकिन स्ट्रॉसने मेरे लिये हेगेलपर प्रकाश डाला है । वह बहुत युक्तियुक्त मालूम होता है । पट्टोंका इतिहास-दर्शन जो भी हो, मुझे वह चिलकुल अपने हृदयके अनुकूल मालूम होता है ।”

इस प्रकार स्ट्रॉसने एगेल्सको धार्मिक नास्तिकतामें लाकर छोड़ दिया, लेकिन फिर एगेल्सको राजनीतिक नास्तिकतामें छुसनेमें देर नहीं हुई । वह राजतंत्र और प्रशियाके राजाके सम्बन्धमें भी नास्तिक हो चले, जैसा कि उन्होंने प्रशियाके राजाकी प्रशासा करते हुये किंतुको मुनकर कहा था : “मैं केवल उसी राजाऐं कुछ भजी चीज़ की आशा रखता हूँ, जिसका दिमाग अपनी जनताके घूसेसे धायल हो गया और जिसके महलके जंगले क्रातिके पत्थरोंमें भर भहराकर गिर रहे हैं ।”

अक्टूबर १८४१ से अक्टूबर १८४२ तक एक साल में एंगेल्स वल्सिनमें वोपखानेमें सैनिक सेवा करते कुफ्फारग्रावेनकी बारिकोंमें रहते थे, जो उस घरसे नातिवूर था, जिसमें कभी हेगेल रहता और वह अन्तमें मरा । वहांसे कितनी ही बार एगेल्सने “द्वाशो या खुखेर” (जर्मन वर्षपत्र) और “राइनिश जाइडनग ” में लेख मेजे । फौजी वर्दीमें वह खुलकर अपना नाम कैसे दे सकते थे ? इसलिये यह लेख फ्रीडरिख ओसवाल्डके नाम से छपे थे । ६ दिसम्बर १८४२ को एगेल्सकी कबी आलोचनाके पात्र एक लेखकके साथ सहानुभूति दिखलाते हुये शुज्जकोफने लिखा था : “फ० ओसवाल्डको साहित्यचेतनमें प्रवेश करनेकी कुसेवाकी जिम्मेवारी तुर्माण्यसे मेरे ऊपर है । सालों शुजरे, जबकि एंगेल्स नामक एक तस्वीर व्यापारीने ब्रेमेनसे बुप्पेल्स्टनकी हितिके बारेमें पञ्च मेजे थे । मैंने उसको शुद्ध किया, बहुत ज्यादा भड़कानेवाली पंक्तियोंको काटकर उसे छाप दिया । इसके बाद उसने और भी मामूली चीजें मेजी, जिन्हें भुजे सदा फिरसे लिखना पड़ता । फिर एकाएक उसने संशोधन करनेसे मना कर दिया । हेगेलको पढ़ने और दूसरे पत्रोंमें अपने लेख मेजने लगा । तुम्हारी आलोचना जब निकली, उससे योड़े ही पहले मैंने वल्सिनमें उसके पास पन्द्रह यालर (पौँड) मेजे थे । हमेशा इन जवान पट्टोंका ढंग है : सोचने और

लिखनेको सीखना हमारी मददसे फिर उनका पहला स्वतंत्र काम होता है औद्यिक पितृहत्या । निश्चय ही, वह बुराई इतना अधिक नहीं फूल-फल सकती थी, यदि राइनिश जाहटुंग और रुगेका पत्र उसके लिये न होते ।”

एंगेल्स आफिसमें व्यापार के सम्बन्धमें एक योग्य कर्मी थे, और बैरकमें भी वह एक योग्य सैनिक रहे । उस दिनसे अपने जीवनके अन्त तक सैनिक विश्वान का अध्ययन एंगेल्सका दिलचस्प विषय था । बर्लिनके सैनिक सेवाघाले समयमें एंगेल्सका सम्बन्ध “स्वतंत्र मानवों” से हुआ । अभी स्वतंत्र मानव उतने ज्यादा कुदमग़ज नहीं बने थे । उनके विवादोमें एंगेल्सने भी एक दो लेख लिखे थे । अप्रैल १८४२ में (२२ वर्षकी उमरमें) एंगेल्सकी एक ५५ पृष्ठोंकी पुस्तिका “लाइपजिग” में लेखकके नामके बिना प्रकाशित हुई, जिसका नाम था, “शोर्लिंग और भगवद्-ज्ञान” । कवि शोर्लिंगको बुढ़ापेमें पैगम्बर बननेका शौक चर्चाया था, और उसे भगवानकी ओरसे प्रेरणा तथा ज्ञान मिलने लगा था । शोर्लिंगने स्वतंत्र दर्शनपर आनेप करते हुये पुरानी वातोंका समर्थन करना शुरू किया था । वह चाहता था, कि बर्लिनमें युनिवर्सिटीसे हेगेलीय दर्शन हटे और उसकी जगह मेरे सम्बन्धी विश्वासोंको पढ़ाया जाय । एंगेल्सकी पुस्तिकाको रुग्नेने बकुनिनकी समझा था और उसने होनहार तस्लिकी प्रशंसा भी की थी । इसी समय ब्रूनो वावरको प्रोफेसरीसे हटाया गया, जिसपर एंगेल्सने “खस्तान पुराण” के नामसे चार सर्गका खंड-काव्य लिखा, जिसके बारेमें हम पहले बतला चुके हैं ।

सालभरकी सैनिक सेवा खत्म हो जानेके बाद १८४२ के सितम्बरके अन्त में एंगेल्स अपने घर लौटे, लेकिन दो महीनेके बाद ही वह इंगलैंडके लिये रवाना गये, हो एस्मेन और एंगेल्स नामक कताई मिलमें कर्लकंका काम करने लगे— इस मिलमें उनके पिता भागीदार थे और पिताके कारबारको सँभालनेका यह आरम्भ था । १८४२ ई० में इसी यात्राके समय वह कोलोनमें जाकर पहले पहले मार्क्सके साक्षात् समर्कमें आये । वैसे “राइनिश जाहटुंग” में उनके लेख पहले निकले थे । मार्क्स कठोर यथार्थवादी दिमागके पुरुष थे । वह सहसा किसी की लम्बी-चौड़ी वातोमें नहीं आते थे, विशेषकर मध्यवर्गके ऊपर उनकी

आस्था बहुत कम थी। इसीलिये इस पहली मुलाकातमें मार्क्सने भावी सारे जन्मके साथी के साथ उत्साह नहीं दिखलाया। मार्क्स अब “स्वतंत्र मानवों” से ऊँच नुके थे और उनसे सम्बन्धविच्छेद करने वाले थे और बावर-बन्धुओंके पत्रोंके कारण एंगेल्सके प्रति अच्छे भाव नहीं रखते थे।

२ इंगलैंडमें

इंगलैंडमें २२ वर्षके तम्हण एंगेल्सने पहली बार २१ मास बिताये। इस प्रवासका एंगेल्सके जीवन और विचारोपर वैसा ही प्रभाव पड़ा, जैसा कि मार्क्स-पर पेरिसके निवासका। पेरिस यदि भौतिकवादी दर्शन और फ्रेच-क्रातिकी भूमि थी, तो इंगलैंडने भी जबर्दस्त औद्योगिक क्राति की थी, जिसके कारण बूज्जी-वर्गके आरम और विकासका यहाँ अच्छी तरह अध्ययन किया जा सकता था। इंगलैंडने औद्योगिक-क्राति फ्रेच-क्रातिसे एक शताब्दी पहलेकी थी, जिसके कारण उसे समाजकी अल्प-विकसित अवस्थामें ही अपनी क्राति करनी पड़ी थी। यदि अधिक विकसित स्थितियोंमें क्रामवेलके नेतृत्वमें सामतवादी व्यवस्थापर प्रहार हुआ होता, तो शायद यहाँ भी सामन्तवादके अवशेष न रह जाते। समय से पहले होने के कारण इंगलैंडके बूज्जी-वर्गने सामन्तों और उनके मुखिया-राजासे समझौता किया था। अंग्रेज मध्यमवर्गको राजा और सामन्तोंसे उतना तीव्र और लम्बा संघर्ष नहीं करना पड़ा जैसा कि फ्रान्समें “तृतीय राज्य” को करना पड़ा। “तृतीय राज्य” का संघर्ष वर्ग-संघर्ष था—यह फ्रेच ऐतिहासिकों को बहुत पीछे पता लगा, लेकिन इंगलैंडमें वर्ग-संघर्षके विचारोंका ख्याल तब हुआ, जब कि सर्वहाराने १८३२ ई० के सुधारविधेयक (विल) के समय शासकवर्ग से संघर्ष हो दिया।

एंगेल्सने अब हेगेलीय दर्शन और दून्दूत्पक भौतिकवादी दृष्टिकोणके अध्ययन के बाद इस स्थितिमें थे, कि इंगलैंडकी औद्योगिक-क्रान्तिके इति-हासके भीतर छिपे तत्वोंको समझ सकते। इंगलैंड और फ्रान्समें से एकमें गगा-जमुनी सामन्तवादी-पूँजीवादी ढाँचा रहना और दूसरेमें सामन्तवादी प्रभावसे मुक्त शुद्ध पूँजीवादी व्यवस्थाका कायम होना अवश्य किन्हीं कारणों

से था। इसका एक कारण यह था, कि इंगलैंडमें बड़े पैमानेके उद्योगका विस्तार उससे कहीं अधिक गहराईके साथ हुआ था, जितना कि फ्रान्समें। अपने उद्योगका विकास करते समय इंगलैंडने पुराने वर्गों—सामन्तों-जर्मिंदारों—को नष्ट करके उनकी जगह नये वर्ग की सृष्टि की। आधुनिक बूर्जाव-समाजका भीतरी ढाँचा जितना इंगलैंडमें स्पष्ट दिखाई देता था, उतना फ्रांसमें नहीं। एंगेल्सने इंगलैंडके उद्योगके स्वरूप और इतिहासका अध्ययन करते हुये जाना, कि आर्थिक तथ्य ही वहाँ निर्णायिक ऐतिहासिक शक्ति थे, जिनके आधारपर वर्तमान वर्ग विद्वेष विकसित हुआ। बड़े पैमानेके उद्योगके विकासके कारण राजनीतिक दलों और राजनीतिक संघर्षोंका विकास हुआ, इस प्रकार आर्थिक तथ्य ही इंगलैंडके सारे राजनीतिक इतिहासके आधार ठहरे।

एंगेल्सका इंगलैंडकी औद्योगिक विकासके अध्ययनकी ओर दिलचस्पीका एक कारण यह भी था, कि वह स्वयं अपने बापके मिलमें काम करते समय नजदीकसे उद्योगको देख रहे थे। “जर्मन-फ्रैंच वर्षपत्र”में मार्क्सने जहाँ विधान-के दर्शनकी आलोचना की थी, वहाँ एंगेल्सने अपने लेखमें राष्ट्रीय अर्थ-नीतिकी आलोचना की थी। यद्यपि वह लेख अभी २३-२४ वर्षके तरुणकी लेखनीसे निकला था, लेकिन उसमें अपरिक्वता नहीं दिखाई पड़ती थी। जर्मन कुछ बड़ी नाकवाले लेखक इस लेखको बिल्कुल विशृंखलित और अस्त-व्यस्त कहते थे, तो मार्क्सने उसे चमत्कारिक रेखांकन घोषित किया था। रेखांकन मात्र तो था ही, क्योंकि एंगेल्स अपने इस लेखमें राष्ट्रीय अर्थनीतिके बारेमें बहुत विस्तार और गहराईमें नहीं जा सके थे। बूर्जाव-अर्थशास्त्रके विरोधोंका असली कारण वैयक्तिक सम्पत्ति है, इसे बतलाते हुये तरुण एंगेल्स प्रूधोंसे भी आगे बढ़ गये थे। प्रूधों वैयक्तिक सम्पत्तिसे उसकी अपनी भूमिपर लड़ते रहे। एंगेल्सने अपने इस लेखमें पूँजीबादी होइके अमानुषिक परिणामों, माल-थसकी की जनसंख्याकी घोरी (वाद) पूँजीबादी उत्पादनके सदा बढ़ते प्रवाह, भोक, व्यापारिक-संकट, मजूरी-कानून, साइन्सकी प्रगतिकी विवेचना की। साइन्सके बारेमें उन्होंने कहा, कि वैयक्तिक सम्पत्तिके शासनसे मानवताकी मुक्ति आदिके साधन होनेकी जगह वह मानवताकी दासताकी कड़ियाँको मजबूत करने-

का साधन बन गया है। उनके इसी लेखमें वैज्ञानिक साम्यवाद का बीज आर्थिक क्षेत्रमें देखा गया। साम्यवादको ठोस आर्थिक आधार प्रस्तुत करने सम्बन्धी प्रथम प्रयत्नका श्रेय एंगेल्सको दिया जाना चाहिये। लेकिन एंगेल्स अपने ज्येष्ठसे इतने प्रभावित और उनके प्रति इतने अनुरक्त थे, कि उन्होंने अपनी महान् देनोंका कोई खाल नहीं किया। वह घोषित करते : मेरे आर्थिक लेखोंको अन्तिम आकार देनेका श्रेय मार्क्सको है, कभी लिखते : “मार्क्स अधिक महान् और अधिक दूर तक देखनेवाले थे। वह हम सबोंसे अधिक जल्दी तत्वों को देख लेते थे, और कहीं बची-खुची अपनी देनको भी यह कहकर नगरण कर देते : हमने जिसे पता लगाया, उसे मार्क्स भी पता लगा लिये होते। लेकिन वास्तविकता यह है, कि आर्थिक क्षेत्रमें वैज्ञानिक साम्यवादकी प्रथम भूमि तैयार करनेवाले एंगेल्स थे। यह हमें मालूम ही है, कि पुराने समाज-वादियों और साम्यवादियोंकी यही निर्बलता थी, कि वह साम्यवादकी स्थापना दिमागी संघर्ष और हृदय-परिवर्तन द्वारा करना चाहते थे। मार्क्सके वैज्ञानिक समाजवादने उस निर्बल नीवको छोड़ आर्थिक शोषणके आधारपर प्रहार करते संघर्ष करनेका रास्ता निकाला। आर्थिक शोषणके कारण जब कुछ मुट्ठी भर शोषकोंको छोड़ जनताका सबसे अधिक भाग अपनी रोटी, जीविका और भविष्यकी चिन्तामें चौबीस घटे परेशान रहता हो, तो वह संघर्ष भावुकतापूर्ण सोडेकी बोतलकी उफानकी तरह दृश्यक नहीं हो सकता, उस संघर्षकी प्रत्येक असफलता उसके भावी बेग और शक्तिको बढ़ानेनाली तथा प्रत्येक असफलतासे शिक्षा लेनेका अवसर देनेवाली होती है। एंगेल्सने जिस तत्वको बीजरूपेण अपने इस लेखमें दिखलाया था, इसमें शक नहीं, उसे चरम सीमा तक विकसित करना मार्क्सका काम था। इसमें सन्देह नहीं, कि मार्क्स एंगेल्सकी अपेक्षा अधिक दार्शनिक गति रखते थे, मार्क्सका दिमाग इन गहन तत्त्वोंके भीतर छुसकर परिणामपर पहुँचनेके लिये अधिक शक्तिशाली और क्षमता रखता था।

वर्षपत्रमें छुपे एंगेल्सके दूसरे लेखमें भी अभी पुराने दार्शनिक दृष्टिकोण का प्रमाण दिखाई पड़ता है कि उन्होंने इंगलैंडकी परिस्थिति पर विचेचना करते हुये घोषित किया, कि सारे वर्षकी साहित्यिक फसलमें यही पढ़ने लायक

है। फ्रांस की साहित्यिक समृद्धिके मुकाबिलेमें एंगेल्सने अंग्रेजी साहित्यको बहुत दरिद्र बतलाया। अंग्रेज उस समय तक हिन्दुस्तानके राजा हो चुके थे। १८५७ई० के स्वतंत्रता-युद्धमें अभी वारह-तेरह वर्षोंकी देरी थी। उस वेक्तके शिक्षित अंग्रेजोंका मूल्यांकन करते हुये एंगेल्सने अपना विचार प्रकट किया था : वह सारी दुनियामें अत्यन्त धृणास्पद ढास हैं, और पक्षपातों, विशेषकर धार्मिक दृष्टिके पक्षपातोंसे भरे हुये हैं : “अंग्रेज समाज का केवल एक ही भद्र भाग है, जिसे युरोपमें मजूर कहते हैं, और जो इंगलैंडका परिया (अछूत) गरीब है, चाहे वह उसमें कितना ही मोटा-झोटा और भीर हो। इंगलैंडको मुक्तिकी आशा इन्हींसे हो सकती है। वह अशिक्षित हैं, लेकिन उनमें पक्षपात नहीं है, शिक्षा के वह अच्छे पात्र हैं। उनमें अब भी एक बड़े राष्ट्रीय आन्दोलनके लिये पर्याप्त जीवट है, उनके पास अब भी भविष्य है।” एंगेल्सने शिक्षित अंग्रेजोंकी कूँड-मर्जीकी बानगी दिखलाते हुये लिखा था, कि स्ट्रासके ईसाके जीवन को किसी भद्र अनुवादकने अंग्रेजीमें अनुवादित करनेकी हिम्मत नहीं की, और न किसी ग्रसिद्ध प्रकाशकिने उसे प्रकाशित करनेका साहस दिया। एक समाजबादी लेक्चरर ने उसका अनुवाद किया है। लन्दन, वर्मिंघम और मेन्चेस्टरके मजदूरोंमें वह बिक रही है।

इंगलैंडका शिक्षित-वर्ग जहाँ इस तरह मूढ़तामें पड़ा हुआ था, वहाँ जर्मनीमें फ्वारवाल कहता था : “अब तक सदा यही सचाल उठाया जाता था, कि भगवान् क्या है ? जर्मन-दर्शनने हमें उत्तर दिया है : भगवान् मनुष्य है, मनुष्य-को अपने आपका साक्षात्कार, अपने आपके प्रति जीवनकी सभी स्थितियोंका नापना, अपने स्वरूपके अनुसार उनके बारेमें फैसला करना, अपने निजी स्वभावकी माँगों के अनुसार पूरी तौरसे मानवी फेशनमें दुनियाको बनाना है, चल उसने हमारे युगकी पहेली हल कर दी।” मार्क्सने तुरन्त फ्वारवालके “मानव” की मनुष्य, राज्य, समाजके तौरपर व्याख्या की, और एंगेल्सने मनुष्यके स्वभावकी उसके इतिहासके रूपमें समझा।

मार्क्स और एंगेल्सकी विचारधाराओंमें असाधारण समानता थी। कभी-कभी एक ही विचार दोनोंके दिमागमें काम करते थे, इसमें हेगेलीय द्वन्द्वात्मक दर्शन

और समाजवादी दृष्टिकोण मुख्य कारण था, इसमें कोई सन्देह नहीं। इन्हीं साधनोंसे सम्पन्न होकर मार्क्स फ्रेच-क्राति और वहाँके भौतिकवादके गम्भीर समुद्रमें गोता लगा रहे थे और एगेल्स अग्रेनी उद्योग-घन्घेके विकास और नये अर्थिक सम्बन्धकी विवेचनामें संलग्न थे। मार्क्सने मानवके अधिकारोंके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला, कि वूल्वां-समाजका स्वभाव अराजकतापूर्ण, व्यवस्था-हीन है। एगेल्सने प्रतियोगिता (होड) के बारे में कहा : “यह अर्थशास्त्रियों-का मुख्य पदार्थ, उसकी प्रिय कन्या है।...ऐसे कानूनके बारेमें हम क्या सोचें, जो कि व्यापारिक संकटोंसे समय-समयपर होनेवाली क्रातियोंके परिणामस्वरूप हो काम करता है ? यह सीधा-सादा स्वाभाविक कानून है, जो कि अपने समन्वित दलोंके आत्मचेतनाहीन अवस्थापर आधारित है।”

३. “पवित्र परिवार”

मार्क्स और एगेल्सने मिलकर सबसे जिस पहली कृतिको लिखा, वह यही पुस्तिका थी। ब्रूनो बावर और उसके दो भाइयो एडगर और एगवेट्टने दिसम्बर १८४३ मे अपने ऐसे दार्शनिक विचारोंको प्रकाशित किया, जो अब मार्क्स और एगेल्सकी दृष्टिसे प्रतिगामी थे। ब्रूनो बावर अपनेको दार्शनिक आकाशमें विचरण करनेवाला गद्द समझता था, मार्क्सके राजनीतिमें प्रवेश और उसके सम्बन्धमें क्रातिकारी विचारोंसे उसकी कोई सहानुभूति नहीं थी। बावरके विचार-से मुकिका रस्ता केवल शुद्ध दर्शन, शुद्ध ध्योगी (वाद) और शुद्ध समालोचना है। जिस जनताके ऊपर मार्क्स और एगेल्सका पूर्ण विश्वास था, वह समझते थे कि मुकिका युद्ध सफलतापूर्वक इन्हींके द्वारा लड़ा जा सकता है; उसके बारेमें ब्रूनो बावरके विचार ये : “अब तक इतिहासके सभी बड़े-बड़े आन्दोलन पथ-भ्रष्ट और प्रारम्भ हीसे असफल होनेके लिये मजबूर थे; क्योंकि जनसाधारण उसमें दिलचस्पी रखते था वडे उत्साहके साथ उसके पक्षमें थे; अथवा वह इसलिये बड़ी बुरी तरह खत्म हो गये, क्योंकि जिस विचारपर वह केन्द्रित थे, उसके लिये बिल्कुल ऊपरी समझ-बूझसे अधिक की आवश्यकता नहीं थी, और इसलिये जनसाधारण उसके बारेमें अपना हर्ष प्रकट कर सकता था। बुद्धि

और जनसाधारण इन दोनोंका विवाद बावरके दिमागको परेशान किये हुये था। ज्ञानके लिये बावरके वही विचार थे, जो कि रुढ़िवादी गीताके निम्न शब्दों में मिलता है :

“नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।”

बावरकी तरह की धारणा हमारे यहाँके ज्ञानवादी आज भी रखते हैं। सभी जन-आन्दोलनोंको बावर धृणाकी उप्पिसे देखता था, चाहे वह इसाइयत, यहूदी धर्म जैसे धार्मिक क्षेत्रोंमें हो, चाहे समाजवाद, फैंच-क्रांति या अंग्रेजी औद्योगिक क्रान्तिके रूपमें सामाजिक क्षेत्रमें हो। ज्ञानको पवित्रतम माननेवाले अभी भी हमारे यहाँ अरविन्दों, रमण महर्षि या किसी दूसरे रूपमें सन्त और भगवान् बनकर पूजे जाते हैं, और कितने ही दर्शनके प्रोफेसर उनकी चरण-धूलि ललाटमें लगाकर अपनेको धन्य समझते हैं। लेकिन, ज्ञान (विज्ञान) वादी हेगेलीय दर्शन और उसके अनुयायियोंकी आलोचना करते हुये एंगेल्सने बहुत नर्मी दिखलाते हुये भी, आजसे १०६ वर्ष पहले लिखा था : इस (ज्ञानवाद) का सड़ा-गला हेगेलीय दर्शन उस बूढ़ी डाइन जैसा है, जिसका शरीर सूखकर अपने पहले रूपसे धृणाजनक ढाँचेके रूपमें बदल गया है, लेकिन वह अब भी अपनेको आभूषित और अलंकृत करती प्रेमी पानेकी आशासे चक्कर लगाती है। जब हेगेलने धोषित किया, कि परमविज्ञान सृजनात्मक दुनिया विश्वात्मा है जो पीछे केवल दार्शनिकमें ही सचेतन हुआ, तो उसका अर्थ यही था, कि परमविज्ञानने आपाततः कल्पनामें इतिहास बनाया। उसने स्पष्ट तौरसे इस गलतीको पहले ही कह दिया, कि दार्शनिक व्यक्ति स्वयं ही परमविज्ञान है।

मार्क्स और एंगेल्सने बावरकी आलोचनाका नाम “आलोचनात्मक आलोचनाकी आलोचना” नाम रखा था, लेकिन पीछे प्रकाशकके सुभाव-पर उसे पवित्र परिवार नाम दिया गया। मार्क्सके विस्तार और गम्भीरतामें जानेके स्वभावके कारण यह पुस्तक भी ₹०० पृष्ठसे अधिककी हो गई। लेखकोंने समझा था, कि इसके अधिकांश में साधारण जनताकी उतनी दिलचस्पी नहीं होगी। लेकिन उनका यह ख्याल ठीक नहीं सावित हुआ। इस ग्रंथमें समालोचना संत्रन्धी सद्गम बुद्धिका ही परिचय नहीं मिलता, बल्कि लेखकोंकी अद्भुत प्रतिभा

शैलीपर पूर्ण अधिकार और भाषाकी श्रति सुसंबद्धता पाई जाती है, जिसके कारण मार्क्सकी कृतियों में यह श्रेष्ठ मानी जा सकती है।

बावरने लिखा था, कि यह राज्य ही है, जो कि बूर्जा-समाजके अलग-अलग करणोंको इकट्ठा करके रखते हुये है। मार्क्सने इसका जवाब दिया : वह इसलिये इकट्ठा पकड़कर रखते हुये है, क्योंकि वह कथ केवल दिमागमें है, अपनी दिमागी उडानके स्वर्गमें है। किन्तु बस्तुतः वह करणोंसे भारी मेद रखते हैं, अर्थात् वह दिव्य अहंतावादी नहीं, बल्कि हंतावाले मानव-प्राणी हैं। “आज केवल राजनीतिक महासूद ही यह कल्पना कर सकते हैं, कि बूर्जा-जीवनको राज्य एकतावद करता है।” बावर ऐतिहासिक ज्ञानमें उद्योग और प्रकृतिको महत्व देनेपर नाक-मौं सिकोइता था, जब कि मार्क्स उनके बिना ऐतिहासिक ज्ञानको भ्रान्त धारणा मात्र मानता था, जब तक कि ऐतिहासिक ज्ञान मनुष्यके प्रकृति, प्राकृतिक विज्ञान और उद्योगके प्रति अनन्त सैद्धान्तिक और व्यावहारिक मनोभावको ऐतिहासिक आन्दोलनसे अलग करता रहेगा :

“बावर जैसोंका ऐतिहासिक विचार जैसे अनुभूतिसे चिंतनको, शरीरसे आत्माको अलग करता है, वैसे ही वह इतिहासको प्राकृतिक विज्ञान और उद्योग-धन्वेसे अलग करता है, इतिहासकी जन्मस्थान पृथिवीकी भौतिक उपज कच्चे मालकी अपेक्षा स्वर्गके अस्त्व बादलोंकी बनावटोंको मानता है।”

जिस प्रकार मार्क्सने आलोचनात्मक आलोचनाका खंडन करते हुये फैंच-क्रातिका समर्थन किया, वैसे ही फौशरके विचारोंको खंडन करते हुये एंगेल्सने इंगलिश इतिहासका समर्थन किया और औद्योगिक-क्रातिने वहाँ जिन नई व्यवस्थाओंको लानेका प्रयत्न किया, उनके ऐतिहासिक औचित्यका समर्थन किया।

पवित्र परिवारके लिखनेके समय (१८४४ ई०) अभी मार्क्स और एंगेल्स उपरानी दार्शनिक विचारधारासे पूर्णतया मुक्त नहीं हो सके थे। अभी भी वह फूर्येरवालकी देनोंको जरूरतसे ज्यादा महत्व देते थे। “पवित्र परिवार” में फूर्येनी उद्योगियन विचारधाराका भी प्रभाव देखा जाता है। फूर्येने ऐतिहासिक विकास और स्वतंत्र मजदूर-आन्दोलनके महत्व पर जोर दिया था।

एडगर बावरेके तर्कका जवाब देते हुये एंगेल्सने कहा था : “आलोचनात्मक आलोचना” कुछ नहीं निर्माण कर सकती, जब कि मजूर सब कुछ निर्माण करते हैं ।...अंग्रेज और फ्रैंच मजूर इसके प्रमाण हैं । एडगर बावरने प्रूधोंके विचारों पर आलेप किया था, इसपर मार्क्सने प्रूधोंका जबर्दस्त समर्थन किया था, यद्यपि कुछ सालों बाद मार्क्सने प्रूधोंकी कड़ी आलोचना भी की । मार्क्सने आर्थिक द्वेषमें प्रूधोंके प्रारंभिक प्रयत्न और सफलताकी सराहना की, और उसकी अपूर्णताको मानते हुये बतलाया, कि यह ऐसी ही अपूर्णता है, जैसी कि बूनों बावरकी धर्मविद्या-सम्बन्धी अपूर्णतायें ।

“पवित्र परिवार”का अधिकतर सम्बन्ध यद्यपि दर्शन और दार्शनिक तत्वोंसे है, लेकिन मार्क्सने यहाँ अपने मौतिकवादी विचारों और वैज्ञानिक समाजवाद के सम्बन्धमें भी कितनी ही जातें कही हैं । फ्रैंच समाजवादी प्रूधों बूज्वाके आर्थिक-व्यवस्थाके आन्तरिक विरोधके आधार पर सम्पत्तिकी व्यवस्था करता है, जब कि मार्क्सने घोषित किया : वैयक्तिक सम्पत्ति धनके तौर पर अपनी सत्ता रखते हुये अपने विरोधी सर्वहाराको कायम रखनेके लिये मजबूर है । यह विरोधका धनात्मक पक्ष है । वैयक्तिक सम्पत्ति अपने आपमें पर्याप्त है । लेकिन सर्वहाराके तौरपर वह अपनेको कायम रखने नहीं बल्कि खतम करनेके लिये मजबूर है, और उसी समय अपने प्रतिरोधीको भी, जो कि उसे सर्वहारा बनाता है । सर्वहारा उस विरोधका श्रृणात्मक (अभावात्मक) पक्ष उसका ध्वंसमान पक्ष है, जो कि नष्ट होता है और स्वयं नष्ट होते हुये वैयक्तिक सम्पत्तिका भी विलोप करता है । अतएव इस विरोधके भीतर सम्पत्तिका स्वामी स्थिति-स्थापक है और सर्वहारा ध्वंसकः एकका काम है विरोधको कायम रखना और दूसरेका उसे नष्ट करना । अपनी आर्थिक गतिमें वैयक्तिक सम्पत्ति अपने ध्वंसकी ओर बढ़ती है ।...जब सर्वहारा विजयी होता है, तो वह समाजका अखंड (परम) पक्ष नहीं बन जाता, क्योंकि वह तभी विजयी हो सकता है, जब कि वह अपने और अपने प्रतिनिधि दोनोंको विलोप कर दे । इसके साथ सर्वहारा केवल अपने हीको नहीं, बल्कि अपने प्रतिरोधी-वैयक्तिक सम्पत्तिको भी विलुप्त करता है ।

मार्क्सने अपने सर्वहारा प्रेमको उसके प्रति देवताओं जैसी भक्तिके रूपमें

नहीं दिखलाना चाहा, बल्कि सर्वहाराके सारे दोषोंके रहते हुये भी उसकी दुर्दम्य क्रोतिकारिणी और सजनात्मक शक्तिको देखकर ही उनमें यह पक्षपात्र पैदा हुआ।

४. इंगलैण्डके मजूर

१८४४ ई० में एगेल्सने अपने ग्रथ “इंगलैण्डमें मजूर वर्गकी स्थिति” को समाप्त किया, जो कि १८४५ ई० के ग्रीष्ममें लाइपजिगमें विगाट द्वारा प्रकाशित हुआ। विगाट ही “झांवो याखुखेर” (जर्मन-बर्षपत्र) का भी प्रकाशक था। एगेल्सकी यह पुस्तक एक मौलिक समाजवादी कृति है। इस पुस्तकमें एगेल्सने अपने प्रत्येक्षण और सभके अनुसार अग्रेज मजूरोंकी दयनीय दशाका वर्णन करते बतलाया है कि उत्पादनके पूँजीवादी ढंगने किस तरह वहाँ घोर दरिद्रताको फैलाई। मजूरोंकी दुरबस्थाका वर्णन कितने ही अग्रेज लेखक कर चुके थे, जिन्हें एगेल्सने जगह-जगह उद्धृत किया है। असश्व दरिद्रताका वर्णन करके पाठकोंके हृदयमें शोषकोंके प्रति क्रोध और शोषितोंके प्रति सहानुभूति पैदा की जा सकती है, लेकिन भाषुकतासे उस दुखका निवारण नहीं हो सकता। इसी-लिये एगेल्सने दुखके निदानकी ओर विशेष तौरसे ध्यान दिया है। २४ वर्षके तरुण लेखकने अपने इस ग्रथ द्वारा दिखलाया कि उत्पादनके पूँजीवादी ढंगकी आत्माको वह कितना अच्छी तरह समझता है। उसने केवल बूज्जर्के उत्पादक ही नहीं, बल्कि उसके पतनकी, सर्वहाराके दुखकी ही नहीं, बल्कि उसकी मुकिकी भी सफलतापूर्वक व्याख्या की है। बतलाया है, कि कैसे वडे पैमानेके उद्योगने आधुनिक मजूर-वर्गको पैदा किया, शारीरसे जीर्ण-शीर्ण बुद्धिसे भ्रष्ट और चरित्र-बलमें पशुताके नजदीक पहुँचे अमानवीकृत आधुनिक मजूर-वर्गको पैदा किया, और कैसे ऐतिहासिक दृन्दवाद—जिसके कानूनोंको एगेल्सने विस्तारपूर्वक यहाँ खोलकर दिखलाया है—की प्रक्रियाकी सहायतासे मजूर-वर्ग विकसित हो रहा है और वह अनिवार्यतया वहाँ तक विकसित होगा, जब कि वह अपने विधाता (पूँजीवादी उत्पादन व्यवस्था) को उलाड़ फेकेगा। एगेल्सने बतलाया कि इंगलैण्डमें सर्वहाराका शासन-मजूर-आन्दोलनके समाजवादके साथ विलयनके

परिणामस्वरूप होगा। एंगेल्सकी यह पुस्तक समाजवादकी दृढ़ आधारशिला बनी। इसकी शैली और गम्भीरताको देखकर कुछ लम्बी नाकवाले पंडितोंने भावोद्रेकमें घोषित किया, कि इस पुस्तकने समाजवादको युनिवर्सिटीके योग्य बना दिया। इतिहासकी प्रगतिको द्वन्द्वात्मक कार्य-कारण प्रक्रियासे विश्लेषण करते हुये मार्क्स और एंगेल्स भविष्यकी ओर भी दूर तक देख सकते थे। यह कोई ज्योतिषियों और योगियोंकी भविष्यवाणी भविष्यद्वाणि नहीं थी, यदि वह भविष्यके बारेमें भी कुछ कहते थे। उनका अनुसन्धान और दृष्टि कभी गलती नहीं देखी गई, लेकिन कालके बारेमें वह भविष्यद्वाणियाँ कितनी ही बार गलत सावित हुईं। एंगेल्सके कथनानुसार इंगलैंडमें सामाजिक क्रान्ति तुरन्त तो क्या अभी तक नहीं हुई। इसे एंगेल्सने अपनी पुस्तकके लिखनेके पचास वर्ष बाद स्वयं तरश्याईका उत्साह कहा था। एंगेल्सकी इस कृतिको पूर्ण और प्रकाशित हुआ देखनेके लिये मार्क्स बहुत अधीर थे। उन्होंने अपने एक पत्रमें जोर देते हुये लिखा था : अपनी अर्थशास्त्रीय कृतिको अन्ततः पूरा कर ही डालो, चाहे तुम उससे पूरी तरह संतुष्ट न हो। इसकी कोई पर्वा नहीं। लोगोंके दिमाग इस-बक्त तैयार हैं। हमें इसी समय प्रहार करना चाहिये, जब कि लोहा गरम है।...समय जोर दे रहा है, इसलिये ऐसी कोशिश करो कि अप्रेल तक तुम उसे समाप्त कर सको। वही करो जैसा कि मैं करता हूँ : एक ऐसी तारीख निश्चित करलो, जब कि तुम अवश्य उसे समाप्त कर दोगे, फिर इसकी कोशिश करो, कि जितना हो सके उतना जल्दी छुप जाये। अगर वहाँ वह नहीं छुप सकती; तो मानहाइम डर्मस्टाट या और कहीं कोशिश करो, लेकिन सबसे बड़ी चीज यह है, कि वह जल्दी प्रकाशित हो।

मार्क्स जिस तरह एंगेल्सकी कृतियोंकी अधीर होकर प्रतीक्षा करते थे, वही बात मार्क्सके बारे में एंगेल्सकी भी थी। दोनों मित्रोंकी इस तरह पत्र द्वारा बातचीत हो रही थी, इसी समय बर्मेनमें खत्रर आई कि मार्क्सको पेरिससे निष्कासित कर दिया गया। एंगेल्सने तुरन्त पैसा जमा करना शुरू किया और मार्क्स-को सूचित करते इसमें सफलता होगी कहते बतलाया : मैं नहीं जानता, कि यह पैसा तुम्हारे ब्रुसेल्स-निवासको ठीकठाक करनेके लिये पर्याप्त होगा। लेकिन,

मैं साथही इस बातका उल्लेख करना चाहता हूँ, कि मेरी पहली अंग्रेजी किताबसे जल्दी ही जो पारिश्रमिक मिलनेवाला है, उसे मैं बड़ी खुशीसे कमसे कम अंशतः आपके कामके लिये रखता हूँ। जो भी हो वर्तमानमें मुझे उसकी आवश्यकता नहीं,...शत्रु अपने दुष्कृत्योंके परिणामस्वरूप आपको पैसेकी कठिनाइयाँ पैदा करनेकी प्रसन्नता नहीं प्राप्त कर सकेगे।” पंगोल्सने एक पीढ़ी तक इचीलिये अथक परिश्रम किया, कि शत्रु मार्क्स्ट्सको पैसोंकी परेशानीमें डालकर खुशी न मनाये।

अध्याय ७

ब्रुशेल्समें निर्वासित (१८४५-४८ ई०)

११ जनवरी १८४५ को फ्रांसकी सरकारने जर्मन क्रांतिकारियोंको देशसे निकल जानेका हुक्म दिया, जिनमें मार्क्स भी थे। मार्क्सने पेरिस छोड़ परिवार को ले ब्रुशेल्सका रास्ता लिया। एंगेल्सको शंका थी कि बेल्जियममें भी मार्क्सको चैनसे रहने नहीं दिया जायेगा। जल्दी ही यह आशंका सत्य सिद्ध हुई। हाइने-को लिखे अपने पत्रमें मार्क्सने बतलाया था, कि ब्रुशेल्स पहुँचनेके तुरन्त ही बाद मुझे बुलाकर इस शर्त पर हस्ताक्षर करनेके लिये कहा गया, कि मैं बेल्जियमकी राजनीतिपर कोई बात नहीं छापूँगा। मार्क्सने इस शर्तको स्वीकार कर लिया, क्योंकि वैसे किसी काम करनेकी उनकी न इच्छा थी और न सभावना थी। लेकिन प्रशियन सरकार बेल्जियम सरकारके ऊपर मार्क्सको निष्कासित करनेके लिये दबाव डाल रही थी। मार्क्स अब भी प्रशियाके नागरिक थे। इस दबावसे बचनेके लिये उन्होंने यही अच्छा समझा और १ दिसम्बर १८४५ को प्रशियन नागरिकताका परित्याग कर दिया। उस समय और उसके बादमें भी मार्क्स किसी देशके नागरिक नहीं बने, यद्यपि १८४८ ई० के वसन्तमें फ्रैंच गणराज्यकी अस्थायी सरकारने उन्हें बड़े सम्मानके साथ फ्रैंच नागरिकता प्रदान की थी। लेकिन वह सरकार स्वयं अधिक दिनों तक टिक नहीं सकी। फ्राइलिग्राथ, कुछ दूसरोंके पीछे मार्क्सको भी इंगलैंडमें निर्वासित जीवन बिताते समय वहाँके स्वामानिक निवासी होनेके दस्तावेजोंको लेनेमें एतराज नहीं हुआ।

१८४५ ई० के वसन्तमें ही एंगेल्स ब्रुशेल्स आये। फिर दोनों मित्र साथ ही अध्ययनके उद्देश्यसे छु हफ्तेके लिये इंगलैंड गये। पेरिसमें रहते समय मेक्कलोच (Macculloch) और रिकार्डोंके अर्थशास्त्रका मार्क्सने अध्ययन किया था। अब उसने इंगलैंडके अर्थशास्त्रीय साहित्यमें गहरी झुवकी लगाई, यद्यपि इस समय अभी वह उन्हीं पुस्तकोंको देख सके, जो कि एंगेल्सके निवास-

स्थान मेन्वेस्टरमें मिल सकती थी, तथा जिनके नोट एंगेल्सने ले रखे थे । अपने हंगलैंडके प्रथम निवासके समय एंगेल्सने राबर्ट ओवेन^{*} (१७७१-१८६० ई०) के पत्र The New Moral World (नव नैतिक विश्व) तथा चार्टिस्ट्सके पत्र (The Northern Star) (उत्तरी तारा) में लेख लिखे थे । दोनों मित्रोंने अबकी यात्रामें हंगलैंडके चार्टिस्ट्स और समाजवादियोंसे नये सम्पर्क स्थापित किये ।

१. “जर्मन-विचारधारा” (१८४५-४८ ई०)

हेगेलके दर्शनके तौरपर अभी भी जर्मन-विचारधारा दोनों बन्धुओंका पीछा कर रही थी । इस यात्रासे लौटनेके बाद मार्क्सने अपनी एक नई सम्मिलित कृतिके आरम्भ करनेके बारेमें लिखा था : “हमने एक साथ मिलकर जर्मन दर्शनकी सम्पत्तियों और विचारधाराओंके विस्त्र अपने निजी हस्ति-कोण पर काम करनेका निश्चय किया । वस्तुतः यह अपनी पहलेकी दार्शनिक चेतनासे लोहा लेना था । हमने इसे पीछेके हेगेलीय दर्शनकी समालोचनाके रूपमें किया । अकेटेव आकारकी दो बड़ी-बड़ी जिल्दोंमें पुस्तककी हस्तलिपि वेस्टफ़ालियाके एक प्रकाशकके हाथमें दी जा चुकी थी, जबकि हमें सूचना मिली, कि वदली हुई परिस्थितिके कारण उसका प्रकाशित करना समव नहीं है । इसपर हमने अपने हस्तलेखको चूहोंके कुतरनेकी आलोचनाके लिये त्याग दिया । ऐसा करनेमें हमे कोई अफसोस नहीं हुआ, क्योंकि हमारा जो मुख्य उद्देश्य था, वह सफल हो गया था—अपने साथ हमारा समझौता हो गया था ।” मार्क्सी वात ठीक थी, क्योंकि हस्तलेखपर चूहोंने सच्चसच ही अपने दॉत साफ किये, और जो कुछ उसका बचा-बुचा भाग रह गया, उससे पता लग जाता है, कि क्यों ग्रथकर्ना-युगल हस्तलेखके इस प्रकार नष्ट होनेसे उदास नहीं हुये । यह दोनों जिल्दे बड़े आकारके ८०० पृष्ठोंमें थीं, जिनके दर्शनके साथ, उसीके हथियारों द्वारा लोहा लिया गया था । पुस्तकका नाम था “जर्मन विचारधारा, आधुनिक जर्मन दर्शन और उसके प्रतिनिधियों फ्रेगाल्स, ब्रूनों बाबर और

* ओवेनके बारेमें देखो लेखक का “मानव समाज” तृतीय संस्करण
पृ० ३८७-४१०

स्टर्नरकी आलोचना एवं जर्मन समाजवाद और उसके भिन्न-भिन्न पैगम्बरोंकी आलोचना।” एंगेल्सने पीछे अपनी समृद्धि से कहा था, कि स्टर्नरका खंडन उसकी अपनी पुस्तक से कम बड़ा नहीं था। फ्वेरबाल द्वारा हेगेलीय दर्शनका प्रभाव अभी तक मार्क्सके ऊपर काफी चला आया था, लेकिन अब वह उससे मुक्त थे। मार्क्सने फ्वेरबाल सम्बन्धी एक-दो सूत्र १८४५-ई० में नोट किये थे, जिन्हें कुछ दशाविदों बाद एंगेल्सने प्रकाशित किया था। मार्क्सने फ्वेरबालके भौतिकवादमें एक कमी जो पाई थी, वह थी “शक्तिदायक तत्व” का अभाव। अपने डाक्टरेटकी थेसिस (निबन्ध) में देमोक्रितूके दर्शनके बारेमें भी मार्क्सकी यही शिकायत थी। मार्क्स और एंगेल्सने इस बातकी कोशिश की, कि फ्वेरबाल अपने भौतिकवादी दर्शनमें कुछ और आगे बढ़े, ताकि उसकी विचारधारामें “शक्तिदायक” तत्व प्रविष्ट हो। लेकिन फ्वेरबालके लिये अब वैसा करना सम्भव नहीं रह गया था। उसके शिष्य क्रीगेने यद्यपि अटलान्टिक पार कम्युनिस्ट प्रचार करनेमें हाथ बँटाया था, लेकिन न्यूयार्कमें उसने कम्युनिस्टोंके भीतर गड़बड़ी पैदा करनेमें ही सफलता पाई।

२. “सच्चा-समाजवाद” (१८४५-४६ ई०)

उसी ग्रंथमें जर्मन समाजवाद और उसके भिन्न-भिन्न पैगम्बरोंकी भी खबर लेनेकी योजना बनाई थी। इसमें उन्होंने मोजेज हेस, कार्ल ग्रन, ओटो लूर्निंग, हेरमान पुटमान आदि लेखकोंकी आलोचना की थी, जिन्होंने कि पत्र-पत्रिकाओं में छुपे अपने लेखों द्वारा समाजवादक संबंधी एक अच्छा साहित्य तैयार किया था। कार्ल ग्रनने इस समाजवादको “सच्चा समाजवाद” नाम दिया था, जिसे मार्क्स और एंगेल्सने व्यंगके तौरपर इस्तेमाल किया। इतने मेहनतसे तानाजुना गया “सच्चा समाजवाद” बहुत भंगर साबित हुआ, और १८४५ ई० तक लोग इसे भूल भी गये, यद्यपि वह १८४५ और १८४६ ई० में ही अधिकतर तैयार हुआ था। मार्क्सके बौद्धिक विकासमें इसका कोई हाथ नहीं था। कम्युनिस्ट घोषणामें उन्होंने इसकी कड़ी आलोचना की। एंगेल्सका इस समाजवादके प्रति और भी कठोर विचार था। हेसके साथ मार्क्स और एंगेल्सका अपने लेखों द्वारा सहयोग रहा, ब्रूशेल्सके निवासके समय भी उनका सम्बन्ध बना रहा

और कुछ समय तो ऐसा मालूम होता था, कि हेसने दोनोंके विचारोंको स्वीकार कर लिया । मार्क्स और एंगेल्सने “वेस्टफ़ालिशे डम्फूटू” (१८४५ ई० में प्रकाशित) पत्रमें अपने कहीं लेख दिये थे । इसी पत्रमें जर्मन किंचारधाराका दूसरा अनुच्छेद प्रकाशित हुआ था, इस प्रकार इस ग्रंथ का यही अंश चूहोंके दूसरा अनुच्छेद प्रकाशित हुआ था, इस प्रकार इस ग्रंथ का यही अंश चूहोंके कुतरनेसे बच गया । मार्क्स और एंगेल्स भी हेगेलीय दर्शनसे आगे प्रगति करके अपने वैज्ञानिक समाजवाद तक पहुँचे थे और नवीन समाजवाद बाले भी हेगेलीय दर्शन की ही आगोकी उपज थे । लेकिन, दोनोंमें अन्तर यह था, कि मार्क्स और एंगेल्सने फ्रेच-काति और अंग्रेजी उद्योगके इतिहासके गम्भीर अध्ययनसे अपने निष्कर्षपर पहुँचे थे, जब कि “सच्चे समाजवादी” समाजवादी सूत्रों और नारोंके आधारपर दिमागी कल्पनासे इस विचारधाराको तैयार करनेमें सफल हुये थे । मार्क्स और एंगेल्सकी कसौटी थी सर्वहारा और जनसाधारणके हित और ज्ञान, जबकि “सच्चे समाजवादी” उनसे दूर रह कर समाजवादी समाजकी सुष्ठि करना चाहते थे ।

“सच्चे समाजवादियों” की ईमानदारीके बारेमें सन्देह करनेकी बहुत कम गुजाइश है । जर्मनीमें क्रातिके फेल होनेके बाद जो भीषण आतक मचा था, उसमें कोई ऐसा कमजोर सच्चा समाजवादी नहीं मिला, जो शत्रुकी ओर चला गया हो । साथ ही उनके दिलमें मार्क्स और एंगेल्सके विषयमें भारी सम्मान था । जब “सच्चा समाजवादी” उनकी दृष्टिमें गिर गया था, तब भी सच्चे समाजवादी अपने साहित्यको बड़ी खुशीसे दोनों मिश्रोंको दिया करते थे । वस्तुतः भत्तमेड़का कारण कोई छिपी दुर्भावना नहीं थी, बल्कि सच्चे समाजवादी अपनी पुरानी धारणाओंको छोड़नेकी समझ नहीं रखते थे, सादे तौरसे उनके दिलोंमें बावर, स्त्रों और स्तर्नरके प्रति खास कोमल भाव थे । लेकिन इनमें से कुछ मार्क्सके दृष्टिकोणको अपनानेमें समर्थ हुये, जिनमें लोजेफ वेडेमेयर भी था । वेडेमेयर लूनिंगका सम्बन्धी था । वह प्रशियन तोपखानेमें लफ्टनेट था, लेकिन अपने राजनीतिक विचारोंके कारण उसने सेनाकी नौकरी त्याग दी । फिर वह “द्रीरेश जाइंग” का उप-सम्पादक बना, जहाँ कार्ल शुनके प्रभावमें आकर सच्चा समाजवादी हो गया । १८४६ ई० के बसन्तमें वह ब्रिटेन्समें बहुसेल्स गया, जहाँ उसकी

मार्क्स और एंगेल्ससे मुलाकात हुई, और जल्दी ही वह उनका अनुयायी बन गया। वेडेमेयर कभी एक असाधारण लेखक नहीं बन सका। जर्मनी लौटने पर उसने रेलवे की सर्वेयरकी नौकरी करली, फिर वाकी समयमें 'विस्टफालिशे डम्पबूट' के सम्पादनमें सहयोग देता रहा। वेडेमेयरने मार्क्सके ग्रंथोंके प्रकाशनके लिये बहुत कोशिश की थी, और “जर्मन विचारधारा” उसीके प्रयत्नसे प्रकाशकके पास पहुँची थी, जिसका अवसान किस प्रकार हुआ, उसके बारेमें हम बतला चुके हैं।

३. कवि और स्वप्नद्रष्टा

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि तीस वर्षकी उमर तक पहुँचते-पहुँचते मार्क्सके परिचितोंकी संख्या भी बहुत अधिक हो गई थी। उनके प्रभावमें जिनने लोग आये, वह सभी ब्रावरके साथी नहीं हो गये। तरशाईमें आदमीमें आसकि कम और अपने आदर्शोंके प्रति उत्साह अधिक रहता है। उमरके ढलनेके बाद दुनिया और परिवारकी दूसरी चीजों उसको बेर लेती है, और अक्सर तरशाईके क्रांतिकारी यदि पथभ्रष्ट नहीं होते, तो शिथिल तो जल्ल हो जाते हैं। मार्क्सके जीवनमें हम ऐसे बहुतसे लोगोंको पाते हैं। लेकिन जिनकी नियतमें कोई दोष नहीं, और जिनका काम एक हद तक आदर्शके अनुरूप रहा, उनके लिये मार्क्सके दिलमें भी सन्दावना रही।

(१) वाइटलिंग—वाइटलिंग सर्वहारा वर्गमें पैदा हुआ था। प्रतिभा और नैतिकत्व दोनोंमें बहुत मजबूत था। सम्मान और साधन प्राप्त करने पर भी वह अपने वर्गके हितसे उसी तरह विचलित नहीं हुआ था, जिस तरह फँच समाजवादका आचार्य पूछे। दोनों ही शरीरसे बहुत हड्डे-कड्डे, कर्मठ और आगे चलकर जीवनके सभी अच्छी चीजोंको पानेमें समर्थ हुये थे, लेकिन उन्होंने सुखका मार्ग छोड़ दुखका मार्ग अपनाया और दुख भी पराकाष्ठा का। वाइटलिंगकी कोठरीमें कभी-कभी तीन आदमी रहते, एक मामूली खाट पड़ी थी, एक सड़कीका तख्ता लिखनेकी मेजका काम देता था। जब-तब काली काफीका प्याला वह पी लेता था। वह ऐसे जीवन उस समय विता रहा था, जब कि दुनियाकी विभूतियाँ उसकी आवाज सुनकर काँपती थीं। पूछों भी पैरिसमें इसी

तरह रहता था, जिस तरह वाइटलिंग । देहमें मोटे ऊनका बुना जाकेट और पैरोंमें लकड़ीके तलेका खटखटाता चण्पल । वाइटलिंग एक फ्रासीसी अफसरका लड़का था । काफी उमर हो जानेपर उसने पैरिसमे फ्रेंच समाजवादका गम्भीर अध्ययन किया । समाजवादका आन्दोलन करने वह स्वीजलैंड पहुँचा । उसके बाद १८४६ ई० के आरम्भमे ब्रुशेल्समे था । लेकिन वहाँ भी उसे अधिकारियोंने चैनसे रहने नहीं दिया और वह लन्दन चला आया, जहाँ न्यायी लीगके सदस्योंसे उसकी नहीं पटी । यद्यपि उस समय इगलैंडमे चार्टर-आन्दोलन बड़े जोरेंपर था, लेकिन निराश सा वाइटलिंग अब दूसरी ही धुनमे लगा था । वह एक विश्व-भाषाके निर्माणका प्रयत्न कर रहा था, जिसके लिये कि उसके पास चौद्धिक साधन नहीं थे । एक ओर अपने वर्गसे विच्छेद हो जानेसे उसकी शक्तिका स्रोत दूट गया था, और दूसरी ओर यह निरर्थक प्रयास । अच्छा ही किया, जो वह ब्रुशेल्ससे लन्दन चला आया, क्योंकि मार्क्स भी वहाँ पर थे । मार्क्सने उसका बड़े ग्रेमसे स्वातन किया, और कोशिश की कि उसकी प्रतिमाका उपयोग किया जाय । ३० मार्च १८४६ को ब्रुशेल्समे कम्युनिस्टोंकी एक बैठकमें दोनोंका उग्र मतभेद हो गया । वाइटलिंग मार्क्सको बहुत चिढ़ने दिया । उसने निराधार ही मार्क्सपर आक्षेप किया, कि उन्होंने मंरे आमदनीके रास्ते—अनुवाद कार्य में भाँजी मारी । पर मार्क्सने जहाँ तक हुआ वाइटलिंगकी सहायता करनेसे हाथ नहीं खोंचा ।

(२) प्रूधों—प्रूधों फ्रान्सके उस स्वतंत्र वरगड़ी प्रदेशमे पैदा हुआ, जिसे चौदहवें लुईने अपने राज्यमें मिला लिया । उसके साथी कहा करते थे, कि वह जर्मनों जैसा मोटे सिरवाला है । जो भी हो, उद्बुद्ध प्रूधोंको जर्मन दर्शनने अपनी ओर खीचा । वाइटलिंगकी तरह वह जर्मन दर्शनिकोंको धुंध फैलानेवाला नहीं मानता था । वाइटलिंग स्वप्न उद्योगियन (स्वप्नदृष्ट्या) समाजवादी लेखकोंको बड़े सम्मानकी दृष्टिसे देखता था, लेकिन उनके प्रति प्रूधोंकी जगा भी आसथा नहीं थी । दोनों ही इस बातके संबूत थे, कि प्रतिभा और कर्मठता केवल उच्च और मध्यन वर्गकी वृपौती नहीं है, बल्कि सर्वहारा वर्ग भी उसको पैदा कर सकता है । मार्क्सका सर्वहारा वर्गके प्रति असाधारण

विश्वास और असीम पक्षपात था, हस्तिये इन दोनों प्रतिभाशाली फ्रेंच विचारकोंके प्रति अपने कार्यके आरम्भमें केवल प्रशंसाके ही शब्द थे। सब कुछ होने पर भी वाइटलिंग एक जर्मन कारीगरसे अधिक विकसित नहीं हो सका और न पूर्धों फ्रेंच निम्न-मध्यमवर्गीय पुरुषसे अधिक। दोनोंको मार्क्ससे विचार-विनिमयका काफी मौका मिला था, लेकिन आयुके अनुसार जब एक मर्तवी आदमीकी धारणा पक्की हो जाती है, तो उसे छोड़ना उसके लिये मुश्किल हो जाता है। मई १८४६ में पूर्धोंका मार्क्सके साथ विलगाव नजदीक आ गया। इस समय कार्युनिस्ट विचारधाराको फैलानेके लिये कई देशोंमें मार्क्सने पत्र-व्यवहारके केन्द्र बनाये थे। क्रीगको इसी कामके लिये अमेरिका भेजा, जहाँ वह २० बीं सदीके भारतीय स्वामियोंकी तरह अपनी महंती जमाने-का प्रथमन करने लगा, जिसका मार्क्सको विरोध करना पड़ा। पैरिसमें पूर्धोंको इस कार्यमें सहयोग देनेके लिये मार्क्सने लिखा था। १७ मई १८४६ को पूर्धोंने लियोंसे जवाब देते हुये मार्क्सके प्रस्तावको स्वीकार किया था, लेकिन साथ ही यह भी कहा था, कि मुझसे अधिक लिखना-पढ़ना नहीं हो सकेगा। इसी पत्रमें उसने मार्क्सको एक उपदेश भी दे डाला था, जिससे पता लग गया कि दोनोंके मतभेदकी खाइयाँ सँकरी होनेकी जगह और बढ़ गई हैं। मार्क्स विचारोंकी गङ्गवड़ीको नहीं पसन्द करते थे, इसलिये वह सहिष्णुता और लीपा-पोती द्वारा उसको भुला देनेको कार्यके लिये बाधक समझते थे। पूर्धों इस विषयमें उदारता दिखाना चाहता था। उसने मार्क्सको उपदेश देते हुये लिखा था: “हमें एक नई गङ्गवड़ी पैदा करके मानवजातिको नया कार्य नहीं देना चाहिये। हमें मानव जातिको बुद्धिमत्ता और दूरदर्शतावाली सहिष्णुताका उदाहरण पेश करना चाहिये। चाहे वह तर्क और बुद्धिका ही धर्म क्यों न हो, लेकिन हमें एक नये धर्मके प्रचारकका पार्ट नहीं अदा करना चाहिये!” इस प्रकार सच्चे समाजवादियोंकी तरह पूर्धों भी सहिष्णुता और उदारताके पथका पथिक बन गया था। लेकिन सर्वहारा-आन्दोलन और क्रान्ति हवाई संघर्ष नहीं है। उनमें ठोस धरतीके परस्पर-विरोधी हितोंको लेकर संघर्ष करना पड़ता है, जहाँ पर विचारोंकी इस लीपा-पोतीसे काम नहीं चल सकता।

इसीलिये मार्क्स साम्यवादके वास्तविक प्रचारके लिये विचारोंकी गङ्गबङ्गीको खतम करना सबसे आवश्यक समझते थे ; क्रान्तिका पक्षगती प्रूधो विचारोंमें अब ज्ञान मार्गी बनकर कहता था : “मेरी रायमें फ्रान्सके हमारे सर्वहारोंको ज्ञानकी इतनी प्यास है, कि यदि हम खून छोड़कर और कुछ पीनेके लिये नहीं देते, तो हमारा स्वागत बुरी तौरसे होगा ।” प्रूधोके व्यवहारसे मालूम हो गया, कि पैरिसके काम को उसके ऊपर छोड़ा नहीं जा सकता, इसलिये अगस्त १८४६ में वहाँका तमाम काम सेंमालनेके लिये एंगेल्सको पैरिस जाना पड़ा । महा-क्रान्ति जैसी अनेक क्रान्तियों की भूमि और यूरोपीय सभ्यताका सबसे बड़ा केन्द्र होनेके कारण साम्यवादी प्रचारके लिये भी पैरिसका बड़ा महत्व था । आरम्भमें एंगेल्सने वहाँसे जो रिपोर्ट भेजी, वह काफी आशाजनक थी, लेकिन बादमें कुछ नहीं बना ।

(३) ऐतिहासिक भौतिकवाद—प्रूधोंका दिमाग अब बूसरी ओर मुङ्ह गया था । उसने सहिष्णुता अर्थात् हृदय-परिवर्त्तनके दर्शनकी ओर मुङ्ह फेर लिया था, फिर दखिताके प्रति भी उसके हृष्टिकोणमें परिवर्त्तन होना जरूरी था । उसने आर्थिक विरोधोंकी व्यवस्थाके नामसे एक पुस्तक लिखी, जिसका दूसरा नाम “दखिताका दर्शन” भी था । *प्रूधोंका फ्रासके सर्वहारों पर बहुत प्रभाव था, इसलिये वह जो कुछ भी ऊल-जल्लूल लिखता, उसका प्रभाव उन पर पड़े बिना नहीं रहता । मार्क्सने “दखिताका दर्शन”के खंडनमें अपनी पुस्तक “दर्शनकी दखिता” फ्रेंच भाषामें लिखी, जिसका उद्देश्य था कि प्रूधो स्वयं अपने विचारोंकी आलोचना अच्छी तरह देख सके तथा उसके फ्रेंच अनुयायियोंको भी अपनी कमज़ोरीका पता लगे । लेकिन, प्रूधोंका प्रभाव हठानेमें मार्क्सको सफलता नहीं मिली । तो भी पुस्तकका मूल्य समय बीतनेके साथ सभी देशोंके लिये बढ़ता गया । इसी पुस्तक द्वारा पहले पहल मार्क्सने ऐतिहासिक भौतिकवादको वैज्ञानिक ढंगसे विकसित किया । ऐतिहासिक भौतिकवादके विचार मार्क्सके पहले ग्रंथोंमें भी जब-तब छिन्न-फुट आये थे, लेकिन उन्होंने यहाँ सुव्यवस्थित ढंगसे उसका प्रतिपादन किया । ऐतिहासिक भौतिकवाद

* “Système des contradictions économiques ou philosophic de la misère” (Caris 1846)

मार्क्स की सबसे बड़ी देन इतिहास सम्बन्धी विज्ञानोंमें उसी तरह है, जिस तरह प्राकृतिक विज्ञानोंमें डारविनका विकासवाद। इस पुस्तक के लिखनेमें एंगेल्सने भी सहायता की थी, यद्यपि अपनी स्वाभाविक विनम्रताके कारण वह उसमें अपना अंश बहुत कम करके बतलाना चाहते हैं। एंगेल्सने इस महान् सिद्धान्तके जन्म लेनेके समयका वर्णन करते हुये लिखा है : जब मैं १८४५ ई० के वसन्तमें ब्रुशेल्स गया, तो मार्क्सने ऐतिहासिक भौतिकवाद-के मूल विचारोंको अन्तिम विकसित रूपमें मेरे सामने रखा जो थे : प्रत्येक ऐतिहासिक युगमें आर्थिक उत्पादन और उसका अवश्य अनुगामी सामाजिक ढाँचा उस युगके राजनीतिक और बौद्धिक इतिहासके आधार होते हैं, और इसीलिये सारा इतिहास वर्ग-संघर्षोंका इतिहास रहा है—सम-सामयिक विकासकी भिन्न-भिन्न मंजिलोंमें शोषितों और शोषकोंके बीच, शासितों और शासकवर्गोंके बीचका संघर्ष। यह संघर्ष अब ऐसे स्थानपर पहुँच गये हैं, जहाँ-पर शोषित और उत्पीड़ित वर्ग—सर्वहारा, शोषक और उत्तीर्णक वर्ग—बूझाजी (पूँजीपति) —से अपनेको तब तक मुक्त नहीं कर सकता, जब तक कि साथ ही सारे समाजको सदाके लिये शोषण और उत्पीड़नसे मुक्त नहीं कर देता। प्रधोंके विचारोंको खंडन करते दरिद्रताके दर्शनकी धुंधको दूर करते समय मार्क्स-का दिमाग इस गम्भीर सत्यपर पहुँचा, जिसके आधारपर उन्होंने प्रधोंके दर्शनकी दरिद्रता को दिखलाते हुये दरिद्रताके वास्तविक निदान और उपायको बतलाया। पुस्तककी शैली बहुत ही स्पष्ट और गम्भीर है। इसमें पाठकोंके दिमागको थका देनेवाली शैलीका पता नहीं लगता, जो कि बावर और स्टर्नरके जवाबमें लिखते वक्त मार्क्सने इस्तेमाल किया था। वहाँ दर्शनका जवाब दर्शनकी भूमिपर उसीकी भाषामें मार्क्सने दिया था, जब कि यहाँ ऐतिहासिक भौतिकवादके दर्शनको सर्वहाराकी सबसे अधिक संख्याके लिये सुगम बनाना था। इस पुस्तकके दो भाग हैं : पहले भागमें मार्क्स अपनेको समाजवादी अर्थात् अर्थशास्त्रीके रूपमें दिखलाते हैं, और दूसरे भागमें अर्थशास्त्री हेगेलके रूपमें। मार्क्सने सामाजिक विकासका वर्णन करते हुये लिखा है : “सभ्यताके आरम्भके साथ उत्पादन, व्यवसाय, सामाजिक स्थिति और प्रतियोगिता (विरोध), एवं अन्तमें संचित

और प्रत्यक्ष श्रमके प्रतियोगोके ऊपर निर्भित होने लगा। बिना प्रतियोगके प्रगति नहीं हो सकती : सम्भवाने शुरूसे लेकर आज तक इस कानूनको माना है। आज तक उत्पादक-शक्तियोंका विकास वर्ग-विरोधकी प्रधानताके आधारपर हुआ है।” मार्क्सने आगे प्रूढ़ोके विचारोंका खंडन करनेके बाद बतलाया, कि उत्पादक शक्तियोंका विकास (जिसने कि अग्रेज मजदूरोंको १७७० ई० की अपेक्षा १८४० ई० में सत्ताईस गुनेसे भी अधिक उत्पादन बढ़ानेमें समर्थ बनाया) वर्ग विरोधों पर आधारित ऐतिहासिक स्थितियों के ऊपर अवलम्बित है : वैयक्तिक पूँजीका जमा होना, आधुनिक श्रम-विभाग, अराजकतापूर्ण होड़ और मजदूरी व्यवस्था। अतिरिक्त श्रमके उत्पादनके लिये एक ऐसे वर्ग की आवश्यकता है, जो कि लाभ प्राप्त करे और दूसरा वर्गके लाभको हाथसे खोये।

साम्यवादके अनितम लक्ष्यकी और संकेत करते हुये मार्क्सने बतलाया थों, कि मॉग और पूर्तिके बीच ठीक तौरते संतुलन उसी समय सम्भव हो सकता था, जब कि उत्पादनके साधन सीमित थे, जब कि विनियम बहुत थोड़ी सी सीमाके भीतर होता था, जबकि पूर्ति मॉगपर अवलंबित थी, और उत्पादन उपभोगपर। बड़े पैमानेके उद्योग-धरेके विकासके साथ ऐसा होना असम्भव हो गया, क्योंकि बड़े पैमानेका उद्योग केवल हथियारोंके कारण ही इसके लिये मजबूर हुआ, कि मॉगकी प्रतीक्षा किये बिना बाब्रर बढ़ते हुये परिमाणमें उत्पादन करता जाये, जिसके कारण उसे अनिवार्यतया आवश्यक और इसके बाद एक लगातार समृद्धि और अवसाद, संकट और अवरोध, नई समृद्धि इत्यादिका सामना पड़ेगा। आजके समाजमें, जब कि उद्योग वैयक्तिक विनियम, उत्पादन-सम्बन्धी अराजकता—जो कि बहुत सी बुराइयोंके स्रोत हैं—पर आधारित होते हुये साथ ही सभी प्रगतियोंका कारण है, इसीलिये उसके सामने विकल्प हैं : आदमीको हमारे अपने समयके उत्पादन-साधनों द्वारा पहली शतान्द्रियोंके ठीक अनुपानमें प्राप्त करनेकी कोशिश करना, ऐसा सोच करनेवाला प्रतिगामी और उटोपियन (स्वच्छारी) दोनों है; अथवा उसे अराजकताको हटाकर प्रगति करनेका प्रयत्न करना होगा। “ऐसी अवस्थामें उत्पादक शक्तियोंको कायम रखनेके लिये वैयक्तिक विनियमको छोड़ना पड़ेगा।”

मार्क्सने एक जगह लिखा है : “भेशिये प्रूधों आत्म-प्रशंसा करते समझते हैं, कि मैंने अर्थशास्त्र और साम्यवाद दोनोंका खंडन कर दिया, लेकिन वस्तुतः वह दोनोंसे बहुत नीचे रहा : अर्थशास्त्रियोंसे नीचे इसलिये रहा, क्योंकि एक दार्शनिकके तौरपर अपने पाकेटमें जादूका मन्त्रर क्षमते हुये वह सोचने लगा, कि मुझे अर्थशास्त्रमें विस्तारके साथ जानेकी आवश्यकता नहीं। समाजवादियोंसे नीचे इसलिये, कि उनके पास न पर्याप्त अन्तर्दृष्टि है और न उसके लिये पर्याप्त हिम्मत है, कि अपनेको बूज्जी क्षितिजके ऊपर कल्पनाके क्षेत्रमें उठा सके। वह दोनोंका संवाद करना चाहता है, लेकिन वस्तुतः वह सम्मिलित प्रमादके सिवा और कुछ नहीं कर पाये। वह एक साइन्सवेत्ताके तौरपर बूज्जी और सर्वहारा दोनोंके ऊपर मँडरानेकी इच्छा रखता है, लेकिन वस्तुतः वह निम्न मध्यमवर्गके व्यक्तिके सिवा और कुछ नहीं है, जो कि यहाँ-वहाँ पूँजी और श्रमके बीच अर्थशास्त्र और समाजवादके बीच लुढ़कते दिखाई देते हैं।” मार्क्सकी इस कड़ी आलोचनासे यह न समझना चाहिये, कि वह प्रूधोंकी क्षमता अस्वीकार करते थे। उन्हें इस बातका अफसोस था, कि प्रूधों निम्न मध्यम वर्गीय समाजकी सीमासे आगे बढ़ने नहीं बढ़ता।

मार्क्सने समस्याको साफ तौरपर रखते हुये लिखा है : “अगर सामन्तवादी उत्पादन का ठीक तौरसे मूल्यांकन करना है, तो उसे विरोधपर आधारित उत्पादनके ढंगके तौरपर समझना होगा; यह देखना होगा, कि कैसे इस विरोध-के भीतर धन-वैभव पैदा किये गये, किस तरह उत्पादक शक्तियाँ वर्गोंके संघर्षके साथ-साथ विकसित हुईं, और किस तरह तब तक इन वर्गोंमें बुरा पक्ष—सामाजिक बुराई-लगातार उन भौतिक स्थितियोंमें पद्धता गया, जब तक कि उसकी मुक्तिके लिये भौतिक स्थितियाँ परिषक्त नहीं हो गईं।” इसी तरह मार्क्सने बूज्जीजी (पूँजीवादी) व्यवस्थामें भी उत्पादनके विकासको दिखलाते हुये बल बतलाया। जिन उत्पादन सम्बन्धोंमें अब यह विकास होने लगा, उनका स्वरूप सीधा-सादा और एक-सा नहीं, बल्कि दोहरा है—उन्हीं स्थितियोंमें, जिनमें कि वैभव पैदा होता है दरिद्रता भी होती है, जैसे-जैसे पूँजीवादका विकास होता है, वैसे ही वैसे उसी परिमाणमें सर्वहाराकी भी वृद्धि होती है, जिसके परिणामस्वरूप

इन दोनों वर्गोंमें संघर्ष होता है। अर्थशास्त्री पूँजीवादियोंके शास्त्रकार हैं और कम्युनिस्ट तथा सोशलिस्ट सर्वहाराके। वह कम्युनिस्ट-सोशलिस्ट उटोपियन (स्वर्जन्चारी-अव्यावहारिक) हैं, जो कि उत्पीड़ित वर्गोंकी आवश्यकताओंको पूरा करनेके लिये चिकित्सा-विज्ञानको ढूँढ़ने तथा शास्त्रप्रणालियोंको तैयार करते हैं। लेकिन यह तभी नक, जब तक कि सर्वहारा स्वयं एक वर्गके रूपमें काफी तौरसे विकसित नहीं हो जाती, और बूज्ज्वार समाजकी उत्पादक शक्तियाँ जब तक इतनी पर्याप्त विकसित नहीं हो जातीं कि वह सर्वहाराकी मुक्ति और नये समाजके निर्माणके लिये आवश्यक भौतिक स्थितियोंको प्रकट कर दे। लेकिन जितने परिमाणमें इतिहास और उसके साथ सर्वहाराका संघर्ष आगे बढ़ता है, उतने परिमाणमें उनके लिये आवश्यक नहीं रहता, कि अपने दिमागमें साइंसको ढूँढ़े। तब उन्हें उस सिर्फ़ यही करनेकी आवश्यकता होती है, कि जो कुछ उनकी आँखोंके सामने हो रहा है, उसका लेखा-जोखा लगाये, और अपनेको उसका हथियार बनाये। जब तक वह अभी अपने दिमागमें साइंसकी खोज करते शास्त्रोंकी रूपरेखा बना रहे हैं, जब तक वह अपने संघर्षके केवल आरम्भमें ही है, तब तक वह केवल दुःख (दर्दिता) ही देखते हैं और उन्हें उस दुःखका वह क्रातिकारी पहलू नहीं दिखाई पड़ेगा, जो कि पुराने समाजको उत्थाप फेंकेगा। इस क्षणसे साइंस ऐतिहासिक आन्दोलन (गति) की सचेतन उपज हो जाता है। यह अब शास्त्र और बाद न रहकर क्रांतिकारी बन जाता है।

मार्क्सने अर्थशास्त्रीय तत्त्वोंको सामाजिक सम्बन्धोंका ही निराकार अथवा शास्त्रीय नाम बतलाते हुये कहा है—‘हमारे सामाजिक सम्बन्ध उत्पादक शक्तियों-के साथ घनिष्ठतया सम्बद्ध हैं। नई उत्पादक शक्तियोंके पालेनेके बाद मानव-जाति अपने उत्पादनके तरीकेको बदल देती है। जिस तरीकेसे मानवजाति अपनी जीविकाको प्राप्त करती है, उसीके अनुसार वह उसके अपने सामाजिक सम्बन्ध बदल देती है।...’

मार्क्सके अनुसार श्रमका विमाग प्रधोंके कथनानुसार अर्थशास्त्रीय तत्त्व नहीं है, बल्कि यह एक ऐतिहासिक तत्त्व है, जो कि इतिहासके भिज-भिज रूप लेता रहा है। बूज्ज्वार अर्थशास्त्रके अनुसार फैक्टरी पूँजीवादके अस्तित्वका कारण

है, लेकिन कैटरी-मजदूरोंके बीच मित्रतापूर्ण समझौतेके आधारपर अथवा पुराने शिल्पी-संघोंकी गोदमें नहीं पैदा हुई। आजकलकी कैटरियोंके मालिक पुराने शिल्पी-संघोंके स्वामी नहीं बने, बल्कि व्यापारियोंने उन्हें उद्योगपति बन करके सँभाला। इसी तरह होइ और इजारेदार भी प्राकृतिक नहीं, बल्कि सामाजिक तत्व हैं। होइ औद्योगिक महत्वाकांक्षाके कारण नहीं, बल्कि व्यापारिक महत्वाकांक्षाके कारण होती है। इसका सम्बन्ध उत्पादनसे नहीं, बल्कि लाभ-शुभसे है। यह मानवकी आत्माके लिये आवश्यक नहीं है, जैसा कि प्रूधों मानते हैं, बल्कि यह १८ शताब्दीमें उत्पन्न होनेवाली ऐतिहासिक आवश्यकताका परिणाम है, जो कि ऐतिहासिक कारणोंसे १६ वीं सदीमें लुप्त भी हो सकती है।

प्रूधोंकी तरह विचार रखनेवालोंका ख्याल था, कि भू-सम्पत्तिका आरम्भ ऐतिहासिक नहीं बल्कि वह मनोवैज्ञानिक और नैतिक विचारोंपर आधारित है, धनके उत्पादनसे उसका बहुत दूरका सम्बन्ध है। जमीनकी लगान प्रकृतिके साथ अधिक व्यनिष्ठताके साथ मनुष्यको जोड़ती है। इसका खंडन करते हुये मार्क्सने कहा—‘हरेक युगमें सम्पत्तिका विकास भिन्न-भिन्न तरह तथा भिन्न-भिन्न सामाजिक सम्बन्धोंके अनुसार होता है।’ इसीलिए बूर्जा-सम्पत्तिकी व्याख्या इसके सिवा और कोई नहीं है, कि बूर्जा-उत्पादनके सभी सामाजिक सम्बन्धोंकी व्याख्या की जाय।^१ भूमिकी लगान पूँजीके लाभकी प्रचलित दर और पूँजीके सद्दोको लेते हुए उत्पादनके व्ययके काट देनेके बाद कृषिकी उपजका अतिरिक्त मूल्य निश्चित सामाजिक सम्बन्धोंके बीच आरम्भ हुआ और वह केवल उन्हीं निश्चित सामाजिक सम्बन्धोंके भीतर ही आरम्भ हो सकता था। खेतकी लगान बूर्जा रूपमें जमीदारी है, अर्थात् बूर्जा उत्पादनकी स्थितियोंके अधीन सामन्ती सम्पत्ति है।

अन्तमें मार्क्स मजूर-संघों और हड्डतालोंके ऐतिहासिक महत्वको सिद्ध करते हैं, जिन्हें कि प्रूधों माननेसे इन्कार करता है। बूर्जा अर्थशास्त्री और समाजवादी भी यद्यपि भिन्न-भिन्न कारणोंसे मजूर-संघों और हड्डतालों जैसे हथियारोंको इस्तेमाल करनेका विरोध करते हैं, लेकिन मजूर-संघ और हड्डतालें बड़े पैमाने के उद्योगके विकासके साथ-साथ और समानान्तर अवश्य आगे बढ़ती रहेंगी।

होइके कारण अपने हितोंमें विलगाव रखते भी, सभी मजदूरोंको अपनी मजदूरी कायम रखना एक सा जरूरी है; जिसपर, कोई भी चोट पहुँचनेपर उन सबके भीतर प्रतिरोधकी भावना पैदा होती है। इसके कारण वह अपनी मजूर-समाजोंमें संगठित होते हैं; जो भावी संघर्षके लिए उपयोगी सभी शुश्रोंको अपने भीतर रखती है, ठीक उसी तरह, जिस तरह कि सामन्ती राजाओं और ठकुरोंके विच्छद-पूँजीवादियों (बूर्जांजी) ने एक वर्गके तौरपर अपनेको संगठित किया था और जिसके बलपर उन्होंने सामन्तवादी समाजको पूँजीवादी बूर्जां समाजमें रूपान्तरित किया। बूर्जांजी और सर्वहाराके बीचका विरोध एक वर्गका दूसरे वर्गके साथका संघर्ष है—ऐसा संघर्ष, जो कि अपने चरम उत्क्षेपर पहुँचकर पूर्ण क्रान्तिका रूप लेगा। सामाजिक आन्दोलन अपनेसे राजनीतिक आन्दोलनको अलग नहीं कर सकता, क्योंकि कोई भी ऐसा राजनीतिक आन्दोलन नहीं है, जो कि साथ ही साथ सामाजिक आन्दोलन न हो। राजनीतिक आन्दोलनके परिणामस्वरूप पुरानी सामाजिक व्यवस्था दूर्ती है, यह आज हम भारतवर्षकी रियासतोंमें देख रहे हैं, जहाँ सामन्तवादी स्वार्थोंको—जागीरोंके निरंकुश शासन, विलास—को उठाकर अब सेठोंकी सरकार अपना आधिपत्य कायम कर रही है, जिसके फल-स्वरूप सामन्तोंका ही रूपरंग नहीं खतम हो रहा है, बल्कि उनके पीछे जीनेवाले लाखों लग्न-भग्नशोंमें जर्दर्दस्त सामाजिक परिवर्तन हो रहा है। रानियाँ और ठकुरानियाँ अब पुराने विचारोंको रखते भी पुराने जीवनको चालू नहीं रख सकती। एक समयके परमस्वतन्त्र अन्नदाता अब ग्राम पंचायतोंके सरपंच बनकर दूसरे पचोंके साथ दरियोपर बैठ रहे हैं। मार्क्सने बतलाया कि उसी समाजका सामाजिक विकास राजनीतिक क्रान्ति नहीं रहेगा, जिसमें वर्गपद नहीं है। जब तक वर्गहीन समाज आ उपस्थित नहीं होता, तब तक सभी आम सामाजिक परिवर्तनोंके समय सामाजिक साइंसका नारा होगा—‘विजय या मृत्यु। खुली युद्ध या कुछ नहीं। यही समस्याका निर्दय सूर है।’ मार्क्सने जार्बसैंडके इन शब्दोंको उद्धृत करते हुए प्रूधोंके उत्तरको समाप्त किया।

मार्क्सने इस पुस्तकमें अनेक दृष्टियोंसे ऐतिहासिक भौतिकवादकी विवेचना और विकास किया और साथ ही वह जर्मन-दर्शनकी भी खबर लेते

हुये हेगेल तक पहुँचकर फ्वारवालसे आगे बढ़ गये। उन्होंने बतलाया कि हेगेलीय सम्प्रदाय अब निश्चय ही दिवालिया बन गया है। फ्वारवालके दर्शनमें ‘शक्तिदायक सिद्धान्त’ के अमावकी उन्होंने फिर शिकायत की।

मार्क्सने अपने इस ग्रन्थमें यह बतलाया कि हम उक्त निष्कर्षपर ‘शुद्ध चित्तन’ द्वारा नहीं पहुँचते (वल्कि धर्मकीर्ति के शब्दोंमें ‘यदिदं स्वयमर्थीनां रोचते तत्र के बयम्’—जब पदार्थों और वास्तविकताका निष्ठुर फैसला यही है, तो हम उससे इन्कार करनेवाले कौन ?) इस प्रकार मार्क्सने भौतिकवादको ऐतिहासिक द्वन्द्वात्मक शैली प्रदान की, और साथ ही एक ‘शक्तिदायक सिद्धान्त’ को भी जो कि समाजको केवल व्याख्या कर लूटी नहीं ले लेता, वल्कि सर्वहारकी नई शक्ति द्वारा उसके रूपांतरित करनेका रास्ता दिखलाता है।

४ ‘ड्वाशो ब्रूसेलेर जाइदुङ्ग’ (१८४७ ई०)

अपने इस महत्वपूर्ण ग्रन्थको प्रकाशित करनेमें मार्क्सको कम कठिनाइयोंका सामना नहीं करना पड़ा। ब्रूशेल्स और पेरिस दोनोंमें किसी प्रकाशकके न तैयार होनेपर छपाईका दाम उन्हें अपनी पाकिस्टे-देना पड़ा। १८४७ ई० की गर्मियों (वर्षी) में जब युस्तक प्रकाशित हुई, तब ‘ड्वाशो ब्रूसेलेर जाइदुङ्ग’ नामका एक पत्र भी निकाला, जिसके द्वारा वह अपने विचारोंको लोगोंके सामने रख सकते थे। १८४७ ई० के आरम्भमें अडेलवर्ट फान-बोर्नस्टेटके सम्पादकत्वमें यह पत्र सप्ताहमें दो बार निकलने लगा। बोर्नस्टेट पहले पेरिसमें ‘फ्रेवाड्स’ का सम्पादन करता था और वाहरसे उसका रूप चाहे राजनीतिक निर्वाचितका था, लेकिन वह आस्ट्रिया और प्रशिया दोनोंकी सरकारोंके लिए खुफियाका काम करता था, जिसका पता बहुत पीछे बर्लिन और बीनाके अभिलेख-संग्रहोंसे लगा, यद्यपि अभी भी वह सच्च नहीं हो सका, कि ब्रूशेल्समें रहते हुए भी वह इस कामको कर रहा था या नहीं। ब्रूशेल्समें रहनेवाले प्रशियाके राजदूतने उसके पत्रकी निन्दा वेलिंग्टम सरकारसे की, इससे कमसे कम इस कालमें उसके खुफिया होनेमें सन्देह पैदा हो जाता है। लेकिन यह लोगोंकी आँखोंमें धूल भोकनेके लिए भी हो सकता था। लोगोंको सन्देह था, पर जो उपयोगी काम

वह उस वक्त कर रहा था, उसके कारण मार्क्स इस सन्देहको महत्व नहीं देता था। इस पत्रमें मार्क्स और एगेल्सके कई महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते रहे। भारतमें भी हिन्दू या मुसलमान समाजवादके गीत गानेवालोका अमाव नहीं है। उनका यह प्रयत्न समाजवादके हित नहीं, अहितके लिए ही जाने या अनजाने होता है। कोलोदसे निकलनेवाले 'राइनिशर व्योवाख्तेर' पत्रने भी ईसाई समाजवादका शुन गाते हुये साम्यवाद (कम्युनिज्म) को अनावश्यक बतलाया था, जिसका जवाब देते हुए मार्क्सने लिखा था—'ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्तोंके प्रयोग के लिए अठारह सौ वर्ष मिले थे, जिनमें उन्हें विकसित किया जा सकता था, अब उन्हें प्रशियन धार्मिक-कमिशनरोंके हाथों आगे विकसित होनेकी आवश्यकता नहीं है। ईसाइयत (हिन्दू धर्म और इस्लामको भी ले लीजिये) के सामाजिक सिद्धान्त पुराने युगमें दास-प्रशाको उचित बतलाते थे, मध्ययुगमें वह किसानोंकी अर्धदासताकी प्रशासा करते थे और आवश्यकता पड़नेपर आज भी वह सर्वहारके उत्पीड़नको उचित कहनेके लिये बिल्कुल तैयार है।...ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्त शासक और उत्पीड़ित वर्गको कायम रहना आवश्यक बतलाते हैं, और उत्पीड़ित वर्गको वह जो कुछ दे सकते हैं वह यही कि शासक वर्गको उनके प्रति दया दिखलानी चाहिये। ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्त सभी पापोंकी द्वितीयोंको स्वर्गराज्यमें स्थानातरित करते हैं, और इस प्रकार पृथ्वीपर इन पापोंके बने रहनेको उचित बतलाते हैं। ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्त धोषित करते हैं, कि उत्पीड़ितोंके विरुद्ध उत्पीड़कोंके सारे आततायी कृत्य या तो मूल या किसी दूसरे पापके उचित दड हैं, या ईश्वर अपनी अंगम बुद्धिसे वैसा दुःख देना पसन्द करता है। ईसाइयतके सामाजिक सिद्धान्त कायरता, कमीनेपन, त्याग, आत्मसमर्पण और वशंबदता—संचेपमें आततायीके सभी शुणोंका उपदेश करते हैं, लेकिन सर्वहारा आततायीके तौरपर अपने साथ व्यवहार होने देनेके लिए तैयार नहीं हैं, और उसे अपनी राजकी रोटीसे भी अधिक साहस, आत्म-विश्वास, स्वाभिमान और स्वतन्त्रताकी आवश्यकता है। ईसाइयतका सामाजिक सिद्धान्त बचना और पाखण्डसे भरे हुए है, जब कि सर्वहारा क्रान्तिकारी है।'

अध्याय ८

कम्युनिस्ट लीग (१८४७-४८ ई०)

१८४७ ई० में ब्रुशेल्समें कम्युनिस्टोंकी संख्या काफी हो गई थी, यद्यपि यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि मार्क्स और एंगेलसकी तुलनामें वहाँका कोई नेता नहीं आ सकता था। मोजेज हेस, और विलहेल्म बोल्फ इस समय वहीं रहते थे और उनके लेख भी “ड्वाशे ब्रुसेलेर जाइट्स्ट्रंग” में निकला करते थे। हेस अपने पुराने दर्शनके जालसे बाहर नहीं निकल पाया था, और “कम्युनिस्ट घोषणा पत्र” के निकलनेके समय तक वह मार्क्ससे बिल्कुल दूर हो गया था। विलहेल्म बोल्फ १८४६ के वसन्तमें ब्रुशेल्स आया। इस प्रकार उसकी मार्क्स-एंगेलससे मित्रता बहुत पीछे शुरू हुई, लेकिन वह उसके मरनेके समय तक वैसी ही बनी रही। बोल्फ स्वतंत्र-चेता नहीं था, लेकिन लोकप्रिय शैलीमें लिखनेवाला वह एक सिद्धहस्त लेखक था। वह सिलेसियाके किसानोंमें पैदा हुआ था, और वड़ी कठिनाइयोंसे संघर्ष करते युनिवर्सिटी में पहुँचा था, जहाँ उसे अपने वर्गके उत्तीड़कोंके प्रति अपार धृष्णा पैदा हो गई, जिसमें महान् विचारकों और कवियोंकी कृतियाँ भी सम्मिलित थीं। कितने ही वर्षों तक वह सिलेसियाके एक गढ़ीसे दूसरी गढ़ीमें धसीदा जाता रहा। फिर वह किसीके यहाँ भरेत्तु, अध्यापक बन गया, लेकिन उस समय भी वह नौकरशाही तथा सेन्सरके खिलाफ छिट-फुट संघर्ष करता रहा। अन्तमें जब उसे फँसाकर ग्रशियाके जेलमें सड़नेकी नौवत आई, तो वह देश छोड़नेके लिये मजबूर हुआ। ब्रेस्टा (सिलेसिया) में रहते समय लासलके साथ उसकी मित्रता हो गई थी। बोल्फ वहे सुन्दर स्वभावका पुरुष था। उसे कोई भी प्रलोभन नहीं था, वह आजीवन एक निःस्वार्थ निर्भीक क्रांतिकारी बोद्धा रहा।

ब्रुशेल्समें मार्क्स और एंगेलसकी मंडलीमें फर्डिनेंड बोल्फ भी था, यद्यपि उसके साथ दूसरे बोल्फ जैसी मार्क्सकी, धनिष्ठता नहीं थी। इसी तरह एन्स्टर्ट

द्रोके, जार्ज वीर्थ भी थे। वीर्थ एक वात्सविक कवि था। वह तस्याईमें ही मर गया। उसके गीतोंको किसीने जमा नहीं किया, जिनमें लड़ाकू सर्वहारा की आत्मा बोल रही थी। ब्रुसेल्स पूँजीबादी बेल्जियमकी राजधानी थी, जहाँका राजतत्र भी बूर्जा था। इस वक्त अन्तरांष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये युरोपमें वह सबसे उपयुक्त स्थान था, क्योंकि पैरिसमें प्रतिक्रियावादने अपना आधिपत्य जमा रखा था। बेल्जियमकी १८३० ई० वाली क्रातिमें भाग लेने-वालोंके साथ मार्क्स और एगेल्सका अच्छा सम्बन्ध था। जर्मनीमें खास कोलोन में भी मार्क्सीके नये और पुराने मित्र काम कर रहे थे। पैरिसमें एगेल्सने जनतात्रिक समाजवादी पार्टीसे, विशेषकर उसके साहित्यकार लुई ब्लाक और फर्दिनान्द फूलोकोनसे सम्बन्ध स्थापित किया था—फूलोकोन पार्टीके मुख्यपत्र “रिफार्म” (सुधार) का सम्पादक था। इगलौडके चार्टिस्ट-आन्दोलनके कार्यकर्ताके जुलियन हर्न (नार्दन स्यार सम्पादक) और एन्सेस जान्स से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था।

१. लीग का काम

जनवरी १८४७ ई० में कम्युनिस्ट लीगने एक और महत्वपूर्ण कदम आये बढ़ाया, जब कि उसने खिलरे हुये लोगों और संगठनोंको अधिक सुव्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया। “न्यायी लीग” के बारेमें हम पहले बतला चुके हैं, जिसकी नीतिको मार्क्स पसन्द नहीं करते थे। उन्होंने घटनाओंके दस वर्ष बाद “न्यायी लीग” के बारेमें कहा था : “एंग्लो-फ्रेंच समाजवाद तथा जर्मन-दर्शन की माजून (समिक्षण) के खिलाफ हमने कितने ही छुपे या लियोग्राफ किये पम्पलोटों को निकालकर लीगकी नीतिकी निष्ठुर आलोचना की। और, उसकी जगह एकमात्र स्थायी आधारके तौरपर बूर्जा आर्थिक ढाँचेके भीतर वैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि रखते लोगोंके लिये उसकी सुगम शैलीमें व्याख्या की और यह समझाया, कि उत्तेजित व्यवस्थाके लिये काम करनेकी आवश्यकता नहीं है, बल्कि हमारी आँखोंके सामने सामाजिक परिवर्तनकी जो प्रक्रिया हो रही है, उसीमें सजग होकर हाथ बैटाना चाहिये।”

जनवरी १८४७ ई० में लीगने अपनी केन्द्रीय कमेटीके एक सदस्य घड़ी-साज जोजेफ मालको ब्रुशेल्स भेजकर मार्क्स और एंगेल्ससे प्रार्थना की, कि आप हमारे संगठनमें शामिल हों, क्योंकि हम आपके विचारोंको स्वीकार करना चाहते हैं। मार्क्सने इसे उन्हीं पम्फ्लेटोंका प्रभाव समझा था, जिनमेंसे आज कोई भी कालकी गतिसे बचकर हमारे पास नहीं पहुँचा। सरल भाषा और शैलीमें लिखे होनेसे मार्क्सके इन पम्फ्लेटोंका महत्व उसी समय नहीं, बल्कि आजके लिये भी हो सकता था। “न्यायी लीग” की शाखायें हंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि कई देशोंमें थीं, जिनमें लन्दनकी लीग ज्यादा सजीव और सचेष्ट थी। जूरिच और पेरिसके वातावरणमें उसको उतनी सफलता नहीं मिली थी। “न्यायी लीग” की स्थापना यद्यपि भिन्न-भिन्न देशोंमें विखरे जर्मन कम्परोंके लिये हुई थी, लेकिन लन्दनमें इसने और जातियोंके कम्परोंसे मिलकर अन्त-राष्ट्रीय रूप ले लिया था। सभी देशोंके राजनीतिक निर्वासितोंसे इसका सम्बन्ध था। शारू, बावर और मोल जैसे पुराने नेताओंके अतिरिक्त सूक्ष्म चित्रकार कार्ल पफांडर हाइलब्रोन और शुरिंगिया का दर्जा जार्ज एकारियस भी इसमें शामिल थे।

मोलने लीगकी ओर अपने उद्देश्योंकी घोषणा तैयार करनेके लिये ब्रुशेल्स जाकर मार्क्सको और पीछे पेरिसमें जा एंगेल्सको अधिकार दिया। यह अधिकार २० जनवरी १८४७ में शापेरके हाथों लिखा गया था। इसमें मोलको सभी महत्वपूर्ण विषयोंपर सविस्तार सूचना देने तथा लीगकी स्थिति बतलानेके बारेमें कहा गया था, लेकिन मोल वह नहीं कर सका। उसने मार्क्ससे यही प्रार्थना की, कि आप लीगमें शामिल हों, और उनके पहले आक्षेपोंको हटाते हुये यह सूचित किया, कि लीगकी काँग्रेस मार्क्स और एंगेल्सके आलोचनात्मक विचारों को स्वीकार करने और उसे लीगके सिद्धान्तोंके तौर पर एक सार्वजनिक घोषणा-के रूपमें सम्मिलित करनेके ख्यालसे लन्दनमें होने जा रही है। उसने मार्क्स और एंगेल्सको जोर देकर लीगमें शामिल होनेके लिये कहा, कि इसीसे पुराने विचारोंको हटाया जा सकता है। लीगकी प्रार्थना स्वीकार कर मार्क्स और एंगेल्स उसमें शामिल हो गये। १८४७ ई० के ग्रीष्ममें लीगकी जो काँग्रेस हुई वह

शुत रीतिसे काम करनेके लिये मजबूर एक जनतात्रिक संगठनसे अधिक कुछ नहीं थी। यद्यपि उसने सभी तरह के घट्यांत्रोंकी भावना छोड़ दिया था। लीगका संगठन कमूनों (संगतों) पर आधारित था, जो कमसे कम तीन और अधिकसे अधिक दस सदस्योंके चक्करों, मुख्य-चक्करों, केन्द्रीय नेतृत्व और कॉंग्रेसके रूपमें संगठित थी। इसका लक्ष्य था बूज्वालीको खत्म करना, सर्वहारा के शासनको स्थापित करना, वर्ग-विरोधोंपर आधारित पुराने समाजको नष्ट करना और बिना वर्ग और बिना वैयक्तिक सम्पत्तिवाले एक नये समाजका निर्माण करना।

अबसे “न्यायी” लीगका नाम कम्युनिस्ट लीग हो गया। उसके नियमों-उप-नियमोंको प्रत्येक कम्यूनके पास पहिले वाद-विवादके लिये भेजा गया, जिसका अन्तिम निर्णय द्वितीय कॉंग्रेसके ऊपर छोड़ा गया, जो कि उसी सालके अन्तमें बुलाई जानेवाली थी, और जिसे ही लीगके नये प्रोग्रामपर विचार करना था। प्रथम कांग्रेसमें मार्क्स मौजूद नहीं थे, लेकिन पेरिसके कम्युनिस्टोंके प्रतिनिधिके तौरपर एगेल्स और बुशेल्सके प्रतिनिधिके तौरपर विश्वहेल्म बोल्क उसमें शामिल हुये थे।

लीगने सबसे पहले बुशेल्समें जर्मन कम्करोंकी शिक्षण सभाये कायम की, क्योंकि इसके द्वारा खुली तौरसे प्रचार करने का अवसर मिलता और साथ ही वहाँसे कामके लिये आगे कार्यकर्ता मिलते। इन सभाओंके काम करनेका ढंग था : हफ्तेमें एक दिन वाद-विवादके लिये था, और दूसरा दिन सामाजिक मेल-मिलापके लिये, जिसमें गायन, कविता-पाठ आदि होते थे। सभाओंने सब जगह पुस्तकालय खोले थे, जहाँपर कि कम्करों कम्युनिज्म (सम्बवाद) के प्रारंभिक सिद्धान्तोंकी शिक्षा भी दी जाती थी।

इसी योजनाके अनुसार उस साल अगस्तके अन्तमें ब्रुशेल्समें जर्मन-कम्कर सभा कायम की गई। मोजेज हेस और बालौ इसके दो अध्यक्ष थे और विल. हैल्म ओल्फ सेक्रेटरी। जल्दी ही इसके एक सौसे अधिक सदस्य हो गये और बुध और शनिवारकी शामको उसकी बैठके हुआ करती : बुधको सर्वहाराके हित सम्बन्धी महत्वपूर्ण प्रश्नोंपर बहस होती और शनिवारको बोल्क सप्ताहकी घट-

नाश्रोंकी राजनीतिक आलोचना करता। २७ सितम्बर (१८४७ ई०) को सभा ने दूनरे देशोंके मजदूरोंके साथ अपने भाईचारेके मावोंको प्रदर्शित करनेके लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय दावत दी। उस समय सार्वजनिक सभाओंमें पुलिसके हस्तक्षेपका डर रहता था, जिससे वचनेके लिये इस तरहकी दावतें दी जाती थीं। लेकिन, उक्त दावतका विशेष उद्देश्य था सार्क्स और एगेल्सके प्रभावको कम करना। उसी समय एंगेल्स ब्रुशेल्समें मौजूद थे, जिसके कारण दावतके संगठकोंको अपने उद्देश्यमें सफलता नहीं मिली। एंगेल्सको सभाने अपने दो उपसभागतियोंमें से एक निर्वाचित किया। १३२ अतिथि इस दावतमें शामिल हुये थे, जो जातिके तौरपर वेल्जियम, जर्मन, स्ट्रिस, फ्रैंच, पोल, इतालियन और एक लंसी भी था। दावतमें किन्तु ही भाषण हुये और निश्चय हुआ कि सन्दर्भके विरादर्दी जनतांत्रिकों (Fraternal Democrats) की तरह वेल्जियम उधार-नित्र-संघ बनाया जाय। संगठनके लिये जो कमीशन नियुक्त हुआ, उसमें एंगेल्स भी जुने गये, लेकिन उन्हें जल्दी ही बुशेल्स छोड़ना पड़ा, जिसपर उन्होंने योद्धेंडरे सिफारिश की, कि सेरी जगह सार्क्सको ले लिया जाय और वह भी बतलाया कि अगर २७ सितम्बरकी सभामें मार्क्स मौजूद होते, तो निस्तन्देह उन्हें निर्वाचित किया गया होता : “इसलिये ऐसा करनेका मतलब वह नहीं होगा, कि कमीशनमें मेरा स्थान मार्क्स ले रहे हैं, वर्तिक इसके विरुद्ध असली चात वह है, कि उभामें वह उनका प्रतिनिधित्वकर रहा था।” अन्तमें जब सार्वदेशिक एकत्रके लिये जनतांत्रिक सभा ७-१५ नवम्बरको बनाई गई, तो इम्बेट और नार्क्स उन-उनापति जुने गये, नेलिनेट आनंदरी सभापति और जोद्रेड कार्यकारी सभापति। सभाकी नियमावलीपर वेलजियन, जर्मन, फ्रैंच और पोल सब मिलाकर करीब ६० आदमियोंके हस्ताक्षर थे। जर्मन हस्ताक्षर करनेवालोंमें मार्क्स नोनेन हेतु, जार्ज वार्थ, दोनों बोल्क, स्ट्रिफन बोर्न और बोर्नस्टेट भी थे।

नई लमा (एलोचियेशन) ने उच्चे पहली जो बड़ी मीटिंग २६ नवम्बर (१८४७ ई०) को पोल-आंतिके वार्पिकोत्तर भनानेके लिये की। जर्मन सदस्यों की ओरसे फैन बोर्नने भाषण दिया, जिसपर लांगोने बड़ी हषेच्चनि की। मार्क्स उस समय यहाँ मौजूद नहीं थे, वह विरादर्दी जनतांत्रिक सभाके प्रतिनिधिके

तीरपर लन्दन गये हुये थे, जहाँपर भी पोल-क्राति मनानेके लिये ही समा हो रही थी। इस समय जो व्याख्यान उन्होंने दिया था, उसमे उन्होंने सर्वहाराकी बात और क्रातिकारी स्वरमें कहा था : “प्राचीन पोलेड लुप्त हो गया और हम उसके पुनः लौट आनेकी इच्छा नहीं रखते। किन्तु यह केवल पुराने पोलैडकी ही बात नहीं, वहिं पुराने जर्मनी, पुराने फ्रास और पुराने इगलैड वस्तुतः सभी पुराने लुप्त समाजके लिये वही बात है। वो भी पुराने समाजका लुप्त होना उनके लिये कोई अर्थ नहीं रखता, जिनका उसके साथ कुछ लुप्त नहीं होता, और सभी देशोंके लोगोंकी बहुसंख्याकी यही स्थिति है। मार्क्सने इस व्याख्यानमें बताया, कि बूज्जर्जीके ऊपर सर्वहाराकी विजय होनेपर सभी उत्पीडित जातियोंको स्वतंत्रता मिलेगी। अंग्रेज सर्वहाराकी अंग्रेज बूज्जर्जीपर विजय सभी उत्पीडिकोंके ऊपर सभी उत्पीडितोंकी विजय होगी। पोलेड पोलैरडमें मुक्त नहीं होगा, वहिं इगलैडमें। अगर चार्टिस्ट अपने देशमें अपने शत्रुओंको हरा सके, तो वह सारे बूज्जर्जी समाजको हरायेगे।

जो अभिभाषण मार्क्सने विरादराना जनतात्रिकोंके हाथमें दिया था, उसका स्वागत भी उसी तरह हुआ था : “आपके प्रतिनिधि, हमारे मित्र और माई मार्क्स आपको बतलायेंगे, कि हमने पढ़े जानेपर उसका कितने उत्साहके साथ स्वागत किया। सभी आँखें आनन्दसे चमकने लगीं, सभी कठ स्वागतके लिये चोल उठे, और आपके प्रतिनिधिकी ओर विरादराना तौरसे सभी हाथ आगे बढ़े।...राजाओंके घड्यत्रोंका जबाब हमें लोगोंके घड्यन द्वारा देना होगा।... हमारा दृढ़ विश्वास है, कि अब हमें वास्तविक जनता, सर्वहाराको सम्बोधित करना है—उन मनुष्योंको जो कि रात-दिन वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाके भार-के नीचे दबे खून-पसीना एक कर रहे हैं—अगर हम आम भ्रातृत्व पैदा करना चाहते हैं।..हम जल्दी ही देखेंगे, वहिं इसी बक्त देख रहे हैं, कि भाईचारेके भड़ावरदार, मानवजातिके मनोनीत वीर इसी सड़क द्वारा झोपड़ों, मिल्लीखानों, हलों, अहरेनों और फैक्टरियोंसे आ रहे हैं। इसके बाद विरादराना जनतात्रिकोंने सितम्बर १८४७ में ब्रुशेल्समें एक आम जनतात्रिक काग्रेस करनेका प्रस्ताव किया —सितम्बर १८४७ में वहाँ पर पैँजीपतियोंने अपनी मुक्त व्यापार काग्रेस की थी।

इस समाजे अतिरिक्त मार्क्स के लन्दन जानेका एक और भी उद्देश्य था। जिस हाल में पौल-क्रांतिका वार्षिकोत्सव मनाया गया था, उसीमें कम्युनिस्ट-कम-कर-शिळा-लीगका हेडक्वार्टर था, जिसे १८४० ई० में शापेर, बाबर, मालने स्थापित किया था। पौल-क्रांति वार्षिकोत्सवकी बैठकके बाद इसी जगह कम्युनिस्ट लीगकी दूसरी कांग्रेस हुई, जिसमें नई नियमावलोंको निश्चित तौरसे स्वीकार करके नये प्रोग्रामपर व्यवस्था करनी थी। एंगेलस भी इस कांग्रेसमें मौजूद थे। २७ नवम्बरको उन्होंने पैरिस छोड़ा और बैलूजियमके बन्दरगाह ओस्टेंडमें मार्क्ससे मिलकर दोनों साथ खाड़ी पार कर इंगलैण्ड गये। कांग्रेसमें दस दिनों तक बाद-विवाद और विचार-विनिमय होता रहा। इसके बाद मार्क्स और एंगेलसको कम्युनिज्म (साम्यवाद) के मौलिक सिद्धान्तोंको एक सार्वजनिक घोषणा पत्रके तौरपर तैयार करनेका काम सौंपा गया।

२. कम्युनिस्ट घोषणा पत्र

कम्युनिस्ट लीग की द्वितीय कांग्रेसने इस प्रकार उस अमर घोषणाको तैयार करने का निश्चय किया, जो सर्वहाराकी अन्तिम विजय तक पथ-प्रदर्शन-का काम देता रहा और रहेगा, तथा साथ ही जिसमें भविष्यके नव-निर्माणका मार्ग भी निर्दिष्ट है। दिसम्बरके भव्यमें मार्क्स ब्रुशेल्स लौट आये और एंगेलस ब्रुशेल्स होते पेरिस चले गये। दोनों ही घोषणा तैयार करनेमें जल्दीका ख्याल नहीं कर रहे थे, उनके पास दूसरे काम भी थे; लेकिन, कम्युनिस्ट लीगकी केन्द्रीय कमेटी देर करनेके लिये तैयार नहीं थी। उसने २४ जनवरी १८४८ को ब्रुशेल्सको जिला कमेटीको कड़ाईके साथ सावधान करते हुये कहा, कि हम नागरिक मार्क्सके खिलाफ कदम उठानेके लिये मजबूर होंगे, यदि उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टीके घोषणा पत्रको—जिसे तैयार करनेकी जिम्मेवारी उन्होंने अपने ऊपर ली है—१ फरवरी तक तैयार करके केन्द्रीय कमेटीके हाथमें नहीं दे देते। लेकिन सारी धमकीके बाद भी घोषणापत्र एक महीनेमें तैयार नहीं हो सका। देर होनेका कारण मार्क्सका स्वभाव हो सकता था, क्योंकि वह किसी कामको आधे दिलसे करना नहीं जानते थे। यह भी हो सकता है, कि एंगेलस उस समय

उनके पास नहीं थे । लेकिन, उधर लन्दनमें केन्द्रीय कमेटी आधीर हो गई, जब उसने सुना कि मार्क्स ब्रुसेल्समें प्रचारमें बड़े जोर-शोरके साथ लगे हुये हैं ।

६ जनवरी १८४८ को जनतात्रिक सभामें मार्क्सने मुक्त व्यापारपर एक व्याख्यान दिया । इस व्याख्यानको वह ब्रुसेल्सकी मुक्त-व्यापार-काग्रेसमें देना चाहते थे, लेकिन उनको बोलनेका अवसर नहीं दिया गया । उन्होंने मुक्त व्यापारियोंकी धोखे-घटीका पर्दाफाश किया, जो कि कमकरोके हितकी बात मौके-बैमौके किया करते हैं । मार्क्सने बतलाया कि मुक्त व्यापार कमकरोंकी नहीं, बल्कि पूँजीकी मुक्ति है, जो कि राष्ट्रोंकी इस सीमाओंको तोड़ फेकना चाहती है, क्योंकि वह उसकी शक्तियोंको स्वेच्छापूर्वक काम करनेमें बाधा देती है । मुक्त व्यापार राष्ट्रोंका ध्वंस करता है, और बूज्वर्जी तथा सर्वहारा (प्रोलैटारियत) के बीचके विरोधको और तीव्र बनाता है, और इस प्रकार वह सामाजिक क्रातिकी गतिको रेज करता है । इस क्रातिकारी अर्थमें मार्क्स मुक्त व्यापारके पक्षमें थे । एंगेल्स-की तरह मार्क्स रक्षित व्यापारके विरुद्ध मुक्त व्यापारके प्रश्नको शुद्ध क्रातिकारी दृष्टिसे देखते थे । मार्क्सके इस भाषणका जनतात्रिक सभाके सदस्योंने बड़ा स्वागत किया और उन्होंने उसे फ्रेच और फ्लैमिश भाषाओंमें अपनी ओरसे छापनेका निश्चय किया ।

उक्त व्याख्यानसे भी अधिक तथा सदाके महत्वका एक व्याख्यान, उसी समय जर्मन-कमकर-सभामें मार्क्सने दिया था, जिसमें मजूरी-श्रम और पूँजीकी व्याख्या की थी । इस भाषणमें मार्क्सने बतलाया कि मजूरी अपने द्वारा उत्पादित मालमें मजूरोंका हिस्सा नहीं है, बल्कि वह उस वक्त भी वर्तमान मालोंका वह हिस्सा है, जिससे कि पूँजीपति उत्पादक श्रम-शक्तिकी कुछ मात्राको खरीदता है । उन्होंने समझाया, कि श्रम-शक्तिका दाम दूसरे परयोंके दामकी तरह इस बातपर निर्भर करता है, कि उसके उत्पादनमें कितना खर्च हुआ । मामूली श्रम-शक्तिके उत्पादनका खर्च है : अपने अस्तित्वको कायम रखने तथा अपनी जाति (सन्तान) को जारी रखनेमें समर्थ होनेके लिये आवश्यक साधनोंको कमकरोके लिये प्रस्तुत करनेपर जो खर्च आता है । इन्हीं खर्चोंका दाम है मजूरी । दूसरे सभी परयों (सौदों) के दामोंकी तरह वह दाम भी बाजारकी

तरह प्रतियोगिताके उतार-चढ़ावके अनुसार खर्चसे कभी ऊँचा कभी नीचा होता है। लेकिन इन उतार-चढ़ावोंकी सीमाके भीतर रहते यह प्रायः निम्नतम मजूरी के करीब होता है।

इसके बाद मार्क्सने पूँजीको लिया। बूज्वा अर्थशास्त्री कहते हैं, कि पूँजी संचित-श्रमका ही नाम है। मार्क्सने पूछा : “एक (हवशी) दास क्या है ? रंगवाली जातिका एक मानव। एक व्याख्या उतनी ही अच्छी है, जितनी दूसरी। नीओ एक नीओ है, लेकिन कुछ परिस्थितियोंमें वह दास बन सकता है। कपास कातनेवाली मशीन कपास कातने के लिये एक मशीन है, वह निश्चित स्थितियोंमें ही पूँजीका रूप लेती है। बिना उन परिस्थितियोंके वह उसी तरह पूँजी नहीं बन सकती, जिस तरह कि सोना सिक्का या चीनी-चीनीका दाम।” “पूँजी एक सामाजिक उत्पादक साधन, बूज्वा समाजका एक उत्पादक सम्बन्ध है। सौदेकी एक मात्रा, विनिमय मूल्यकी मात्राका एक परिमाण पूँजीका रूप लेता है, जबकि वह स्वतंत्र सामाजिक शक्तिके रूपमें प्रकट होता है। अर्थात् जब समाजके एक भागके तौरपर प्रकट होता है, और सीधे सजीव श्रम-शक्तिके साथ विनिमय द्वारा अपनेको बढ़ाता है।” पूँजीके अस्तित्वके लिये एक ऐसे वर्गका वहाँ मौजूद होना आवश्यक है, जिसके पास श्रम (मेहनत) करनेकी क्षमताके सिवा और कोई चीज न हो। सीधे सजीव श्रम-शक्तिके ऊपर संचित, अतीत, वहिस्थापित श्रमकी शक्ति पहले पहल पूँजीके रूपमें श्रमको इकट्ठा करती है। पूँजी इसे नहीं कहते, कि संचित श्रम आगे और उत्पादन करनेके लिये साधनके तौरपर सजीव श्रम-शक्तिकी सेवा-सहायता करता है। पूँजी इस रूपमें है, कि संचित श्रमके विनिमय-मूल्यको कायम रखने और बढ़ानेके साधनके रूपमें उसकी सजीव श्रम-शक्ति सेवा-सहायता करती है। पूँजी और श्रम-शक्ति एक दूसरेपर अवलंबित, एक दूसरेको परस्पर उत्पादित करती है।

मार्क्सने पूँजीवादी अर्थशास्त्रियोंकी इस ब्रातको भी गलत बतलाया, कि पूँजीके, विस्तार और विकासके साथ मजूरोंकी भी हालत बेहतर होती है। उन्होंने कहा कि वह कोई आवश्यक नहीं है, कि पूँजीके साथ मजूरी भी जरूर बढ़े। यह कहना सच नहीं है, कि पूँजी जितनी ही मोटी-तगड़ी होती जायगी, वह

अपने दासको भी उसी तरह खूब लिलाये-पिलायेगी । उत्पादक पूँजीकी वृद्धिसे पूँजीका संचयन और केन्द्रीकरण बढ़ता है । उसके केन्द्रीकरण द्वारा श्रमका और भी विभाजन होता है और भी अधिक मशीनोंका इस्तेमाल बढ़ता है । श्रमका विभाजन जितना ही अधिक होता है, उतना ही अधिक कमकरोका अपना विशेष कौशल आवश्यक होकर नष्ट हो जाता है । जब इस विशेष कौशलके स्थानपर श्रमको यह मशीन द्वारा ऐसे रूपमें पेश किया है, जिसमें कि कोई भी आदमी उस कामको आसानीसे कर सकता है, तो इसके कारण कमकरोमें होड बढ़ जाती है । यह होड और भी जोर पकड़ती है, जब कि श्रम-विभाजन एक मजदूरको पहले तीन मजदूरों जितना काम करने योग्य बना देता है । मशीन इस बातको और अधिक इस परिणामको पैदा करती जाती है । उत्पादक पूँजीकी वृद्धि औद्योगिक पूँजीपतियोंको इसके लिए मजबूर करती है, कि वह और अधिक विकसित यन्त्र-साधनोंसे काम ले । अपने इस काम द्वारा वह छोटे-छोटे उद्योगपतियोंको दिवाला निकालनेके लिए मजबूर कर उन्हे सर्वहारोकी जमातके भीतर फेंक देते हैं । पूँजीका संचयन जितना ही अधिक बढ़ता जाता है, उतनी ही सूझकी दर गिरती जाती है, जिसके कारण छोटे-छोटे शेयर-होल्डर (भागीदार) अपने मिलनेवाले सदपर जीवित नहीं रह सकते और वह काम ढूँढनेके लिये उद्योग-पतियोंके पास जानेके लिए मजबूर होते हैं । इस प्रकार ये शेयर-होल्डर भी सर्वहारोकी जमातको बढ़ाते हैं ।

अन्तमें मार्क्सने बतलाया, कि उत्पादक पूँजी जितनी अधिक बढ़ती है, उतनी ही अपने पैदा किये हुये मालके लिये ऐसा बाजार कायन करनेको मजबूर होती है, जिसकी आवश्यकताओंका उसे पता नहीं । फिर उपज माँगसे आगे बढ़ जाती है, पूर्ति माँगको मजबूर करनेकी कोशिश करती है, लेकिन जब उसमें सफल नहीं होती, अर्थात् मालकी उपज माँगसे कही अधिक हो जाती है, तब अर्थ-संकट (बाजारकी मन्दी) पैदा हो जाता है, जो वह औद्योगिक भूकम्प है, जिसमें अपनी उपजके एक भागकी बलि नहीं, बल्कि स्वयं उत्पादक शक्तियोंके भी एक भागकी बलि पाताल लोकके काले देवताओंको चढ़ा व्यापार जगत् अपने-को बचानेकी कोशिश करता है । ये भूकम्प आगे और बार-बार और भयंकर होते

जाते हैं। पूँजी केवल श्रमपर ही जीवन धारण नहीं करती, बल्कि एक सामन्त या बर्बर सरदारकी तरह वह अपने दसोंकी लाशोंको भी अपने साथ कब्रिये घसीट ले जाती है—पूँजीके इस भूकम्पमें बहुतसे कमकर भी वेकार हो भूखे और बरवाद होते हैं। निष्कर्ष निकालते हुये मार्क्सने कहा—‘अगर पूँजी वेगके साथ बढ़ती है, तो मजदूरोंके बीचमें होड़ और तेजीके साथ बढ़ती है, अर्थात् मजदूरोंके जीवन और काम-काजके साधन अपेक्षाकृत कम हो जाते हैं। तो भी, पूँजीकी तेजीके साथ चूद्धि मजदूरी-श्रमके लिये अत्यन्त अनुकूल स्थिति है।

मार्क्सने ब्रुशेल्समें जर्मन मजदूरोंके सामने जो व्यवस्था दिया था, उसका अपूर्ण अंश ही हमारे पास तक पहुँचा। लेकिन इससे यह पता लग जाता है, कि मार्क्स किस तरह प्रचार कर रहे थे। उनका व्याख्यान न्यायिक आवेश और उत्साह पैदा करनेके लिए नहीं होता था, बल्कि वह वैज्ञानिक तथ्योंको रखकर हरेक चीजकी तहमें पहुँचनेके लिए पथ-प्रदर्शनका काम देता था। लेकिन मार्क्सके व्याख्यानों और उनके महत्वको समझनेके लिए मार्क्सीय दृष्टिको आवश्यकता थी, नहीं तो उन्हें आसानीसे अरण्यरोदन कहा जा सकता है।

ऐसी क्रान्तिकारी बकुनिनने पोल-क्रान्तिके वार्षिकोत्सवपर व्याख्यान दिया था, जिसके कारण उसे फ्रांससे निकल जानेका हुक्म हुआ और वह उसी समय ब्रुशेल्स पहुँचा था, जब कि मार्क्सने मजदूर-श्रम और पूँजीके ऊपर उक्त कई लेक्चर दिये थे। बकुनिनने २८ दिसम्बर १८४७ को अपने एक रूसी मित्रको लिखा था—‘मार्क्स अब भी अपनी उन्हीं पुरानी फजूलकी कार्यवाइयोंमें लगा हुआ है, और उसके हारा मजदूरोंमें से तर्क-ब्रूकनेवाले बनाकर उन्हें खराब कर रहा है। यह वही पुरानी पागलपनका सिद्धान्त छोड़ना और अतुष्ट आत्मतुष्टि है।’ बकुनिन पीछे जार-भक्त बना, उसने वह सभी पाप किये, जो कि पतित भूतपूर्व क्रान्तिकारी किया करते हैं। लेकिन अपने इस तरहके विचारोंसे वह मार्क्सके स्थानपर अपने देशका पथ-प्रदर्शक और निर्माता कैसे बन सकता था? उसने हेरवेगको पत्र लिखते हुए मार्क्स और एंगेल्सके ऊपर और भी कठोर वाग्वाण फेंकते हुए कहा था—‘संचेपमें भूठ और मूर्खता, मूर्खता और भूठ।’ उनके साथ रहते हुए स्वतन्त्र वायुमंडलमें साँस लेना असम्भव है। मैं उनसे

अलग रहता हूँ और मैंने उन्हें विल्कुल साफ तौरसे कह दिया है कि मैं तुम्हारे कम्युनिस्ट शिल्पकार समूहमें शामिल नहीं हूँगा, मुझे उससे कुछ लेना-देना नहीं है।'

'कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र' जैसी अमर सजीव कृतिके अस्तित्वमें आना जो संचोपमें है—मार्क्स और एंगेल्सने ब्रुशेल्समें पहुँचकर 'कमकर शिक्षा लीग' की स्थापना की। फिर ब्रुशेल्ससे उन्होंने जर्मनी, लन्दन, पेरिस और स्वीजॉडके कम्युनिस्ट हल्कोके साथ सम्बन्ध स्थापित किया, जहाँपर उनके और उनके सहायकों द्वारा संचालित 'पत्र-व्यवहार कमेटियों' बनाई गई। इसी सम्बन्धमें मार्क्सने प्रूँडोंको भी लिखा था। १८४६ ई० में केल्ड्रीय पत्र-व्यवहार व्यूरो ब्रुशेल्समें था, जहाँ मार्क्स स्वयं उसका नेतृत्व करते थे। पेरिसके व्यूरोके सञ्चालक एंगेल्स और लन्दनके व्यूरोके सञ्चालक वावर, शापेर और मोल थे। २० जनवरी १८४३ को मोलने लन्दन पत्र-व्यवहार कमेटीके प्रतिनिधिके तौरपर आकर व्यूरोके बारेमें रिपोर्ट दी। इसी मुलाकातका परिणाम लन्दनमें एक अन्तर्राष्ट्रीय कॉंग्रेस बुलानेके रूपमें हुआ। इसी कॉंग्रेसमें कम्युनिस्ट लीग कायम की गई, जिसमें ब्रुशेल्सके सङ्घठनके प्रतिनिधिके तौरपर विलहेल्म वॉल्फ शामिल हुआ था। जैसा कि पहले बतलाया, मार्क्स पहली कॉंग्रेसमें शामिल नहीं थे। वह नवम्बर १८४७ की दूसरी कॉंग्रेसमें भी नहीं उपस्थित हो सके। कम्युनिस्ट लीगकी कॉंग्रेसके निश्चयानुसार कम्युनिस्ट घोषणा-पत्रके तैयार करनेका काम उनको सौंपा गया, जो कि १८४८ के फरवरीके उत्तरार्धमें प्रकाशित हुआ—यह समरण रखनेकी बात है, कि पहले दो संस्करणोंमें इस घोषणाका नाम 'कम्युनिस्ट पार्टीका घोषणा-पत्र' था। इससे यह मालूम होगा कि यह घोषणा-पत्र यों ही दिमागसे नहीं निकला, वल्कि उसके पहले कम्युनिस्ट सङ्घठन अस्तित्वमें आ चुके थे, जिनके पथ-प्रदर्शनके लिए इसे तैयार करनेकी जरूरत पड़ी।

कम्युनिस्ट घोषणा-पत्रके मसौदेको तैयार करनेमें मार्क्स और एंगेल्सके अतिरिक्त मोजेन हेसने भी हाथ बटाया था। प्रारम्भिक मसौदेका रूप कैसा था, इसे मार्क्सको लिखे एंगेल्सके २४ नवम्बर १८४७ (द्वितीय कॉंग्रेसे कुछ ही समय पहले) के पत्रसे मालूम होता है—'विश्वास-स्वीकारके ऊपर जरा सा

विचारो । मैं समझता हूँ कि सिद्धान्त प्रश्नोत्तरीके ढंगको छोड़कर इसे कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र कहना अन्धा होगा । चूँकि कुछ इतिहासकी बातें भी इसमें लानी हैं, इसलिए मैं समझता हूँ, इसका वर्तमान रूप ठीक नहीं होगा । जो कुछ मैंने इसके बारेमें किया है, इसे मैं अपने साथ लाया हूँ । यह एक सीधे-सादे वर्णनात्मक ढंगमें है, लेकिन बड़ी बुरी तरहसे सम्पादित है । मैंने अत्यन्त जल्दी-जल्दीमें इसे तैयार किया है । एंगेल्सने अपने इस पत्रमें यह भी सूचित किया था, कि मैंने मसौदेको पेरिसकी शाखाओंके सामने पेश नहीं किया है । लेकिन मुझे आशा है, कि एक-दो छोटी-मोटी बातोंके सिवा इसे स्वीकार कर लिया जायगा । एंगेल्सने पहला मसौदा पञ्चीस प्रश्नों और उनके उत्तरोंके रूपमें तैयार किया । लेकिन, उन्हें प्रश्नोत्तरीका ढंग नहीं पसन्द आया, और चिरस्थायी महत्व देनेके लिये उस शैलीमें करनेका सुभाव रखा, जिसमें कि घोषणापत्र हमारे सामने आज मौजूद है । घोषणापत्र एक बिल्कुल स्वतन्त्र और मौलिक कृति है, लेकिन जहाँ तक विचारोंका सम्बन्ध है, उसमें कोई ऐसे विचार नहीं, जिसके ऊपर मार्क्स और एंगेल्सने पहले न लिखा हो । जहाँ तक शैलीका सम्बन्ध है, उसका अन्तिम रूप देनेमें सबसे अधिक हाथ मार्क्सका है, लेकिन जिन समस्याओंका वर्णन इसमें आया है, उसमें एंगेल्सका भी मार्क्ससे कम हाथ नहीं है । जिस समय घोषणापत्र तैयार हुआ वह समय था, जब कि यूरोपीय प्रतिक्रियावादका चरम सबसे बड़ा समर्थक रूप कर रहा था । यह वह समय था, जब कि यूरोपीय सर्वहाराके फाजिल आदमियोंको युक्तराष्ट्र अमेरिका अपने भीतर हजम कर रहा था । अमेरिका और रूस दोनों ही देश यूरोपको कच्चा माल देते थे, और बदलेमें वह यूरोपकी औद्योगिक उपजकी बाजार बने हुए थे । इस प्रकार दोनों ही यूरोपीय सामाजिक व्यवस्थाके उस समय त्रिंग नहीं थे ।

कम्युनिस्ट घोषणापत्रमें १८४७ ई० तकके ऐतिहासिक विकासको ही लिया गया था, लेकिन उसमें जो निष्कर्ष निकाले गये हैं, वह सदाके लिए एकसे हैं । ‘दुनियाके सर्वहारो, एक हो जाओ ।’ इस मन्त्रने तबसे न जाने कितनी विजयोंके नारेका रूप लिया ।

१८४८ ई० के आरंभमें घोषणापत्र जर्मन मूल और फ्रैंच अनुवादके रूपमें प्रकाशित हुआ। अंग्रेजीमें उसका अनुवाद दो साल बाद १८५० ई० में छपा। प्रथम विश्वयुद्धके समय तुर्की भाषामें जब घोषणा प्रकाशित हुई, तो खुल्तानकी पुलिसने कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एगोल्स नामक राजद्रोहियोंको गिरफ्तार करनेका वारट निकाला था। मानव-इतिहासके सारे राजनीतिक निबन्धोंमें यह घोषणा सबसे महान्, सबसे स्पष्ट, सबसे व्यापक अर्थ और प्रेरणावाली कृति है। इसके चारों भागों का सारांश है :

(१) पहले मागमे पूँजीपति और सर्वहारा (प्रोलेतारी) इन दोनों बगाँके उत्थान और विकासका संक्षिप्त विवरण है। पूँजीपति सामाजिक-सामूहिक रूपसे होते उत्पादनके साधनों—कलाकारखानों—का स्वामी है। सर्वहाराके पास उत्पादनके अपने साधन नहीं है। काम करके जीनेके लिये मजबूरी पर अपना अम बेचनेके सिवाय उसके बास्ते कोई चारा नहीं है।

दुनियाका लिखित इतिहास वर्ग-संघर्षोंका इतिहास है। दासता तथा सामन्तशाही युगमें उत्पीड़क और उत्पीड़ितके बीच ये संघर्ष, कभी छिपे, कभी प्रकट चलते रहे। इनका अन्त या तो समाजके क्रान्तिकारी पुनर्निर्माणके रूपमें हुआ, या दोनों प्रतिद्वन्द्वी बगाँके नाशके साथ।

अमेरिकाके आविष्कार, एसियाके द्वारके खुलने और इनके साथ संसारके बाजारके विस्तारसे पूँजीवादका प्रादुर्भाव हुआ। इसके बाद बाजारकी माँगोंको पूरा करने और अधिकसे अधिक लाभ उठाने के लिये भापसे चलनेवाले कलाकारखानों, यातायातके लिये भापकी रेलों और जहाजोंका प्रचार हुआ।

पूँजीवादके बढ़नेके साथ सामन्तशाहीसे उसकी टक्कर हुई और अन्तमें उसने सामन्तशाहीको परास्त कर अपनी प्रधानता स्थापित की। उत्पादनकी शक्तियोंको उसने इतना बढ़ाया, जितना उससे पहले कोई ख्यालमें भी नहीं ला सकता था। पूँजीवादने एक और काम किया—कच्चे और तैयार मालके दान-आदान द्वारा उसने संसारको एक दूसरेके आश्रित कर दिया। पहले उत्पादन विसरे हुये थे। उन्हें इसने केन्द्रित किया। पूँजीवादियोंकी शक्ति बढ़ती ही गई और शासन-न्यन्तर पर भी उनका अधिकार बढ़ा।

सामन्तशाही समाजने उत्पादनकी वह शक्तियाँ पैदा कीं, जिनपर उनका नियंत्रण नहीं हो सकता था। व्यापारको बढ़ा कल-कारखानोंको प्रारम्भ कर उसने पूँजीवादको जन्म दिया। पूँजीने उत्पादनके जबर्दस्त साधन तैयार किये। उसके वितरण और विनियमके तरीके भी कम आश्चर्यकारी नहीं हैं। लेकिन उसने उत्पादन और वितरणका सामंजस्य नहीं कर पाया। उत्पादन ज्यादा, किन्तु उसे खरीदनेके लिये जो पैसा चाहिये, उसमें अतिरिक्त-मूल्यके बहाने कटौती की गई। जिससे सभी पर्यांते खरीदनेके लिये पैसा नहीं रहा। इसका ही परिणाम है, समय-समयपर होती रहनेवाली मन्दियाँ, उत्पादित धनका जान-बूझकर संहार। इस प्रकार उसके अपने नाशके लिये हथियार आ मौजूद हुआ।

पूँजीवादने अपने भारनेके लिये हथियार ही नहीं तैयार किया, बल्कि वह आदमी भी तैयार किये, जो हथियारको इस्तेमाल कर सकते हैं, यह हैं उनके अपने कारखानेके मजदूर—सर्वहारा।

मध्यम वर्ग—व्यापारी, शिल्पकार, किसान धीरे-धीरे नीचे गिरते जा रहे हैं। इन्हींमेंसे सर्वहारा फौजके रंगरूट भरती हो रहे हैं। आत्मरक्षा—जीवका-रक्षा—के लिये मजदूर संगठित हो रहे हैं, और उनके हितोंका पथ-प्रदर्शन करनेके लिये उनका राजनीतिक दल—मजदूर पार्टी बन रही है। दूसरी श्रेणियोंमें भी सर्वहारापन बढ़ रहा है, किन्तु मजदूर ही वह श्रेणी है, जो क्रान्ति लानेकी क्षमता रखती है। दूसरे पीड़ित-वर्ग अपने वर्तमान नहीं, भविष्यमें मिलनेवाले स्वत्वके लिये लड़ना चाहते हैं, किन्तु सर्वहारा वर्तमानके लिये लड़ रहे हैं। मजदूर-आन्दोलन अल्पमतोंका नहीं, इतिहासमें पहले-पहल एक भारी बहुसंख्या-का आन्दोलन है। मजदूरोंकी हालत दिनपर दिन गिरती जा रही है, मजदूरीमें कमी के साथ बेकारी बढ़ती जा रही है।

पूँजीवादी खुद अपनी कब्र खोदनेवाले इन मजदूरोंको तैयार कर चुके हैं।

(२) घोषणा पत्रके दूसरे भागके एक अधिकरणमें मजदूरोंका कमूनिस्टोंके साथ क्या सम्बन्ध है, इसे बतलाया गया है। कमूनिस्ट मजदूर वर्गके अंग हैं, इसलिये उससे अलग-थलग रहने का ख्याल बहुत बुरा है। “(१) मजदूर-वर्गकी दूसरी पार्टियोंके खिलाफ कमूनिस्टोंकी कोई अलग पार्टी नहीं है। (२)

सर्वहारा वर्गके सारे स्वार्थोंसे अलग उनका अपना कोई स्वार्थ नहीं है । (३)
सर्वहारा आनंदोलनको खास रूपमें ढालनेके लिये वह अपना कोई मतवाद नहीं
इस्तेमाल करना चाहते । ”

“कम्युनिस्ट प्रत्येक देशके मजदूर-वर्गका बहुत ही अग्रणी और दृढ़मनस्क
भाग है । यह वह भाग है, जो दूसरोंको आगेकी ओर ढकेलता ले जाता है ।
दूसरी ओर, सिद्धान्त समझनेमें, सर्वहारा भारी जनसमूहसे वह इस बातमें
विशेषता रखता है, कि वह कूचके रास्ते, सर्वहारा-आनंदोलनके अन्तिम साधा-
रण परिणाम और स्थितियोंको साफ तौरपर समझता है ।... कम्युनिस्टोंका नज-
दीका उद्देश्य है—सर्वहारा को एक वर्गमें बद्ध करना, पूँजीबादी प्रधानताको
उत्तना और सर्वहारा द्वारा शासन-शक्तिपर अधिकार जमाना । ”

कम्युनिस्टोंका सिद्धान्त (निष्कर्ष) किसी विश्व-सुधारकके आविष्कृत विचारोंपर
नहीं, बल्कि हमारी आँखोंके सामने चलते ऐतिहासिक आनंदोलनपर आधारित है ।

दूसरे भागके बाकी अंशमें कम्युनिस्टोंके ऊपर किये गये आँखेपैकी उत्तर
दिया गया है । साम्यवाद किसी आदमीको समाजके द्वारा उत्पादित पदार्थोंके
उपयोग करनेके अधिकारसे वंचित नहीं करना चाहता । वह सिर्फ इतना ही
चाहता है, कि इस तरहके उपयोग द्वारा दूसरोंके शमपर काबू पानेकी कोशिश न
की जाय । पूँजीबादी हायतोबा मचाते हैं, कि मजदूरोंके राबड़े संस्कृतिका खात्मा
हो जायगा, किन्तु पूँजीबादियोंकी संस्कृति आदमीको भशीन-की तरह काम करने
की शिक्षाके अतिरिक्त ही ही क्या ! कम्युनिस्ट स्त्रियोंपर सामाजिक अधिकार नहीं
चाहते, वह सिर्फ इतना ही कहते हैं, कि स्त्रियोंकी अर्थ-दासता खत्म होनी
चाहिये, शुर्त और प्रकट सब तरहकी वेश्यावृत्ति बन्द होनी चाहिये और स्त्रीको
समाजमें हर तरहसे समान स्थान मिलना चाहिये ।

कम्युनिस्ट स्वदेश और राष्ट्रीयताके भावको मिटाना चाहते हैं, इस आँखेप-
का उत्तर यह है, कि “मजदूरका अपना कोई देश नहीं । जो उनके पास है
ही नहीं, उसे हम उनसे छीनेगे कैसे ? सर्वहाराको राजनीतिक ग्रधानता प्राप्त
करनी है, राष्ट्रका मुख्य वर्ग बनना है, यह खुद एक राष्ट्रीय काम है । “लेकिन
जिल वूर्जा राष्ट्रीयताका भतलव है, एक राष्ट्रका दूसरे राष्ट्रके ऊपर झपटा

मारना, लगातार लड़नेकी तैयारी करते रहना, वैसी राष्ट्रीयता जरूर कमूनिस्त नहीं चाहते। बगोंके आपसके विरोध जितनी ही मात्रामें खत्म होंगे, उतनी ही मात्रामें एक जातिका दूसरी जातिसे वैमनस्य भी लुप्त होगा।

कमूनिस्त-प्रोग्रामके बारेमें कहा गया है—“क्रान्तिमें पहिला काम जो मजदूर-वर्गको करना है, वह है अपनेको शासक-वर्गके रूपमें परिणत करना, जनतंत्रा के युद्धको जीतना। सर्वहारा अपनी प्रभुताको इस्तेमाल करेंगे...बूज्जी वर्गसे सभी पूँजीको अपने हाथमें ले लेनेके लिये, उत्पादनके सभी साधनोंको केन्द्रित करने, राज्य—शासक वर्गके तौरपर संगठित सर्वहारा (प्रोलेतारी)—को हाथमें लेने और सम्पूर्ण उत्पादन-शक्तियोंको जितनी शीघ्रतासे हो सके, उतनी शीघ्रता से बढ़ानेके लिये।”

नजदीकके प्रोग्राम हैं: जमीनकी मिल्क्यतको उठा देना तथा सभी तरहके जमीनसे लिये जानेवाले करोंका सार्वजनिक कामके लिये व्यय करना। एक भारी और आमदनीके अनुसार बढ़ते हुये इन्कम-टैक्स द्वारा वरासतके सभी अधिकारोंका बन्द करना। भगोड़ों और विद्रोहियोंकी सम्पत्तिको जब्त करना। राज्यकी पूँजी लगाकर राष्ट्रीय यातायातके साधनोंको राज्यके हाथमें केन्द्रित करना। राज्यके द्वारा उत्पादनके साधनों और फैक्टरियोंको बढ़ाना। परती जमीनको जोतमें लाना और सम्मिलित योजनाके अनुसार जमीनके साधारण उपजाऊ-पनको बढ़ाना। श्रमके लिये सबको जिम्मेवार बनाना, औद्योगिक सेनाको स्थापित करना—यासकर खेतीके लिये। खेतीकी कल-कारखानेके उद्योगसे घनिष्ठता स्थापित करना। देशमें अधिकाधिक समान वितरण करके दीहात और शहरके अन्तरको उठा देना। सार्वजनिक पाठशालाओंमें सभी बच्चोंकी निःशुल्क शिक्षा, आजके जैसे लड़कोंका फैक्ट्रीमें काम करना बन्द करना, शिक्षा और औद्योगिक उत्पादनको एक दूसरेसे मिलाना, आदि।

मजदूर-वर्ग खुद अपनी प्रधानताको अन्तमें उठा देगा। जब विकासके पथ-पर चलते-चलते वर्ग-मेद मिट जायगा और सारा उत्पादन सारे राष्ट्रके विशाल संगठनके हाथमें जमा हो जायगा, तो राजनीतिक शक्ति (राज्य) अपने राजनीतिक रूपको खो देगी। राजनीतिक शक्ति, वस्तुतः एक वर्गकी दूसरे वर्गके

उत्पीड़नके लिये संगठित की हुई शक्ति मात्र है। “सर्वहारा की राज-शक्तिके द्वारा सारे उत्पादनको अपने हाथमें ले शोषक वर्गका अन्त कर देगा और वर्ग विद्वेषके मानोंको हटा एक वर्ग बना, एक वर्गके तौरपर प्राप्त की गई अपनी प्रधानताको छोड़ देगा। अब पुराने बूज्वार-समाज, उसके बगाँ और वर्ग-विरोधी की जगह एक ऐसा सगठन होगा, जिसमें सबके विकासके साथ-साथ प्रत्येकका स्वतंत्र विकास होगा।”

(३) तीसरे मागमे दूसरे समाजवादोंका खंडन है। “वर्तमान समाजके प्रत्येक कायदे-कानून पर उटोपियन समाजवादियोंका प्रहार मजदूरवर्गकी आँख खोलनेके लिये अत्यन्त मूल्यवान् चीज थी।” लेकिन सभी बगाँको और शासकवर्गको खास तौरसे, हृदय-परिवर्त्तनकी उनकी अपील गलत चीज थी। जब लोगोंने वर्ग-स्वार्थपर संगठित समाजकी बुराइयोंको देख लिया, तो वह उस वर्ग-युक्त समाजको कैसे बालृनीय समझ सकते हैं? समझाने-बुझानेसे शासक-वर्गके हृदय-परिवर्त्तनका यह विश्वास ही था, जिसने उटोपियनोंको सभी तरहकी राजनीतिक जहोजहद—खासकर क्रान्तिकारी कार्रवाइयो—के खिलाफ कर दिया। वह अपने उद्देश्यको शान्तिमय तरीकेसे पूरा करनेकी चाह रखते थे और अवश्य असफल होनेवाले छोटे-छोटे प्रयोगों द्वारा नये सामाजिक सिद्धान्तकी सच्चाई सांकेत करना चाहते थे।

(४) कम्युनिस्ट सभी जगह वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं के विरुद्ध होनेवाले प्रत्येक क्रान्तिकारी आन्दोलनकी सहायता करते हैं। “सभी जगह वह सभी देशोंकी जनतात्रिक पार्टियोंकी एकता और मेल-मिलापके लिये कोशिश करते हैं।”

“कम्युनिस्ट अपने विचारों और उद्देश्योंके छिपानेको बुरा समझते हैं। वह साफ तौरसे घोषित करते हैं, कि हमारा उद्देश्य सभी वर्तमान सामाजिक अवस्थाओंको बलपूर्वक उठा फेकनेसे ही पूरा हो सकता है। शासक-वर्गको साम्यवादी क्रान्तिसे कौपते रहने दो। सिवाय अपनी वेडियोंके, सर्वहाराके पास खानेके लिये ही ही क्या? और पानेके लिये एक संसार है।”

सभी देशोंके सर्वहारों एक हो जाओ।

अध्याय ६

क्रांति और प्रतिक्रांति (१८४८ ई०)

कम्युनिस्ट घोषणा पत्रके प्रकाशित होते ही मार्क्स और युरोपके जीवनमें एक संघर्षमय जीवन आरम्भ हुआ । जगह-जगह क्रान्तियाँ शुरू हुई और मार्क्स को उनमें भाग लेने का फ़िर उत्साह होने लगा । इस समय मार्क्स तीस साल के थे ।

१. फ्रैंच-क्रांति (१८४८ ई०)

१८४८ ई० की फ्रैंच-क्रान्ति यद्यपि सामन्ती-व्यवस्थाको कितने ही अंशोंमें उखाड़नेमें सफल हुई, लेकिन वहाँ बूज्वर्जीको पूरी तौरसे शक्ति हाथमें करनेमें चालीस वर्ष लगे । यद्यपि फ्रांससे राजतंत्र फिरसे स्थापित हो गया, किन्तु यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि वह बूज्वर्जीकी छत्रछायामें ही । शोषण और उत्पीड़नने अब सामन्ती रूपकी जगह पूँजीवादी रूप ले लिया । शोषित और उत्तीर्णित कब तक चुप रहते ? २४ फरवरी १८४८ को बूज्वर्जी राजतन्त्रको उखाड़ फेंका गया । पैरिसकी इस सफल क्रांतिकी प्रतिष्ठनि युरोपके और देशोंमें भी हुये चिना नहीं २५ सकती थी । सबसे पहिले फ्रैंच राजा बोनापार्ट के दामाद चेलिज्यमके राजा लियोपोल्दपर बीतनेको हुई, लेकिन लियोपोल्द अपने सम्भुरसे कहीं अधिक चतुर था । उसने तुरन्त घोषित किया, कि यदि राष्ट्र चाहता है, तो मैं तुरन्त सिंहासन छोड़नेके लिए तैयार हूँ । वह लोगोंको फ़ॅसाने-भुलवानेमें सफल हुआ । बूज्वर्जी राजनीतिज्ञ उदारवादी मन्त्री देपुती (पार्लियामेंट सदस्य) और नगरोंके मेयर उसके पक्षमें हो गये और उन्होंने विद्रोहकी भावनाओंको तुरन्त दबा दिया । राजाने अब उत्साहित हो सर्वेजनिक सभाओंको छिन्न-भिन्न करनेके लिए सैनिकोंको इस्तेमाल करना शुरू किया और परदेशी निवासितोंको सरकी जड़ समझकर पुलिसको उनके पीछे लगा दिया । मार्क्सके साथ खास सौरसे बुरा वर्ताव किया गया । सिर्फ उन्हींको नहीं, बल्कि उनकी बीवीको भी

पुलिस गिरफ्तार कर ले गई—जेनी मार्क्स्टको एक रात बन्दीखानेमें साधारण वेश्याओंके साथ रहना पड़ा । पीछे जिम्मेवार पुलिस अफसरको उसके पदसे हटा दिया गया । गिरफ्तारीका दुकुम भी लौटा लिया गया, यद्यपि देश-निकालने-की आज्ञा नहीं हटाई गई । यह बिल्कुल कमीनापन था । क्योंकि मार्क्स ब्रुशेल्स छोड़ पेरिस जाने ही चाले थे ।

क्रांतिके फूट निकलनेके दुरन्त बाद ही लन्दनमें कम्युनिस्ट लीगके केन्द्रीय पदाधिकारियोंने अपने कार्यालयको ब्रुशेल्सके बिला-प्रतिनिधियोंके हाथमें परिवर्तित कर दिया था, लेकिन अब ब्रुशेल्सकी अवस्था भी खराब हो गई । वहाँ मार्शल-ला जारी हो गया था । इसलिये ब्रुशेल्सके पदाधिकारियोंने इस अधिकारको मार्क्स्टके हाथमें इस हिदायतके साथ सौप दिया, कि वह पेरिसमें नया केन्द्रीय नेतृत्व बनायें । पेरिसमें क्रांतिके सफल होते ही वहाँकी अस्थायी सरकारने मार्क्स्टको बहुत सम्मानके साथ अपने यहाँ आनेके लिए निर्मंत्रित करते हुये सरकारके एक सुख्य सदस्य फ्लोपाके (१ मार्च) पत्र द्वारा मार्क्स्टको लिखा था : “वीर और ईमानदार मार्क्स ! फ्रेच गणराज्यकी भूमि सभी स्वतन्त्रताप्रेमियोंके लिए शरण-स्थान है । अत्याचारियोंने तुम्हें ‘निर्वासित किया, लेकिन स्वतन्त्र फ्रांस तुम्हारे लिए अपना दरवाजा खोलता है—तुम्हारे और उन सभीके लिए, जो कि सभी जातियोंके भाईचारेके पवित्र उद्देश्यके लिए लड़ते रहे हैं । फ्रेच सरकारका हरेक अफसर इस अभियाके लिए अपने कर्तव्यको समझे । पेरिसमें पहुँचकर मार्क्स्टने कम्युनिस्ट लीगके कितने ही सदस्योंको इकट्ठा किया । जर्मन निर्वासियोंकी एक बड़ी समाजे ६ मार्च १८४८ को भावी प्रोग्रामके बारेमें बतलाते हुये उन साथियोंका जबर्दस्त विरोध किया, जो कि सशस्त्र आदमियोंको लेकर जर्मनीमें क्रांति करनेके लिये जाना चाहते थे । इस योजनाका बनानेवाला बोनस्टेट था, जिसने हरवेगको भी अपनी ओर करनेमें सफलता पाई थी । बकुनिन भी इस योजनाके पक्षमें था, लेकिन पीछे उसने उसके लिए अफसोस जाहिर किया । फ्रांसकी अस्थायी सरकार भी योजनाका समर्थन करनेके लिए तैयार थी, लेकिन उसका उद्देश्य दूसरा ही था—वह बहुत से प्रदेशी कम्करोंसे इस बेकारीके जमानेमें पिंड छुड़ाना चाहती थी । उसने जर्मन-क्रांतिकारियोंको

अपनी बारें दे दीं और जब तक सीमांत तक नहीं पहुँच जाते तब तक पचास सांतीम (आधा फ्रांक) रोजाना भी दिया।

२. जर्मनी में क्रांति (१८४८-४९ ई०)

मार्क्सने इस वेवकूफ़ी और दुस्साहसका विरोध किया। इसी समय १३ मार्चको बीनामें और १८ मार्चको बर्लिनमें क्रान्ति हो गई। क्रान्तिकी शक्तियों-को ठीक तरहसे संगठित करके काम करनेके लिये पेरिसमें मार्क्सने एक नया नेतृत्व स्थापित किया, जिसमें वह स्वयं, एंगेल्स और बुशेल्ससे बोल्फ़ एवं लन्दनसे बावर-मोल तथा शापर सम्मिलित थे। इस संगठनने जर्मन सर्वहारा, निम्न मध्यमवर्ग और किसानोंके हितके लिये सत्रह माँगें रक्खी, जिनमें कुछ थीं : जर्मनीको एक अविभाज्य गणराज्य घोषित करना, लोगोंको हथियारबन्द करना, राजाओं और सामन्तोंकी तालुकदारियों-जर्मनीदारियोंका राष्ट्रीकरण करना, खानों खातायातोंका राष्ट्रीकरण, राष्ट्रीय मिल्डीवानोंकी स्थापना, राज्यके खर्चसे ब्रानिधार्य शिक्षाका आम प्रबन्ध करना, इत्यादि। ये माँगें पूरी की जानेवाली नहीं थीं, यह मार्क्स भी जानते थे, लेकिन प्रचारके लिये इनका महत्व था। कम्युनिस्ट लीग उस समय कमज़ोर हो चुकी थी, लेकिन मजूर वर्गके पास क्रांतिके दूसरे साधन थे। इसी समय मार्क्सने पेरिसमें एक जर्मन कम्युनिस्ट क्लब कायम की और उसके सदस्योंको उन्होंने जोर देकर कहा, कि हेखेगके शुरिल्लोंसे अलग रहकर क्रांतिकारी आन्दोलनको बढ़ानेके लिये जर्मनीमें अकेले-अकेले जायँ। इस प्रकार सैकड़ों जर्मन मजूर जर्मनीके भीतर दाखिल होनेमें सफल हुये, फैंच अस्थायी सरकारने इसमें मार्क्सीकी मदद की। कम्युनिस्ट लीगके अधिकांश सदस्य अब जर्मनीके भीतर चले गये थे और उन्होंने जो काम वहाँ किया, उसने बतला दिया, कि कम्युनिस्ट लीगने कितना क्रांति स्कूलका काम किया था। जहाँ-कहीं भी आन्दोलनमें गर्मी दिखलाई पड़ती, वहीं लीगके सदस्य संगठन और नेतृत्वके लिये तैयार मिलते। शापर नसावर्में था, बोल्फ़ ब्रेस्लोमें, स्टिफेन बोर्न बर्लिनमें। बोर्नने मार्क्सको चिट्ठी लिखते हुये ठीक ही कहा था : “लीगका अस्तित्व नहीं रहा, लेकिन तो भी उसका अस्तित्व सर्वत्र है।”

इसी समय मार्क्स अपने घनिष्ठ साथियोंके साथ राइनलैंडमें पहुँचे, जोकि उद्योग-धन्वे तथा नेपोलियन कानून^{*} के अधीन होनेके कारण जर्मनीका सबसे प्रगतिशील भाग था। वर्लिनमें प्रशियन दीवानी-संहिता (जान्ता दीवानी) चलती थी। कोलोन शहरमें जनतात्रियों और कम्युनिस्टोंने एक दैनिक पत्र निकालनेकी तैयारी की, तथापि यह काम आसानीसे नहीं हुआ। पत्रके लिये शेयर बेचनेकी कोशिश की गई। एंगेलस उस समय बर्मेनमें थे, जहाँसे २५ अप्रैल १८४८ ई० को लिखे पत्रमें उन्होंने मार्क्सको कोलौनमें लिखा था : “यहाँ शेयरोंके बेचनेकी कोई आशा नहीं !...लोग सामाजिक प्रश्नोंके बारेमें बात-चीत करनेसे प्लेगकी तरह कतराते हैं, वह इसे भड़काना कहते हैं !...मेरे बूढ़े भद्रपुरुषसे कुछ मिलनेकी आशा नहीं। वह समझना है, कि कोलिनिशो जाइटुंग[†] मड़कानेके लिये चरम साधन होगा, और वह मदद देनेके लिये एक हजार थालर देनेकी जगह हमें खतम करनेके बास्ते एक हजार गोलियों देना ज्यादा पसन्द करेगा !” यह लिखनेके बाद भी एंगेलस पन्द्रह शेयर बेचनेमें सफल हुये। १ जून १८४८ को “नौये राइनिशो जाइटुंग” (नवीन राइन पत्र) का पहला अंक निकला। इसके मुख्य सम्पादक मार्क्स तथा सम्पादकीय विभागमें एंगेलस छोन्के वीथर्थ और दोनों बोल्फ थे।

मार्क्सने फिर अपने पत्र द्वारा जनताकी मुख्य शक्तियोंका संगठन श्रौर पथ-प्रदर्शन करना शुरू किया। पत्रको जनतात्रिकताका मुख्यत्र कहा गया था, लेकिन उसका अर्थ नरम ढगकी जनतंत्रता ही था। उसने घोषित किया, कि गण-राज्यकी स्थापनाके बाद हमारा वास्तविक विरोधीपक्षीय काम शुरू होगा। मार्चमें बीनामें जो सफलता मिली थी, उसका आधार जूनमें हाथसे चला गया, क्योंकि वहाँ वर्ग-विरोध अभी उतना विकसित नहीं हुआ था। वर्लिनमें बूर्जवार्जी इस बातकी फिक्रमें थी, कि किस तरह क्रातिको सर्वहाराके हाथमें जानेसे बचाया जाय। अनेक बड़ी-छोटी रियासतोंमें बैटी जर्मनीमें उदारवादी मन्त्री अपने पूर्व-धिकारी सामन्तोंसे कोई मेद नहीं रखते थे। वह उसी तरह अपने राजाओंके

सामने घुटने टेककर सम्मान प्रदर्शित करते थे । १८ मईको फ्रांकफुर्ट (माइनपर) राष्ट्रीय सभाका पहला अधिवेशन हुआ । इसका काम था अपने सर्वप्रभुत्व-सम्पन्न होनेके कारण जर्मन एकताको स्थापित करना । लेकिन वह भी बात बनानेसे आगे नहीं बढ़ सकी । पहले ही अंकमें मार्क्सके पत्रने इसकी बड़ी आलोचना की । जिसपर पत्रके बहुतसे शेयर-होल्डर साथ छोड़कर भाग गये, यद्यपि पत्रने कोई बहुत बढ़-चढ़ कर राजनीतिक माँगें नहीं पेश की थीं । फ्रांकफुर्टकी राष्ट्रीय सभाके फेडरल गणराज्यकी आलोचना करते हुये मार्क्सने लिखा था, कि छोटी-छोटी रियासतोंके एक गणराजी सरकारके अधीन बननेको संयुक्त जर्मनीके अन्तिम संविधानके तौरपर नहीं माना जा सकता : “हम कोई उदोपियन (अव्यावहारिक, स्वप्नचारी) और अविभाज्य एक जर्मन गणराज्यके तुरन्त स्थापित करनेकी माँग नहीं पेश करते हैं, लेकिन यह माँग जरूर करते हैं, कि तथाकथित उग्रवादी जनतांत्रिक पार्टीं संघर्ष और क्रान्तिकारी आन्दोलन-की पथम मंजिलको अपना अन्तिम लक्ष्य समझनेकी गलती न करे । जर्मन-एकता और जर्मन-संविधान केवल उसी आन्दोलनके परिणामस्वरूप ग्रास होगा, जो कि घरेलू द्वन्द्वों और पूर्व (रूस) के साथ युद्धके परिणामस्वरूप एक निर्णय पर पहुँचनेके लिये मजबूर हो । एक निश्चित संविधानकी धोषणा नहीं की जाती, बल्कि वह उस आन्दोलनके परिणामस्वरूप पैदा होगा जिसका कि तज्ज्ञ नहीं हुआ । इसलिये यहाँ इस या उस राजनीतिक विचारके पूरा करने या इस और उस रायको पकड़ रखनेका सवाल नहीं है, बल्कि सवाल है विकासके आम झुकावको समझनेका । राष्ट्रीय सभाको तुरन्त सम्भव व्यावहारिक कदम उठाने चाहिये ।”

लेकिन राष्ट्रीय सभाने दूसरा ही कदम उठाया । उसने आस्ट्रियन आर्क्डशूक योहानको राइस्त्र (राज्य) का रीजेंट निर्वाचित किया, जिसका अर्थ था राजाओं-के हाथमें खेलना । फ्रांकफुर्ट संयुक्त जर्मनीकी राजधानी होनेका सपना देख रहा था, जहाँपर राष्ट्रीय सभा हो रही थी, लेकिन वर्लिनकी घटनायें उससे कहीं महत्त्व रखती थीं । जर्मनीके भीतर क्रान्तिका सबसे ल्तवरनाक शत्रु प्रशियन राज्य था । १८ मार्चको क्रान्तिने प्रशियन राज्यको उलट दिया, लेकिन उसका फल पहले

बूज्जंजीके हाथमें पढ़ा और बूज्जंजीने क्रान्तिके साथ तुरन्त विश्वासधात करना शुरू किया। जिन शक्तियोंको क्रान्तिने मुक्त कर दिया था, उनकी बाढ़को रोकना जल्दी था और उसके लिये सबसे अच्छा उपाय यही था कि उन्हें मीठी लोरियों सुनाकर चुला दिया जाय। काम्पहाउजेन हाजेमानके मत्रिमण्डलने संयुक्त-डीट (संसद) की बैठक बुलाकर उसे एक बूज्जंजी संविधान बनानेका काम सौंपनेका निश्चय किया। प्रशियाकी संयुक्त-डीट सामन्तोंसे भरी हुई थी। उससे किसी बूज्जंजी-संविधानकी भी आशा नहीं हो सकती थी। पर बूज्जंजीको छर लग रहा था, कि यदि कमकरोंको और आगे बढ़नेका मौका मिला, तो सामन्तोंके हितोंके साथ-साथ कहीं हमारे हितोंका भी सर्वनाश न हो जाय। संयुक्त-डीटने ६ और ८ अंग्रैलोंको दो कानून (विधान) पास किये, जिनके द्वारा नये, संविधानके आधार पर मिन्नमिन्न बूज्जंजी-अधिकार स्थापित किये गये और सार्वजनिक दुस और अप्रत्यक्ष मताधिकारके अनुसार निर्वाचित एक नई विधान-सभाके बनानेका निश्चय किया जिसका काम था मुकुट (राजा) की सम्मतिसे एक संविधान बनाना। राजा सामन्तोंके सामन्त राजाको अपनी जगहपर अनुग्रहण रहने दिया गया, और यह क्रान्तिके एक ही महीने बाद। १८ मार्चको प्रशियन गारदको हराकर वर्लिनके सर्वहारोंने जो विजय प्राप्त की थी, उसका फल इस प्रकार सर्वहार के हाथोंसे छीन लिया गया। संविधान-सभाकी बातको जब तक मुकुट न स्वीकार करे, तब तक वह कोई संविधान नहीं बना सकती थी। अब जब तक एक दूसरी क्रान्ति न हो जाये, कोई आशा नहीं थी और दूसरी क्रान्ति न होने देनेके लिये काम्पहाउजेन-हाजेमान मत्रिमण्डल हर तरहसे कोशिश कर रहा था। २२ मईको सभा बैठी। कहीं राजतन्त्रको हटाकर गणराज्य न कायम कर दिया जाय, इसलिये उसने नेताहीन क्रान्ति-विरोधियोंको इगलैंडसे बुला प्रशिया-राजकुमारोंको नेता प्रदान किया। प्रशियाका युवराज १८ मार्चकी क्रान्तिमें भागकर इंगलैण्ड चला गया था। लेकिन १४ जूनको फिर वर्लिनके जनसाधारणने ज्योग हाउज (उन्डेर डेन लिडेन सड़कपर अवस्थित सैनिक इमारत) को हमला करके ले लिया और मुकुटके प्रति इस प्रकार अपने विरोधी भावोंको प्रकट किया। इस पर काम्पहाउजेनने इस्तीफा दे दिया, लेकिन हाजेमान अब भी अपने पदसे चिपका

रहा। काम्पहाउजेन अपेक्षाकृत अधिक प्रगतिशील बूर्जवा-विचारधारा रखता था, जब कि हांजेमान बूर्जाजीके हितोंके लिए निर्लज्जतापूर्वक नंगा नाचनेके लिए तैयार था। वह इसके लिये राजा और युकरों (सामन्तों) की हर तरहकी खुशामद करके सभाके लोगोंको धूस-रिश्वत या जैसे भी हो अपने पक्षमें रखने तथा जनसाधारणको अधिक और अधिक उत्पीड़नके लिये तैयार था। “नोवे राहनिश जाइटुंग” ने इस भयंकर स्थितिको रोकनेकी बड़ी कोशिश की। उसने बतलाया कि काम्पहाउजेन बूर्जाजीके हितके लिये प्रतिक्रियाका बीज बो रहा रहा है, लेकिन इसका फायदा सामन्ती दल उठायेगा। उसने हांजेमान-मंत्रि-मण्डलके बड़े भुरे अन्तकी भविष्यद्वाणी भी की और बतलाया—“बिना सारी जनताको अस्थायी तौरसे अपना सहायक बनाये और कम या बेसी जनतान्त्रिक भावोंको स्वीकार किये बिना बूर्जाजी अपने प्रभुत्वको स्थापित नहीं कर सकती।” ... १८४८ ई०की बूर्जाजी (पूँजीपति वर्ग), निर्लज्जता और बेइज्जतीके साथ किसानोंके साथ विश्वासघात कर रही है, यद्यपि किसान उसके स्वाभाविक सह-योगी, उसके अपने मांस और खून हैं, और बिना किसानोंके समर्थनके वह सामन्त-वर्गके विश्वद कुछ भी करनेमें असमर्थ है।” मार्क्सने कहा कि १८४८ ई० की जर्मन-क्रान्ति १७८८ ई०की फ्रैंच-क्रान्तिकी भूठी नकल है।

जिस समय बर्लिनमें हांजेमेन-मंत्रिमण्डल इस प्रकार अपनी जड़ें खोद रहा था, उसी समय सभी बूर्जा वर्गों और पार्टियोंने मिलकर पेरिस की सड़कोंमें चार दिनकी भयंकर लड़ाइयोंके बाद वहाँके सर्वहारोंको हरा दिया।

जर्मनीमें जो घटनायें घट रही थीं, उनके बारेमें अपने पत्रमें लिखते हुए मार्क्सने बतलाया कि बूर्जाजी और सर्वहाराके बीच होनेवाले वर्ग-संघर्षमें जन-तन्त्रिताको किसका पक्ष लेना चाहिए—“वह हमसे पूछेंगे, कि क्या हमारे पास राष्ट्रीय गारद, चल-गारद, गणराजी गारद और लाइनकी पल्टनोंके उन शहीदोंके लिए आँसू, हाय या अफसोसके शब्द नहीं हैं, जिन्होंने कि जनताके क्रोधके सामने प्राण गँवाये। राज्यकी ओरसे उनकी विधायाओं और अनाथ बच्चोंका ध्यान रखा जायेगा। उनके यशोगानके लिए बड़ी भड़कीली धोषणायें धोषित-की जायेंगी, और उनके शरीरावशेषोंको बड़े संयत और नम्र जल्दी से द्वारा किन-

स्थानमें पहुँचाया जायगा । सरकारी प्रेस उन्हें आमर घोषित करेगा, और पूर्वसे-पश्चिम तकके युरोपीय प्रतिगामी उनकी प्रशंसा करते नहीं थकेंगे । लेकिन दूसरी ओर जनतान्त्रिक प्रेसका यह खास हक है, कि वह गरीबोंकी उन मुक्ती हुई गर्दनों-के ऊपर अपनी पूजाकी माला रखें, जो कि भूखसे पीड़ित हैं, सरकारी प्रेस जिनके प्रति धृणा प्रकट करता है, डाक्टर जिनकी सुध लेनेके लिये तैयार नहीं हैं; सभी इंजिनियर, नागरिक, जिनको चोर, बदमाश और कमीना कहकर गाली देते हैं, जिनकी छियाँ और बच्चे और मी अधिक कट्टमें ढाले जा रहे हैं और जिनके बच्चे हुये लोगोंमें से सबसे अच्छे व्यक्ति समुद्रपार निर्वासित हो चुके हैं ।

इस लेखके लिखनेके बाद पत्रके बच्चे-खुचे शोयर-होल्डरोंमें से भी कितने ही साथ छोड़कर भाग गये ।

हाजेमान-मंत्रिमंडलको सभी प्रतिगामियोंकी तरह कानून और व्यवस्थाका सबसे अधिक ख्याल था, क्योंकि सर्वहाराके शुस्सेसे उन्हें अपनी शैलियोंके लिए हमेशा भय लगा रहता था । कानून और व्यवस्था कायम रखनेके लिए 'आगब-कताकी शक्तियों' के विरुद्ध 'राज्यशक्ति' को मजबूत करनेकी जरूरत थी, जिसके लिये उन्हें पुराने प्रशियन सेना, पुलिस और नौकरशाहीके हाथमें खेलना चाही था । सर्वहारा द्वारा बुझें देकेनेके लिए मजबूत हुई प्रतिगामी शक्तियाँ अब फिर सिर उठानेकी तैयारी करने लगीं । बर्लिन सभा (एसेम्बली) को यह और मंत्रिमण्डल द्वारा बर्लिनके पास सेना जमा करनेकी बातें खतरेसे खाली नहीं मालूम हुईं । उसने साहसरूपक युद्ध-मंत्रीसे माँग की, कि वह सभी सैनिक अफ-सरोंको प्रतिक्रियावादी कार्रवाहियोंमें भाग न लेनेका जबर्दस्त आदेश दे, और जिन अफसरोंको यह मंजूर न हो, उन्हें इस्तीफा देनेके लिए कहो । मंत्रीके ऐसा करनेका भी वहाँ क्या प्रभाव होनेवाला था ? पुरानी और नई दो ही शक्तियाँ थीं, जीचकी बूज्जा नपुंसकता कुछ करनेमें असमर्थ थी । यदि जनताकी शक्तिये भय खाकर उसे दबाना है, तो प्रशियन सामन्तवादके हाथमें खेलना छोड़ और कुछ नहीं हो सकता था । परिणाम यही हुआ, कि हाजेमानके बूज्जा मंत्रिमंडलको बैइव्हती-के साथ इस्तीफा देना पड़ा और उसकी जगह जेनरल प्युथेलने एक शुद्ध नौकर-शाही मंत्रिमण्डल स्थापित किया । बर्लिनकी विधान-सभाकी भी वही गति हुई ।

३. कोलोन जनतांत्रिकता—सितम्बरमें बर्लिन और फ्रांकफुर्टमें जो कुछ हुआ, उसका जबर्दस्त प्रभाव कोलोनपर भी पड़ना जरूरी था। राइनलैंड मज़रूरों का गढ़ था। हाथमें रखने के लिये उसे पूर्वी प्रदेशों में भरती किये गये सैनिकों से भर दिया गया। एक तिहाई प्रशियन सेनाको राइनलैंड और वेस्टफालियामें रखा गया। ऐसी स्थितिमें छोटा-मोटा विद्रोह बेकार था। इस बक्स जरूरत थी सारी जनतांत्रिक शक्तियोंको संगठित और अच्छी तरह अनुशासनबद्ध करने की।

इससे पहले ही जूनमें फ्रांकफुर्टमें दृष्टि संगठनोंने एक कांग्रेस की, जिसमें जनतांत्रिक संगठनोंको मजबूत करनेका निश्चय किया। लेकिन, निश्चय के अनुसार सब जगह काम नहीं हो सका, केवल कोलोनमें ही उसकी मजबूत नींव पड़ी। शेष जर्मनीमें जहाँ-तहाँ छिपफुट काम होता रहा। कोलोनकी जनतांत्रिकताकी तीन बड़ी-बड़ी सभायें थीं, जिनमेंसे हरेकके हजारों मेम्बर थे : (१) जनतांत्रिक एसोसियेशन, जिसके नेता मार्क्स और एडवोकेट स्नाइडर थे, (२) कम्पकर एसोसियेशन, जिसके नेता मोल और शापर थे, और (३) मालिक नौकर एसोसियेशन, जिसका नेता तश्ण बैरिस्टर हेरमान बेकर था। जब फ्रांकफुर्टकी कांग्रेसने कोलोनको राइनलैंड और वेस्टफालियाका केन्द्र निश्चित किया, तो इन एसोसियेशनोंने अपनी एक संयुक्त केन्द्रीय कमेटी बनाई, जिसने राइनलैंड-वेस्टफालियाके सभी जनतांत्रिक एसोसियेशनोंकी कांग्रेस अगस्तके मध्यमें कोलोनमें बुलाई। इस कांग्रेसमें सत्रह एसोसियेशनोंके ४० प्रतिनिधि सम्मिलित हुये और उन्होंने कोलोनके तीन जनतांत्रिक एसोसियेशनोंकी संयुक्त केन्द्रीय कमेटियों को राइनलैंड-वेस्ट-फालियाकी प्रदेश-कमेटी मान लिया। इस संगठनके बौद्धिक नेता मार्क्स थे। उनमें नेतृत्वके शुण जितने लाँचे परिमाणमें मौजूद थे, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता था, लेकिन कुछ नीच-भावनावाले जनतांत्रिक नहीं चाहते थे, कि सारा नेतृत्व मार्क्सके हाथमें चला जाय।

१६. वर्षीय विद्यार्थी कार्ल शुर्जने पहली बार मार्क्सको कोलोन-कांग्रेसमें देखा था। पीछे उसने अपनी स्मृतिसे इस महापुरुषके बारेमें लिखा था : “उस समय मार्क्स तीस सालका था, और समाजवादी विचारधाराका नेता माना जा चुका था। उसका शरीर गठीला, ललाट प्रशस्त और आँखें काली तथा चमकीली थीं।

उसके कोयले जैसे काले बाल और धनी दाढ़ी तुरन्त लोगोंका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती थी। अपने क्षेत्रमें बहुत बड़े विद्वान् होनेकी उसकी प्रसिद्धि थी, और सचमुच वह जो कुछ कहता, वह तर्कसम्मत, बजनदार और स्पष्ट बात होती लेकिन अपने जीवनमें मैंने कभी ऐसे किसी आदमी को नहीं देखा, जिसका बर्ताव इस तरहका चोट पहुँचानेवाला तथा असह्य अभिमान का हो।” माकर्त्त के मुहसे “बूर्जा” शब्द ऐसे निकलते थे, जैसे कि वह धृणाके साथ उसपर थूक रहा हो। माकर्त्तको उनके पिताने भी “हृदयहीन” कहा था, लेकिन उस हृदयमें कितना स्लेह भरा था, इसे जाननेवाले लोगोंकी कमी नहीं थी। जब वह पूर्ण एकाग्रतासे किसी बड़े काममें लगे होते, उस समय अपने हृदयको बात-बातमें खोलकर दिखाते रहना अपने काममें वाधा पैदा करनेके सिवाय और कुछ नहीं हो सकता था। इसी तरह फजूलकी बातों और आदमियोंके लिये समय बरबाद करनेके बास्ते भी उनके पास समय नहीं था, जिसके कारण कितने ही जब-तब मिलनेवाले उन्हें रखे स्वभावका समझते थे। कोलोनके कुछ वर्षों बाद लफ्टनेट तेचोफने माकर्त्तसे वार्तालाप करनेके बाद लिखा था : “माकर्त्तकी सिर्फ़ अपनी साधारण बौद्धिक श्रेष्ठताने ही नहीं, बल्कि उसके काफी बड़े व्यक्तित्वने भी मुझ पर असर डाला। अगर उसका हृदय उतना ही बड़ा होता, जितना उसका दिमाग, उसका प्रेम उतना ही बड़ा होता, जितनी उसकी धृणा, तो मैं उसके साथ आग-पानी में कुदनेके लिये तैयार रहता। यद्यपि उसने कई बार मेरे जारेमें कुछ राय प्रकट की और अन्तमें बिल्कुल साफ-साफ कह भी दिया। किंतु, वह हमारे बीच पहला और अकेला व्यक्ति है, जिसमें महत्वहीन विवरणोंमें बिना अपनेको खोये किसी बड़ी परिस्थितिपर अधिकार प्राप्त करनेकी योग्यता है।”

१८४८ ई० में फूरियेका अमेरिकन शिष्य अलबर्ट ब्रिस्वेन “न्यूयार्क-टिव्यून” का संबाददाता बनकर कोलोन आया। उसके साथ पञ्च-प्रकाशक चार्ल्स डाना भी था। ब्रिस्वेनकी राय माकर्त्तके बारेमें दूसरी ही थी : “मैंने जन-आनंदोलनके नेता कार्ल माकर्त्तको देखा। उस बक्क उसका सितारा अभी-अभी ऊपर उठ रहा था। वह करीब तीस वर्षका आदमी था। शरीरसे हड्डा-कड्डा चेहरा अच्छा, और घने काले बाल। उसके चेहरेसे बड़ी शक्तिका पता लगता था और उसकी

नरमी तथा संजीदगीके पीछे साहसपूर्ण आत्माकी जव्हर्दस्त आग जलती दीख पड़ती थी ।”

राइनलैंडकी उस स्थितिमें कोई सशस्त्र कार्रवाई बेकार होती, इसलिये मार्क्सने वैसा करनेको रोका था । लेकिन, प्रशियन सरकार चाहती थी, कि लोग कुछ ऐसी बेवकूफी करें, जिससे खूनकी नदी बहानेका मौका मिले और वह इस प्रकार लोगोंके जोशको दबा दे । खूनी कार्रवाईका मौका न मिलनेपर अब उसने जनतांत्रिक प्रदेश-कमेटीके मेम्बरों और “नोये राइनिशे जाइटुंग” के सम्पादकोंके खिलाफ कानूनी और पुलिसकी कार्रवाई शुरू की । लेकिन, उसके लिये भी सबूत नहीं मिल सका । मार्क्सने अपने लोगों तथा राज्यको भी सावधान करते हुये लिखा था : इस समय कोई ऐसा बड़ा सचाल नहीं है, जो कि सारी जनताएँ को संघर्ष करनेके लिये मजबूर करे, इसलिये बलबेका कोई भी प्रयत्न असफल होगा । इस समय कोई विद्रोह करना व्यर्थसे भी बुरी त्रात होगी, क्योंकि आसन्न भविष्यमें हो सकता है, बड़ी घटनायें घटें । इसलिये जनतांत्रियों को चाहिये, कि युद्धके दिन आनेसे पहले अपनेको निहत्था न बनायें । मुकुट (राजा) अगर क्रांति-विरोधको संगठित करनेकी हिम्मत करेगा, तो जनताकी ओरसे एक नई क्रान्तिकी घड़ी आ मौजूद होगी ।”

सब-कुछ सावधानी रखने पर भी कुछ मामूली झगड़े हुये ही, जब कि २५ सितम्बरको वेकेर, मोल, शापर और विल्हेल्म बोल्फ गिरफ्तार किये गये । जब खबर उड़ी कि सेना एक सार्वजनिक सभा को भंग करनेके लिये आ रही है, तो लोगोंने सड़कोपर मोर्चे बाँध लिये । लेकिन, अभी प्रशियन सेनाको इतनी हिम्मत कहाँ थी ? जब लोगोंका जोश अधिक ठंडा हो गया, तो सैनिक कमान्डर-ने कोलोनमें मार्शल-ला घोषित कर दिया । उसने “नोये राइनिशे जाइटुंग” को बन्द करनेका हुक्म निकाला और २७ सितम्बरसे वह बन्द हो गया । पुण्येल-मंत्रिमंडलने कुछ दिनों बाद मार्शल ला उडा दिया, लेकिन “राइनिशे जाईटुंग” को इतनी जर्दस्त चोट लगी थी, कि वह १२ अक्टूबरसे ही फिर निकलनेमें समर्थ हुआ ।

पत्रके सम्पादकमंडलके बहुत से सदस्योंके ऊपर गिरफ्तारीके बारंट थे,

इसलिये उन्हें जेलमें बन्द होनेसे बचनेके लिये सीमा पार भाग जाना पड़ा : ढोके और एंगेल्स वेल्जियम चले गये और विलहेल्म बोल्फ पलाटिनेको । उन्हें वहाँसे लौटनेमें कुछ देर लगी । १८४८ की जनवरीके आरंभमें एंगेल्स अभी भी बैर्न (स्वीजलैंड) में थे । वह वेल्जियमसे फ़ास होते वहाँ पहुँचे थे, जिसमें बहुत सा रास्ता उन्होंने पैदल तै किया था । एक ओर पत्रके लिये आदमियोंकी कमी थी, दूसरी तरफ आर्थिक दशा भी खराब थी । शेयर-होल्डरोंके छोड़कर भाग जानेपर, पत्र अपने बढ़े हुये ग्राहकोंके बलपर जीता रहा, लेकिन मार्शल-लाके हमलेसे अब वह छूटने ही वाला था । इसी समय मार्क्सने पितासे दाय-भागमें मिली जो कुछ थोड़ी-बहुत सम्पत्ति थी, उसे उसमें लगा दिया । मार्क्सने इसके बारेमें कमी एक भी शब्द किसी से नहीं कहा, लेकिन बीबीके पत्रों और उनके मित्रोंने जो बातें बताई, उससे मालूम है, कि मार्क्सने सात हजार यालेर (७ हजार गिनियाँ या प्रायः १ लाख रुपया) पत्रको जीवित रखनेके लिये लगाया था । वहाँ पैसेके परिमाणका उतना महत्व नहीं है, जितना कि इस बातका कि मार्क्सने भंडेको ऊँचा रखने के लिये अपने सर्वस्वका त्याग किया ।

मार्क्सने प्रशियन नागरिकताको त्याग दिया था । इस बक्त वह कोलोनमें नागरिकताके अधिकारोंसे वंचित होकर रह रहे थे, जिसके कारण उन्हें आसानी-से बाहर निकल जानेका हुक्म दिया जा सकता था । इससे बचने को एक ही उपाय था, कि वह नागरिकताके अधिकारको फ़िरसे प्राप्त करते । अग्रैल १८४८ में मार्क्सने कोलोनकी नगर-परिषद्को इसके लिये अर्जी दी । जब मार्क्सने कहा, कि विना इसके मै अपने परिवारको दीरसे कोलोन नहीं ला सकता तो वहाँके पुलिस-अफसर मुलेने आशाके अनुरूप जवाब भी दिया । इसी बीच “नोये राइनिशे जाइदुङ्ग” फ़िर निकलने लगा था, और उसके लेखोंसे असंतुष्ट हो पुलिस प्रेसीडेट गेबरने अपने ३ अगस्तके पत्रमें सूचित किया : अभी कोई निश्चय नहीं किया जा सकता, मार्क्सको अपने लिये विदेशी समझना चाहिये । २२ अगस्तको घृह-मंत्रीके पास मार्क्सने अपील की, लेकिन उसने भी उसे खारिज कर दिया । भविष्य अनिश्चित था, लेकिन मार्क्सका अपनी पत्नी और

न्यूनोंके साथ असाधारण प्रेम था, इसलिये वह परिवारको कौलोन ले आये। 'परिवारकी संख्या भी अब काफी बढ़ गई थीं। पहली लड़की मई १८४४ में पैदा हुई थी, जिसका नाम माँके ऊपर जेनी रखा गया था। उसके बाद दूसरी लड़की लौरा सितम्बर १८४५ में पैदा हुई और उसके बाद एकमात्र पुत्र एडगर पैदा हुआ, जो भी माता-पिताको अधिक दिनों तक प्रसन्न रखनेके लिये नहीं आया था। प्रथम पेरिसके निवासके समयमें भी ही मार्क्सके परिवारमें हेलेन हेमुथ सम्प्रियता हो गई थी, जो कि आजीवन परिवारके सभी दुश्खाओं और कष्टोंमें साथ रही। मार्क्सके स्वभावमें नहीं था, कि वह हरेक नये परिचित को तुरन्त भाई या मित्र घोषित कर दें। लेकिन, अपने मित्रोंके 'साथ उनका सम्बन्ध बहुत स्थायी और दृढ़ होता था।

४. दो साथी

एंगेल्सको मार्क्सका न साथी कह सकते हैं, न मित्र ही। वह तो उनकी युगल आत्माके थे। निर्वासनके समय ही मार्क्सको दो और ऐसे साथियोंसे घनिष्ठता प्राप्त करनेका अवसर मिला, जिनकी मित्रता ब्रावर एकरस न रहते भी अन्त तक कायम रही।

(१) फर्डीनांड फ्राइलीग्रथ*

यह जर्मन कवि मार्क्ससे आठ वर्ष बड़ा था। ब्रुशेल्सके निर्वासनके दिनोंमें फ्राइलीग्रथका परिचय मार्क्ससे हुआ। परिचयके आरंभिक दिनोंमें मार्क्सने उसके बारेमें लिखा था : "भला आदमी है, अच्छा पट्टा, चर्तावर्में दिलचर्सप और सादा।" १८४८ ई० के राहनके संघर्षोंके समय यह परिचय घनिष्ठ मित्रतामें परिणत हो गया। एक पत्रमें मार्क्सने फ्राइलीग्रथके बारेमें वेडेमेयरको लिखा था : "वह वास्तविक क्रान्तिकारी और पूरी तौरसे ईमानदार आदमी है। इस तरहके प्रशंसाके शब्द मैं बहुत कम आदमियोंके लिये कह सकता हूँ।" साथ ही मार्क्सने वेडेमेयरको लिखा था : कविको ज़रा श्लाघा भी देनी चाहये, सभी कवियोंको इसकी आवश्यकता पड़ती है, तभी वह अपनी वटिया कृतियोंको प्रदान कर

* Freiligrath.

सकते हैं। मार्क्स उन आदमियोंमें नहीं थे, जो कि जरा भी गलतफहमीसे आदमीके गुण और कार्यक्षमताको भूल जाते हैं। उन्होंने एक समय कविको लिखा था : “मैं तुमसे साफ कहना चाहता हूँ, कि कुछ मामूली गलतफहमियोंके कारण मैं ऐसे एक मित्रको खोनेके लिये तैयार नहीं हूँ, जिसेकि सच्चे अर्थोंमें मित्र कहा जा सकता है।” एंगेल्सको छोड़कर फ्राइलीग्रथ जैसे मार्क्सका पक्का दोस्त सबसे जर्बदस्त कठिनाइयोंके समय कोई नहीं था। फ्राइलीग्रथ क्रान्तिकारी बना था अपनी नैसर्गिक सूख और कविकी भावनासे। वह वैज्ञानिक विचारों द्वारा क्रान्तिकारी नहीं बना था। वह मार्क्सको क्रान्तिका अग्रदूत और कम्युनिस्ट लीगको क्रान्तिकारी हरावल मानता था, लेकिन कम्युनिस्ट-धोषणापत्रमें जो ऐतिहासिक युक्तियाँ दी गई थीं, वह उसे कभी समझमे नहीं आई। वह इन बारीकियोंमें घुसकर माथापन्ची करनेके लिये तैयार नहीं था।

(२) फर्डिनैंड लाजेल*—लाजेल मार्क्ससे सात वर्ष छोटा था। वह एक तरुण बकीलके तौरपर पतिके बुरे बर्ताव और अपनी जातिके विश्वासघातसे बचनेके लिये कौटेस (ठाकरानी) हॉटेलकी दर्दनाक स्थितिको देखकर दिलो-जानसे जुट गया। इस मुकद्दमेमें उसने इतनी योग्यताका परिचय दिया, कि वह एक प्रसिद्ध बकील बन गया। फर्वैरी १८४८ में उसको इसलिये गिरिफ्तार किया गया, कि उसने कौटेसकी एक डीड-बक्स (दस्तावेजकी पेटी) को चुरानेकी प्रेरणा दी थी। लेकिन, ११ अगस्तको कोलोनकी जूरीने उसे इस अपराधसे मुक्त करके छोड़ दिया। इस समय भी तरुण लाजेल ने अपनी अनुपम तर्क-शक्तिका परिचय दिया था। इसके बाद वह क्रान्तिकारी संघर्षोंमें अपना अधिक और अधिक समय देने लगा। इसी समय वह मार्क्सके प्रभावमें आया। मार्क्सकी तरह लाजेल ने भी हेगेलीय दार्शनिक विचारधाराका अच्छी तरह अध्ययन किया था। अपनी पेरिसकी एक यात्रामें उसे फ्रैंच-समाजवादसे परिचय प्राप्त करनेका मौका मिला। मार्क्सकी तरह लाजेल भी यहूदी सन्तान था। उसके माता-पिता धर्मसे यहूदी होनेके कारण उसके मनमें स्वतंत्र विचारोंके अकुरित

* Ferdinand Lassalle.

होनेमें बाधा उपस्थित करते रहते थे। लाज़ेलमें फ्राइलीग्रथ जैसी सादगी और विनम्रता नहीं थी। सात वर्ष बाद मार्क्सने उसके बारेमें कहा था : लाज़ेल अपनेको विश्वविजयी समझता है, क्योंकि उसने एक वैयक्तिक जंजालमें निष्ठुरतापूर्वक सफलता प्राप्त की थी। मानो इस तरहके महत्वहीन काममें अपने जीवनके दस सालोंकी बलि दे देना आदमीमें वास्तविक नैतिकबल पैदा कर सकता है। कई शताब्दियों बाद एंगेल्सने कहा था, कि लाज़ेलके प्रति मार्क्सके मनमें सदा विरोधी भावना बनी रही। मार्क्सकी इस भावनामें एंगेल्स और फ्राइलीग्रथ भी शामिल थे। लेकिन यह सब होते हुये भी मार्क्स लाज़ेलके गुणों और योग्यताके महत्वको कम नहीं करते थे।

१२ अक्टूबर (१८४८ ई०) में जब “नोये राइनिशे ज्ञाइटुंग” फिर निकलने लगा, तो उसके सम्पादकमंडलमें फ्राइलीग्रथ भी शामिल हो गये। ६ अक्टूबर को बीनामें फिर क्रान्ति हो गई। मार्क्स स्वयं २८ अगस्तसे ७ सितम्बर तक लोगोंमें प्रचार करनेके लिये बीना जा कर रहे थे, जिसमें उन्हें उतनी सफलता नहीं मिली थी, क्योंकि अभी ऐतिहासिक भौतिकवादकी सच्चाइयों तक पहुँचना बीनाके कमकरोंके बससे बाहरकी बात थी। हुंगरीकी क्रान्तिको दबानेके लिये जब बीनासे सेनायें भेजीजाने लगीं, तो कमकरोंने अपनी क्रान्तिकारी नैसर्गिक दुष्क्रिये कारण उसका विरोध किया। इसके लिये सेनाकी गोलियाँ हुंगरीके सामन्तोंके खिलाफ खर्च होनेकी जगह कमकरोंपर पड़ीं। लेकिन, हुंगरीके सामन्त इसके लिये क्यों कृतश्च होने लगे ? क्रान्ति-विरोधियोंने बीनाको चारों ओर से घेर लिया। अक्टूबरके अंतमें बर्लिनमें जनतांत्रिक कांग्रेस हुई। उसने बीनाके कमकरोंके पक्षमें एक अपील निकाली, जो आँसू बहाने और उपदेश देनेसे बढ़-कर कुछ नहीं थीं। लेकिन, बीनाके घिरे हुये कमकरोंके पक्षमें एक जबर्दस्त लेख मार्क्सने गद्यमें और फ्राइलीग्रथने बड़े सुन्दर और शक्तिशाली पद्यमें निकाल-कर बतलाया, कि बीनाके कमकरोंकी सच्ची सहायताका केवल एक ही उपाय है, और वह है जर्मनीके क्रान्ति-विरोधियोंका खातमा करना। बीनाकी क्रान्ति केवल कमकरोंके बलपर सफल नहीं हो सकती थी। यद्यपि कमकरोंने, विद्यार्थियों और निम्न मध्यमवर्गके एक भागको साथ करके बड़ी बीरताके साथ लड़ाई लड़ी,

किन्तु बूज्जींबी और किसान उनके साथ घोखा देनेके लिये तैयार थे । इस प्रकार ३१ अक्टूबरकी शामको सेना नगरमें बुसनेमें सफल हुई, और १ नवम्बर को सेट डिफन गिर्बाके मीनार-पर क्रान्ति-विरोधियोंका काला-पीला झंडा फहराने लगा ।

युरोपके एक भागमें सफल हुये क्रांति-विरोधियोंका प्रभाव दूसरी जगह पड़ना जरूरी था । बर्लिनमें फ्रूयेलका नौकरशाही मंत्रिमंडल दूटा और उसकी जगह शुद्ध सामन्तशाही ब्रांडेनबर्ग-मंत्रिमंडल आया, जिसने बर्लिन-एसेम्बलीको ब्रांडेन-बर्गके कस्तेमें जाने और जेनरल रेंगलको गारदकी सेनाओंके साथ बर्लिनपर कूच करनेका हुक्म दिया । हो हेनजोलर्न वंशका अवैव पुत्र ब्रांडेनबर्ग अभिमान में फूला नहीं समाता था और समझता था, कि मैं वह हाथी हूँ, जो कि क्रान्तिको अपने पैरोंतले रौदकर चूर्ण-चूर्ण कर सकता है । “नोये राइनिशे जाइटुंग” ने इस पर कहा था : “दोनों आदमी ‘ब्रांडेनबर्ग और रेंगल’ बिना चिर, बिना हृदय और बिना सिद्धान्तके हैं । वह भड़कीली मूँछोंके उचाव और दुष्ट नहीं हैं ।”

प्रशियन सामन्तवादने अब क्रान्तिकारी शक्तियोंको पूरी तौरसे दबानेका निश्चय कर लिया । उसने नागरिकोंके गारदको खत्म कर, मार्शल-ला घोषित कर दिया । बर्लिनमें जिस बक्त इस तरह तानाशाही नंगा नाच कर रही थी, उस समम “नोये राइनिशे जाइटुंग” का मुँह खुला था । उसने घोषित किया : “वह घड़ी आ गई है, जबकि प्रति-क्रान्तिको द्वितीय क्रान्तिसे मुकाबिला करना होगा । जनताको चाहिये, कि सरकारकी हिसाका विरोध हर तरहसे संभव हिसात्मक तरीकोसे करे । निष्क्रिय-प्रतिरोध को अपने आधारके तौरपर सक्रिय-प्रति-रोधकी आवश्यकता है, नहीं तो वह कसाईके सामने भेड़के संघर्षकी तरह छिल्कुल बेकार साचित होगा : प्रशियन-मुकुट पूरी तौरसे अपने अधिकारके भीतर है, जबकि वह अपनी परमप्रभुत्वको एसेम्बली (विधान-सभा) के ऊपर इस्तेमाल करता है, और एसेम्बली गलत रास्तेपर है, क्योंकि वह नुकुटके प्रति एक परम-प्रभुत्व सम्बन्ध एसेम्बलीके तौरपर काम नहीं करती ।... पुरानी नौकरशाही बूज्जींबीका सेवक बननेकी इच्छा नहीं रखती, क्योंकि अब तक वह बूज्जींबीके लिये निरंकुश स्कूल-मास्टर रही है । तानन्ती-दल बूज्जींबीकी बेदी-पर अपने हितों

और विशेषाधिकारोंकी बलि चढ़ाना नहीं चाहता। और अन्ततः मुकुट (राजा) अपने वास्तविक और जनजात सामाजिक आधारको पुराने सामन्ती समाजके तत्वोंमें पाता है, जिस समाजका कि सर्वोच्च रूप मुकुट (राजा) के रूपमें मौजूद है। साथ ही वह बूज्जाजीको एक विदेशी और कृत्रिम आधार समझता है, जो कि स्वयं जीर्ण-शीर्ण होनेपर ही मुकुटको बदाश्त कर सकती है”।

(३) मार्क्सपर मुकदमा—बर्लिन-एसेम्बलीने सामन्तोंके स्वेच्छाचारका जवाब टैक्स उगाहनेके अधिकारसे सरकारको वंचित करके दिया। उस समय कौलोनमें जनतान्त्रिक प्रदेश-कमेटीने मार्क्स, शापर और स्लाइडरके हस्ताक्षर द्वारा १८ नवम्बरको एक अपील निकालकर माँग की, कि राइनलैंडके जनतान्त्रिक एसोसियेशनोंको तुरन्त निम्न कामोंको हाथमें लेना चाहिये : अधिकारी अगर यत्पूर्वक पर उगाहनेका कोई प्रयत्न करें, तो सभी संभव उपायसे उसका मुकाबिला करना चाहिये, दुश्मनसे मुकाबिला करनेके लिये सब जगह तुरन्त नागरिक गारद संगठित किये जाने चाहिये। म्युनिसिपेलिटीके कोष और चन्दोंके वैसोंसे हथिपार और गोला-बारूद खरीद उसे गरीबोंमें वाँट देना चाहिये। यदि सरकार एसेम्बलीके निर्णयोंको माननेसे इन्कार करे, तो सब जगह सार्वजनिक शुरूका कमेटियाँ निर्वाचितकी जायें, जहाँ संभव हो, यह काम म्युनिसिपेलिटीकी सम्मतिसे किया जाय। जो म्युनिसिपेलिटियाँ एसेम्बलीका विरोध करे, उन्हें सार्वजनिक वोटोंसे पुनः निर्वाचित किया जाये। राइनलैंडके जनतान्त्रिक एसोसियेशनने जो काम किया, यदि वह काम बर्लिन एसेम्बलीने किया होता, तो सभी सामन्तशाहीके होशा उड़ गये होते, लेकिन, बर्लिन-एसेम्बलीके बच्चन बहादुरोंमें इतनी हिम्मत कहाँ थी ? उन्हें अपनी सम्पत्तिका डर लगने लगा, और वह भाग-भागकर अपने देंतोंमें जा एसेम्बलीके निर्णयको काममें न लानेके लिये प्रयत्न करने लगे। उनकी इस निर्वलताको देखकर सरकारको हिम्मत हुई, और उनने ५ दिसम्बरको एसेम्बली तोड़ एक नये मताधिकारको लोगोंपर लादा।

इस प्रकार बर्लिन-एसेम्बलीके विश्वासघातके कारण राजधानीसे निश्चन्त ही अब सरकारका ध्यान राइनलैंडकी ओर गया। वहाँ उसने भारी संख्यामें सिनायें भेजीं। २२ नवम्बरको लाजेल हुजेलडोर्फमें गिरफ्तार हुआ—लाजेलने

कोलोनकी अपीलका स्वागत किया था, लेकिन कोलोनमें गिरफ्तार करनेकी हिम्मत नहीं हुई। सरकारी बकीलने अभियोग चलाया। द फरवरीको अपीलपर हस्ताक्षर करनेवाले कोलोनकी जूरीके सामने पेश हुये। उनपर सरकारके विरुद्ध, और राजाकी सेनाके विरुद्ध सशब्द प्रतिरोध करनेका इल्जाम लगाया गया। मार्क्सने एक जवर्दस्त भाषण द्वारा सरकारी बकीलके बयानके चिथड़े-चिथड़े उड़ा दिये : जिन्होने सफलतापूर्वक क्रान्ति की थी, उनके लिये यही युक्ति-युक्त था, कि वह अपने विरोधियोंको फॉसीपर चढ़ा देते, न कि उन्हें अपने ऊपर जब बनाकर बैठाते। तुम अपने पराजित शत्रुओंसे इस तरह पिंड छुड़ा सकते हो, लेकिन उनपर अपराधीके तौरपर मुकदमा नहीं चला सकते। ऐसेम्बलीने ठीक किया या मुकुट (राजा) ने यह एक ऐतिहासिक प्रश्न है, जिसका फैसला केवल इतिहास ही दे सकता है जूरी नहीं। मार्क्सने साथ ही द अप्रैलियनके कानूनोंको माननेसे इन्कार करते हुये बतलाया, कि मुकुटको—जिसने कि मार्चके संघर्षमें अपनी पराजय स्वीकार की थी—बचानेके लिये जिस संयुक्त ढाँचे उन्हें गढ़ा था, वह आधुनिक वृज्ञी-समाजका प्रति निधित्व करनेवाली समा थी। सामन्तवादी सभाके कानूनोंद्वारा उसका निर्णय नहीं किया जा सकता। यह सिद्धान्त नहीं निरीध कानूनी गप है, कि समाज कानूनपर आधारित है। इसके विरुद्ध वस्तुतः कानून समाजके ऊपर आधारित है : मेरे हाथमे कोड नेपोलियन (नेपोलियन विधान संहिता) है। यह वृज्ञी-समाजको नहीं उत्पन्न करती, बल्कि इसके विरुद्ध इसे वृज्ञी-समाजने पैदा किया है, जिसने कि अठारह शताब्दीमें विकसित होते इस कोड (विधान-संहिता) के रूपमें अपना कानूनी स्वरूप प्रकट किया; इसके सिवाय यह और कुछ नहीं है। जैसे ही यह कोड सामाजिक सम्बन्धोंके साथ प्रकट करनेमें असफल हुई, वैसे ही वह एक रद्दीके डुकड़ेसे अधिक हैसियत नहीं रखेगी। तुम पुराने कानूनोंको पुराने समाजका आधार डसी तरह नहीं बना सकते, जैसे कि पुराने कानूनोंको पुराने समाजका बनाया जा सकता है।”

वर्लिन-ऐसेम्बलीने गैर-कानूनी तौरसे कोई काम नहीं किया, अगर उसने करोंके उगाहनेसे इन्कार कर दिया, यह बतलाते हुये मार्क्सने कहा : “अगर

करोंका उगाहना गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया, तो वह मेरा कर्तव्य हो जाता है, कि इस गैर-कानूनी कार्रवाईको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये जो भी प्रयत्न किया जाय, उसका विरोध करूँ, जरुरत पड़नेपर बलपूर्वक भी।” यद्यपि जिन लोगोंने टैक्स अदा करनेसे इन्कार करनेकी घोषणा की, उन्होंने अपने चमड़ेको बचानेके लिये क्रान्तिकारी पथ ग्रहण करनेसे इन्कार कर दिया, लेकिन जनसाधारण इस भीषणाको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये मजबूर है। एसेम्बलीका वर्ताव जनताके लिये निर्णायक नहीं है: “एसेम्बलीका अपना कोई निजी अधिकार नहीं है, जनताने सिर्फ अपने अधिकारों की प्रतिरक्षाका कार्य एसेम्बलीको सौंपा था। जब एसेम्बली इस कार्यको पूरा करनेमें असफल हुई, तो उसके अधिकार खत्म हो गये और तब जनता अपने निजी अधिकारोंसे सीधी कार्रवाई करनेके लिये अखाड़ेमें उतरी। अगर सुकूट (राजा) प्रतिक्रान्ति संगठित करता है, तो नई क्रान्ति द्वारा उसका जवाब देना जनताको उचित है। मार्क्सने अपने भाषणको समाप्त करते हुये बतलाया, कि अभी नाटकका पहला ही अंक खेला गया है, अन्तिम अंक इसका था तो होगा प्रति-क्रान्तिकी पूर्ण विजय, या और नई विजयी क्रांति, यद्यपि विजयी क्रांति प्रति-क्रान्तिकी पूरी विजय हो लेनेके बाद ही शायद समझ होगी। निर्भीक क्रान्तिकारी भाषणको सुननेके बाद जूरीने सभी अपराधियोंको मुक्त कर दिया और जूरीके मुखियाने मार्क्सको शिक्षादायक भाषणके लिये धन्यवाद दिया।

५. प्रति-क्रान्ति

बीना और बॉलिनमें प्रति-क्रान्तिकी विजयने फैसला कर दिया, कि जर्मनीमें क्रान्तिने जो भी सफलतायें प्राप्त की थीं, वह हाथसे जाती रहेगी। उसके चिन्ह-स्वरूप अब फ्रांकफुर्ट एसेम्बली—सारी जर्मनीकी संयुक्त पार्लामेन्ट—बच रही थी, लेकिन, उसका राजनीतिक महत्व कबका खत्म हो गया था और अब वह कागजी-संविधानके बहस-मुद्दाहिसेमें पड़ी हुई थी। उसका अन्त वह था तो प्रशियाकी संगीनोंसे होनेवाला था, या आस्ट्रियाकी।

इंगलैंडमें चार्ट्स-आन्दोलन अब शक्तिशाली नहीं रह गया, इसलिये

वहाँकी बुज्ज्वा-सरकार कहीं भी अपने धातक शब्दों—मजदूरोंके विद्रोहको दबाने के लिये मुक्त थी। जून (१८४८ ई०) के सबौंमें फ्रैंच-मजदूरोंको इतनी चोटें लगी थीं, कि वह अभी किसी नये विद्रोह करनेके योग्य नहीं थे। प्रतिक्रान्तिने पेरिससे अब क्रान्तिके दूसरे स्थानोपर धावा बोलना शुरू किया था। वहाँसे वह फ्राक्फुर्ट, बीना होते बर्लिन पहुँची। यूरोपकी क्रान्तिकी लहरोंके दबनेकी सूचनाके रूपमें १० दिसम्बर (१८४८ ई०) को फ्रैंच गणराज्यका राष्ट्रपति नकली-बोनापार्ट निर्वासित किया गया। केवल हुगरीमें अभी भी क्रान्ति-की ज्येंति जग रही थी। एगेल्स इसी बीच कोलोन लौट आये थे। जर्मन राइख (राज्य) की घोषणाओंने प्रेसका गला घोट दिया था, इसलिए “नोये राइनिश जाइदुङ्ग” का पथ कंटकाकीर्ण हो गया था। सर्वर्षके समयमें भी इस पत्रने जर्मन कमकरोंकी कार्रवाइयोंको विस्तारपूर्वक नहीं छापा था, लेकिन उसका यह अर्थ नहीं कि उसका भाग उसमें नगएय था। उसने सारे जर्मनीमें अपना हाथ फैलाया था, जिसमें पूर्वके एलबियन युंकरोंकी भूमि भी सम्मिलित थी—जहाँ सामन्तवाद नंगा नाचता आया था। मजदूरोंकी अपनी कॉम्प्रेसे, अपने सगठन, अपने अखबार थे, स्टिफन बोर्न जैसा योग्य नेता उनके पास था, जो पेरिस और ब्रुशेल्सके मार्क्स और एगेल्स साथ मित्रताका भाव रखता था और बर्लिन तथा लाइप्जिंगसे “नोये राइनिश जाइदुङ्ग” में लेख लिखा करता था। बोर्न कम्युनिस्ट घोषणापत्रको अच्छी तरह समझता था, लेकिन जर्मनीके अधिकाश भागके वर्ग-चेतनामें पिछड़े हुये सर्वहारोंके ऊपर घोषणापत्रके प्रोग्राम और सिद्धान्तों-का लागू करना उसके बसकी बात नहीं थी।

१८४८ ई०के बसन्तमें मार्क्स और एगेल्सने कमकर-आन्दोलनकी दिशामें पहला कदम उठाया था। “नोये राइनिश जाइदुङ्ग” पहले कमकरोंके आन्दोलन और कार्रवाइयोंके बारेमें जो अधिक ध्यान नहीं देता था, इसका कारण यही था, कि उनका कोलोन-कमकर-एसोसियेशनके नामसे अपना एक संगठन था, जिसकी ओरसे वह अपना अर्ध-सासाहिक पत्र मोल और शापरके सम्पादकत्वमें निकालते थे। इसके अतिरिक्त यह भी बात थी, कि “नोये राइनिश जाइदुङ्ग” जनतान्त्रिकताका मुख्यपत्र था, इसलिए वह सामन्तवाद और निरकुशताके विश्व

सर्वहारा तथा बूज्जीजीके सम्मिलित हितोंकी वकालत करता था, जो उस समय जरूरी भी था। क्रान्तिके विफल और प्रति-क्रान्तिके सफल होनेपर जनतान्त्रिकता-का बूज्जीजी अंग बहुत भयभीत हो, जल्दी ही युद्धजैवसे भाग गया। जब जन-तान्त्रिक सङ्घठन अब निराशावाद और समझौतावादी नीतिका अनुसरण कर रहा था, वहाँ रहना बेकार था। इसलिये मार्क्स, विलहेल्म बोल्फ, शापर और हेरमान वेकेरने जनतान्त्रिक प्रदेश-कमेटीसे १५८ मईको इस्तीफा दे दिया। इसी समय कोलोन-कमकर-एसोसियेशनने भी रेनिश जनतान्त्रिक सङ्घठनोंके एसो-सियेशनोंसे अपना नाम हटा लिया और सभी मजूरवर्गीय और दूसरे सङ्घठनोंको निमन्त्रित किया, कि समाजवादी जनतान्त्रिकताके सिद्धान्तोंकी रक्षा करनेवाले मजूरवर्गीय और दूसरे सङ्घठनोंके प्रतिनिधियोंको ६ मई (१८४८ ई०) को, होनेवाली प्रादेशिक कांग्रेसमें भेजें। २० मार्चसे “नोये राइनिश ज्ञाइडुङ्ग” ने सिलेसियाके करोड़पतियोंके विरुद्ध विलहेल्म बोल्फके लेख छापने शुरू किये, जिनसे दीहाती सर्वहारोंके भीतर बड़ी सनसनी फैली। ५ अप्रैलसे पत्रने ब्रुशेल्समें मार्क्सके दिये हुये माष्ट्रम—मजूर-श्रम और पूँजी—को छापना शुरू किया। मार्क्सने १८४८ ई०के जबर्दस्त जन-संघर्षका हवाला देते हुए बतलाय, कि चाहे प्रत्येक क्रान्तिकारी विद्रोह फैला हो, चाहे वर्ग-संघर्षसे उसका उद्देश्य कितना ही अलग हो, किन्तु मजूर वर्ग विजयी होगा। अखवारने आर्थिक सम्बन्धोंकी समस्यापर रोशनी डालते हुये कहा, कि बूज्जीजी और कमकरोंकी दासता इन्हीं आर्थिक सम्बन्धोंपर आधारित है।

आन्दोलनको ठंडा पड़ते देख कायर सरकारोंकी हिम्मत और बढ़ जाती है। उसीके अनुसार अब जर्मन-सरकारने भी कदम उठाया और “नोये राइनिश ज्ञाइडुङ्ग” का गला धोटेका निश्चय किया। वह राइनलैंडमें मार्शल-ला भी धोषित करना चाहती थी, लेकिन वहाँकी फौजके कमाएडेन्टकी हिम्मत टूट गई और उसने मार्शल-ला (फौजी-कानून) धोषित करनेकी जगह “खतरनाक आदमी” कहकर पुलिस द्वारा मार्क्सको निर्वासित करनेका निश्चय किया। लेकिन पुलिस भी ऐसा करनेसे घबराती थी। उसने इसके बारेमें प्रादेशिक गवर्नरसे पूछा, जिसने एह-मन्नी मन्टोफेलसेके पास लिखा। १० मार्चको प्रादेशिक

सरकारने बर्लिनको सूचित किया कि मार्क्स और भी कोलोनमें हैं, यद्यपि विदेशी होनेके कारण पुलिसकी आशा न होनेसे उसे वहाँ रहनेका अधिकार नहीं है। यहाँ रहते बल्कि अपने अखबार द्वारा वह अपनी उम्र कार्रवाइयोंको भी जारी रखे हुए हैं, वह लोगोंको वर्तमान संविधानके विशद् भड़काता, एक सामाजिक गणराज्य स्थापित करनेका प्रचार करता है, और मानवता जिन बातोंकी इज्जत करती, जिनके प्रति प्रेम दिखलाती है, उनका वह उपहास करता है। पत्रकी ग्राहक-संख्या भी बढ़ती जा रही है। पुलिसकी रिपोर्टको पाकर गृह-मत्रीने राइन प्रदेशके प्रेसीडेन्ट आइज़मानसे राय पूछी। २६ मार्चको (१८४८ ई०) आइज़मानने बतलाया, कि मार्क्सका निर्वासन उचित है, लेकिन ऐसा करनेमें तभ तक कठिनाई है, जब तक कि वह और अपराधोंके लिये जिम्मेवार नहीं हो जाता। ७ अप्रैलके अपने आदेश-पत्रमें मन्डोफेलने प्रादेशिक सरकारको सूचित किया, कि मैं निर्वासनके विशद् नहीं हूँ, लेकिन किस समय और कैसी परिस्थिति-में इसे करना चाहिये, यह प्रादेशिक सरकारके जिम्मे है। मेरी रायमें निर्वासन का आदेश उसी समय निकालना चाहिये, जब कि किसी खास अपराधसे उसका सम्बन्ध जोड़ा जा सके।

लेकिन कोई खास अपराध न पा मार्क्स द्वारा सम्पादित पत्रकी “खतरनाक रुफान” के कारण ही मार्क्सको निर्वासनका आदेश ११ मईको दिया गया। २६ मार्च और ७ अप्रैल तक अभी प्रशियन सरकारको ऐसा कदम उठानेकी हिम्मत नहीं थी, लेकिन मईके मध्यमें पहुँचते-पहुँचते वह अपनेको काफ़ी मज-बूत समझती थी। इस निर्वासनके तुरन्त ही बाद कवि फ्राइलिग्रथने निम्न पंक्तियाँ लिखी थीं :

“ईमानदारीके युद्धमें एक यह ईमानदार प्रहार नहीं,
बल्कि ईर्ष्या और धोखेकी चाल है,
मुझे गिराया शुप्त कलंकने,
कमीने पाश्चात्य कलमकके ।”

अध्याय १०

लन्दनमें निर्वासित जीवन (१८४६ ई०)

सचमुच ही प्रशियन सरकारकी कायरता और भी नंगी दीखने लगती है, जब हम यह जानते हैं कि आदेश-पत्र उस समय निकाला गया, जब कि मार्क्स कोलोनमें मौजूद नहीं थे। “नोये राइनिश ज़ाइटुङ्ग” के ग्राहकों और अनु-ग्राहकोंकी संख्या यद्यपि बढ़ती जा रही थी, इस बक्त उसके छुः हजार ग्राहक थे, कि उस शताब्दीके जर्मन पत्रोंके लिए कम नहीं समझी जाती थी, लेकिन आर्थिक-कठिनाइयाँ उसकी कम नहीं हुई थीं। १८४६ ई० में हाम नगरके दो पूँजीपतियोंने एक कम्युनिस्ट प्रकाशन-गृह स्थापित करनेके लिये पैसा देना चाहा था। उनमेंसे एक रेफेलसे उसी सिलसिलेमें बात करनेके लिए मार्क्स हाम गये हुये थे। रेफेलने अपनी थैली न खोली किसी दूसरे आदमी भूतपूर्व लफटे-नेन्ट हैंडेका नाम बतलाया, जिसने मार्क्सकी वैयक्तिक जिम्मेवारी पर तीन सौ थालर कर्जके रूपमें दिये। हेज़ पीछे पुलिसका शुतंचर साक्षित हुआ, लेकिन उस समय पुलिस उसपर मुकदमा चला रही थी। उसके साथ मार्क्स जब कोलोन पहुँचे, तो निर्वासनका हुक्मनामा वहाँ मौजूद मिला। अब “नोये राइनिश ज़ाइटुङ्ग” के लिए कुछ नहीं किया जा सकता था। उसके दूसरे सम्पादकोंमेंसे भी बहुतसे मार्क्सकी तरह ही प्रशियन कानूनकी दृष्टिमें “विदेशी” थे, और जो वच रहे थे उनपर मुकदमा चलाया जा रहा था। १६ मईको पत्रका अन्तिम अंक निकला, जिसमें विदाईका सन्देश देते हुये मार्क्सने सरकारके ऊपर जवादस्त प्रहार किये : “अपने मूर्खतापूर्ण भूतों, अपने बनावटी वाक्योंके फेरमें क्यों पढ़ते हो ! हम स्वयं निष्ठुर हैं। हम तुमसे दयाकी भिन्ना नहीं माँगते। जब हमारी त्रारी आयेगी, तो हम। अपने आतंकवादको काममें लानेमें जरा भी नहीं हिचकिचायेंगे, लेकिन राजसी आतंकवादी, भगवान्की दया और कानूनके अधिकारयाले आतंकवादी व्यवहारतः पशु, धृणित और कमीने हें, सिद्धान्त

में चार और 'मनस्यन्यद् वच्चस्यन्यद्वाले हैं । व्यवहार और सिद्धान्त दोनोंमें उन्हें इज्जत-प्रतिष्ठा क्लू नहीं गई है ।' पत्रने चलते-चलते कमकरोंको सावधान किया, कि इस समय कोई भी सशब्द कार्रवाई करना वेकार ही नहीं खतरनाक और मूर्खतापूर्ण भी होगी । लेखके समाप्तमें हुआ था : "कमकर-वर्गकी मुक्ति" के साथ ।

मार्क्स केवल सिद्धान्तवादी और जवर्दस्त व्यवहारिक क्रातिकारी ही नहीं थे, बल्कि उनका हृदय उन्न्य आदर्शवाद और त्यागसे मरा हुआ था । समय-समय पर उनके रूपे ब्रतांशोंसे उनके पिताके शब्दों "हृदयहीनके शब्द हृदयहीन" को दूसरे भी दोहरा सकते थे, लेकिन उस असाधारण पुरुषके हृदयमें असाधारण उदार और त्याग का भाव मरा हुआ था । यदि उस महापुरुषके केवल ऐसे ही जीवनके पहलुओंको लिया जाय, तो वह पुराणो और जातकोंके किसी भी सर्वत्व-त्यागी पुरुषसे पीछे नहीं दिखलाई पड़ते । लेकिन केवल स्वार्थत्याग और वात्स-दानसे एक ठोस आर्थिक ढाँचेको हटाकर उसकी जगह सर्व कल्याणकारी नया ढाँचा नहीं कायम किया जा सकता, हजारों वर्षोंसे चले आते शोषण और उत्पीड़नको हटाकर सुक्त मानवके चुख्ती और समृद्ध समाजको स्थापित नहीं किया जा सकता । उसके लिये जिस चीज की आवश्यकता मानवताको थी, वह था उनका सिद्धान्त और व्यवहारका परम ज्ञान । जब तक दुनियामें वर्गहीन समाज स्थापित नहीं हो जाता, तब तक मार्क्सके जीवनके इन्हीं दोनों पहलुओं की ओर सबसे अधिक ध्यान देनेकी आवश्यकता है ।

"नोये राइनिशे ज्ञाइड़ज़" अब अस्त होने जा रहा था, लेकिन मार्क्स पत्रको अपनी वैयक्तिक जिम्मेवारी समझते थे, इसलिये उसके प्रति अपने दूसरे कर्त्तव्योंको भी पालन करना उन्हें आवश्यक जान पड़ा । तीन सौ थालर हैजैसे थे, पन्द्रह सौ थालर ग्राहकोंसे मिले थे । प्रेस, दूसरी चीजों तथा इन पैसोंसे मार्क्सने मुद्रकों, कागजके व्यापारियों, कलाकारों, सम्पादकों, सवाददाताओं—सबका पैसा-पैसा चुकाया । मार्क्सने अपनी बीबीके चाँदीके वर्तनोंको ही केवल अपने पास रखदा, बाकी सबको बैंचकर एक-एक पैसा बेत्राक किया । जेनीके इन चाँदीके वर्तनों को फ्राकफुर्टमें बन्धक रखनेवालोंके हाथमें दे, कुछ सौ गिल्डर मिले । यही अब मार्क्स-परिवारका एकमात्र अवलम्ब रह गया ।

१. विदा जन्मभूमि !

फ्रांकफुर्टसे मार्क्स एंगेल्सके साथ बांदेन और प्लाटिनाटमें हुये विद्रोहके स्थानोंको देखने गये। पहले वह काल्सर्लहे पहुँचे फिर काइजरस्लाउटर्ने, जहाँ क्रान्तिकारियोंकी अस्थायी सरकारके प्राण डा० ईस्टरसे मिले। डा० ईस्टरने मार्क्सको पेरिसमें होनेवाली राष्ट्रीय एसेम्बलीमें जर्मन क्रान्तिकारी पार्टीका प्रति-निधित्व करनेके लिये कहा। यह राष्ट्रीय एसेम्बली नकली बोनापार्ट और उसके दल “कानून और व्यवस्था” की पार्टीयोंके विशद प्रहार करनेके लिये तैयारी कर रही थी। लौटते समय हेसियन सेनाने सन्देहपर दोनोंको गिरफ्तार कर लिया, लेकिन अन्तमें छोड़ दिया। मार्क्स ७ जूनसे पहिले पेरिस चले गये और एंगेल्स काइजरस्लाउटर्न लौट एक भूतपूर्व प्रशियन लेफ्टनेंट विलिच द्वारा संगठित स्थवंसेवक सेनामें अड्जुटेंट बन गये।

पेरिसमें भी भला मार्क्सको कैसे चैनसे रहने दिया जाता। १६ जुलाईको पुलिसके अधिकारी (प्रिफेक्ट) ने मार्क्सके पास घृ-मन्त्रीका हुक्म पहुँचाया, कि तुम्हें देपार्टमेंट मोरिचाँ “(Department Morbihan)” में रहना होगा। इस जिलेके बारेमें फ्राइलिग्रथने मार्क्सको लिखा था : “दानियाल कहता है, कि मोरिचियां फ्रांसका सबसे अधिक अस्वास्थकर जिला है, वह दलदली है, बुखारका घर है।” मार्क्सने तुरन्त इस आशाको मान नहीं लिया, बल्कि घृ-मन्त्रीसे अपील करके आशाको स्थगित करवाया। इस समय मार्क्सकी आर्थिक अवस्था बहुत खराब थी। फ्राइलिग्रथ और लाजेल दोनोंने ‘सहायताके लिये पैसा जमा करनेकी अपील की। फ्राइलिग्रथने लाजेलके पैसा जमा करनेके तरीकेकी शिकायत की। इसपर मार्क्सने बहुत ज्ञाप्त होकर ३० जुलाईको कविको पत्र लिखते हुये कहा था : “सार्वजनिक भीख माँगनेकी अपेक्षा बड़ीसे बड़ी आर्थिक कठिनाइयाँ सुके ज्यादा पसन्द हैं, और मैंने ऐसा उसे लिख दिया। उसकी इस कार्रवाईसे मैं बड़ा ज्ञाप्त हुआ हूँ।” लेकिन लाजेलने पीछे समझाकर मार्क्सके दिलसे इस भावको हटा दिया। २३ अगस्तको मार्क्सने एंगेल्सको सूचित किया, कि मैं फ्रांस छोड़ रहा हूँ। ५ सितम्बर (१८४८ ई०) को मार्क्स ने कविको लिखा, कि इसके बाद १५ सितम्बरको मेरी बीबी भी आ

जायेगी, यद्यपि मैं यह नहीं जानता कि उसकी यात्रा और फिर कहीं सिर रखनेके लिये पैसा कहाँसे आयेगा ।

२. नोये राइनिशे रिव्यु—पैरिससे मार्कर्टने अन्तिम पत्रमें एंगेलसको लिखा था, कि लन्दनसे एक पत्र निकालनेकी संभावना है, और इसके लिये कुछ पैसा भी मिलनेवाला है । इसी पत्रमें एंगेलसको यहभी लिखा कि तुम तुरन्त लन्दन चले जाओ । एंगेलस ब्रॅडेन और प्लाटिनाट्टके विद्रोहके विफ़ज़ होनेके बाद स्वीट्जलैंड राजनीतिक शरणार्थी थे, जब कि इन्हें यह पत्र मिला । वह गेनोवासे बहाज द्वारा इंगलैंड पहुँचे । जो पैसा पत्रके लिये मिला था, वह बहुत योद्धा था, इसमें सन्देह नहीं । मार्कर्टने अपने सम्पादकत्वमें नोये राइनिशे रिव्यू के नामसे एक राजनीतिक-आर्थिक पत्रिका निकालनेका निश्चय करते हुये १ जनवरी १८५० को पत्रिकाके शेयरका विवरण प्रकाशित किया, जिसमें बतलाया गया था, कि दक्षिणी जर्मनी और पेरिसके ऋान्टिकारी आन्दोलनोमें भाग लेनेके बाद नोये राइनिशे के सम्पादक पिछली गर्मियोमें लन्दन पहुँचे । यहाँसे उन्होंने पत्रको निकालनेका निश्चय किया । पहिले यह २८ पन्नोंकी एक मासिक पत्रिकाके तौरपर निकलेगा, लेकिन जैसे ही आर्थिक अवस्था बेहतर होगी, यह अर्ध-मासिक और फिर उसी ढगपर शायद साप्ताहिक बन जायेगा जैसे कि इंगलैंड और अमेरिकाके साप्ताहिक निकलते हैं । जैसे ही जर्मनी लौटनेका अवसर मिलेगा, पत्र फिर पहलेकी तरह दैनिक रूपमें निकलने लगेगा । अन्तमें याठकोसे पचास फ्रांकबाले शेयरोंके लेनेके लिये प्रार्थना की गई थी । शायद बहुत अधिक शेयर बिके नहीं ।

पत्रिका हाम्बुर्गमें छापी जाती, जहाँके एक बुकसेलरने ५० प्रति सैकड़ा कमीशनपर उसके प्रकाशित करने और वॉटनेकी जिम्मेदारी ली थी । इसका तिमाही चन्दा था २५ चार्दीका ग्रोशेन । बुकसेलरने बहुत कोशिश नहीं कर पाई, क्योंकि प्रशियन सेना उस बक्त हाम्बुर्गमें पड़ी हुई थी । लाजेलने ड्वेल्डोफ़से पचास ग्राहक दिये थे, वेडेमेथरने फ्रांकफुर्टमें बेचनेके लिये सौ कापियाँका आर्डर दिया था, लेकिन छ महीनेके बाद वह केवल ५१ गिल्डर पा सका : मैंने लोगोंपर बहुत दबाव दिया, लेकिन कोई पैसा देनेकी जल्दीमें नहीं है । “जेनी

मार्क्सको सबसे ज्यादा आर्थिक अभावकी चोट सहनी पड़ती थी, इसलिये वह इस प्रबन्ध-संबन्धी दुर्घटवस्थापर असंतुष्ट थीं। पत्रिकाके कुल छ अंक निकले यद्यपि व्यवसायके तौरपर वह बिलकुल असफल ही नहीं, बल्कि मार्क्सकी आर्थिक कठिनाइयोंको ओर बढ़ानेवाला था, लेकिन उसमें जो चीजें निकलीं, वे अपना स्थायी मूल्य रखनेवाली थीं। मार्क्सकी उस समयकी स्थितिके बारेमें जेनीने लिखा था : ”उनकी सारी शक्ति, स्वभावकी सभी शान्ति, संचित शक्ति प्रतिदिन और प्रतिघंटा विपत्तियोंसे धिरी हुई है। दोनों मित्र अपनी जवानीसे ही जब मार्क्स और एंगेल्स एक जगह नहीं रहते, तो बराबर पत्रों द्वारा एक दूसरेके पास सारी जानकारी भेजा करते थे। ऐसे पत्रोंकी संख्या हजारों थी। यह ऐतिहासिक पत्र आज भी मार्क्सके दीर्घ जीजनके अनेक पहलुओंपर स्पष्ट प्रकाश डालते हैं। मार्क्सके लिखे अनुसार एंगेल्स इंगलैंड पहुंच पत्रिकाके सम्पादनमें हाथ बैठा रहे थे। मार्क्सका ज्ञान और तजर्बा अगाध था, लेकिन वह अपनी आलोचना करनेमें कड़े निष्ठुर थे। वह और एंगेल्स आत्मवंचनको बहुत बुरा समझते थे और हर बत्त अपनी गलतियोंको देखनेके लिये तैयार रहते। १८४६ ई० के संघर्षमय जीवन और यूरोपके अनेक देशोंमें क्रान्तियोंके निष्फल होनेके बारेमें मार्क्सने अपने विचार नई पत्रिकाके तीन अंकोंमें प्रकट किये। एक जगह आलोचना करते हुये मार्क्सने संक्षिप्त किन्तु अत्यन्त सार-गर्भित शब्दोंमें कहा है : ”जूनके दिनोंसे पहले संविधानका जो पहला मसौदा तैयार किया गया था, उसमें काम पानेके अधिकारकी माँग भी सम्मिलित थी। यह सर्वहाराकी क्रान्तिकारी आकांक्षाओंका पहला मोटा सा रूप था। पीछे इसे सार्व-जनिक समर्थन प्राप्त करनेसे अधिकारके रूपमें परिवर्तित कर दिया गया, लेकिन उसे कौन सा आधुनिक राज्य है, जो अपने भिलमंगोंके लिये किसी न किसी रूपमें नहीं समर्थन करता है ? बूझवा दण्डिकोणसे काम पानेका अधिकार एक फजूल, दयनीय और मनके लड्डू है, लेकिन काम पानेके अधिकारके पीछे पूँजी पर अधिकारकी माँग खड़ी है, जिसके पीछे उत्पादन-साधनोंके जब्त करने, और उसपर सम्मिलित मजूर वर्गका आधिपत्य खड़ा है, जिसका अर्थ है मजूर-श्रम, और पूँजी तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धोंका मनस्तूल करना।

३. किकेल-काण्ड

चौथे अंक (अप्रैल १८५०) में पहुँचते-पहुँचते पत्रिकाका पैर लड़खड़ाने लगा था। इस अक्षमें मार्क्सका एक छोटा लेख निकला, जिसमें बताया गया था, कि यह लेख भावुक जूआचोरो और जनतात्रिक भड़ाभरिहोंमें बड़ा द्वोभ प्रकट करेगा। इस छोटे से लेखमें अपनी सफाईमें दिये हुये गोट्फ्रीड किकलके ७ अगस्त १८४६ के भाषणकी तीव्र आलोचना थी। किकल निद्रोहमें पेकड़ा गया। रास्टाटमें उसपर फौजी कानूनसे मुकदमा चलाया जा रहा था। किकलके दिये हुये भाषणको अप्रैल १८५० में बर्लिनके किसी पत्रने छापा था। किकल राइब्स-संविधानके संघर्षके समय विलिचकी स्वयंसेवक सेनामें शामिल था, जिसमें एगेल्स और मोल भी थे। लड़ते समय उसने बड़ी वहादुरी दिखलाई थी। मुर्में जिस समय मोल शहीद हुआ, उसी समय किकल भी सिरमें घायल होकर बन्दी बना। फौजी अदालतने उसे किलेमें आजन्म कैद करनेकी सजा दी। किकलने अपने भाषणोंमें चापलूसी करते हुये “तत्र महान् श्री राजकुमार हमारे सिंहासनके उत्तराधिकारी का वाक्य प्रयोग किया था, लेकिन तत्र महान् उसकी इस चापलूसीसे जरा भी नहीं प्रभावित हुआ। उसने राजासे कहा कि किकेल के दण्डको मनस्ख कर उसपर फिरसे मुकदमा चलाया जाय, क्योंकि उसे मूल्य-दण्ड मिलना चाहिये था। लेकिन तत्र महानकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। किकेल स्पन्डोके जेलखानेमें मई १८५० को स्थानातरित किया गया, जहाँ उसके साथ बहुत कडाईका बर्ताव नहीं किया जाता था और वह “तू” की जगह अब तुम से सम्बोधित करने योग्य कैदी माना जाने लगा था। उसकी बीबी इस बातकी कोशिश कर रही थी, कि उसके पतिको अमेरिका चले जानेके लिये जेलसे मुक्त कर दिया जाय। दूसरे प्रभावशाली लोग भी कोशिश कर रहे थे। किकेल जैसे कमज़ोर दिलके आदमीकी जेलमें सासत किये जानेकी बातको लेकर शिक्षित लोगोंमें बहुत हाय-तोचा मचाई जा रही थी। कहा जाता था, ऐसे शिक्षित-सम्भ्रान्त व्यक्ति के साथ ऐसा बर्ताव अत्यन्त अनुचित है। मार्क्सने अपने लेखमें लिखा था, कि आगस्त रोकेल जैसे और भी कितने ही उतने ही शिक्षित-सम्भ्रान्त व्यक्ति जेलमें पड़े वारह वर्पासे अधिकारियों द्वारा असह्य पीड़ासे सताये-

ना रहे हैं। लेकिन उन्होंने ज़मा की बात भी मुँहपर लानेसे इन्कार कर दिया। राकेलने जब सरकारके भीषण अत्याचारोंको सहते उसके इशारेपर भी माफी माँगके बाहर जानेसे इंकार कर दिया, तो सरकारको निर्लच्ज होकर उसे जर्बदस्ती जेलसे बाहर करना पड़ा। राकेल जैसे कितने ही स्वतंत्रता-प्रेमी बीर जेलमें सड़ रहे हैं। किंकेलने तो पहिले मुकदमेके समय ही अपना प्रायशिच्त कर लिया था। मार्क्सके इस आज्ञेयको कितनों ही ने दुरा समझा। वृज्वालीने अपनी यैली खोल दी, और नवम्बर १८५० को रिश्वत देकर कार्ल शुर्जने स्पन्डौ जेलसे किंकेलको भगानेमें सफलता ग्रात की। किंकेलने सरकारको बचन दिया था, कि मैं अमेरिका चला जाऊँगा और फिर कभी राजनीतिमें भाग नहीं लूँगा। लेकिन, अब वह मुक्त होकर बीर बन चुका था, इसलिये सरकारके खिलाफ फिर आन्दोलन करनेको तैयार था।

४. कम्युनिस्ट लीगमें फूट

किंकेलको लेकर लन्दनके कितने ही शरणार्थियोंमें मार्क्स और एंगेल्सके प्रति जो भाव पैदा हुआ था, उसका प्रभाव कम्युनिस्ट लीगपर भी पड़ना जरूरी था। लन्दन आनेपर मार्क्स और एंगेल्स पत्रिकाके संचालनके अतिरिक्त एक और काममें लगे हुये थे। क्रान्तिके विफल होनेके बाद वहुतसे शरणार्थी विपन्ना वस्थामें लन्दन पहुँचे हुये थे, उनकी सहायता करना इस समय जरूरी था इसलिये उन्होंने बावर, प्रॉफान्डर और विचिलकी सहायतासे एक शरणार्थी-सहायता-कमेटी संगठित की थी। स्वाजर्लैंडने भी इस समय उदारतासे काम लेना छोड़ दिया था, इसलिये इंगलैंडमें भागकर आनेवाले शरणार्थियोंकी संख्या अधिक हो गई थी। मार्क्स और एंगेल्स इस समय कम्युनिस्ट लीगको पुनः स्थापित करनेकी आवश्यकता महसूस करने लगे थे। १८४६ ई०के शरद्दसे ही कम्युनिस्ट-लीगके पुराने वहुतसे मेम्बर लन्दनमें आ चुके थे। केवल मोल नहीं आया, क्योंकि वह दुश्मनोंसे लड़ते हुये शहीद हुआ था। शापर १८५० ई०के ऑप्समें आया और वर्षके अन्तमें स्वीजलैंडसे विलहेल्म बोल्फ भी पहुँच गया था। पुराने मेम्बरोंके अतिरिक्त नये मेम्बरोंको भी लीगमें लिया गया, जिनमें

अगस्त विलिन्च भी था । एंगेल्स उसके अड्जुटेन्ट रह चुके थे । उसने विद्रोहमें स्वयंसेवक सेनाका मुन्दर रीतिसे संचालन किया था । वैसे वह बड़े ही कामका आदमी था, लेकिन सिद्धान्तोके संबंधमें वह बहुत स्पष्ट विचार नहीं रखता था । नये लिये हुये तरुणोमें थे : व्यापारी कोनड्राड शम्म, स्कूल-मास्टर विलहेल्म पीपर और विलहेल्म लीब्कनेरन्ट । लीब्कनेरन्टने जर्मन विश्वविद्यालयमें अध्ययन किया । अन्तमें-बार्डनके विद्रोहमें उसने भाग लिया और फिर स्वीजलैंड भाग गया । अगले जीवनमें यह तरुण मार्क्सके घनिष्ठ सम्बन्धमें आया । वह तो आजीवन मार्क्सका परमभक्त शिष्य बना रहा । कोनड्राड शम्म तपेदिकसे जवानी ही में मर गया । उसके लिये मार्क्सके दिलमें काफी स्लेह था । पीपर मार्क्सके अनुसार एक अच्छा लड़का (बों गारसॉ) था ।” गौटिनोनके एडवोकेट योहानेस निकेलका मार्क्ससे परिचय हुआ । वह कम्युनिस्ट लीगमें शामिल हुआ, लेकिन अन्तमें पीपरकी तरह वह भी नरमदली बन गया । मार्क्स कठोर यथार्थवादी थे । किसी बातका फैसला वह भाषुकतासे नहीं करते थे । गम्भीर सैद्धान्तिक दृष्टि और व्यापक तज्ज्ञने उन्हें बतला दिया था, कि सर्वहारा क्रान्ति—जिसे ही वस्तुतः क्रान्तिका नाम दिया जा सकता है—कभी मध्यवर्गके व्यक्तियोंपर विश्वास नहीं कर सकती, क्योंकि वह बालूकी भीत है : जिस बक्त चारों तरफ सफलता और बाहवाही दिखलाई पड़ती है, वह घोर क्रान्तिकारी और कम्युनिस्ट बन जाते हैं; लेकिन जैसे ही परिस्थिति बदलती है, वह दुम दवाकर भाग खड़े होते हैं, अथवा छिपकर पार्टी और उसके उद्देश्योंको नुकसान पहुँचानेकी कोशिश करते हैं । आज १०३ वर्ष बाद भी हम सत्यको किसी भी देश और प्रदेशमें देख सकते हैं ।

कम्युनिस्ट लीगके पुनः स्थापित करनेके बाद मार्च १८५० में लीगकी केन्द्रीय कमेटीकी ओरसे मार्क्स और एंगेल्स द्वारा तैयार किया सरकुलर (परिपत्र) निकाला गया, जिसमें लिखा गया था : “क्रान्तिकारी कमकर पार्टी निम्न-मध्यम-वर्गीय जनतन्त्रतावादियोंके साथ उस शत्रुसे लड़नेमें सहयोग करेगी, जिसको दोनों हटाना चाहते हैं । लेकिन, जहाँ उसका अपना हित माँग करेगा, वहाँ वह उसका विरोध भी करेगी ।” निम्न-मध्यवर्गीयकी अविश्वसनीयताके बारेमें बतलाते हुये परिपत्रमें कहा गया था, कि यह वर्ग सफल क्रान्तिको पूँजीबादी समाजके मुघार-

में इस्तेमाल करेगा, जिसमें कि उसके लिए जीवन अधिक आसान और सुखमय हो, कुछ हद तक कमकरोंके लिए भी इस्तेमाल करेगा। लेकिन सर्वहारा इससे इतनेसे सन्तुष्ट नहीं हो सकता, क्योंकि जनतन्त्रतावादी निम्न-मध्यमवर्गकी माँगें बहुत सीमित हैं। जब वह प्राप्त हो जायेगी, तो फिर वह जल्दी ही क्रान्ति से अपनी आँखें फेर लेगा। इसके विशद् कमकरोंको क्रान्तिको तब तक चालू रखना होगा, “जब तक कि सम्पत्तिवाले वर्गसे सभी छोटी या बड़ी राजशक्ति छीन नहीं ली जाती, और शासन सर्वहारा तथा कमकरोंके सङ्घठन हाथमें नहीं आ जाता— यह केवल एक ही देशमें नहीं, बल्कि सारी दुनियाके अधिकांश महत्वपूर्ण देशोंमें और क्रान्ति इतनी दूर तक सफल नहीं हो जाती, जिसमें कि उन देशोंके कमकरोंके बीच प्रतियोगिता बन्द न हो जाये और कमसे कम उत्पादनके अत्यंत महत्वपूर्ण साधन उनके हाथमें नहीं आ जायें।”

सरकुलरमें कमकरोंको सावधान किया गया था कि निम्न-मध्यमवर्गके शान्ति और समझौतेके उपदेशोंसे धोखा न खायें अथवा बूज्जा जनतान्त्रिकताके लगू-भगू न बन जायें। ‘संघर्षके दौरानमें और उसके तुरन्त बाद कमकरोंको सबसे अधिक और यथासम्भव बूज्जा-वर्गके शान्तिके सभी प्रयत्नोंका विरोध करना होगा, और जनतान्त्रिकतावादियोंको अपने आतंकवादी शब्दोंको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये चाय्य करना होगा।...’ राष्ट्रीय एसेम्बलीके चुनावमें मजदूरोंको सब जगह अपना उम्मीदवार खड़ा करना चाहिये, चाहे सफलताकी आशा भी न हो। इससे जनतन्त्रतावादियों और सरकारपरस्तोंकी पोल खोलनेका अच्छा मौका मिलेगा। सरकुलरमें यह भी बतलाया गया था कि सामन्ती जर्मीदारियोंके उठा देनेमें जब क्रान्ति सफल हो जाये, तब भी महान् फैच-क्रान्तिका अनुकरण करते हुए इन जर्मीदारियोंको छोटे-छोटे टुकड़ोंमें करके किसानोंकी वैयक्तिक सम्पत्तिके रूपमें नहीं बाँटा चाहिये, क्योंकि इससे दीहाती सर्वहाराकी श्रेणी बनी रहेगी और किसानोंकी निम्न-मध्यमवर्गीय मनोवृत्ति जर्मीदारोंको पैदा करेगी। कमकरोंको माँग करनी होगी, कि सामन्ती इलाकोंको जब्त करके उन्हें सरकारके हाथमें देना चाहिये, जो उन्हें कमकर-उपनिवेशोंके रूपमें परिणत करे और इस सम्मिलित भूमिको सर्वहारा बड़े पैमानेकी खेतीमें लगायें। इस प्रकार

बूज्वर्ण सम्पत्ति-सम्बन्धोमें ड्रिल-भिज होते समय सम्मिलित मिलकियतको एक मज़बूत आधारपर कायम किया जा सकेगा ।

इस सरकुलरको लेकर बावर जर्मनी गया । उसे अपने काममें बड़ी सफलता हुई । उसने वहाँ कम्युनिस्ट लीगके द्वाटे हुये सम्बन्धोको पुनः स्थापित किया और कितने ही नये सम्बन्ध कायम किये । कमकरो, किसानों, दैनिक मजूरों एवं खेल-कूदकी समाजोके ऊर भी उसने प्रभाव ढाला । स्टेफन बोर्न द्वारा स्थापित कमकर-बिरादरीके अत्यन्त प्रभावशाली सदस्य भी लीगमें शामिल हो गये । जून १८५० की केन्द्रीय कमेटीके कागज-पत्रोंसे पता लगता है कि जर्मनीके कितने ही शहरोंमें लीगके फिर पैर जम गये और कई जगह कमेटियों भी कायम हो गईं : हम्बुर्ग, श्वेरिन, मेकलेनबुर्ग, ब्रेस्ला (सिलेसिया), लाइपजिङ, सेक्सनी, बर्लिन, नूरेस्टर्ग (ब्वारिया) और कोलोन (राइनलेड-वेस्टफ़ालिया) में उन प्रदेशोंके संचालनके लिए कमेटियों भी कायम हो गईं । यह भी पता लगता है कि लोगका सबसे जर्दर्स्त प्रभाव लन्दनमें था ।

लन्दनके शारणार्थियोंको बहुत विश्वास था कि जर्मनीमें क्रान्ति फिर शुरू हो जायेगी और हमें स्वदेश लौटनेका मौका भिलेगा । लेकिन उसमें उन्हें १८५० ई०के ग्रीष्म तक निराश होना पड़ा । और देशोंमें भी क्रान्तिकी सम्भावना नहीं दीख पड़ी । इस सबका प्रभाव लीगके ऊपर बहुत छुरा पड़ा । आपसमें मतभेद और खट्टपट शुरू हो गईं, जिससे केन्द्रीय कमेटी भी नहीं बच सकी । १५ सितम्बर १८५० को केन्द्रीय कमेटीका जो अधिवेशन हुआ, उसमें साफ़ दो दल हो गये—एक दलमें छः सदस्य और दूसरेमें चार । मार्क्स, एगोल्स, बावर, एकेरियस, प्फाड़ेर जैसे लीगके पुराने नेता कोनड्राड शम्पके साथ एक और हुये और विलिच, शापर, फ्रेंकेन और लेमान दूसरी ओर—जिनमें शापर ही पुराने कम्युनिस्टोंमें से था । बहुमत दलने लीगकी रक्षा करनेके लिये केन्द्रीय नेतृत्वको कोलोनमें स्थानान्तरित करनेका विचार किया । कोलोन जिला कमेटीने इस शुभावको स्वीकार कर एक नई केन्द्रीय कमेटी निर्वाचित भी कर ली, लेकिन अल्प मतने बहुमतके विचारको अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वह लन्दनमें अपनेको अधिक दृढ़ समर्फता था ।

“नोये रेनिश रिव्यू” के पाँचवें और छठवें अंकोंमें मार्क्स और एंगेल्सने अपने दृष्टिकोण को रखा था। यह दोनों अंक इकट्ठा नवम्बर १८५० में निकले थे, जिसके साथ पत्रिकाने अपनी जीवन-लीला समाप्त की। इस जोड़े अंकमें मार्क्सने एक लेखमें १८२५ ई०के किसान-संग्रामका ऐतिहासिक भौतिकवादी दृष्टिकोणसे विश्लेषण किया था। इस लेखमें मार्क्सने बड़े उत्साहके साथ लिखा था : “सर्वहारा सङ्कटकी मोर्चाबन्दियोंवाले युद्धोंको लड़नेसे पहले अपने शासनके आगमनको कितनी ही बौद्धिक विजयों द्वारा घोषित करता है। मार्क्स और एंगेल्सने इस महत्वपूर्ण अन्तिम अंकमें राजनीतिक क्रान्ति और प्रति-क्रान्तिके आर्थिक कारणोंकी बड़ी सुन्दर विवेचना करते हुये बतलाया कि क्रान्ति आर्थिक संकटसे पैदा हुई थी, जब कि प्रतिक्रान्तिका आधार है उत्पादनमें एक नया बढ़ाव : “चारों ओर जो आम समृद्धि इस बक्त फैली हुई है और जिसके कारण बूर्जाव-समाजकी उत्पादक शक्तियाँ—बूर्जाव समाजके ढाँचेके अन्दर जहाँ तक सम्भव है, उतनी तेजीसे बढ़ रही हैं, उसमें किसी वास्तविक क्रान्तिका प्रश्न नहीं उठ सकता। ऐसी क्रान्ति केवल उसी कालमें सम्भव है, जब कि दो बातें आपसमें भिड़ जायें, जब कि आधुनिक उत्पादक शक्तियोंकी बूर्जाव उत्पादनके ढंगसे भिड़न्त हो जाये।... एक नये संकटके परिणामस्वरूप ही एक नई क्रान्ति सम्भव है। लेकिन यह उतनी ही निश्चित है, जितना कि स्वयं आर्थिक संकटका आना।”^१

१ नवम्बर १८५० को पत्रिकाका अंतिम अंक लिखा गया और उसके साथ वह खतम हो गई। उसके साथ ही दो शताब्दियोंके लिए उसके दोनों लेखोंका सीधा और तुरन्तका सहयोग खतम हो गया। एंगेल्स अपने बापके फर्म एरमेन और एंगेल्समें काम करने चले गये और मार्क्सने लन्दनमें रहकर अपना सारा समय और शक्ति वैज्ञानिक अध्ययन तथा अपनी महान् कृतियोंकी तैयारीमें लगा दिया।

५. आर्थिक कठिनाइयाँ

नवम्बर १८५० ई० में मार्क्स अपने जीवनका आधा खतम कर चुके थे,

वह अब ३२ वर्षके थे। फरवरी १८५१ में मार्क्सको पत्र लिखते हुये एंगेल्सने कहा था : “आदमी इसे और भली तरह देख सकता है, कि निर्वासन एक ऐसा जीवन है, जिसमें हरेक आदमी अवश्य बेवकूफ, गदहा, कमीना, नीच और पाजी बन जाता है। अगर वह अपनेको उससे पूर्णतया अलग नहीं कर पक्का स्वतन्त्र लेखक बननेमें सन्तोष नहीं करता, अपने दिमागको किसी बातके लिये, यहाँ तक कि तथाकथिक क्रान्तिकारी पार्टीके लिए भी परेशान नहीं करता।” इसके जवाबमें मार्क्सने लिखा था : “मैं सार्वजनिक तौरसे इस अलग-अलग रहनेको—जिसमें कि हम दोनों अपनेको पा रहे हैं—बहुत पसन्द करता हूँ। यह चिल्कुल हमारे मनोभाव और सिद्धान्तोंके अनुसार है। पारस्परिक समझौता-बाजी दिखावेके लिए अधकचरे कामको सहन करनेका ढंग और जनसाधारणकी ओरोंमें उन सभी गदहोंके साथ जिम्मेवारीमें हिस्थेदार बननेकी आवश्यकता, अब खत्म हो गई है।” इसपर एंगेल्सने लिखा था : “हमें अब फिर एक बार बहुत दिनोंके बाद पहली बार यह दिखलानेका अवसर मिला है, कि हमें जन-ख्यातिकी आवश्यकता नहीं, और न किसी देशकी किसी पार्टीसे समर्थन प्राप्त करनेकी आवश्यकता है। इन छोटी-छोटी बातोंसे हमारी स्थिति चिल्कुल स्वतन्त्र है। अबसे हम अपने आपके प्रति जिम्मेदार हैं।.. वहाँ तक हम ऐसे कार्यरत रहे, कि मानो क्रेडी और प्लेथी हमारी पार्टी है, यद्यपि हमारी कोई पार्टी और लोग नहीं थे, जिन्हें कि हम अपने दल, कमसे कम कायदेके तौरपर मानते, और जो हमारे उद्देश्यके प्रारम्भिक नियमोंको भी समझते।”

इसके बाद मार्क्स और एंगेल्स अब अलग रहने लगे। लेकिन इस अवस्था में भी वह पूर्णतया एकान्तवासी हो गये थे, यह नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इंगलैंडके चार्टिस्ट पत्रोंमें वह लेख लिखा करते थे। वह यह भी चाहते थे, कि “नोये राइनिश रिव्यू” सदाके लिए न मर जाय, इसके लिए बार्जल (स्वीजलैंड) के प्रकाशक शोवेलित्जने जिम्मेवारी भी ली, लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं निकला। इसी तरह और जगहोंपर भी किया प्रयत्न सफल नहीं रहा। कोलोनके पत्र “वेस्ट-डाश जाइट्टर्ग” के सम्पादक हेरमान बैकरने इच्छा प्रकट की, कि मार्क्सकी कृतियोंकी एक ग्रंथावलि प्रकाशित की जाय, लेकिन मई

१८४१ में बेकर गिरफ्तार कर लिया गया और मार्क्सकी “संचित ग्रंथावलि” की एक छोटी सी पुस्तक ही निकल पाई। चार-चार सौ पृष्ठोंकी दो जिल्डोंमें ग्रंथावलि इनिकालनेकी योजना थी। वह दस भागोंमें निकलने वाली थी और १५ मई तक ग्राहक वन जानेवालोंको प्रत्येक भागका दाम आठ (चाँदीका) ग्रोशेन निश्चित किया गया था। वैसे आम चिक्कीका दाम एक थालेर और पन्द्रह (चाँदी) ग्रोशेन प्रति जिल्ड रखा गया था। पहला भाग निकलते ही बिक गया था। योजना बनाते हुये मार्क्सको केवल अपनी कृतियोंको संग्रहीत कर देनेका ही ख्याल नहीं था, बल्कि उस वक्त उनके लिए जीविकाका भी भारी प्रश्न था। मार्क्स-परिवार भारी दरिद्रतामें पड़ा हुआ था। नवम्बर १८४६ में मार्क्स-दमतीका चौथा बच्चा (पुत्र) गीडो पैदा हुआ जिसपर उसकी माँने दिलाया था : “वैचारा छोटा सा फरिता। इतनी तकलीफों और चिन्ताओंमें पाला गया, जिससे वह सदा बीमार और रात-दिन भीषण यंत्रणामें पड़ा रहता था। जबसे वह दुनियामें आया, एक रात भी वह ठीकसे नहीं सो सका और सोया भी तो एक समय दो या तीन घंटेसे अधिक नहीं।” जन्मके एक वर्ष बाद यह लड़का मर गया। वह गरीबीपर बलिदान हुआ, इसे माता-पिता जानते थे। दुनियाको गरीबीके जीवनसे निकालकर सुखी बनानेके प्रयत्न करनेवालोंको स्वयं अपने कंघेपर गरीबीका भार उठाना आवश्यक था।

अब परिवारमें दाने-दानेके लाले पड़ रहे थे, चीजें बन्धक रख या बेंचकर अन्नका दो दाना मुँहमें डालनेकी भी कितनी बार नौबत नहीं थी। चेलिस्यामें उजिस घरमें पहले पहल मार्क्स-परिवार रहने लगा था, उसके मालिकने उन्हें आत्मन्त निष्ठुरता और नवरतापूर्वक घरसे निकलवा दिया, यद्यपि मार्क्सने वस्तुतः किराया बाकी नहीं रखा था। उन्होंने मूल किरायादारको किराया दे दिया था, लेकिन उसने भूमिपतिको उसे अदा नहीं किया। वहुत दौड़-धूप करनेपर लीसेस्टर-स्क्वायरके पास लीसेस्टर-स्ट्रीटमें एक जर्मन होटलमें उन्हें कुछ समयके लिए शरण मिली, फिर वहाँसे गरीबोंके मोहल्ले सोहो-स्क्वायरकी २८ डीन स्ट्रीटमें चले गये। अगले छः वर्षोंके लिये डीन स्ट्रीटके ये दो कमरे परिवारको सर्दी-गर्मीसे बचाते रहे। मार्क्स केवल अपने आदर्श और विचारोंके लिये मारे-

मारे फिले रहे; लेकिन उन्होंने इसके लिये कभी अफसोस नहीं किया। वह जानते थे कि यह मूल्य हमें अदा करना ही होगा, सर्वहाराके सगे माई-बन्द बननेके लिये इस जीवनकी आवश्यकता है।

सिरके ऊपर छूत तो मिल गई, लेकिन आर्थिक विपक्षियाँ बढ़ती ही गईं। अक्टूबर १८५० के अन्तमें मार्क्सने वेडेमेयरके पास फ्रांकफोर्ट (माइन) में लिखकर कहा कि वहाँ खानदानके चौदोंके बर्तन और दूसरी चीजें जो बन्धक रखती हुई हैं, उन्हें अच्छी कीमतपर बेच दो, केवल छोटी जेनीके चम्पच आदिकी एक छोटी सी सन्दूकचीको रख छोड़ो। इस समय मेरी स्थिति ऐसी है, कि मुझे जैसे भी हो पैसा प्राप्त करना चाहिये, जिसमें कि मैं अपने कामको जारी रख सकूँ। और काम क्या था सर्वहाराके लिये “कपिटल” (पूँजी) जैसे अमर अनमोल रत्नके लिखनेके लिये सामग्री-संचय करना। इसी समय अपने बन्धुकी इस स्थितिको देखकर एगोल्सने भी निश्चय कर लिया कि चाहे नरकमें जाना पड़े, लेकिन मार्क्सकी आर्थिक सहायताके लिए मुझे अब कुछ करना जरूर है। वह अब तक अपने पिताके कपड़ेकी मिलके व्यवसायको एक आदर्शवादी साम्यवादीके तौरपर बड़ी धृणाकी दृष्टिसे देखते थे, लेकिन अब उन्होंने उस धृणाको धोलकर पी लिया और उस “नरक व्यवसाय” में पड़नेके लिए वह मान्वेस्टरके लिए चल पड़े। इस विपक्षमें एगोल्स छोड़कर दूसरे सहायता देनेवाले मिश्र बहुत कम मिले। १८५० ई० में जेनीने वेडेमेयरको लिखा था : “जो चीज मुझपर सबसे अधिक चोट पहुँचाती है, मेरे हृदयको बेघकर लहूलोहान कर देती है, वह यही है कि मेरा पति कितनी ही छोटी-छोटी कठिनाइयोंके लिए परेशान है। उसकी सहायताके लिये थोड़ी सी चीज भी पर्याप्त है, लेकिन जो दूसरोंकी हमेशा खुले दिलसे सहायता करता रहा, वह अब स्वयं असहाय छोड़ दिया गया है। कृपया हेर वेडेमेयर, तुम यह न सोचो कि हम किसीसे कुछ भाँग रहे हैं, लेकिन कमसे कम मेरे पतिने जिनको इतने विचार और समयपर सहायता दी है, उन्हें उनकी पत्रिकामें कुछ अधिक व्यावसायिक उत्साह और दिलचस्पी तो दिखानी चाहिये।.. इससे मेरा दिल ढुलता है, लेकिन मेरा पति और ही तरह सोचता है। उसका विश्वास भविष्यके प्रति कभी भी—सबसे भयकर ज्ञानोंमें

मी—नहीं उठा, वह हमेशा सुमन रहता है और बहुत आनन्द अनुभव करता है, जब कि मुझे प्रसन्न और हमारे प्यारे चच्चोंको मेरे साथ मचलते देखता है।” जेनीके यह कष्ट कुछ लगाए, कुछ घड़ियों, कुछ दिनोंके नहीं थे बल्कि वर्षों उस तपस्थिनीने इसी तरह परिवारके कष्टोंमें घुलते हुये बिताया। चार-चार बजे रात तक जागकर लिखा-पढ़ी करनेवाले पति और अपने विचारोंके कारण उसके सोनेके संसारको मिट्टी करनेवाले पतिके लिये उसे कभी भी पछतावा नहीं हुआ। वह हमेशा कोशिश करती रही, कि मार्क्स अपने महान् कालको निराबाध रूपसे पूरा करें। सारे मित्र जिस वक्त हाथ छोड़ बैठे थे, उस वक्त भी जेनी छायाकी तरह अपने पतिके दुःखों और चिन्ताओंके अधिक भागको अपने सिरपर बहन करती थी, जब शत्रु मार्क्सको चारों ओरसे प्रहार करके जर्जर करते, उस वक्त भी वह पतिकी ढाल बनती।

अगस्त १८५१ में मार्क्सने फिर बेडेमेयरको लिखा था : “तुम्हें मालूम होगा कि मेरी स्थिति कितनी निराशापूर्ण है। यदि यही अवस्था देर तक रही, तो मेरी स्त्रीकी हालत बहुत बुरी हो जायेगी। अपनी अनिवार्य आवश्यकताओंको पूरा करने के लिये दिन-प्रतिदिन जिन संघर्षों और कठिनाइयोंका सामना लगातार करना पड़ रहा है, उसके कारण वह कृष्ण और निर्बल होती जा रही है। इस सबके ऊपर मेरे विरोधियोंकी नीचता अपना प्रभाव अलग ढाल रही है। वह मेरे ऊपर किसी सच्चाईसे आक्रमण करनेका प्रयत्न नहीं करते, बल्कि अपनी अक्षमताके कारण मेरे प्रति सन्देह पैदा करते, मेरे बारेमें बड़े ही अवर्गनीय कलंकोंको फैलाते बदला लेनेकी कोशिश करते हैं।... जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं इन सारी बातोंपर हँस सकता हूँ, उनसे मैं अपने काममें जरा भी जाधा नहीं पड़ने देता। लेकिन तुम सोच सकते हो कि इससे मेरी स्त्रीका भार हल्का नहीं होगा। वह बीमार है। उसके ज्ञानतन्तु दुर्बल हो गये हैं, वह सबेरेसे शाम तक भयंकर दण्डितासे लोहा लेनेके लिये मजबूर है।”

इसके कुछ महीने पहले (मार्चमें) मार्क्सको एक लड़की—फ्रांजिस्का—पैदा हुई। यद्यपि प्रसवमें कोई कठिनाई नहीं हुई, लेकिन प्रसूता बहुत बीमार थी—“शारीरिक कारणोंसे उतना नहीं, जितना कि मानसिक कारणोंसे।” मार्क्सने

विकल हो बढ़ी खिलतके साथ उस दिन एंगेलसको लिखा था कि घरमें एक पैसा भी नहीं है ।

इन कठिनाइयों और चिन्ताओंका भार मार्क्स जैसे स्वस्थ पुरुषके लिये भी बदाश्तसे बाहरकी चीज हो जाता, यदि वैशानिक अध्ययन और भविष्यकी शुभाशये उन्हें समाहित न करती । वह रोज ६ बजे सबेरे उस समयकी दुनिया के सबसे बड़े पुस्तकालय और संग्रहालय—ब्रिटिश म्युजियम—में जा बैठते और ७ बजे शामको ही उठते । इन दस घण्टोंमें सचमुच ही पुस्तक-पाठके अतिरिक्त गला तर करनेकी कोई चीज उनको नहीं मिलती होगी, इसे आसानीसे समझा जा सकता है । किंकेल, विलिच जैसे कितने ही उस समय और आजके भी क्रान्तिकारी समाजवादी थे और ही सकते हैं, जो कि अपने ज्ञानको गहरा करने के लिये कोई मत्थापन्नी करना नहीं चाहते । मार्क्सने वर्षों तक इस गम्भीर अध्ययनको जारी रखते हुये ऐसे लोगोंके बारेमें लिखा था—‘यह स्वाभाविक है कि जनतान्त्रिकतावादी बुद्धुओंको इस तरहकी किसी चीजकी आवश्यकता नहीं, क्योंकि उनको प्रेरणा ‘ऊपरसे’ से आती है । इन बेचारोंको अर्थशाल और इतिहाससे माथापन्नी करनेकी क्या आवश्यकता ? जैसा कि योग्य विलिच मुझसे कहा करता था—सभी बातें इतनी आसान हैं । शायद यह उनके गङ्गाबद्धोटाले-बाले दिमागोमें, क्योंकि वे बस्तुतः महान् बुद्ध हैं ।’ इस समय मार्क्स अपने ‘राजनीतिक अर्थशालकी आलोचना’ को कुछ सप्ताहोंमें समाप्त कर देनेकी आशा रखते थे और उसके लिये किसी प्रकाशकको ढूँढ़ रहे थे, जिसमें उन्हें निराश होना पड़ा ।

मई १८५१ में मार्क्सका पूर्ण विश्वासपात्र और सच्चा मित्र फार्डिनांड फ्राइ-लिग्थ लन्दन आया । अगले कुछ वर्षों तक दोनों एक दूसरेके घनिष्ठ समर्कमें रहे, लेकिन फिर एकके बाद एक दुरे समाचार आने लगे । १० मईको लाइप-जिगमें कम्युनिस्ट लीगके प्रतिनिधिके तौरपर आन्दोलनके लिये गया दर्जी नथयुंग पकड़ा गया । उसके पास जो कागज-पत्र मिले, उनसे पुलिसको लीगके विद्यमान होनेका मेद मिल गया और थोड़े ही समय बाद कोलोनमें केल्नीय कमेटीके मेम्बर पकड़ लिये गये । इसी समय कवि फ्राइलिग्थ वहाँसे भाग

निकला। जब वह लन्दनमें आया, तो जर्मन निर्बासितोंके भिन्न-भिन्न दलोंने उसे अपनी तरफ खींचनेके लिये एड़ीसे चोटी तकका जोर लगाया। वह समझते थे, कि प्रसिद्ध कवियों अपनेमें लाकर हमें बहुत फायदा रहेगा। लेकिन कविने उनको साफ कह दिया, कि मैं तो मार्क्स और उनकी मंडलीका हूँ। १४ जुलाई को (१८५१) आपसी भगाइके मिटानेके लिये जो सभा हुई थी, उसमें भी कविने शामिल होनेसे इन्कार कर दिया। इस असफलताने कितने ही और भी नये मतभेद पैदा कर दिये। २० जुलाईको रुगेके बौद्धिक नेतृत्वमें आनंदोलन कलब स्थापित हुई, और २७ जुलाईको किंकलके बौद्धिक नेतृत्वमें प्रवासी कलब चनाई गई। यह दोनों कलबें जल्दी ही जर्मन-अमेरिकन एवेंके कालमोंमें आपसमें शुत्थमगुत्था करने लगीं। मार्क्स इस मेंढक और मूषके युद्ध को घृणा-की दृष्टिसे देखते, यह स्वाभाविक था। मार्क्स किंकलकी करतूतोंको बड़े ध्यानसे देख रहे थे। सन्दौके जेलसे मागनेके बाद किंकलने लन्दनमें क्रान्ति वीरका पार्ट अदा करना शुरू किया था। कवि मजाक करते हुये उसके बारेमें कहता था : कभी पब (भट्टीखाना) और कभी कलबमें। किंकलने विलिचकी सहायतासे एक भारी जालका ताना बाना तैयार किया। १४ सितम्बर (१८५१) को किंकल जर्मन राष्ट्रीय कर्ज जमा करनेके उद्देश्यसे न्यूयार्कमें उतरा। जर्मनीमें गयराजी क्रान्ति करनेके लिये पहले वह बीस हजार थालर एकत्रित करना चाहता था। कर्जके उगाहनेके लिये प्रचार करते समय दोनों गुरु-चेले उत्तरी राज्योंमें दासता के बिरुद्ध और दक्षिणी राज्योंमें उसके पक्षमें उपदेश देते रहे। जिस समय किंकल अमेरिकाकी सोनेकी खानोंमें लूटके लिये पहुँचा था, उसी समय मार्क्सका अमेरिकाके साथ दूसरी तरहसे आयका सम्बन्ध स्थापित हुआ था। न्यूयार्क ट्रिव्यून उत्तरी राज्योंमें उस वक्त सबसे अधिक छुपनेवाला दैनिक था, जिसके प्रकाशक डानासे मार्क्सका कोलोनमें परिचय हो गया था। न्यूयार्क ट्रिव्यून ने मार्क्सको ब्रावर लेख देनेके लिये नियमित पारिश्रमिक देनेका निश्चय किया। अभी मार्क्सकी अंग्रेजी अच्छी नहीं थी, इसलिये जर्मनीमें क्रान्ति और प्रतिक्रान्तिके बारेमें मार्क्सने जो लेख लिखे, उनकी अंग्रेजी टीक करनेका काम एंगेल्सने अपने ऊपर लिया। कई साल तक मार्क्स अपने लेखोंको न्यूयार्क ट्रिव्यून में देते रहे।

६. अठारहवाँ वर्ष*

मार्क्सका पुराना मित्र ब्रुशेल्सका योजेफ वेडेमेयर सारे क्रान्तिके वर्षोंमें फ्रांकफोर्ट-आम-मैनमें एक जनतंत्रतावादी अखबारके सम्पादकके तौरपर बड़ी हिम्मतके साथ संघ करता रहा। लाइप्जिगमें जो कागज मिले थे, उनसे पता लग गया, कि वेडेमेयर भी कम्युनिस्ट 'लीगिका सक्रिय सदस्य है। इसपर खुफिया पुलिस उसके पीछे पड़ी। पहले वेडेमेयरने साखबेन हाउजेन नामक एक छोटी एकान्त सरायमें शरण ली, समझा कुछ दिनोंमें तूफान उत्तर जायेगा। इस समय वह राजनीतिक अर्थशास्त्रपर एक सरल पुस्तक लिखनेमें लगा हुआ था। लेकिन तूफान दबनेकी जगह और जोर पकड़ता गया। वेडेमेयर दो छोटे-छोटे बच्चोंका बाप था। उसने स्वीजलैंड या लन्दनमें जीविका कमानेकी आशा न होनेसे अमेरिका जानेका निश्चय किया। मार्क्स और एगोल्स दोनों ऐसे मित्रको हाथसे खोना नहीं चाहते थे। मार्क्सने बहुत सोचा कि कहीं उसे काम इंजीनियर रेलवेके सर्वेयर या और कोई नौकरी मिल जाय। लेकिन उसमें सफलता नहीं हुई। जब वेडेमेयर के अमेरिका जानेको छोड़कर और कोई रास्ता नहीं रहा, तो एगोल्सने कहा : हमें न्यूयार्कमें एक विश्वासपात्र आदमीकी आवश्यकता है। आखिर, न्यूयार्क भी दुनियासे बाहर नहीं है और हम यह जानते हैं कि जब आवश्यकता होगी, तो वेडेमेयर तैयार रहेगा। वेडेमेयर १६ सितम्बरको हाब्रेसे जहाजपर बैठा और चालीस दिनों बाद तूफानी समुद्र में होते उसका जहाज न्यूयार्क पहुँचा। ३१ अक्टूबरको मार्क्सने चिट्ठी लिखकर वेडेमेयरसे कहा, कि न्यूयार्कमें पुस्तक-बिक्रेता और प्रकाशकका काम शुरू करो, और नोये राइनिशे जाइटंग तथा नोये राइनिशे रिव्यू से अच्छे-अच्छे लेखोंको जमा करके उन्हें प्रकाशित करो। वेडेमेयरने अपने शुरुके सुभावको स्वीकार करते हुये लिखा, कि यद्यपि बनियापनका मनोमाव जितना अधिक अमेरिकामें है, उससे मुझे इस व्यवसायसे घृणा होती है; तो भी मुझे आशा है कि जनवरी (१८५२ ई०) से एक साप्ताहिक ढी रिवोल्यूशन (क्रान्ति) के नामसे निकालना चाहता हूँ,

उसके लिये जितना जल्दी हो सके आप लेख भेजें। मार्क्सने सभी अपने लेखक मित्रोंको प्रेरित किया। एंगेल्सने भी लेख लिखे। प्रता फ्राइलिग्रथने एक कविता तैयार की, एकेरियस, वीर्थ और दोनों बोलफोने भी कलम चलाई। स्वयं अपने लिखनेके लिये मार्क्सने लुई बोनापार्ट का १८ वीं ब्रूमेर अर्थात् २ दिसम्बरको हुये बोनापार्टी कूप-दे-ता (राजविराजी) पर लेख लिखनेका निश्चय किया। इस राजविराजीपर फांसके प्रसिद्ध लेखक विक्कर हूगो और प्रूडोने भी कलम चलाई थी; लेकिन वह उसकी गहराई तक नहीं पहुँच सके थे।

मार्क्सकी इस पुस्तककी भाषा अत्यन्त सजीव है। इतिहासकी अपनी भौतिक-वादी दृष्टिके कारण वह इस समसामयिक घटनाकी तह तक पहुँचने में सफल हुये। जैसी ही इसकी भाषा चमत्कारपूर्ण है, वैसा ही विषय भी सुन्दर और ज्ञानबद्धक है। पहले अस्थायमें तुलना करते हुये उन्होंने लिखा है : अठारहवीं शताब्दी जैसी बूज्वा-क्रान्तियाँ एकके बाद एक सफलतायें प्राप्त करते नये किले दखल करती आगे बढ़ती गईं। उनका नायकीय प्रभाव एक दूसरेसे बढ़-चढ़कर है। मनुष्य और चीजें ज्वालाकी जगमगाहट में जड़ी हुई सी मालूम होती हैं। प्रतिदिन और सर्वत्र आत्मविभोगता सी फैली दिखाई पड़ती है, लेकिन ज्ञानिक ही। जल्दी ही वह अपने मध्याह्नपर पहुँचती है, फिर अपनी तूफानी कारबाइयों-के परिणामोंको विचारपूर्वक आत्मसात कैसे करें इसे सीखनेके पहले समाजमें एक दीर्घव्यापी अवसाद आ पड़ता है। किन्तु १६ वीं शताब्दीकी किन्तु सर्वहारा क्रान्तियाँ लगातार अपनी आलोचना करती हैं, अपने रास्तेमें बराबर अपनेको रोकती रहती हैं, जो पहले ही पूरा किया जा चुका है, मानो उसे फिरसे शुरू करनेके लिये पुनः उसी जगह लौट आती हैं। पहिले प्रयत्नोंमें अपनी बेमनता, निर्बलता और हीनता दिखलानेकी पूरी निष्ठुरताके साथ निन्दा करती हैं। जान पड़ता है, वह अपने शत्रुको इसीलिये धरतीपर पटकती है, कि वह पृथिवीसे नई शक्ति प्राप्त करके और अधिक शक्तिशाली बन उनके सामने खड़ा होकर फिर मिहन्त करे और अपने निजी उद्देश्योंके अनिश्चित और जबर्दस्त स्वरूपके कारण तब तक पुनः और पुनः मिहन्त करे, जब तक कि वह ऐसी स्थिति न पैदा कर दे, जब कि पीछे हटना असम्भव हो जाय और परिस्थितियाँ चिल्ला

कर कहने लगें : चाहे जो कुछ ! Hic Rhodus, hic Sapta... अगर सप्ताशी चादर लुई बोनापातके कन्धोपर पढ़ी तो नेपोलियनकी कॉसेकी मूर्ति बाँदोमके खम्मेसे गिरकर चूर-चूर हो जायेगी ।

यह आद्युत पुस्तक मार्कर्सने उस समय लिखी थी, जब कि पैसेकी कमीके कारण वेडेमेयरको अपना साप्ताहिक बन्द करनेके लिये मजबूर होना पड़ा : “शरदके आरम्भसे ही जो भीषण वेकारी यहाँ फैली हुई है, उसके कारण कोइ भी नया अध्यवसाय आरम्भ करना बहुत कठिन है । इसके ऊपर हालमें कम-करोंको मिन्न-मिन्न तरीकेसे लूटा गया है, पहले किकलने ऐसा किया फिर कौटुम्ब (हुंगेरियन) ने । दुर्माणसे अधिकाश मजबूर अपने विरोधी प्रचारके लिये एक डालर दे सकते हैं, जब कि अपने हितोंकी रक्खाके लिये एक सेन्ट । अमेरिकाकी स्थितियाँ लोगोंपर असाधारण बुरा भ्राष्टाचारिक प्रभाव डालती हैं, और उसके साथ ही इस अहंकारको भी पैदा करती है, कि पुरानी दुनियाके उनके साथियोंसे अमेरिकन वेहतर हालतमें हैं” तब भी वेडेमेयरने अभी हिम्मत नहीं छोड़ी, और दो सौ डालर हाथमें आ जानेपर वह एक मासिक निकालनेकी फिकरमें पड़ा ।

इस तरह अवस्था निराशापूर्ण थी, जब कि मार्कर्सकी लेखनी अठाहवीं ‘ब्रुमेर’ लिख रही थी । इसी समय जनवरीके आरंभमें मार्कर्स बीमार हो गये । वह बड़ी मुश्किलसे कलन चला सकते थे : “वर्षोंसे मुझे किसी चीजने इतना बुरी तौरसे नहीं पछाड़ा जैसा कि यह अभागी बवासीर, इतना तो भीषण फेच असफलताके समय भी नहीं हुआ था ।” २७ फरवरीको उन्होंने लिखा या : “मेरी स्थिति अब उस स्थानपर पहुँच चुकी है, जब कि मैं घरसे बाहर नहीं निकल सकता, क्योंकि मेरे कपड़े बन्धक रखे हुये हैं और साल न रह जानेके कारण मैं मास नहीं खा सकता ।” तो भी २५ मार्चको वह अपनी पुस्तकके हस्तलेखके अन्तिम मागको वेडेमेयरके पास मेजनेमें सफल हुये, साथही वेडेमेयर के नये पुत्रके जन्मके बारेमें मार्कर्सने अभिनंदन करते हुये लिखा, वह ऐसे समय आया : “जिस क्षणको छोड़कर और अच्छा समय दुनिया में आनेके लिये ग्रास करना असम्भव है । (वह समय आने वाला है) जबकि लन्दनसे कल-

कत्ता सात दिनमें पहुँचना सम्भव होगा, जब कि हमारे सिर कट चुके होंगे या वह बुद्धापेके कारण काँपते रहेंगे। आस्ट्रेलिया, कलिफोर्निया और प्रशान्त महासागर ! नई दुनियाके नागरिक यह समझतेमें असमर्थ होंगे, कि हमारी दुनिया कितनी छोटी है।” अपनी भीषण कठिनाइयोंके बीचमें भी मार्क्स अपने सिरको पानीसे ऊपर रखने का प्रयत्न करते थे। उनके हृदय और दिमागमें भव्य भविष्यके प्रति पूर्ण आस्था थी, और मानव विकास की अपार संभावनायें उनके चित्तको आहूलादित करती रहती थीं। १६ अप्रैलको मार्क्सके एक बच्चेको कब्रमें लिया गया। विल्हेल्म बोल्फने उस बच्चे लिखा था : “ग्रायः हमारे सारे ही मित्र दुर्मियके सताये और भीषण संकटसे दबे हुये हैं।” यह ईस्टरका त्यौहारका दिन था, जब कि एक ही वर्ष पहले पैदा हुई मार्क्सकी सबसे छोटी लड़की मर गई। जैनीने उस समयके भीषण दृश्यका बड़ा ही मार्मिक वर्णन अपनी डायरीमें किया है : “१८५२ ई० के ईस्टरमें हमारी छोटी सी बिट्या फ्रांजिस्का फेफड़की सूजनसे जबर्दस्त बीमार पड़ गई। तीन दिनों तक बेचारी बच्ची मृत्युसे लड़ते अपार यंत्रणा सहती रही। उसका छोटा सा निष्प्राण शरीर हमारे पीछेवाले छोटे से कमरेमें रखा था, जब कि हम सब सामनेवाले कमरेमें चले गये। रात आई, तो हमने धरतीपर अपना बिस्तरा बिछाया। तीन बचे हुये बच्चे (सभी लड़कियाँ) हमारे साथ लेटे थे, और हम उस बेचारी छोटी सी फरिस्तेके लिये रो रहे थे, जो कि दूसरे कमरेमें ठंडी और निर्जीव पड़ी थी। मैं पड़ोसी फ्रैंच शरणार्थीके पास गई, जो कि कुछ पहले हमारे घर आया था। उसने बड़े सौहार्द, और सहानुभूतिके साथ बर्ताव किया और दो पौंड दिया। इस पैसेसे हमने उस शवाधानी का दाम चुकाया; जिसने मेरी बच्ची शान्तिपूर्वक विश्राम करेगी। पैदा होने पर उसे हिंडोला नहीं मिला, और अन्तिम छोटीसी सन्दूकची भी काफी समय तक उसे मुयस्सर नहीं हुई। हमारे लिये वह भीषण घड़ी थी, जब कि -छोटी सी शवाधानी अपने अन्तिम विश्रामस्थानपर ले जाई गई।” उसी दिन वेडेमेयरका निराशापूर्ण पत्र मार्क्सको मिला था।

इन्हीं दुखकी घड़ियोंमें समुन्दरपारसे एक नया पत्र आया, जिसपर ह अप्रैलकी तिथि लिखी हुई थी : “अप्रतीक्षित सहायताने अन्तमें उन कठिनाइयों

को दूर कर दिया, जिनके कारण कुछ पम्लेटोंका प्रकाशन रुका हुआ था । पिछली चिट्ठी मेज देनेके बाद फ्राकफुतसे आये हमारे एक कमकरसे भेट हुई । वह दर्जी है, और हमारी ही तरह गर्मियोंमें यहाँ आया । उसने अपने बचे हुये सारे पैसे—चालीस डालर—मेरे हाथमें दे दिये ।” यदि इस सर्वहाराने अपना सर्वस्व त्याग नहीं किया होता, तो बहुत संभव है “अठारहवी ब्रिटिश” प्रकाशित न हो पाई होती । उस महानत्यागी का नाम लिखना भी बेडेमेयर भूल गया । लेकिन नाम से क्या ? सर्वहारा अपनी वर्गचेतना से प्रेरित होकर क्या-क्या कुर्बानियाँ नहीं कर सकता ! वह क्रातिकी बलिबेदीपर हँसते-हँसते अपने प्राणोंकी बलि देना जानता है ।

बेडेमेयरने अब अपने मासिक “रेवोल्यूशन” (क्राति) को प्रकाशित करना शुरू किया, जिसके पहले अक्सर मास्कर्सी यह अमर कृति निकली । दूसरे तथा अन्तिम अंक में फ्राइलिग्रथकी दो कवितायें बेडेमेयरके पास चिट्ठीके रूपमें छाँपी, जिनमें बड़े व्यग और चमलार शब्दोंमें किंकलके जर्मन राष्ट्रीय शूरूण उगाहनेके प्रयत्नका उपहास किया गया था । बेडेमेयर “अठारहवी ब्रिटिश” की एक हजार कापियाँ छाँपी थीं, जिनमेंसे एक-तिहाई युरोपमें मित्रों और सहानुभूतिकारोंमें बॉटनेके लिये भेजी गईं । उग्रवादी पुस्तक-बिक्रेताओंने भी उसे बेचनेमें हाथ नहीं लगाया । पीपर द्वारा अनुवादित और एंगेल्स द्वारा पालिश की गई उसके अनुवादको छापनेके लिये कोई अग्रेज प्रकाशक नहीं मिला ।

इसी समय कोलोनमें पकड़े गये कम्युनिस्ट्योपर अभियोग चलाया जाने लगा था ।

७. मोलोन का कम्युनिस्ट-मुकदमा

मई १८५१ में कोलोनमें कम्युनिस्ट साथियोंकी शिरफ्तारीके समयसे ही मास्कर्सी आँखें वहाँ होती सारी कार्यवाइयोंकी ओर लगी हुई थीं । पुलिस कोई पक्का सबूत नहीं था रही थी, इसलिये मुकदमा रुका पड़ा था । उनके बारेमें जो सबूत मिल सका था, उससे यही सांकेति किया जा सकता था, कि वह एक

शुप्रचारक संस्थाके मेम्बर हैं, लेकिन फौजदारी कानूनमें उसके लिये कोई दण्ड नहीं था। प्रशियाके राजने अपने आदमी स्टीवेरको इस मुकदमेपर लगाना चाहा। वह जैसे भी हो, सबूत जमा करने लगा। उसके एक चरणे विलिचके संगठनके एक आदमी ओजवाल्ड डीट्ज़के लिखनेके डेस्कका ताला तोड़कर कागज चुराये। उन कागजों तथा फ्रैंच अधिकारियोंकी सहायतासे स्टीवेरने “फ्रैंच-जर्मन षड्यन्त्र” गढ़ा और फरवरी १८५२ में पेरिसकी अदालतोंने कितने ही अमागे जर्मन कमरोंको भिन्न-भिन्न मियादकी सजायें दी। लेकिन स्टीवर अब भी पेरिस-षड्यन्त्रको कोलोन के अभियुक्तोंके साथ जोड़नेमें असमर्थ था। पेरिसके षड्यन्त्र कोलोनके मुकदमेमें सहायता देनेवाली कोई चीज हाथ नहीं लगी। इसी समय “मार्क्स पार्टी” और “विलिच-शापर पार्टी” के मतभेद और उग्र हो गये। विलिचने अमेरिकासे लौटनेके बाद किंकलसे मिलकर जो कार्यवाई करनी शुरू की, उसके कारण १८५२ के ग्रीष्ममें दोनों दलोंका विरोध और भी उग्र हो गया। यद्यपि किंकल दो लाल थालर जमा करनेमें सफल नहीं हुआ, लेकिन तो भी उसे एक लाल थालरके करीब हाथ लगा। उसके सामने यह एक समस्या थी, कि पैसेको कैसे खर्च किया जाय। साथ ही रुपए की गन्ध पाकर अब उसके साथियोंमें की भी लार टपकने लगी। अन्तमें किंकलने एक हजार पौंड प्रथम अस्थाई सरकारके नामसे वेस्टमिन्स्टर बैंकमें जमा कर दिया और चाकी सारी करीब दो लाखकी रकम सैर-सपड़े और प्रबन्ध में खर्च की। बैंकमें जमा की हुई रकम पन्द्रह बरस बाद जर्मन समाजवादी बनतंत्रताका पत्र निकालनेमें सहायक हुई।

कोलोनमें सरकारी अधिकारीने सबूत जुटानेके लिये काफी समय तक मुकदमेको बन्द रखा। अन्तमें अक्टूबर १८५२ को नाटक आरंभ हुआ। फ्रैंच-जर्मन षड्यन्त्रके साथ अभियुक्तोंका सम्बन्ध विसी तरह भी नहीं स्थापित किया जा सकता था। जिस पार्टीके षड्यन्त्रके साथ पुलिस सम्बन्ध जोड़ना चाहती थी, अभियुक्त उसके मेम्बर ही नहीं थे, यही नहीं, बल्कि वह उस दलके विरोधी थे। अन्तमें स्टीवरने “मार्क्स पार्टी” की मूल कार्यवाही-बही पेश की, जिसमें मार्क्स और उनके साथियोंकी उन मीटिंगोंकी कार्यवाही दर्ज थी, जिनमें

उन्होने विश्व-क्रान्तिकी योजनापर विचार प्रकट किया था। यह “कार्यवाही बही” सरकारी एजेंट चाल्स फ्लोरी और विल्हेल्म हर्श द्वारा पुलिस-अफसर ग्राइफ़की देख-रेख में जाली बनाई गई थी। स्टीवरको बहुत विश्यास था, कि मैंने मैदान मार लिया; लेकिन, मार्क्सने उसके विरुद्ध जो सबूत सचित कर दिये थे, उसके कारण स्टीवरको सफलताकी आशा कम हो गई। जिस समय मार्क्स कोलोनके अपने साथियोंके अभियोगमें दत्तचित और परेशान थे, उस समय उनके घरकी हालत कितनी बुरी थी, यह एंगेल्सके नाम लिखे उनके द सितम्बरके पत्रसे मालूम होगा। “मेरी छोटी बीमार है, नहीं जेनी बीमार है; लैनचेनको एक तरह का स्नायविक बुखार है, और मैं डाक्टर नहीं बुला सकता, क्योंकि मेरे पास फीस के लिये पैसा नहीं है। करीब आठ या दस दिनसे अब तक हम रोटी और आलूपर गुजारा कर रहे हैं, और अब इसमें भी सन्देह है कि वह हमें मिल सकेगा। मैंने ढानाके लिये कुछ नहीं लिखा, क्योंकि मेरे पास अखबारोंके खरीदनेके लिये पैसा नहीं है। अब सबसे बढ़िया बात यही हो सकती है, कि घरकी मालकिन अपने घरसे हमें बाहर निकाल दे, क्योंकि ऐसी अवस्थामें बकाया किरायेके बाईस पौँडका बोझ मेरे दिमागसे उत्तर जायेगा; लेकिन, मुझे इसकी उम्मीद नहीं है, कि वह इतनी दयावान होगी। इसके ऊपर रोटीबाले, दूधबाले मोदी, सागबाले और गोश्तबालेके भी हम कर्जदार हैं। कैसे इस शैतानी आफत-से मैं बाहर निकल सकता हूँ? पिछले सप्ताह...मैंने कमकरोंसे कुछ शिलिंग क्या कुछ पेन्स तक उधार लिए हैं। यह मेरे लिए भयकर कृत्य था, लेकिन ऐसा करना अनिवार्य था, नहीं तो हम सब भूखे मरते।” इस स्थितिमें भी अपने कोट तकको बैचकर कोलोनके अभियुक्तोंकी सहायता करनेके लिए मार्क्स प्रयत्न कर रहे थे।

अभी अनुकूल फैसलेके बारेमें कोई निश्चय नहीं था, इसी समय फ्राउ मार्क्स (श्रीमती जेनी मार्क्स) ने एक अमेरिकन मित्रको लिखा था : “जाल-साजीके सारे सबूत यहाँसे तैयार करके भेजने हैं, जिसके लिए मेरे पतिको सारे दिन और रातमें भी बहुत देर तक काम करना पड़ता है। फिर इस लिखी हुई सामग्रीकी छः या सात कापियों हमें करनी पड़ती है, जिन्हें मिज्ज-मिज्ज तरीकोंसे

फ्रांकफोर्ट आदिके रास्ते जर्मनी भेजना पड़ता है; क्योंकि मेरे पतिके पास आने-वाले तथा उनके जर्मनीके लिये भेजे जानेवाले सारे पत्र खोलकर जब्त कर लिए जाते हैं। अब सारा मामला पुलिस और मेरे पतिके बीच संघर्षके रूपमें परिणत हो गया है, और मेरा पति हरेक बातके लिए, मुकदमेकी पैरवीके लिये भी जबाबदेह बनाया गया है। मेरी घबराहटके लिये तुम माफ करना, क्योंकि इस मामलेमें मेरा भी कुछ भाग है। मैं तब तक कापी करती रहती हूँ, जब तक कि मेरी अंशुलियाँ दुखने नहीं लगतीं।...हमारा घर एक बाकायदा आफिस बन गया है। दो या तीन आदमी लिखते, दूसरे सन्देश लेकर दौड़ते, और वाकी पैसे-पैसे जुटा रहे हैं, जिसमें कि हम जीवित रह सकें और दुनियाके अत्यन्त लज्जाजनक सरकारी दुराचारके खिलाफ सबूत तैयार कर सकें। इस सारे समय मेरी तीनों जिन्दादिल बच्चियाँ गातीं और सीटी बजाती रहती हैं, जिसके लिये उन्हें कभी-कभी अपने बापकी कड़ी फटकार भी खानी पड़ती है। कैसा जीवन !”

अन्तमें स्टीवरकी जालसाजीका भंडाफोड़ हो गया, और मार्क्स विजयी हुये। जाली “कार्यवाही बही को सरकारी बकीलने छोड़ दिया, लेकिन यदि अभियुक्तोंको सजा नहीं दी जाती। तो प्रशियन सरकारका मुँह काला होता, इसलिये उसकी सहायताके लिये जूरीवाले भी ईमानदारी खोनेके लिये तैयार थे। ११ मेंसे ७ अभियुक्तोंको देशद्वारोहके प्रयत्नका अपराधी माना गया। सिगार बनानेवाले रोजेर, लेखक बुरगेस्क और फेरीवाले दर्जी नोथयुंगको किलेमें सात सालकी कैदकी सजा हुई। और कमकर राइख रसायनिक ओटो और भूतपूर्व बैरिस्टर बेकरको किलेमें पाँच सालकी कैदकी सजा हुई, फेरीवाले दर्जी लैसनरको तीन-सालकी सजा। कलर्क एरहार्ट और तीन डाक्टर डानियल्स याकोधी और कला। इन छोड़ दिये गये। डानियलको अठारह महीनेके हवालाती जीवनमें तपेदिक लग गई, जिसके कारण वह कुछ बर्षों बाद मर गया। मार्क्सने उसकी मृत्युपर जो सहानुभूतिपूर्ण पत्र उसकी बीजीको भेजे थे, उनके लिये उसकी बिधवाने बड़े करुण शब्दोंमें देते हुये धन्यवाद दिया था।

इन अभियुक्तोंमेंसे कितने ही पीछे अपने अतीतको छोड़ पथभ्रष्ट हो गये। बुरगेस्क राइखस्टाग (पार्लियामेंट) का मेम्बर चुना गया, बेकर पीछे।

कोलौन म्युनिसिपैलिटीका लार्ड बेयर और प्रशियन पार्लियामेटके उच्च-सदनका सदस्य बना। नोथयुंग और रोजेर अपने पथपर अचल रहे। लेसनेर मार्क्स और एंगेल्सके मरनेके बाद भी निर्वासित जीवन बिताते हुये अन्तिम समय तक उनका परममक्त बना रहा।

कोलौन-कम्युनिस्ट अभियोगके बाद कम्युनिस्ट-लीगने अपनेको खत्म कर दिया, जिसका अनुसरण विलिंचके संगठनने भी किया। पीछे विलिंच अमेरिका प्रवासी हो गया, जहाँ उसने यूह-युद्धके समय उत्तरी सेनाके एक जैनरलके तौरपर काफी प्रसिद्धि हासिल की। शापर पश्चात्ताप करके फिर अपने पुराने साथियोंके साथ आ गया।

इस सफलताके बाद भी मार्क्स प्रशियन-सरकारको चैन लेने देनेके लिये दैयर नहीं थे। उन्होंने इस अभियोगके बारेमें पुस्तक लिखकर उसे स्वीजलैंड और सम्भव हो तो अमेरिकामें प्रकाशित करनेका निश्चय किया था : “इस प्रम्फ्लैट्टके बिनोदी अंशको, मैं समझता हूँ तुम और अच्छी तरहसे समझ सकोगे; यदि मैं बतला दूँ, कि उसका लेखक अपने पैरों और पीठको पर्याप्त न ढाँक सकनेके कारण विल्कुल घरमें बन्द सा है। इसके ऊपरसे उसका परिवार पहले और अब भी भयंकर तकलीफसे संबस्त है। यह भी अभियोगकी कार्रवाइयोंका ही एक आंशिक परिणाम है, क्योंकि जिन पॉच सप्ताहोंमें सरकार की चालोंके विरुद्ध पार्टी की चाचावके लिये मैं अपनी सारी शक्ति लगानेके लिये पञ्चवूर था; उस समय मैंने जीविका कमानेके लिये कुछ नहीं किया। यही नहीं, इस मुकदमेने जर्मन पुस्तक-विक्रेताओंको पूरी तौरसे मेरे खिलाफ कर दिया है, जिनसे कि राजनीतिक अर्थशास्त्रपर अपनी पुस्तकके प्रकाशन का प्रबन्ध करनेकी आशा रखता था।

जो भी हो ११ दिसम्बरको शावेलिट्जके लड़केने—जिसने कि अपने पिता-के कारवारको अपने हाथमें संभाल लिया था—बाबेल (स्वीजलैंड)से मार्क्सके आस लिखा, कि मैं कितावकी पहली गोलियोंको देख रहा हूँ : “मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक जर्वदस्त सनसनी पैदा करेगी, क्योंकि यह एक मास्टरपीस है” शावेलिट्जने प्रस्ताव किया कि पुस्तककी दो हजार कापियाँ छापी जायें

और दाम चाँदीका दस ग्रोशन रखवा जाय, क्योंकि कितनी ही पुस्तकें सरकार पकड़कर जब्त करनेमें जरूर सफल होगी। दुर्भाग्य समझिये, शुस्ति से भेजने-के लिये वाडेनके एक सीमान्ती गाँवमें पुस्तकें भेजाकर छः हफ्ते तक अवसरकी तलाशमें पड़ी थी, वहीं इस संस्करणकी सारी प्रतियाँ सरकार के हाथोंमें पड़कर जब्त कर ली गईं।

कितनी दुश्चिन्ता और दुर्भाग्यकी बात थी “विपद् विपदमनुसरति” का कितना निष्ठुर उदाहरण था। जब १० मार्चको यह खुरी खबर एंगेल्सको मिली, तो उन्होंने बहुत दुःखी होकर लिखा : “इस तरहका दुर्भाग्य फिर आगे लिखने-के उत्साहको आदमीसे छीन लेना चाहता है। क्या हम सदा प्रशियाके राजाके लिये काम करते रहें। इसी चिन्तामें पड़े हुये थे कि तीन महीने बाद शावेलित्ज-के भागीदार अम्बेरगेने ४२४ फ्रांक छपाईका मार्क्ससे माँगा, जिससे उनकी परेशानी और बढ़ गई।

स्वीजलैंडकी असफलताका कष्ट कुछ हलका तब हो पाया, जब अमेरिकामें कुछ सफलता कुछ दीख पड़ी। “नो-इंगलैंड जाइटुंग” बोस्टनसे प्रकाशित होता था। उसने कोलोन वाले पम्फ्लेटको छापा। एंगेल्सने अपने खर्चपर उसकी ४४० कापियाँ अलग छपवा लीं। लाजेलकी सहायतासे उन्होंने इन्हें राइन ग्रेशमें बैटवानेका प्रस्ताव किया। फ्राउ मार्क्स (जेनी) ने लाजेलके पास इसके बारेमें लिखा। लाजेलने उत्साह भी दिखलाया, लेकिन पता नहीं काममें कहाँ तक सफलता हुई। कोलोन-अभियोगके रहस्योद्घाटक पम्फ्लेटकी अमेरिका-के जर्मन-पत्रोंमें काफी चर्चा रही, विशेषकर विलिचने उसके खिलाफ खूब लिखा। इसपर छोटा सा जवाब मार्क्सने उच्च हृदयका वीर के नामसे लिखा।

कम्युनिस्ट-लीग खतम हो गई थी। जर्मनीके सार्वजनिक जीवनसे नाता-रखनेके तार टूट चुके थे। अब मार्क्सका निर्वासित घर ही सदाके लिये उनका घर हो गया।

अध्याय ११

मार्कर्स और एंगेल्स

मार्कर्स युगप्रवर्तक पुरुष थे, अब इससे विरोधी भी इन्कार नहीं कर सकते। इतिहासमें किसी एक पुरुषको एक समयमें मानवताकी इतनी संख्या और इतने प्रतिशतने अपना मार्गप्रदर्शक नहीं माना। मार्कर्सका जीवन बड़ी गहरी और तीव्र बौद्धिकता—पुराने शब्दोंमें ज्ञानमार्ग का था। उसके साथ दूसरी ज्ञानको व्यवहारमें लानेकी ओर भी उनको उतना ही अधिक जोर था, जिसे पुरानी परिभाषाके अनुसार ज्ञान और कर्मका समन्वय कह सकते हैं। साथ ही दोनों बन्धुओंमें आदर्शवाद और त्यागकी वह भावना देखी जाती है, जो कि केवल जातकी कहानियोंमें ही हमें मिलती है। लेकिन जातकोमें भी त्याग दुःखकी जड़के उच्छेदके लिये उतना नहीं देखा जाता, जितना कि मार्कर्स और एंगेल्समें। मार्कर्सने स्वेच्छापूर्वक कष्टका जैसा जीवन निताया, शायद ही धर्मके पैगम्बरों और अनुयायियोंमें किसीने उतना दुःख उठाया हो। अलकारिक भाषामें हम कह सकते हैं, कि मानवताके दुःखोंसे मुक्त करनेके लिये उन्होंने स्वयं मानवकी सहिष्णुता-शक्तिसे परेके दुःखोंको सहा। ईसा किसीके पापोंको अपने चिरपर उठानेके लिये दूसीपर नहीं चढ़े, यह तो केवल उनके अनुयायियोंका प्रचार भर है, अधिक उनके लिये यही कह सकते हैं, कि वह गरीबी देखकर द्रवित हो जाते थे। बुद्धमें यह भावना ईसासे कहीं बढ़-चढ़ करके थी, और वह मूढ़ भक्तिके नहीं, बल्कि अपने समयके प्रखर बुद्धिवादके प्रवर्त्तक थे। किन्तु मार्कर्सके सर्वथा मानव-जीवनके इस पहलूको ही अगर लेकर जीवनी लिखी जाय, तो वह किसी महान् तपस्वी और पेगम्बरके जीवनसे कम मधुर और कश्यारस प्लावित नहीं होगी। खैर, अभी जब तक कि सारी दुनिया मार्कर्सकी चिकित्सा द्वारा स्वस्थ नहीं हो जाती, आधी बच्ची हुई मानवता मार्कर्सके पथपर आरुद्ध होकर सुख-सतोष, निश्चिन्तता और सस्कृति-कलापुक्त जीवन

विताने नहीं लगती, तब तक उसके लिये मार्क्सिंका ज्ञान और व्यवहार (कर्म) ही अत्यन्त प्रिय और हितका होना चाहिये । भावी पीढ़ियाँ सारे विश्वमें मार्क्सिंके बनाये मार्गपर आलड़ हो सुखी जीवन विताते मार्क्सिंके जीवनके इस तीसरे पहलूकी और विशेष ध्यान देगी, तब वह मार्क्सिंके करुणरसपूर्ण काव्यमय किन्तु वास्तविक जीवनको बड़े प्रेमसे पढ़ेंगी ।

१. अद्भुत प्रतिभा

मार्क्सिने अग्रने आधे जीवनको इंगलैंडकी राजधानी लन्दनमें विताया । इंगलैंड लोभी और कंजूष बनियों का राज्य था, और जर्मनी, फ्रांस और वेलिंगम उसकी बनियाशाहीकी अपेक्षा अधिक उदार सामत्तशाही देश थे, लेकिन इन बनियोंने मार्क्सिंके प्रति अधिक मानवोचित बर्ताव किया था । दूसरी सरकारें मार्क्सिंके प्राणियोंकी गाहक बन गई थीं । उन्हें कितने समय तक एक देशसे दूसरे देशमें मारा-मारा फिरना पड़ा । इंगलैंडकी बनियाशाही सरकारसे भी अधिक वहाँकी जनताको इसका श्रेय देना चाहिये, क्योंकि यदि वह इतने उदार न होते, तो लन्दनकी बनिया-सरकार शायद कुछ अनिष्ट करनेके लिये तैयार हो जाती । आगे हम देखेंगे, कि मार्क्सिने इंगलैंडकी पूँजीशाहीकी निर्भीक आलोचना करनेमें हृचकिचाहट नहीं की दुनियाके बाजारोंकी लूट मालामाल इंगलैंड-के पूँजीयतियों और उनकी पत्तल चाटनेवाले मजदूर-नेताओंसे उनको कम आशा थी, कि वहाँ अदूर भविष्यमें क्रांति होनेवाली है, इसीलिये तुरन्त क्रांति लाने की दृष्टिसे उन्होंने इंगलैंडमें काम नहीं किया । यह भी एक कारण था, जिससे इंगलैंडकी सरकारको तुरन्त वैसा कोई बहाना नहीं मिल सकता था, जिससे कि वह मार्क्सिंको वहाँसे भगानेके लिये उतारू हो जाती ।

प्रतिभाओंकी अवहेलना वर्गसमाजमें हमेशा ही होती-आई है, विशेषकर उस प्रतिभाकी तो वहाँ कोई पूछ नहीं हो सकती, जो वर्गमेदकी जड़ काटनेके लिये असज्जी हथियारोंका आविष्कार करती है । फाँस्टके शब्दोंमें :

जिन योङ्नेने देखा समझा और फिर,
अज्ञानतासे अपने हृदयको पूरा खोल दिया,

और जनगणको अपनी भावनाये दिखलाई,
वह हमेशा बलिखंटे या सलेवपर मरे ।

अपनी आत्माको बेचनेवाली या अपने चारों तरफ होते अतिचारों और अत्याचारोंके प्रति आँख मूँदनेवाली प्रतिभाओंके लिये जीवन कंटकाकीर्ण नहीं था । शासकवर्ग उन्हें सिरपर उठानेके लिये तैयार था । लेकिन, क्रान्तिकारी प्रतिभाये उनकी कृपा ही नहीं सहिष्णुतासे भी बचित थीं । १९ वीं शताब्दी ही नहीं, बल्कि सारे इतिहासमें कार्ल मार्क्स जैसी प्रतिभा बहुत ही कम पैदा हुई । उन्हें कार्य-क्षेत्रमें पैर रखनेके बाद एक दशाब्दी तक दूसरे संघर्षोंके साथ गरीबी-से भी संघर्ष करना पड़ा । जब वह लन्दनमें निर्बासित जीवन बितानेके लिये सपरिवार आये, तो जीवनकी वह कठोर विपक्षियों सामने आई, जिनमें सबसे पहले मार्क्स और जेनीको अपनी कई सन्तानोंको बलि देनी पड़ी । साल भरकी बच्चीके मरनेकी घटना हम देख चुके हैं । वह केवल गरीबीकी बलि हुई, इसमें सद्देह नहीं । असश्व शारीरिक और मानसिक पीड़ाओंसे भरे जीवनको बिताते हुये मार्क्सने कैसे अपने अध्ययन, अनुसन्धान और आविष्कारोंको जारी रखा, यह सोचकर आश्चर्य होता है ।

मार्क्स चतुरस महापुरुष थे, बुद्धिके क्षेत्रमें भी एकाग्रिता इनमें छू नहीं गई थी । कितनी ही प्रतिभाये होती हैं, जिनकी महानतामें कोई सद्देह नहीं, लेकिन उनमें निरंतर काम करनेकी लगत और उत्साह नहीं होता, जिसके कारण वह मानवताके लिये बहुत काम नहीं कर पाती । पर, मार्क्स जितने ही प्रतिमाशाली थे, उतने ही कठोर परिश्रमी भी । दिन ही नहीं रातसे भिनसार तक बैठे काम करना, दसियों बरस तक दस-दस घंटे रोज ब्रिटिश म्युजियममें देश-विदेशके मानव-जीवनके हरेक पहलुओंपर लिखे गये अनमोल रेकार्डोंकी घूलियोंको पोछकर उन्हें तन्मय होकर अध्ययन करना बिलकुल अनहोनी सी बात मालूम होती है । लेकिन, मार्क्सके लिये वह अनहोनी बात नहीं थी । वह मानवताके सबसे अधिक उन्नीष्ठ और सबसे अधिक सख्यावाले जनगणको अन्धनसे मुक्त करना चाहते थे । इस महान् कामके महत्वको बड़ी तीव्रतासे वह अनुभव करते और उससे भी कहीं खेदके साथ देखते थे । एक जीवन क्या

अगर उन्हें सौ जीवन भी मिलता, तो वह इसी काममें लगाते। मार्क्सकी प्रतिभा और तपस्या विफल नहीं गई, वल्कि कह सकते हैं, वह बहुत जल्दी सफल हुई, जब कि उनकी आँखोंके मूँदनेसे चाँतीस साल बाद ही उनका अनुयायी बन पृथिवीके छठे भागने युगोंकी दासतासे मुक्ति पाई, और दो शताब्दियोंसे कुछ और अधिक बीतनेपर आधी मानवताने पुराने नर्कों दाकर नये स्वर्गकी भव्य इमारत निर्माण करी शुरू की। मार्क्सका जीवन कर्ममय था। उन्होंने स्वयं कहा था, कि कर्म करनेकी अक्षमता किसी ऐसे मानवके लिये मृत्युदंड है, जो कि सचमुच पशु नहीं है। एक बार कई सप्ताह तक बीमार रहनेके समय उन्होंने एंगेलसको लिखा था : यद्यपि मैं काम करनेके लिये बिल्कुल असमर्थ हूँ, लेकिन मैंने कारपेन्टरकी “फिजियालोजी” (शरीर शास्त्र) कोलिकेरकी “गेवेवेलर” सुर्जहाइमकी “अनन्योमी डेज हर्न्स उंड नेरवेनसिस्टम” और श्वान एवं श्लाइडेन-की “उइवर डी जेलेन्सीटर” पढ़ी। उनका मस्तिष्क शरीरके अस्वस्थ रहनेपर भी गम्भीर अध्ययनको क्षोडनेके लिये तैयार नहीं था। वह इतना काम करनेमें हस-लिये भी समर्थ हुये, क्योंकि उनका शरीर लोहेका था, तभी तो वह इतने परिश्रम और विपदाओंके बोझको बर्दाशत कर सका था। शरीर और बुद्धि दोनों-से इतने मजबूत पुरुष बहुत कम मिलते हैं।

लन्दनके इस समयके जीवनमें १८५१ हूँ से करीब दस साल तक अमेरिकन पश्च “न्यूयार्क ट्रिव्यून” का पारिश्रमिक उनके लिये सञ्चसे बड़ा सहारा था। आज तो पन्नोंकी ग्राहक-संख्या आधे-आधे करोड़ तक पहुँचती है, इसलिये ट्रिव्यूनकी उस समयकी दो लाखकी ग्राहक-संख्या आजके लिये कोई असाधारण बात नहीं। किन्तु, उस समय युक्तराष्ट्र अमेरिकाका वह सबसे बड़ा और शक्ति-शाली अखंतार था। उसके मालिकोंका फूरियेके समाजबादके साथ कुछ सहानुभूति भी थी, जिसमें कुछ कारण पत्रके अधिक जनप्रिय होने एवं अधिक पैसा कमानेका ख्याल भी था। पत्र-मालिकोंने मार्क्सके साथ समझौता किया था, कि वह प्रति-सप्ताह दो लेख लिख दिया करेंगे और ट्रिव्यून प्रत्येक लेखका दो पौँड दिया करेगा। इस प्रकार उन्हें दो सौ पौँड वार्षिककी आमदनीका एक रास्ता निकल आया था। इसे कहनेकी तो आवश्यकता नहीं, कि उस समयके

मापदण्डसे भी जिस तरहके लेख मार्कर्स द्विव्यूनमें भेजा करते थे, उनके लिये यह पारिश्रमिक अत्यन्त अपर्याप्त था। पत्रका प्रकाशक डाना अपनेको फूरियेके समाजवादका अनुयायी मानता था, लेकिन एंगेल्सके अनुसार डानाका समाजवाद लोभ तथा निम्न-मध्यमवर्गकी ठारीसे बढ़कर कुछ नहीं था। वह मार्कर्सके लेखोंके नूत्यको जानता था, लेकिन मालिक होनेके कारण अपने बेतनभेगी सेवकको शोषित करनेसे अपनेको कैसे रोक सकता था। सबसे बुरी बात जो मार्कर्सको असश्च थी, वह थी उनके लेखोंकी मनमाना कतर-ब्योत, और पसन्द न आने पर उन्हें रहीकी टोकरीमें फेंक देना। पत्रकी ग्राहक-संख्याके कम होनेकी जरा भी संभावना होने पर डानाने पारिश्रमिक कम करनेमें भी आनाकानी नहीं की। जो देता भी था, वह भी सिर्फ उन्हीं लेखोंके लिये, जिन्हें वह छापता था। रहीकी टोकरीमें फेंके उन लेखोंकी कोई कीमत नहीं थी, जिनके लिखनेमें मार्कर्सको ब्रिटिश स्थुजियमकी पुस्तकों और दूसरी सामग्रीके अध्ययनमें दिनों लग जाते थे। एक बार तो तीन सप्ताह तक और कमी-कमी छ � सप्ताह तक, जो भी लेख मार्कर्स मेजबते रहे, उन्हें रहीकी टोकरीमें फेंका जाता रहा। “डी प्रेस” (वीना) जैसे जर्मन अखबारोंका भी वर्ताव इससे बेहतर नहीं था।

१८५३ ई० में मार्कर्स कुछ महीनोंकी शान्ति पानेकी बड़ी लालसा रखते थे, जिसमें कि निश्चित हो वह अपने वैज्ञानिक अध्ययनको जारी रख सके: पर मालूम होता है, मुझे वह नहीं मिलनेवाली है। अखबारोंके लिये यह लगातार गड़ियोंको छाँटना मेरे लिये दुर्भाग्य हो गया। चाहे तुम कितने स्वतन्त्र विचारोंके हो, लेकिन लेख तो अन्तमें अखबार और उसके पाठकोंके पास जाना है।... ऐसी स्थितिमें शुद्ध वैज्ञानिक कार्य करना विल्कुल कठिन है। कुछ सालों तक डानाके लिये काम करनेके बाद एक बार उन्होंने लिखा था: “यह विल्कुल शुशुप्तनीय है, कि ऐसे दरिद्रकी मेहरबानीका नाज उठाया जाय, जोकि कृपा करके अपनी डोरीमें बैठानेके लिये सहमत है। दरिद्रालयके मिखमंगोकी तरह हड्डी पीसकर उसका सूप बनाना जैसा ऐसे पत्रके लिये राजनीतिक लेख लिखना है, तो भी मुझे उसे परे परिमाणमें करना पड़ता है।” मार्कर्सने केवल सर्वहाराके दुःखों और चिन्ताओंका ही कालकृट घूंट दीर्घ काल तक नहीं पिया, बल्कि आधुनिक

सर्वहाराकी तरह ही उनका भी मालिकों द्वारा शोषण होता रहा। उन्होंने कितना कष्ट सहा, यह एंगेल्स के नाम लिखे हुये उनके पत्रोंसे मालूम होता है: एक समय वह घरके भीतर बन्द रहनेके लिये मजबूर हुये, क्योंकि उनके पास बाहर जानेके लिये न कोट था न जूता। दूसरे समय उनके पास इतना पैसा नहीं था, कि लिखनेका कागज या अखबार खरीद सकें। फिर एक समय अपने लेखको प्रकाशकके पास भेजनेके लिये डाकके टिकटोंके बास्ते अपने परिचितोंके पास हाथ पसारे दौड़ना पड़ा। मोदी, सब्जीबाले, रोटीबालेका दाम ठीक समयपर चुकता न होनेसे उनकी फिङ्क भी खानी पड़ती थी। उससे भी असह्य था, घरके मालिकका बर्ताव—जरा भी किराया बाकी रहता, कि वह उनको निकालकर सड़कपर पटकनेके लिये तैयार हो जाता। ऐसी स्थितिमें यदि घरमें कभी थोड़ी कड़वाहट आ जाय, तो कोई अस्थाभाविक बात नहीं थी। लेकिन, मार्क्सको दूसरे विद्वानोंकी तरह “कटही” बीबी नहीं बल्कि जेनी जैसी अनुपम देवी मिली थी, जो शायद ही कभी खीजती थी, और खीजनेपर भी तुरन्त अपनेको दोषी मान पतिको शान्त और संतुष्ट करनेकी हर प्रकारसे कोशिश करती थी। लेकिन, गरीबीमें परिवारका बोझ बहुत भारी होता है, इसीलिये मार्क्सने अपनी राय दी थी: जो लोग मानवताकी सेवा एकान्त मनसे करना चाहते हैं, उनके लिये विवाहसे बढ़कर कोई बेवकूफी नहीं हो सकती, क्योंकि इसके कारण उन्हें चैयक्तिक जीवनकी छोटी-छोटी चीजोंके लिये मरना-खपना पड़ता है। घरके अभावोंके लिये जेनी कभी शिकायत करती, तो मार्क्स हमेशा उसके पक्षका समर्थन करते कहते, कि मेरी अपेक्षा तुम्हें अधिक कष्ट और अवर्णनीय अपमान, चिन्ता और आशंकाका सामना करना पड़ता है। मार्क्स तो दस-दस घंटे त्रिटिश म्युजियममें शुजार देते थे, कभी और जगह भी जाकर मनबहलाव कर सकते थे, लेकिन जेनी तो कई बच्चोंकी माँ थी, जिनके भोलेभाले सूखे चेहरोंको देखकर उसका कलेजा फट्टा रहता था। उसका भी अपना बचपन था। कितनी निश्चन्तता और आनन्दसे उसने उसे बिताया था? लेकिन अब वह अपने बच्चोंको उनसे सर्वथा बंचित देखती थी। दूसरे कितने ही राजनीतिक कर्मियोंकी तरह मार्क्स भी चाहते, तो अपनी इज्जतपर बिना घब्बा लगाये बूर्जा-

लोगोंके कामोंमें से एकको अपना सकते थे। लेकिन मार्कर्सका कहना था : “चाहे जो भी हो, मुझे अपने लक्ष्यका अनुसरण करना है। मैं अपनेको बूर्जां-समाजकी पैसा कमानेवाली मशीन बनने नहीं दृग्गा।”

वह सर्वथा मानव थे और जीवनके कष्टोंको एक मानव-हृदयके तौरपर ही महसूस करते थे। अपने जिस पत्रमें अपने मित्र एंगेल्सको तुरन्त सिरपर पढ़े दुःखके पहाड़के बोझका झट्ठाँ वर्णन करते होते, उसी पत्रमें आगे चलकर वह उसे चिल्कुल भूल जाते, जबकि वह अपने अनुसन्धान और जीवनके लक्ष्यके बारेमें वर्णन करने लगते। अपने ५० वें वर्षको पूरा करते समय उन्होंने कहा था : “आधी शताब्दीका बोझ मेरी पीठपर है और अब भी मैं अकिञ्चन हूँ!” एक जगह वह लिखते हैं, कि इस तरहके जीवनसे हजार पोरसा समुद्रके नीचे जाना बेहतर है, और दूसरे समय कहते हैं : मैं अपने सबसे भयंकर शत्रुके लिये भी नहीं चाहूँगा, कि वह ऐसा जीवन विताये। एक समय जीवनकी छोटी-छोटी चिन्ताओंने उन्हें इतना पीस दिया था, कि वह आठ सप्ताह तक अपना बौद्धिक कार्य करने लायक नहीं रह गये।

यह था पारितोषिक, जिसे जीवनमें उस अद्भुत प्रतिभाको तत्कालीन समाज दे रहा था।

२ अनुपम मित्रता

यदि मार्कर्सकी प्रतिभाको लौहमय शरीर मिला था, जो कि असाधारण परिश्रम और कष्टोंको सहन कर सकता था, तो उनको समाजमें एक बाहरी शरीर भी एंगेल्सके रूपमें मिला था। “एक प्राण दो शरीर” या बहिश्वर प्राण” की कहावत इन दो मित्रोंपर चिल्कुल ठीक घट्टी है। उनके बौद्धिक कार्योंमें हाथ बैठनेके लिये एंगेल्स जिस तरह तैयार रहते थे, और उसके लिये सज्जम भी थे; उसी तरह उनके कष्टोंको बॉटनेमें बड़ा आनन्द आता। एंगेल्सने एक तरह अपने सारे बौद्धिक और शारीरिक जीवनको इस मित्रतापर बलि चढ़ा दी थी। दोनो मित्रोंके बीच लिखे गये हजारों पत्र इसके साक्षी हैं। इतिहासमें इस तरहकी सर्वांगीन अभिन्न मित्रता दूसरी कोई भी देखी नहीं जाती। इस

मित्रतामें किसी तरहके स्वार्थकी भावना न थी। मार्क्सको दुःख होता था, जब सोचते थे, कि एंगेल्स जैसा प्रतिभाशाली पुरुष सिर्फ मेरे लिये मन मारकर; अपनी प्रतिभाको बेकार करके व्यापारमें लगा हुआ है।

एंगेल्स कदमें लम्बे-चौड़े ब्लौड (गौर) केरोवाले थे। वह हमेशा अपनी पोशाक बिल्कुल बाकायदा पहनते थे। फौजी बारेक तथा आफिसमें उन्होंने जो अनुशासनका जीवन विताया था, उसके कारण वह काममें सदा बड़े मुस्तैद रहते थे। उन्होंने एक मर्त्तवे कहा था कि छ लकड़ोंकी मददसे मैं शासन-प्रबन्ध को उससे कहीं अधिक योग्यता और सीधे-साधे ढंगसे चला सकता हूँ, जिसे कि साठ प्रीवी-कौंसिलर (राजामात्य) भी नहीं कर सकते—वह प्रीवी-कौंसिलर, जो ठीकसे लिख भी नहीं सकते, और जिनकी चिन्हारियोंकी सिर-पूँछका कोई पता नहीं लगा सकता। पिताके व्यापारके कारण व्यवसाय ज्ञेत्र उनका कार्यज्ञेत्र बना था। वह मान्वेस्टर शेयर-बाजारके एक बहुत ही सम्मानित सदस्य थे। बूर्ज्वा-वर्गके जीवनके ऊपरी वेषभूषाको उन्हें कायम रखना पड़ता था, यहाँ तक कि लोमड़ीके शिकार और बड़े-दिनकी पार्टीयोंमें भी वह शामिल होते थे।

अधिक समय नगरसे बाहर एक छोटेसे एकान्त बँगलेमें बीतता था, जहाँ वह बूर्ज्वा-समाजके घृणित वातावरणसे निकलकर शुद्ध हवामें साँस लेते अपने अध्ययन, मनन या लेखनमें लगे रहते।

मार्क्स गठीले और मजबूत शरीरके आदमी थे। उनका कद साधारणसे अधिक ऊँचा और युरोपियन तुलनामें उन्हें सँवला कहा जा सकता था। उनकी आँखें चमकीली तथा काली थीं। इनके साथ घने कोयले जैसे काले बाल बतलाते थे, कि वह सामीय जातिके हैं। वह कपड़े-लत्ते या रहन-सहनमें बड़ी वैपर्याही रखते थे, उनकी उन्हें जरूरत भी नहीं थी, क्योंकि नगरके भद्र-समाजमें सम्मिलित होनेकी उन्हें आवश्यकता नहीं थी। उसके लिये समय भी नहीं निकल सकता था, क्योंकि अपने बौद्धिक श्रमके बाद मुश्किलसे थोड़ासा समय मिलता था, जब कि वह जल्दी-जल्दी शरीरकी गाड़ी चलानेके लिये कुछ ग्रास अपने मुँहमें डाल लेते और फिर बहुत रात तक काममें जुट जाते। विचारणा उनके लिये परम आनन्दकी बात थी, विचार करते वह थकते नहीं थे। वह थे

भी तो परम विचारकोंकी श्रेणीमें। वह वडी प्रसन्नताके साथ हेगेलके वाक्योंको दोहराते : “एक शुरू का अपराधपूर्ण विचार करना स्वर्गके सभी आश्चर्योंसे कहीं उच्च और भव्य है।” लेकिन मार्क्स जिस विचारको निरल्पर किया करते, वह था कार्यको पूरा करना। छोटी-छोटी बातोंमें विल्कुल व्यवहारपट्ठ नहीं थे, लेकिन वडी बातोंमें कहीं अधिक व्यवहारपट्ठ थे। एक छोटेसे परिवारका चलाना उनकी शक्तिये बाहरकी बात थी, लेनिक एक भारी सेनाको तैयार कर सारी दुनियाके रूपको बदलनेके लिये उसे लेकर आगे बढ़नेमें उनकी प्रतिमा अद्वितीय थी।

मार्क्स और एंगेल्स दोनों कलमके धनी थे, दोनों हीकी अपनी अलग-अलग शैली थी, दोनों ही अद्भुत भाषाविद् थे—उन्होंने बहुतसी भाषाओं और बोलियोंपर अधिकार प्राप्त किया था। एंगेल्स तर्लिक इस विषयमें मार्क्ससे भी आगे बढ़े हुये थे। एंगेल्सकी भाषा वडी भावपूर्ण और सीधी-सादी होती थी। शब्दावलीको वह पसन्द नहीं करते थे। वह वडे सुगम और सुन्दर ढंगसे लिखते थे। उनकी लेखनीमें प्रवाह और प्रसाद दोनों पूरे रूपमें पाये जाते हैं। जिस तरह वह अपनी पोशाकके बारेमें बाकायदगी करते थे, वैसे ही वह लिखने में भी देखे जाते।

लेकिन, मार्क्स लिखनेमें उन्होंनी सावधानी नहीं रखते थे। उनके दिमागके भीतरसे गम्भीर विचारोंकी इतनी प्रखर धारा छूटनी रहती, जिसके कारण उनका लिखना भी सुगमतासे नहीं होता था। अपने पहलेके पत्रोमें, मालूम होता है, वह अपने विचारोंके प्रकट करनेके लिये शब्दोंके दृढ़नेका भारी प्रयत्न कर रहे हैं। इग-लैड चले आनेके बादके पत्रोंमें तो उनकी शैली और भी दुर्लङ्घनी हो जाती है। अपने भावोंको प्रकट करनेमें जर्मनमें लिखे पत्रोंमें भी वह ऑग्रेजी या फ्रेंच शब्दों और मुहावरोंको बेधड़क इस्तेमाल करते हैं। उनकी कृतियोंमें आवश्यकतासे अधिक विदेशी शब्दोंकी भरमार देखी जाती है—उनमें ऑग्रेजी और फ्रेंचकी मांआ-से बहुत अधिक पुट होती है। लेकिन जर्मन भाषापर उनका इतना अधिक अधिकार था, कि उनके ग्रंथोंका मूलके भावोंको सुरक्षित रखके दूसरी भाषासे अनुवाद करना बहुत मुश्किल है। मार्क्सके जिन ग्रंथोंके अनुवाद हिन्दीमें हुये हैं, वह

मूलतः जर्मनमें थे, उन्हें अँग्रेजीसे प्रत्यनुवाद किया गया है। दो भाषाओंसे गुजर-कर हुआ अनुवाद मूलसे कितना मेद रखता होगा, इसे सहज समझा जा सकता है। इसके लिये यह जरूरी है, कि मार्क्सके ग्रंथोंका सीधे जर्मन भाषासे हमारी भाषाओंमें अनुवाद हो। मार्क्सके अँग्रेजी अनुवादोंके बारेमें एंगेल्सने स्वयं कहा है : जिन अनुवादोंकी पालिश स्वयं मार्क्सने बड़े ध्यानसे की थी, उनमें भी मूलकी आत्मा बहुत बिकृत हो गई है। मार्क्स उपमाओंका प्रयोग अपनी भाषामें बहुत अधिक करते हैं। आखिर भाषा भावोंका वास्तविक चित्रण नहीं, बल्कि संकेत मात्र है। यह संकेत उपमा और उदाहरण द्वारा अधिक तीक्रताके साथ किये जा सकते हैं, इसीलिये मार्क्स उनका बहुत सफलतापूर्वक इस्तेमाल करते थे। लेकिन, वही उनके ग्रंथोंके भाषान्तर करनेमें सबसे बड़ी कठिनाई पैदा करते हैं। भाषा और भाव पुरुष और खींका सुखमय विवाह है, यदि विवाह दुखमय हुआ, तो जीवन फीका हो जाता है। भाषा और भावका सामंजस्य न रहनेपर लेखककी कृति कुरुप बन जाती है। मेरिंगने लिखा है : “मार्क्स सदा समस्याओंको इस तरह पेश करते हैं, मानो वह अपने पाठकके लिये लाभदायक विचार करनेके लिये भोजन रख देते हैं। उनकी भाषा गहरे नीले सागरके ऊपर लहरोंकी कीड़ा जैसी मालूम होती है।”

एंगेल्स सदा मार्क्सकी प्रतिभाको अपनेसे श्रेष्ठ मानते थे, और सदा उनका अनुयायी रहनेकी इच्छा रखते थे। लेकिन, एंगेल्स मार्क्सके केवल सहायक या भावानुवादक नहीं, बल्कि उनके स्वतन्त्र सहयोगी थे और अपनी प्रतिभामें वह मार्क्सके जैसे ही तथा योग्य भागीदार थे। अपनी मित्रताके आरम्भमें एंगेल्सने जितना मार्क्ससे पाया, उससे कहीं अधिक प्रदान किया। बीस सालकी गम्भीर मित्रताके बाद मार्क्सने स्वयं उनको लिखा था : “तुम इसे जानते हो, कि पहले तो मैं किसी तत्वपर धीरे-धीरे पहुँचता हूँ, और दूसरे यह कि मैं तुम्हारे कदमों-पर चलता हूँ।” इससे मालूम होता है, कि एंगेल्स किसी तत्वकी तहपर बड़ी जलदी पहुँच जाते थे। मार्क्सको देरसे पहुँचनेका कारण यह था, कि वह द्वन्द्वात्मक दृष्टिका सर्वतोभावेन उपयोग करते हरेक बातको पक्ष-विपक्षकी कसौटीपर कसते आगे किसी निष्कर्षको घोषित करनेके लिये तैयार होते थे। मार्क्सने

अपने जीवनमें किसी बड़े राजनीतिक निर्णयको तब तक नहीं किया, जब तक कि एंगेल्ससे पूछा न लिया। इसीसे मालूम होगा, कि एंगेल्स मार्क्सकी छाया नहीं थे, बल्कि दोनों यमल प्रतिभाये थी, जिनका उदाहरण हमें मार्क्स-एंगेल्सके उत्तराधिकारियों लेनिन और स्तालिनमें ही मिलती है।

राजनीतिक बातोंमें सदां एंगेल्सकी राय लेते, यद्यपि सैद्धान्तिक प्रश्नोमें वह एंगेल्ससे कहीं अधिक कान्तदर्शी थे। मार्क्स अपने कामोंको कभी जल्दी या फुर्तीसे करनेके विरोधी थे। एंगेल्सको इसके लिये अनकुस मालूम होता था। वह समझते थे, मार्क्स जो भी लिख देगे, वह बहुमूल्य होगा और उसके जल्दी प्रकाशित होनेपर फल भी जल्दी प्राप्त होने लगेगा। उन्होंने एक बार मार्क्सको लिखा था : “अपनी कृतिके बारेमें इतनी अधिक साधानी मत रखिये। साधारण जनताके लिये वह हर तरहसे बहुत ही अच्छी होगी। सबसे बड़ी बात यह है, कि इसे समाप्त करके प्रकाशित कर दीजिये। उसकी कमियोंको जो आप देख सकेंगे, उनका पता गढ़े किसी तरह भी नहीं पा सकेंगे। जिस तरह एंगेल्स अपनी रायको इस तरह दोहराते रहते, मार्क्स भी उसी तरह उनके माननेसे इन्कार किया करते। दिन-प्रतिदिनके कामके लिये एंगेल्स कहीं अधिक सद्दाम थे। मार्क्सने एक बार उनके बारेमें कहा था : “एक बिल्कुल गमीर विश्वकोष दिन या रातके किसी घटेमें काम करनेके लिये तैयार, लिखनेमें तेज और शैतानकी तरह सक्रिय।”

१८५० ई० की शरदमें “नोए राहनिशे रिव्यू” के बन्द हो जानेपर लन्दनमें दोनों मित्र एक नई योजना बना रहे थे। मार्क्सने दिसम्बर १८५३ में एंगेल्स को लिखा : “अगर हमने लन्दनमें अग्रेजी सव्यवहार (पत्र-व्यवहार) का काम ठीक समय पर शुरू कर दिया होता, तो इफ समय तुम्हें मैनचेस्टरमें रहकर व्यवसायके जजालमें न पड़ना पड़ता और न मुझे कर्जोंके नीचे पिसना पड़ता।” एंगेल्सने बापकी फर्ममें जाना ही पसन्द किया था, यद्यपि यह स्थाल करके कि अनुकूल स्थिति होने पर मैं फिर उस “सारे व्यापार” को सदाके लिए छोड़कर लिखने-पढ़नेके काममें लग जाऊँगा। १८५४ ई० के बसन्तमें एंगेल्सने काम छोड़कर लन्दन जानेके लिए विचार भी किया, लेकिन मार्क्सकी आर्थिक स्थिति-

को देखकर यह निर्णय करनेमें जरा भी आनाकानी नहीं की, कि मुझे अपने मित्र और उनके अनमोल कार्यमें सहायता करनेके लिए इस जूयेको बराबरके लिए अपने कन्धेपर रखना होगा। एंगेल्सने इस महान् त्यागका अन्तिम और पक्का संकल्प इसी समय किया।

ओग चलकर एंगेल्स अपने फर्ममें पार्टनर (भागीदार) बन गये, किन्तु अभी वह फर्मके एक नौकर भर थे और चितना चाहते थे, उतनी मार्क्सकी सहायता नहीं कर पाते थे। लेकिन, पाँच पौँड और दस पौँड के नोट वह बराबर मार्क्सके पास भेजा करते थे। पीछे तो उनकी सहायतायें सौ पौँडके नोटमें बराबर मैनचेस्टरसे लन्दन आया करती थीं। जब दोनों ही एक प्राण और दो शरीर थे, तो मार्क्स या जेनीको उनसे अपनी स्थिति छिपाये रखनेकी कोई आवश्यकता नहीं थी। उस समय ये पत्र दिन-प्रतिदिन चलते उनके दुःख और चिन्ताके बाह्य प्रकाश थे, लेकिन, आज वह हमारे लिए सबसे ठोस ऐतिहासिक अभिलेख हैं। मार्क्स जीवनकी छोटी-छोटी बातोंमें व्यवहारपट्ट नहीं थे, यह हम बतला आए हैं। इसके कारण भी कष्टोंकी परम्परा कम नहीं हो पाती थी। एक समय मार्क्सने समझा, कि हमने परिवारकी स्थितिको ठीकठाक कर लिया, लेकिन वस्तुतः जेनीने चिन्ता न होनेके लिए कुछ उधारोंको छिपा रखा था। फिर एकाएक एक दिन, वह सामने चले आये, और फिर चिन्ता बढ़ चली। इसे मार्क्स अपने मित्र से कहते “बियोंकी बेबकूफी” जिन्हें हमेशा एक पगड़की जल्लरत होती है।

एंगेल्स अपनी कमाईके पैसोंकी ही बलि देनेके लिये तैयार नहीं थे, बल्कि दिनभर के आफिस और शेयर-बाजारके कामसे चूर होकर जब वह शामको घर लौटते, तो फिर रातको बहुत देर तक “ट्रिव्यूनके” लिए मार्क्सके लेखोंको ठीक करते, क्योंकि मार्क्सका अंग्रेजी भाषा पर उतना अधिकार नहीं था। सैनिक विज्ञान एंगेल्सका अपना विषय था, भाषाओंके अध्ययनकी ओर भी उनकी विशेष रुचि थी, लेकिन वह “विद्या विद्याके लिए” के ख्यालसे नहीं, बल्कि जिस महान् कार्यके लिये उन्होंने अपना जीवन दे रखा था, उसमें उनका उपयोग था, इसीलिए वह उनके सदा गम्भीर विद्यार्थी बने रहे। जब उन्होंने

रुसी आदि स्त्राव माषाओंका पढ़ना आरम्भ किया था, तो इसका कारण बतलाते हुए कहा था : हममें से कमसे कम एक आदमीको उन जातियोंकी भाषाओं, इतिहास, साहित्य और सामाजिक संस्थाओंका अध्ययन करना चाहिए, जिनसे हमें शायद जल्दी ही काम पड़े । इसी तरह चुदूर पूर्वके कामके लिए उन्होंने अरबी और फारसी पढ़ी । अरबीकी चार हजार घातुओंने उन्हें डरा दिया, लेकिन फारसी उनके लिए लड़कोंका खेल थी और उन्होंने उसमें हाथ लगाते ही कह दिया, कि तान सप्ताहमें मैं इसपर अधिकार कर लूँगा । फिर वह जर्मानिक माषाओंके ऊपर पड़े । उन्होंने उस समय लिखा था : “अब मैं उल्फिलस (गाथ पादरी) में आँखों तक छूव गया हूँ । मुझे इस सौरी गाथिको सचमुच ही बहुत पहले ही खत्म कर लेना चाहिये था ।... मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता है, कि मैं इसे उससे कहीं अधिक जानता हूँ, जितना कि मैं समझता था । एक अच्छे दोषके सहारे दो हप्ते में मुझे इसके बहुत भीतर पहुँच जाना चाहिए । फिर मैं प्राचीन नार्डिक और प्राचीन सैक्सनकी ओर जाऊँगा, जिनके साथ सदासे ही मेरा कुछ परिचय था ।” जब आयर्लैंडका प्रश्न उठ खड़ा हुआ, तो उनका ध्यान उसकी भाषा गैलिकी ओर गया । इन्टर्न-शनलके युगमें अधिवेशनोंके समय भाषाओंका ज्ञान उन्हें बड़ा सहायक सिद्ध हुआ । इसीसे कोई कह उठा “एंगेल्स बीस माषाएँ हक्का सकता है ।” जब बहुत उच्चेजित हो जाते, तो एंगेल्सके बोलनेमें थोड़ी-थोड़ी हक्कलाहट आ जाती थी ।

सैनिक विज्ञानके अध्ययन के ब्रति जो उनका शौक था, इसके कारण लोगोंने उन्हें “जेनरल” का नाम दे दिया था । सैनिकोंकी संयुक्त भावनाके बह प्रशासक नहीं थे और कहते थे, कि भीड़का यह बहुत ही जुगुप्सनीय रूप है । उन्होंने यह भी कहा था : “ये सैनिक एक दूसरेसे विषेषकी तरह धृणा करते हैं, और जरा भी विशेषता होनेपर स्कूली लड़कों की तरह एक दूसरेके साथ ईर्झा करते हैं । लेकिन जहाँ तक असैनिकोंका सम्बन्ध है, उनके विस्त्र वह एक आदमीकी तरह खड़े हो जाते हैं ।” सैनिक विज्ञान और सैनिक संगठनका उन्होंने बड़े विस्तारके साथ गम्भीर अध्ययन किया था, सैनिक और नवीनतमसैनिक टेक्नीकों भी इदयंगत की थी : प्रारम्भिक दाव-पैंच, मोर्चावन्दी, पुल-निर्माण,

खाई खोदना, हर तरहके हथियारोंका इस्तेमाल, भिन्न-भिन्न प्रकारके हथियारोंका विवरण, सेनाके लिए सप्लाई (पूर्ति) व्यवस्था, अस्पताल-व्यवस्था तथा दूसरी बहुत सी बातोंका अध्ययन किया था । उन्होंने नेपियर (अंग्रेज) जोमिनी (फ्रेंच), क्लाउजेविल्ज (जर्मन) जैसे महान् सैनिक इतिहासकारोंके ग्रंथोंका भी आबोपांत पारायण किया था ।

इतनी प्रतिभा और योग्यता रखते हुये भी एंगेल्सने अपनेको पीछे रखा । वह इसे ही अपना सबसे बड़ा सौभाग्य मानते थे, कि चालीस वर्षों तक वह अपने प्रिय मित्र मार्क्सके साथ-साथ अभिन्न तौरसे रहे । मार्क्सके बाद एक दशान्वदीसे ऊपर दुनिया के मजदूर-वर्गके आनंदोलनमें उन्होंने अपनी प्रतिभाका पूरा इस्तेमाल किया, और इस बक्त वह विश्वके मजदूरोंके सर्वोंपरि नेता माने जाते थे ।

३. भारत पर मार्क्स

“न्यूयार्क ड्रिव्यून” में मार्क्सने भारतके बारेमें जो लेख लिखे और एंगेल्स-के लिये लिखे पत्रोंमें भारतका जिस तरह वर्णन किया, उससे पता लगता है, कि मार्क्सका भारत-सम्बन्धी अध्ययन कितना गम्भीर था और भारतकी स्वतन्त्रता से वह कितने खिल तथा उसके भविष्यके प्रति कितने आशावान थे । इन्हें लिखनेमें मार्क्सने स्याही-कलम और जहाँ-तहाँसे सुनी-सुनाई बातें पर्याप्त नहीं समझी थी, बल्कि ब्रिटिश म्युजियममें अंग्रेजोंने जो सामग्री भारतके बारेमें जमा कर रखी थी, उसका पूरी तौरसे इस्तेमाल किया था ।

आज भी हमारे यहाँ मौके-बेमौके गाँवके गणराज्य या पंचायती राज्यकी महिमा गाई जाती है, लेकिन उस गणराज्यकी क्या रूप-रेखा थी, इसका हमें पता नहीं है । मार्क्सने अपने २५ जून १८५३ के “ड्रिव्यून” में छुपे लेखमें पार्लियामेन्टमें पेश होनेवाली रिपोर्टपर लिखा था :

(१) ग्राम गणराज्य का स्वरूप—“गाँव भौगोलिक तौरपर देखनेपर कुछ सौ या हजार एकड़ आबाद या परती जमीनका ढुकड़ा है । राजनीतिक तौर से देखनेपर वह कस्ता या संगठित नगर-सा मालूम होता है । उसके बाबायदा निम्न नौकर और अफसर होते हैं :

पटेल (या गाँवका मुखिया)—गाँवके कामोंका साधारण तत्वावधान इसके ऊपर रहता है । वह गाँववालोंके भूगङ्गोंका फैसला करता, पुलिसकी देख-भाल करता, और गाँवके भीतर कर बसून करनेका काम करता है । यह काम ऐसा है, जिसे अपने वैयक्तिक प्रभाव, व्यक्ति तथा परिस्थितिसे सूक्ष्म परिचयके कारण वह बहुत अच्छी तरहसे करनेकी ज्ञमता रखता है ।

पटवारी (कर्गम्)—खेतों तथा उससे सम्बन्ध रखनेवाली हर बातका लेखा रखता है ।

चौकीदार—गाँवके जुमों, अपराधोंका सुराग लगाता है, और जानेवाले यात्रियोंकी रक्षा करते हुए एक गाँवसे दूसरे गाँवमें पहुँचाता है ।

प्रहरीका काम ज्यादातर गाँवके भीतरसे सम्बन्ध रखता है । उसके कामोंमें फसलकी रखवाली और उसके तौलनेमें सहायता देना है ।

सीमापाल गाँवकी सीमाकी रक्षा करता है, और विवाद होने पर उसके बारेमें गवाही देता है ।

जलपाल तालाब और नहरों की देख-भाल करता है, और खेतीके लिये पानी बांटता है ।

ब्राह्मण गाँवके लिये पूजा करता है ।

अध्यापक गाँवमें बच्चोंको बालूके ऊपर लिखना-पढ़ना सिखाता है ।

ज्योतिषी साइत बतलाता है, आदि ।

आम तौरसे ये नौकर और कर्मचारी हर गाँवके संगठन में मिलते हैं, लेकिन देशके किसी-किसी भागमें इनकी संख्या कम होती है, और ऊपर बतलाये कर्तव्यों और अधिकारोंमें से एकसे अधिक एक ही आदमीके ऊपर होते हैं । और कहीं-कहीं उपरोक्त व्यक्तियोंकी सख्ता और अधिक होती है । इस तरहकी सीधी-सादी सरकारके श्रद्धीन देशके निवासी अज्ञात कालसे रहते चले आये हैं । गाँवकी सीमा शायद ही कभी बदली हो । यद्यपि कमी-कमी गाँवोंको चोट पहुँची, युद्ध, अकाल या महामारीने उन्हें बरबाद किया है, किन्तु वही सीमा, वही स्वार्थ और बल्कि वही परिवार युगोंसे चलते आ रहे हैं । राज्योंके टूटने-फूटनेकी ग्रामीणों को कोई पर्वाह नहीं । जब तक गाँव अखंड है, तब तक उन्हें

इसकी चिन्ता नहीं, कि वह किस शासकके हाथमें हस्तान्तरित किया गया अथवा कौन उसका राजा बना—उसकी आन्तरिक अर्थनीति अछूती बनी रहती है। पटेल अब भी गाँववालोंका मुखिया है और वह अब भी गाँवका छोटा मुसिफ, मजिस्ट्रेट और कलेक्टर—लगान जमा करनेवाला है।

आजसे १०० वर्ष पूर्व, गदरसे चार साल पहिले “भारतमें बृटिश शासन” नामक अपने लेखमें “न्यूयार्क-ट्रिव्यून” २५ जून १८४३में उपरोक्त पंक्तियोंको उद्धृत करते हुये मार्क्सने लिखा था—“यह छोटा अचल सामाजिक संगठन अब बहुत अंशोंमें नष्ट हो चुका या हो रहा है, किन्तु इसका कारण बृटिश कर-उगाहनेवाले और बृटिश सिपाही उतने नहीं हैं, जितने कि बृटिश माप-इंजन और बृटिश मुक्त-व्यापार।”

(२) ग्राम गत्याराज्यके कारण अकर्मण्यता—उसी सन्के १४ जूनके अपने एक पत्रमें मार्क्सने भारतके ग्राम-संगठनके बारेमें एंगेल्सको लिखा था—

“एसियाके इस भागमें इस तरहकी जो गति-शून्यता—बाहरी राजनीतिक सतहपर जो लक्ष्यरहित कुछ गति सी भले ही दिखलाई पड़ती हो—एक दूसरे पर अवलम्बित दो परिस्थितियोंके कारण है : (१) सार्वजनिक काम (तालाब, नहर आदिका बनाना) केन्द्रीय सरकारके जिम्में था, (२) इसके अतिरिक्त सारा साम्राज्य, कुछ थोड़ेसे शहरोंको छोड़कर, ऐसे गाँवोंसे बना है, जिनका अपना एक चिल्कुल अलग संगठन है, और उनकी अपनी एक खुद छोटी सी दुनिया है :

“ये काव्यमय गत्याराज्य, जो पड़ोसी गाँवोंसे सिर्फ अपने गाँवकी सीमाओं-की ही तत्परतासे रक्षा करना जानते थे, अब भी हालमें अंग्रेजोंके हाथोंमें आये उत्तरी भारतके कितने ही भागोंमें काफी सुरक्षित रूपमें पाये जाते हैं। मैं नहीं समझता, एसियाई निरंकुशताकी गति-शून्यताके मजबूत कारण ढूँढ़नेके लिये इक्सी और चीजकी जरूरत है।...अंग्रेजों द्वारा इन पुराने अचल रूपोंका तोड़ा जाना भारतके यूरोपीकरणके लिये आवश्यक बात थी। उगाहनेवाला अकेला इसमें सफलता नहीं प्राप्त कर सकता था। गाँवोंके अपने स्वावलम्बी स्वरूपको दूर करनेके लिए उनके पुराने उद्योग-धन्वेका बरवाद होना जरूरी था।”

भारतीय मानव-समाजकी सहस्राब्दियोंसे चली आती हस तरहकी निश्चलता, प्रवाह-शून्यता—जो पहिली सदी तक पाई जाती थी—ही वह कारण है, जिससे भारतीय मानव ग्रामभक्तिसे उठकर देशभक्ति तक नहीं पहुँच सका और न सामूहिक तौरसे ब्राह्मी दुश्मनोंका मुकाबिला कर सका। इस ग्राम-पंचायतने शिल्पियोंको सहस्राब्दियों पूर्वके ब्रह्मलो रुखानियोंसे, किसानोंको हँसुओं फालोंसे चिपट रहने दिया। शासकवर्ग जानता था, कि यह ग्राम-संगठन भारतीयका मर्म-स्थान है, वहाँ पर पड़ी चोटको वह सहन नहीं कर सकता, मुकाबिला किये बिना नहीं रह सकता, इसीलिये उसने उसे नहीं छेड़ा, जैसेका-तैसा रहने दिया और इसी पर भारतीय ग्रामीण बोल उठे—

कोउ नृप होइ हमे का हानी ।

(तुलसीदास)

यदि वह भारतीय ग्राम्य-गणराज्य पहले ही दूटकर विस्तृत सगठनमें बद्ध हुआ होता, तो निश्चित ही साधारण जनता शासकोंकी निरकुशता का मुकाबिला करने की ज्यादा क्षमता रखती, फिर जिस स्वेच्छाचारिताको हम भारतके पिछले दो हजार वर्षोंके इतिहासमें देखते हैं, क्या वह रह पाती ?

(३) सामाजिक परिवर्तनका आरम्भ

(क) आक्रमणोंकी क्रीड़ा-भूमि—सहस्राब्दियोंसे भारतीय समाज मुक्त-प्रवाह नहीं, प्रवाह-शून्य नदीका छाड़न हो गया है। आजभी धार्मिक हिन्दू गणाकी छाड़नमें नहाना बुरा समझता है, वह उसके लिये मुर्दाके साथ स्नान, पुण्य छीननेवाला स्नान है। वैसे भी ऐसे पानीके पाससे शुजरनेपर नाकमें सड़ौद की बू आने लगती है। भारतीय मानव समाज १६ वीं सदी तक ऐसा ही छाड़न था। उसे अपने पुराणपनपर अभिमान रहा। उसने बहते पानीके समाजमें लाने की ओर ध्यान तक नहीं दिया।

मार्क्सके शब्दोमें “सारे यहयुद्ध, विदेशी आक्रमण, क्रान्तियाँ, विजय, अकाल—चाहे जितने ही तीव्र और नाशकारी रहे हों, पर वह (भारतमें) सतहसे भीतर नहीं झुस सके !”

क्षित परिवर्तनसे दुनिया बहुत पहिले गुजर चुकी थी, भारतको उसे अपनाने के लिये मजबूर करना अंग्रेजोंका काम था । अंग्रेज उन विजेताओंकी भाँति भारतमें नहीं आये थे, जो भारतमें आकर भारतीय बन भारतके हो गये—वह यूनानियों, शकों, तुकों, सुगलोंकी भाँति हिन्दू नहीं बन गए । अंग्रेजोंमें पहिलेके विजेताओंसे अनेक विशेषतायें थीं । दूसरे विजेता विजेता जरूर थे, किन्तु साथ ही वह सभ्यतामें उस तलपर नहीं पहुँचे हुए थे, जिसपर हिन्दू पहुँच जुके थे; इसलिए इतिहासके सनातन नियमके अनुसार राजनीतिक विजेता विजित जाति की श्रेष्ठ सभ्यता द्वारा पराजित हो गये । अंग्रेज हिन्दू सभ्यतासे कहीं ऊँची सभ्यताके धनी थे, इसलिए हिन्दू विजित जाति उन्हें अपनेमें हजम नहीं कर सकते थे । पीढ़ियों तक वह यही कोशिश कर सकते थे, कि विजेताकी सभ्यतासे दूर-दूर रहे; लेकिन, यह मूँह हठ कितने दिनों तक चल सकता था ? आज हम देख रहे हैं, भारतका वह पुराणपन कितना हटता जा रहा है ।

(ख) अंग्रेज विजेताओंकी विशेषता—एक और बात भी है, अंग्रेज भारत में अंग्रेज राजवंश कायम करने नहीं आये थे । विजय करके भारतके शासनको पहले-पहल अपने हाथ-में लेनेवाला कोई राजा था उसका सेनापति नहीं था; वह तो था ऐसे सौदागरोंका गिरोह, जो अपनी पूँजीपर अधिकसे अधिक मुनाफ़ा कमाना चाहते थे । यह बिलकुल ही नई तरहकी विजय थी, जिसमें विजेता राजवंश स्थापित नहीं करना चाहता था । इस्ट इंडिया कम्पनी चाहती थी, और भारतपर इसलिए शासन कर रही थी, कि वह अपने भागीदारोंको अधिकसे अधिक नफा बांटे । इससे और अधिक बदि कोई उसका मतलब था, तो यही कि भारतसे अधिकसे अधिक अंग्रेजोंका भरण-पोषण हो । यह काम सुगलों और शकोंकी कर उगाहनेकी नीतिसे नहीं हो सकता था । सुगलों-शकोंके अपने खर्चके लिए लिया भी रुपया फिर भारतमें ही जीवनोपयोगी चीजोंके खरीदनेमें बँट जाता था, इसलिए वह एक तरहसे देशके भीतर विनिमयके रूपमें चक्कर काटता रहता था । अंग्रेजों द्वारा एक बार ली गई सम्पत्ति फिर लौटकर यहाँ आनेवाली न थी । इसके लिए जरूरी था, कि अंग्रेज स्वदेशी हो गए विजेताओंसे धनका ज्यादा शोषण करें ।

संचेपमें अंग्रेजोंको अपने सारे शासकवर्ग-पैंजीपति वर्गके स्वार्थके लिए भारतका दोहन करना था—पहिले व्यापारसे, फिर व्यापार, शासन और पैंजीवादीय शोषण (कन्चे-एकके मालके क्रय-विक्रय) से। इस भारी शोषणमें ग्रामीण, गणराज्य बचाया नहीं जा सकता था; चाहे उसका कवित्वमय रूप तलालीन और आधुनिक कितने ही भावुक व्यक्तियोंको बहुत आकर्षक मालूम होता रहा हो, और कौन सा अतीत है, जो आकर्षक नहीं होता !

(ग) अंग्रेजी शासनका परिणाम—सामाजिक क्रान्ति—हाँ, तो हजारों वर्षोंके इस भारतीय छाड़नके लिये अंग्रेजोंने जो सबसे बड़ा काम किया, वह या उसका बांध तोड़ना। उन्होंने भारतीय चर्खोंको तोड़ डाला, पुराने कर्घोंको ब्रिदा कराया, अपने यहाँ और यूरोपसे भी पुराने चखाँ-कर्घोंको निकाल बाहर किया, फिर गगाको उलटी बहाया और मार्क्स्टके शब्दोंमें “कपासकी मातृभूमिमें कपासके कपड़ोंकी बाढ़ ला दी। १८१८ से १८३८ ई० में ब्रेट ब्रिटेनसे भेजा जानेवाला कपड़ा ५२०० गुना बढ़ गया। १८३० ई० में भारतमें आया अंग्रेजी मखमल मुश्किलसे दस लाख गज था। लेकिन, इसके साथ ही ढाकाकी आवादी ढेढ़ लाखसे बीस हजार रह गई। अपने शिल्पोंके लिये जगद्-विख्यात भारतीय नगर ही नहीं बर्बाद हो गये, बल्कि बृद्धि भाप और विज्ञानने सारे हिन्दुस्तान में कृषि और शिल्प-उद्योगके मेलको जड़-मूलसे उखाड़ फेका।...भारतके परिवार-समुदायका आधार था घरेलू उद्योग—हाथकी कताई, हाथकी बुनाई, खेती-में हाथकी जुताई—जिससे वह स्वावलम्बी बना हुआ था। अंग्रेजोंके भीतर दखल देनेका क्या फल हुआ ?—उसने कातनेवाले को लंकाशायरमें ला रखा, और जुलाहेको बगालमें, या हिन्दुस्तानी कमकरो और जुलाहो दोनों ही का सफाया कर दिया। इन छोटे-छोटे अर्ध-बर्वर, अर्ध-सव्य-समुदायोंको उनकी आर्थिक नीवको उड़ाकर, छ्वस्त कर दिया, और इस प्रकार सबसे बड़ी, और सच पूछिये तो ऐसियामें कमी भी न सुनी गई, एकमात्र सामाजिक क्रान्तिको पैदा किया।

(घ) ध्वसात्मक काम जरूरी—आज, मनुष्यका हृदय लिन जरूर होगा, जबकि वह इन अग्नित पितृसत्ताक शान्तिपूर्ण सामाजिक संगठनोंको इस

प्रकार तितर-नितर हो .. बिखरते देखता है, उन्हें कष्टोंके समुद्रमें फेंके जाते, और अवयवोंके साथ ही अपनी सम्यताके पुराने रूपका खोते देखता है। हमें भूलना नहीं चाहिये, यह काव्यमय ग्राम्य-संगठन, चाहे देखनेमें कितने ही मारुप जान पढ़ें, लेकिन यही सदासे पूर्वी स्वेच्छाचारकी ठोस बुनियाद रहे हैं। इन्होंने मानव-मस्तिष्कको छोटे-से-छोटे दायरेमें बन्द रखा, और मिथ्या-विश्वासका चुप-चाप मान लेनेवाला हथियार बना उसे पुराने नियमोंका गुलाम बनाया, और उसे सभी महान् ऐतिहासिक (इतिहासकी प्रगतिसे उत्पन्न) शक्तियोंसे बंचित रखा। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये, कि एक तुच्छ, छोटी सी जमीनकी ढुकड़ीमें केन्द्रित वार्वरिक ममता साम्राज्योंके घंस, अकथनीय नृशंसताके नगन-नृत्य, बड़े-बड़े शहरोंकी जनताकी हत्याका कारण हुआ।.... हमें नहीं भूलना चाहिये, कि इस अपमानजनक, कीड़े-मकोड़ोंके मुर्दा जीवन, निर्जीवसे अस्तित्व-ने, अपने विरुद्ध, जंगली, निरुद्देश्य, सत्यानाशी असीम शक्तियोंको उत्तेजना दी, और खुद मनुष्य-हत्याको हिन्दुस्तानमें धार्मिक कृत्य बना दिया। हमें नहीं भूलना चाहिये, कि भारतकी यह छोटी-छोटी जमातें जाति-भेद और दासताके रोगमें फँसी हुई थीं। उन्होंने मानवको ऊपर उठा परिस्थितियोंपर विजयी बनने-की जगह बाहरी परिस्थितियोंका गुलाम बनाया, उन्होंने स्वयं विकसित होने-वाली सामाजिक स्थितिको अपरिवर्तनशील रख प्रकृतिके हाथकी कठपुतली बना दिया, इस प्रकार प्रकृतिकी पाशविक प्रजाको स्थापित किया, और प्रकृतिके राजा मानवका इतना अधःपतन कराया, कि वह बानर हनूमान् और कपिला गायकी पूजामें घुटने टेकने लगा।

यह सच है, कि हिन्दुस्तानमें इंगलैंड जो सामाजिक क्रांति ला रहा है, उसके पीछे एक बहुत ही नीच उद्देश्य छिपा हुआ है। किन्तु, सवाल यह नहीं है, सवाल तो है—क्या एसियाकी सामाजिक स्थितिमें क्रांति लाये बिना मानवजाति अपने ध्येयको पूरा कर सकती है? अगर नहीं, तो इंगलैंडने चाहे जो भी अपराध किया हो, किन्तु उक्त क्रांतिको लानेमें उसने इतिहासके अनजाने हथियारका काम किया।

एक पुरातन जगत्के दूर-फूर्कर गिरनेका दर्दनाक नजारा चाहे जितनी भी

कहुता हमारे व्यक्तिगत भावोंमें पैदा करे, किन्तु ऐतिहासिक दृष्टिसे देखनेपर हमें गोयथेके शब्द याद आते हैं—

इसका हमें सोच करना क्या लिप्साका स्वभाव ही ऐसा, बढ़ती चले अयास, और नहीं क्यों तैमूरी तलवार बनाती कोटि जनोंको क्रूर कालका ग्रास ?

(४) भारतीय समाजकी निर्वलताये—११० वर्ष हो गये, जबकि २५ जून १८५३ ई० मार्क्सकी यह पक्षियों पहिले पहल प्रकाशित हुईं । इनको पढ़नेसे मालूम होता है कि इतनी दूर बैठकर ज्ञानके साधनोंके बहुत अभावके होते भी उनकी पैनी दृष्टि भारतीय समाजकी सतहसे भीतर कितनी छुप सकी थी । उन्होंने क्रूरताके साथ हमारे उस लुट्टे सोनेके गढ़के लिये दो आँसू बहाना काफ़ी नहीं समझा, बल्कि बतलाया कि हमारा उस दयनीय दशाका कारण क्या है । उन्होंने यह भी बतलाया, कि उस पुरानी सामाजिक व्यवस्थाको नष्ट होनेसे बचानेकी जरूरत नहीं है, जैसा कि कुछ पहिले गाँधी और अब गाँधी-वादी भावे और जयप्रकाश दिलसे या दिखावेके लिये कह रहे हैं, बल्कि उससे एक प्रवाहशील उन्मुक्त समाजके निर्माणका जो अवसर मिला है, उससे हमें लाभ उठाना चाहिये ।

उपरोक्त लेखसे डेढ़ महीने बाद, ८ अगस्त १८५३ को “न्यूयार्क ट्रिब्यून” में मार्क्सका “भारतमें बृद्धि-शासनके होनेवाले परिणाम” नामसे दूसरा लेख छपा । जिसमें उन्होंने भारतीय समाजके भविष्यपर प्रकाश डाला, यहाँ उसके कुछ उद्धरण दिये जाते हैं—

क्या जात थी, जिसके कारण भारतपर अँग्रेजोंका प्रभुत्व स्थापित हुआ ? मुगल सूबेदारोंने मुगल शासन-केन्द्रको तोड़ा । सूबेदारोंकी ताकतको मराठोंने तोड़ा । मराठोंकी ताकतको अफगानोंने तोड़ा । और जब यह सभी सबके खिलाफ़ लड़ रहे थे, तब अँग्रेज दौड़ पड़े, और वह सबको दबानेमें सफल हुये । भारत वह देश है, जो हिन्दू-मुसलमानोंमें ही बैटा नहीं है, बल्कि वह कबीलों-कर्वालों जातों-जातोंमें बैटा हुआ है । उसके समाजका ढाँचा एक तरहके ऐसे संतुलनपर आधारित था, जो उसके सभी व्यक्तियोंके बीच साधारण विखराव और मनमुखी-पनका परिणाम था । इस तरहका देश, इस तरहका समाज, क्या पराजित होनेके

ऐये ही नहीं बना था ? चाहें हिन्दुस्तानके अतीत इतिहासको हम न भी जानते; किन्तु, क्या यह एक जबर्दस्त अविवादास्पद बात नहीं है, कि इस क्षण भी भारत अँग्रेजोंकी गुलामीमें भारत-खर्चपर रखी एक भारतीय सेना द्वारा जकड़ा हुआ है । फिर, भारत पराजित होनेसे बच कैसे सकता था ? उसका सारा अतीत का इतिहास अगर कोई चीज़ है, तो लगातार पराजयोंका इतिहास है, जिनसे कि वह शुजरा है । भारतीय इतिहास कम-से-कम जात इतिहास, कोई इतिहास नहीं है । जिसे हम उसका इतिहास कहते हैं, वह उन्हीं लगातार आनेवाले आक्रमणकारियोंका इतिहास है, जिन्होंने निष्क्रिय अपरिवर्त्तनशील समाजकी निश्चेष्टताकी मददसे अपने साम्राज्य कायम किये...।

(क) अँग्रेजी शासनके दो काम—“भारतमें अँग्रेजोंको दो काम पूरे करने हैं—एक ध्वंसात्मक, दूसरा पुनरुज्जीवक—पुराने एसयाई समाजका ध्वंस और एसियामें पाश्चात्य समाजका भौतिक शिलान्यास ।

अँग्रेजोंने देशी (ग्राम्य) समाजको तोड़कर, देशी उद्योग-धन्धेंको जड़-मूल-से उखाड़कर देशी समाजमें जो कुछ महान् और उच्च था, उसे जमीनके बराबर करके, अपने ध्वंसात्मक कामको पूरा किया । ध्वंसेके ढेरमें पुनरुज्जीवनका काम आज मुश्किलसे दिखलाई पड़ता है, तो भी वह आरम्भ हो गया है ।

“आज महान् मुगलोंके शासनसे भी ज्यादा संगठित और विस्तृत भारतकी राजनीतिक एकता पुनरुज्जीवनके लिये सबसे पहली आवश्यक चीज़ है । अँग्रेजी तलवारके द्वारा जबर्दस्ती लादी गई यह एकता अब बिजलीके टेलीग्राफ द्वारा और मजबूत तथा चिरस्थायी बनाई जायगी । परेड सिखानेवाले अँग्रेज सर्जेन्ट द्वारा संगठित और शिक्षित देशी सेना भारतकी स्वतः सुक्तिके लिये तथा पहिले ही आनेवाले विदेशी आक्रमणकारीका शिकार बननेके लिये आवश्यक साधन है । स्वतंत्र प्रेस—जिससे छः एसियाई समाज पहले-पहल परिचित हुआ है, और जिसका प्रबन्ध मुख्यतः हिन्दुओं और यूरोपियनोंकी सभिलित सन्तानोंके हाथमें है—पुनर्निर्माणके बास्ते एक नया और बहुत ही शक्तिशाली हथियार है ।...भारतीयोंमें संख्यामें कम ही सही कलकत्तामें अँग्रेजोंकी देख-रेखमें

शिक्षा पाकर एक ताजा वर्ग उत्पन्न हो रहा है, जो कि शासन-संचालनकी कला-में निपुण और यूरोपीय विज्ञानसे अभिज्ञ है। भापने भारतका यूरोपसे यातायात नियमित और द्रुत कर दिया है, उसके प्रधान बन्दरगाहोंके इंगलैंडके दक्षिण-पूर्वके बन्दरगाहोंके साथ जोड़ दिया है, और उसकी उस अलग-थलगपनकी स्थितिको हटा दिया है, जो कि उसकी प्रवाह-शून्यताका कारण थी। वह समय दूर नहीं, जबकि रेलों और बाष्पपोतोंकी सम्मिलित सहायतासे इंगलैंड और भारतके बीचकी समयमें नापी जानेवाली दूरी घटकर आठ दिन रह जायेगी, और जब कि गाथाओंमें सुना जानेवाला यह देश, इस प्रकार यथार्थतः पाश्चात्य जगत्का एक भाग बन जायगा।

(ख) स्वार्थसे मजबूर—‘ग्रेट-ब्रेटेनके शासकवर्गका अब तक भारतकी प्रगतिमें सिर्फ आकस्मिक चलता-फिरता एक खास तौरका स्वार्थ था। सामन्तवर्ग भारतको जीतना चाहता था, थैलीशाही उसे लूटना चाहती थी, और मिल-शाही सबकी गलाकट्टी कर रही थी। लेकिन, अब अवस्था बदल गई है। अब मिलशाही (पूँजीवाद) को पता लग गया है, कि भारतको उत्पादक देशमें परिणाम करना उसके लिये एक आवश्यक बात है, और इसके लिये यह जरूरी हो गया है, कि भारतके पास सींचने और भीतरी यातायातके साधन प्रस्तुत किये जायें। अब मिलशाही सारे भारतमें रेलोंका एक जाल बिछाना चाहती है। और वह ऐसा करके रहेगी।...’

मै जानता हूँ, ऑग्रेज मिलशाही भारतमें रेले सिर्फ इसलिये बिछाना चाहती है, कि कम खर्चमें कपास और दूसरे कच्चे मालको अपने कारखानोंके लिये प्राप्त कर सके। लेकिन, जब एक बार ऐसे देशमें भरीनरी तुमने चला दी, जहाँपर लोहा और कोयला है, तो उनके निर्माण (उद्योग) से तुम उसे रोक नहीं सकते।...भारतीयोंकी मानसिक योग्यताके बारेमें केम्बेल्सको माननेके लिये बाध्य होना पड़ा कि भारतीयोंकी बड़ी-बड़ी संख्या एक बड़ी औद्योगिक शक्ति रखती है, वह पूँजी जमा करनेकी क्षमता दिमागमें गणित-जैसी स्पष्टता, आकड़ों और पक्के विज्ञानके योग्य विच्चित्र प्रतिभा रखती है। स्थापित होनेवाले आधुनिक दगके उद्योग-धन्वे उस खान्दानी श्रम-विभागको उठा देंगे, जिसके ऊपर

भारतीय जात-पाँत आश्रित है, और जो कि भारतीय प्रगतिमें निश्चय ही जब-दर्दस्त बाधा है।

अँग्रेजी बूज्वारी (पूँजीवादी), जो कुछ भी करनेके लिये मजबूर होंगे, उससे न जनता मुक्त होगी, और नहीं वह उसकी सामाजिक अवस्थाको आर्थिक तौर-से सुधारेगा ।...क्या पूँजीवाद (बूज्वार्जी) ने कभी भी ऐसी कोई प्रगति होने दी, जिसमें व्यक्तियों और जनताको खून और कूड़े-कर्कटमेंसे, कष्ट और अधः-पतनमें से न घसीय गया हो ?

(५) भविष्य उज्ज्वल—अँग्रेज-बूज्वारी भारतीयोंके बीच समाजके जिन नवीन तत्वोंको बो रहे हैं, उनके फलका उपमोग भारतीय तब तक नहीं कर सकेंगे, जब तक खुद इट-बुटेनमें आजके शासकवर्गको हटाकर कारखानोंके सर्वहारा आगे न आ जायें, अथवा हिन्दू खुद ही इतने मजबूत हो जायें, कि अँग्रेजी जूयेको उतार फेंकें । चाहे कुछ भी हो, कम या बेशी सुदूर कालमें यह जरूर देखनेमें आयेगा, जबकि उस महान् और मनोहर देशका पुनरुज्जीवन होगा... जिसके कोमल प्रकृतिवाले निवासियोंको... अधीनता-स्वीकृतिमें भी एक तरहका शान्त स्वाभिमान है, जिन्होंने अकर्मण्यताके रहते भी अपनी बहादुरीसे अँग्रेज अफसरोंको चकित कर दिया, जिनका देश हमारी जबानों, हमारे धर्मोंका स्रोत रहा, और जो अपने जाटोंमें प्राचीन जर्मनों और अपने ब्राह्मणोंमें प्राचीन यूनानियोंके प्रतिनिधि हैं ।

अध्याय १२

यूरोपीय स्थिति (१८५३-१८८०)

जिस वक्त मार्क्स विलिचके लड़कपन जैसे कामके विशद्द लिख रहे थे, उसी समय यूरोपीय राज्योंमें एक जबर्दस्त संघर्ष उपस्थित हुआ। रूसी जारकी शक्तिसे भयभीत होकर फ्रास और इंगलैण्डने अपने भेदभावको भुला जारको खर्ब करनेका निश्चय कर लिया। जारशाही काकेशस, क्रिमिया और दन्यूबकी भूमियें पैर पसारते हुए तुर्की भूमियों दबा रही थी। क्रिमियाका शासक सुल्तानके अधीन था। तुर्की अब इतना निर्वल हो गया था, कि जारशाहीका मुकाबिला नहीं कर सकता था। खतरा पैदा हो गया था, कि कहीं रूसी भालू कालासागरको अपनी भील न बना ले। सुल्तानके हारपर हार खानेको देखकर दोनों पश्चिमी बड़ी शक्तियोंको सीधे जारशाहीके विरोधमें खड़ा होना पड़ा। लेकिन जारशाही केवल पश्चिमी पूँजीवादी राज्योंके लिए खतरेकी ही चीज नहीं थी, बल्कि वह प्रतिक्रियावादियोंका सबसे बड़ी समर्थक और पोषक थी। हुंगरीमें क्रान्तिको असफल करनेमें रूसका हाँथ था, प्रशिया युंकर भी जारशाही बलपर फुटक रहे थे। ऐसे सामन्तवादी शक्तिशाली राज्यको यदि सर्वहारा-क्रान्तिके समर्थक मार्क्स और एंगेल्स फूटी निगाहेसे न देखते हों, तो आश्चर्य क्या ! सर्वहारा-क्रान्ति किन परिस्थितियोंमें और कैसे देशमें होगी, इसके बारेमें मार्क्सके विचार विल्कुल ठीक थे, लेकिन उन्हें यह समझनेमें गलती हुई, कि उन्हींके सिद्धान्तोंके अनुसार पूँजीवादकी कड़ी सबसे निर्वल फ्रास और इंगलैण्डमें नहीं, बल्कि रूसमें सिद्ध होगी, और वहाँके सर्वहारा तथा उनके नेता अधिक कर्मठ और दूरदर्शी सिद्ध होंगे। मार्क्सको इस वक्त जीविका चलानेके लिए “द्रिव्यूनको” लेख लिखते रहना पड़ता था, जिसके लिए विश्वकी किसी महत्वपूर्ण घटनाके तह तक पहुँचनेके लिए उन्हें बृटिश म्युजियमकी पुस्तकोंके पन्ने उलटना पड़ता था। अभी हम देख चुके हैं, कि उन्होंने इन पन्नोंके बलपर भारतकी स्थितिके बारेमें

क्या समझा था। जर्मनीमें जो क्रांति और प्रति-क्रांति हुई थी, उसके बारेमें कितने ही लेख द्रिव्यूनमें मार्क्स के नामसे छपे थे, लेकिन मार्क्स और एंगेल्स के आपसी पत्रों द्वारा यह मालूम है, कि उनके लेखक एंगेल्स थे। चार बड़ी जिल्डोंमें छपे मार्क्स और एंगेल्स के पत्र-व्यवहार पुस्तकों द्वारा लिखित और अलिखित सामग्रीपर कितना प्रकाश डालते हैं, इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं। “द्रिव्यूनके” लिये लिखे गए बहुतसे लेख छपे नहीं, और बहुत सी सामग्रीको मार्क्स प्रकाशनार्थ पूरी तौरसे तैयार नहीं कर पाए थे। यह सामग्री तब तक एमनाम पड़ी रही, जब तक कि मार्क्सवाद दुनियाके छठे हिस्से रूसमें शासक नहीं बन गया, और वहाँ “मार्क्स-एंगेल्स प्रतिष्ठान” के नामसे एक बड़ी संस्थाने इस सारी सामग्रीको कई जिल्डोंमें प्रकाशित नहीं कर दिया। उनके लेख “राइनिशे जाइटंग”, “नोये राइनिशे जाइटंग”, “नोये राइनिशे रिव्यू”, “न्यूयार्क द्रिव्यून” आदि एक दर्जनसे अधिक पत्र-पत्रिकाओंमें विखरे पड़े थे, जिनको मास्कोके उक्त प्रतिष्ठानने सुसम्पादित करके प्रकाशित किया। “नोये राइनिशे जाइटंग” ने अपनेको दास बनानेवाली जारशाहीके प्रतिपोलोंके राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्षका समर्थन किया, फिर इतालियन और हुंगेरियनके स्वतंत्रता-आन्दोलनमें भी उसी तरह खुलकर उनका पक्का लिया, और साथ ही यूरोपीय प्रतिकांतिके सबसे जबर्दस्त दुर्ग रूसी जारके स्थिलाफ अपने भावोंको खुलकर कहा। यद्यपि, पीछे जब मालूम हुआ, कि इंगलैंड सबसे ज्यादा शक्ति-शाली प्रतिक्रियावादी राज्य है, तो उन्होंने इस बातकी धोषणाकी कि इंगलैंडकी शक्तिको छिन्न-भिन्न करनेके लिए एक विश्वयुद्धकी आवश्यकता है। विश्वयुद्ध होके रहेगा, इसे वह साम्राजी विस्तारसे जानते थे, और वह उनके मार्क्सके लीलासंवरणके ३१ वर्ष बाद हुआ भी। प्रथम विश्वयुद्धके परिणामस्वरूप वृटिश साम्राज्य निर्वल जरूर हो गया, लेकिन उतना नहीं कि वह छिन्न-भिन्न हो जाए। उस समय भारत जैसे उसके दास देश अभी राजनीतिक चेतनामें इतने आगे नहीं बढ़े थे, कि वृटिश साम्राज्यकी इस कमजोरीसे फायदा उठा अपनेको स्वतंत्र कर लेते। लेकिन, अन्तमें पहले नहीं तो दूसरे विश्वयुद्धने इंगलैंडको अत्यन्त निर्वल करके उसके राज्यको छिन्न-भिन्न करनेमें सफलता पाई। मार्क्स समयके

बारेमें, वर्षोंके गिननेमें गलती कर सकते थे, लेकिन घटनाओंके निदानमें वह कभी चूक नहीं करते थे ।

क्रिमियाके युद्धके समय मार्क्सने “एंगलो-रूसी दासता” को सबसे बड़ी दासता और सर्वहारा-क्रातिके लिए सबसे बड़ी बाधा कहा था । यूरोपकी प्रति-क्रातिमें अपनी शूद्धन छुसेडकर जारशाहीने जो अपूर्व प्रभुत्व और शक्ति प्राप्त की थी, क्रिमियाके युद्धसे उसके कमजोर होनेकी आशा मार्क्स कर रहे थे । लेकिन इसका यह मतलब नहीं, कि जारशाहीके शत्रुओं-फ्रास और इंगलैंडको वह शक्तिशाली देखना चाहते थे । लाखों आदमी और करोड़ों पौंड इस युद्धमें खर्च हुये, लेकिन जहाँ तक पश्चिमी पूजीवादी शक्तियोंका सम्बन्ध था, उनको इस युद्धसे अधिक अँच नहीं आई, हाँ जारशाहीका मनस्त्रा कुछ दिनोंके लिये कुंठित जरूर हो गया । सेवेस्तापोलका दुर्ग महीनों इंगलैंड और फ्रासके प्रहारको सहता रहा, और जारशाही वर्दी पहने रुसी किसान अपनी परम्परागत वीरताको दिखलाते अपना खून बहाते रहे । बड़ी मुश्किलसे और भारी ज्ञातिके बाद इंगलैंड और फ्रासने इस घस्त दुर्गपर अधिकार किया, किन्तु उसके बाद ही उन्हें “पराजित रूस” से बहासे अपनी सेना हटानेके लिये आशा लेनी पड़ी । विजयी होनेके बाद भी दोनों पश्चिमी शक्तियोंने क्यों जारशाहीका और पीछा नहीं किया ? नकली बोनापार्ट अपनी कमजोरियोंके कारण वैसा नहीं कर सकता था, लेकिन इंगलैंडने वैसा क्यों नहीं किया ? इस पहेली का हल मार्क्सने पार्लियामेन्टके बृटिश म्युजियममें वर्षोंसे जमा होती पार्लियामेन्ट रिपोर्टों, सरकारी नील-पुस्तिकाओं और दूसरे देशोंसे भेजी कूटनीतियों की रिपोर्टोंको पढ़कर किया । इन कागजोंके देखनेसे पता लगा, कि १८ वीं सदीके प्रथम पादमें पीतर महानके समयसे ही लेकर क्रिमिया-युद्ध तक पीतर-बुर्ग और लन्दनके मंत्रालयोंमें घनिष्ठ सहयोग रहा । इंगलैंड समझता था, कि जारशाहीको नष्ट करके नहीं, बल्कि उसको अपने हाथमें रखकर ही हम दुनियामें आगे बढ़ सकते हैं । क्रिमिया-युद्ध-के समय बृटिश-महामन्त्री पामर्टनके बारेमें यह भी कहा जाता था, कि जारशाही ने उसे खरीद लिया है, जो चाहे उतना सच न हो, लेकिन पामर्टनको अपने देश में मजदूरोंके चार्टिस्ट-आन्दोलन बैसे संघर्षको देखना पड़ा था । वह समझता तो

था, न जाने किस दिन उद्भुद्ध कमकर अपने इंगलैंडके बनिया-राज्यको उखाड़ फेंके। ऐसे गाढ़ के समय यूरोपमें हर जगह जारशाहीने सीधे सैनिक सहायता पहुँचाई थी। प्रतिक्रियावादकी इतनी बड़ी सहायक शक्तिका उच्छेद भला इंगलैंड कैसे पसन्द करता? साधारण लोगों या मजदूर वर्गको भी चाहे इसका न पता हो, लेकिन पूँजीवादी राजनीतिज्ञ भली भाँति समझते थे, कि उनका कृष्ण पैदा हो गया है, जो एक दिन कंसको मारे तिना नहीं रहेगा।

मार्क्स देख रहे थे, कि अभी भी सभ्यतामें बर्बर-अवस्थाके अवशेषोंके लिए बाल्तिकसे प्रशान्त महासागर तक फैले रस्सेके विशाल राज्यका हाथ युरोपके सभी मन्त्रिमंडलोंमें कितना फैला हुआ है। ऐसी अवस्थामें वह साफ समझ सकते थे कि पश्चिमी युरोपमें हर क्रान्तिके समय भीतर बुसकर सहायता देनेके लिये तैयार जारशाही सर्वहाराका सबसे बड़ा शत्रु है। वह कि आर्थिक विकासके कारण पैदा हुई हर जगहकी उद्भुद्ध शक्तियोंको स्वाभाविक परिणामपर पहुँचनेमें बाहरसे आकर बाधा डालती है। उन्होंने यह साफ कहा था, कि जब तक जारशाही खत्म नहीं होती, तब तक यूरोपीय सर्वहाराकी मुक्ति असम्भव है। यह जात कितनी सच हुई, यह आज हमें स्पष्ट मालूम होती है। जारशाहीने खत्म होकर यूरोपके सर्वहाराके लिए मुक्तिका रास्ता खोल दिया और इसमें शक नहीं यदि जारशाहीसे भी बढ़कर बर्बर अमेरिकन थैलीशाही यदि रास्तेमें न आती, तो आज पूर्वी यूरोपकी तरह पश्चिमी यूरोपका सर्वहारा भी स्वतन्त्र होता। अमेरिकन थैलीशाही जारशाहीसे भी कहीं अधिक बर्बर है, क्या यह हिरोशिमा और नागासाकीके सैनिक दृष्टिसे चिल्कुल अनावश्यक अणुबमोंकी नारकीय लीलासे सिद्ध नहीं है या कोरियामें कीटाणु-बमोंको गिरा वहाँ अणुबम बरसानेकी धमकी देते इन थैलीशाहोंके आचरणसे स्पष्ट नहीं है? १६ वीं सदीके मध्यमें—जिस बक्त कि मार्क्स जारशाहीके बारेमें अपना विचार प्रकट कर रहे थे—अभी जारके राज्यमें किसानोंकी अर्ध-दासता मौजूद थी, वहाँकी प्राचीन पंथिता भी अन्तर्गत थी। तो भी, केवल अपने सैनिक प्रभुत्वको कायम रखनेके लिए भी जारशाहीको आधुनिक विज्ञानसे कितनी ही सहायता लेनेकी आवश्यकता पड़ी, जिससे वहाँ साइन्स और स्वतन्त्र विचारकी ज्योति कुछ मात्रामें पहुँच गई।

उसीके प्रभावसे काकेशास, मध्य-एसिया और साइबेरियाकी एसियाई जातियोंमें भी काफी सास्कृतिक परिवर्तन हो रहा था। पोलोंका समर्थन करते हुये भी मार्क्स रूसके इस पहलूको भूल नहीं सकते थे, इसीलिए १८५१ ई० में ही एगेल्सने कहा था—“इतालियनों, पोलो और हुंगेरियनोंको साफ तौरसे कह देना होगा, कि जब आधुनिक प्रश्न सामने हो, तो उन्हें अपनी जबान रोक रखनी होगी।” यह भी यद्य रखना चाहिये कि इस समयकी प्रशिया (जर्मनी) यूरोपीय राजनीतिमें कोई महत्व नहीं रखती थी, उसकी स्थिति एक रूसी प्रदेश जैसी थी—यह हमें मालूम ही है, कि पीतर महान्‌के मरनेके कुछ ही सालों बादसे रूसी जारके रूपमें जर्मन राजकुमार और राजकुमारियाँ ही अपने जर्मनके कृपापात्रोंकी सहायतासे रूसका शासन करती थीं। जारवश अपने उचित्र होनेके समय (१८१७ ई०) रूसीकी अपेक्षा जर्मन अधिक था।

मार्च १८५३ ई० में मार्क्स यूरोपीय राजनीतिके अवगाहनमें लगे हुए थे। उस समयके एक पत्रमें एगेल्सने लिखा था—“मैं अर्कहार्टकी किताबको इस समय पढ़ रहा हूँ। वह कहता है कि पामर्स्टन रूसका वेतनमोगी है। इसकी व्याख्या विल्कुल आसान है, क्योंकि वह केल्डी-स्कॉच है...।” अर्कहार्ट दूसरे राष्ट्रवादी स्कॉचोंकी तरह ओंग्रेजोंका विरोधी था। हैलेनिक सास्कृतिसे प्रभावित होकर वह ग्रीस गया था, फिर तुकांमें जाकर कितने ही समय तक रहा। तुर्क रूसियोंके विलाफ थे, इसलिए वह तुकांके पक्षमें और रूसियोंके खिलाफ बन गया। वह तुकांसे इतना प्रभावित हुआ कि उसने एक बार लिखा था—“यदि मैं कालविनका अनुयायी न होता तो केवल मुसलमान ही हो सकता था।” एंगेल्सने कालविनकी पुस्तक पढ़ते हुये यह बात मार्क्सको लिखी थी। मार्क्स और अर्कहार्ट दोनों एक तरह पामर्स्टनके विरोधी थे। इस विरोधमें मार्क्सने “न्यूयार्क ट्रिब्यून” में भी लेख लिखा था, उसे ग्लासो (स्काटलैंड) के एक पत्रने छापा था, जिसे पढ़कर अर्कहार्टने फैलवरी १८५४ ई० में मार्क्ससे मिलकर उन्हें अभिनन्दन करते हुए कहा था—ऐसा लेख था मानो उसे एक तुर्कने लिखा हो। लेकिन स्कॉच मारवादीको जब पता लगा कि मार्क्स क्रातिवादी है, तो उसे बड़ी निराशा हुई।

१. चार्टिस्ट

मार्क्स चार्ट चार्टिस्टोंका समर्थक था और अर्कहार्ट मुक्त व्यापारका समर्थक और बनिया होनेसे चार्टिस्टोंका विरोधी । अर्कहार्टको तो चार्टिस्ट-आन्दोलनमें भी रुसी रुबल चमकते दिखलाई पड़ते थे, जैसे कि उसके बंशजोंको प्रथम विश्वयुद्धके बाद हर जगहकी क्रांति और कमकर-आन्दोलनमें मास्कोके रुबल दिखलाई पड़ते रहे । १० अप्रैल १८४८ ई० की भयङ्कर पराजयके बाद चार्टिस्ट-आन्दोलन फिर सँभल नहीं सका, लेकिन वह उसी समय खतम नहीं हो गया । चार्टिस्ट-आन्दोलनके श्रवणेषोंको मार्क्स और एंगेल्सका पूरा समर्थन प्राप्त था । मार्क्स और एंगेल्स उनके पत्रोंमें सुफ्ऱ अपने लेख भेजते थे । जार्ज जुलियन हार्नने “लाल गणतन्त्री”* नामसे एक पत्र निकाला, जिसके बाद उसने “लोक पित्र”† और उसके बाद “जनतांत्रिक आलोचना”‡ निकाली । अनेस्ट जॉन्सने इसी समय “लोगोंके लिये टिप्पणी”§, “लोक पत्र”|| निकाला । “लोक पत्र” नियमपूर्वक १८५१ तक प्रकाशित होता रहा । दोनों पत्र चार्टिस्ट आन्दोलनके क्रांतिकारी अंगसे सम्बन्ध रखते थे । बिरादरना जनतंत्रतावादियोंके अन्तर्राष्ट्रीय एसोसियेशनमें भी भाग लेनेवालोंमें हार्नी और जोक्स सबसे आगे थे । हार्नी एक नाविकका लड़का और सर्वहारा वातावरणमें पला था । क्रांतिकारी साहित्यसे उसे प्रेरणा मिली थी और मरात उसका आदर्श था । उमरमें वह मार्क्ससे एक वर्ष बड़ा था । जिस वक्त मार्क्स “राइनिशे जाइटूंग” का सम्पादन कर रहे थे, उस वक्त हार्नी चार्टिस्ट मुख्यपत्र “उच्चरी तारा”|| के सम्पादकीय विभागमें काम करता था । एंगेल्स १८४३ ई० में उससे मिले थे, जब कि उनके बारेमें हार्नीने लिखा था —“एक पतला तरण, पट्टा इतना तरण कि जान पड़ता है लड़का है, लेकिन तब भी वह असाधारण तौरसे शुद्ध और जीवन बोलता है । “१८४७ ई० में हार्नीका मार्क्ससे परिचय हुआ और वह बड़े

* “The Red Republican”, † “The Friends of the People”.
 ‡ “The Democratic Review” § “The Notes to the People”. || “The People’s Paper” § “The Northern Star”.

उत्तराहसे उनकी मंडलीमें शामिल हो गया। हार्नीने कम्युनिस्ट घोषणा-पत्रकह अँग्रेजी अनुवाद अपने पत्र “लाल गणतंत्री” में छापा जिसमें अपने फुट नोटमें उसने यह भी लिखा था : यह परमक्रातिकारी कृति है, जो कि आज तक कहीं भी प्रकाशित नहीं हुई। पीछे मार्क्सके साथ उसका मतभेद हो गया। इस समय वह जर्सीके द्वीपमें जाकर रहने लगा, किन्तु कुछ समय बाद युक्तराष्ट्र अमेरिका चला गया, जहाँ १८८८ ई० में एगेल्सने उससे मुलाकात की थी। इस मुलाकातके कुछ ही दिनों बाद हार्नी इंगलैंड लौटा, जहाँ काफी बूढ़े होकर मरा।

अर्नेस्ट जोन्स जर्मनीमें पैदा और सीख-पढ़कर बड़ा हुआ। जर्मनीमें उसका बाप कम्बरलैंडके ड्यूकका सैनिक परामर्शदाता था—यह परम प्रतिक्रियावादी ड्यूक पीछे हनोवरके राजा अर्न्स्ट अगस्टके नामसे प्रसिद्ध हुआ। ड्यूकने धर्म-पिता बनकर अपना नाम जोन्सको दिया था। इस प्रकार अर्नेस्ट जोन्सका बचपनसे ही धनिष्ठ सम्बन्ध उच्च सामन्त परिवारसे रहा, लेकिन बचपनसे ही वह स्वतन्त्र विचार रखता था और सामन्ती समाजके क्रृतियोंमें पलते हुये भी निलेंप रहा। वह बीस वर्षका था, जबकि इंगलैंड लौटा और पीछे पढ़ाई करके बैरिस्टर बना। उसने अपना सारा भविष्य और आगामके जीवनको तिलाजित-दे चार्टिस्ट-आन्दोलनमें प्रवेश किया। इसके लिये १८४८ ई० में उसे दो साल-की सजा हुई और जेलमें मामूली अपराधियोंकी तरह रखा गया। १८५० ई० में जेलसे वह कट्टर क्रान्तिकारी होकर निकला और उसी सालकी गर्मियोंमें मार्क्स और एगेल्सके साथ उसका धनिष्ठ सम्बन्ध हुआ। तबसे करोब बीस वर्ष-तक उसका यह सम्बन्ध कायम रहा, यद्यपि फ्राइलिग्रथका पद्धपाती होनेके कारण पीछे उसका सम्बन्ध मार्क्सके साथ उतना अच्छा नहीं रहा, तो भी मार्क्स और एगेल्सका उसकी ईमानदारीके कारण उसके प्रति सदृभाव था, यह १८६६ ई० में मेनचैट्टेमें रहते हुये जोन्सके मरनेके समय एगेल्सके इन वाक्योंसे मालूम होता है : “पुराने गारदमेंसे एक और घरको चला गया!” जिसका जवाब मार्क्सने दिया : “इस खबरसे हम सभीके दिलको बहुत गहरा चक्का लगा, क्योंकि वह हमारे थोड़ेसे पुराने मित्रोंमेंसे था।”

२. परिवार और मित्रमंडली

यह वह साल थे, जब कि मार्क्स राजनीतिक मंडलियोंसे अलग थे और उनका लोगोंसे सम्पर्क नहींके बराबर था। वह अपना सारा समय अध्ययन और अनुशन्धानमें लगा रहे थे, और वच्चे-खुचे समयको अपने परिवारमें गुजारते थे। इसी बीच १८५५ ई० में उनको एक लड़की एलीनोर पैदा हुई। एगेलसकी तरह मार्क्सका बच्चोंके साथ बहुत प्रेम था। किताब-कलम छोड़कर जो एक-दो घंटेकी छुट्टी ले पाते, उसे मार्क्स लड़कोंके साथ खेलनेमें बिताते। बच्चे भी उनके साथ असाधारण प्रेम रखते थे, क्योंकि वह बाप जैसे शासनका कभी उपयोग नहीं करते थे। बच्चोंके लिये वह मानो खेलके साथी थे। दूसरों-की अपेक्षा अधिक साँवला तथा कोयले जैसे काले बालोंके कारण बच्चे उन्हें मूर (उत्तरी अफ्रीकाके अरब) कहते। मार्क्सका बच्चोंके बारेमें दूसरे ही विचार था, वह कहा करते थे : “बच्चोंको अपने माँ-बापको शिक्षित करना होगा” और सजमुच ही मार्क्सके बच्चे अपने बापको सिखाते थे। इतवारके दिन उन्होंने मार्क्सको काम करनेकी सख्त मनाही कर रखी थी। उस दिन उन्हें सारा समय बच्चोंके लिये देना पड़ता। मार्क्स-परिवार बाहर दीहातमें या दूसरी जगह घूमने निकलता, रास्तेके किसी सरायमें वह आदरकी बीयर पीते, पनीर और रोटी खाते। अधिकतर वह हेम्पटेडहीथ में घूमने जाते। यद्यपि उस समय यह टेकरी नगरसे बाहर थी, किन्तु नगरके बीचमें होनेपर भी उसके किनने ही अंशको प्राकृतिक रूपमें रखनेकी आज भी कोशिश की गई है, और इतवारकी संघाको हजारों परिवार वहाँ सैर करनेके लिए जाया करते हैं। लीवूनेखने मार्क्सके इस समयके रूपका बड़ा तुन्दर वर्णन किया है। जेक स्ट्राइज पेसलका छोटा-सा उपाहारालय अब भी वहाँ मौजूद है, जिसकी मेजपर मार्क्स अक्सर बैठा करते थे। हीथके दक्षिण तरफ लन्दनका घना वसा हुआ शहर है, जहाँ सेन्ट पालके गिर्जों का गन्धोला और वेस्टमिनिस्टरके मीनार दूरसे दिखाई पड़ते हैं।

मार्क्सका जीवन आर्थिक तौरसे कष्टमय जल्द था, लेकिन बच्चोंमें पिता-माता अपनी सारी बेदनाओंको भूल जाते। इसी समय १८५५ ई० के शुड़-फ़ा इडेके दिन मार्क्सका एक मात्र पुत्र एडगर नौ वर्षकी अवस्थामें चल बसा।

पिता-माताका उसपर-असाधारण प्रेम था । वह उसे प्यारसे “मुशा” कहकर पुकारा करते थे । इसी अवस्थामें ही उसके “होनहार बिरचानके होत चीकने पात” दिखलाई दे रहे थे । परिवारके लिये यह कितनी दुःस्सह हृदयबेधी घटना थी, यह कवि फ्राइलिंगथके जर्मनी मेजे हुये एक पत्रकी निम्न पंक्तियोसे मालूम होगा : “यह इतनी बुरी और भयंकर ज्ञाति है, इसका प्रभाव मेरे ऊपर इतना गहरा पड़ा है, कि उसका मै वर्णन नहीं कर सकता ।” मार्क्सने बच्चेकी बीमारी और मृत्युके बारेमे उसी समय ३० मार्चको एंगेल्सको बड़े करण शब्दोमें लिखा था : “मेरी स्त्री केवल आशंकाके कारण एक सप्ताहसे बीमार रही, ऐसी बीमार जितना कि वह पहले कभी नहीं हुई थी । मै भी बहुत व्याकुल हूँ । मेरा हृदय बोझसे दबा जा रहा है, और मेरा सिर धूम रहा है, लेकिन बाहरसे मुझे अपनेको निर्लेप दिखाना है । बच्चा बीमारीके समय भी वैसे ही सुन्दर स्वभावका रहा है ।” ६ अप्रैलके एक पत्र में उन्होने फिर लिखा : “बेचारा नन्हा चला गया । आज ५ और ६ बजेके बीच मेरी गोदमें सो गया । मै इसे कभी भूल नहीं सकता, कि तुम्हारी मित्रताने कैसे इन भयंकर दिनोंमें हमारे भारी बोझको हलका किया । तुम स्वयं समझ सकते हो, कि मेरे लड़केकी मृत्युके बाद मुझे कितना दुःख हो रहा है ।” १२ अप्रैलके पत्रमें मार्क्सने लिखा : “लड़केके मरनेके बादसे घर खाली और सूना सा मालूम होता है । वह इसका जीवन और आत्मा था । हर समय उसके अभावको हम कितना अनुभव करते हैं, इसका वर्णन करना असम्भव है । मैंने अनेक प्रकारके दुर्भाग्य सहे हैं, लेकिन इस बत्त मैं जानता हूँ, कि वास्तविक दुर्भाग्य क्या है ।... जिन भयंकर आशाकाओं और कष्टोंमें मैं गुजरा हूँ, उनमें मुझे तुमने और तुम्हारी मित्रताके विचारने बहुत शक्ति प्रदान की, और इस आशासे भी कि दुनियामें अभी भी कुछ कामकी चीज हम कर सकेंगे ।”

मार्क्सको पुत्र-विवोगका धाव भरनेमें काफ़ी समय लगा । लाजेलके सहानु-भूतिकारक पत्र का जवाब देते हुये २८ जुलाईको मार्क्सने लिखा था : “वाकोका कहना है, कि वास्तविक महापुरुष प्रकृति और दुनियामें इतनी अधिक बातोंमें दिलचस्पी रखते हैं, इतनी अधिक चीजें उनके ध्यानको अपनी ओर खींचे रहती

हैं, कि कोई भी ज्ञाति उनके लिये बहुत अधिक नहीं मालूम होती। मुझे यह कहनेमें संकोच नहीं, कि मैं उन महापुरुषोंमें नहीं हूँ। मेरे अपने लड़केकी सृत्युने मुझे जोरसे भक्षोर दिया है, मैं उसके प्रभावको इतना जबर्दस्त महसूस करता हूँ, कि मानों वह दुर्घटना कल ही घटी है। मेरी बेचारी स्त्री तो इस चौटके मारे पूरी तौरसे पस्त हो गई है।” अप्रैलमें मरे लड़केके लिये जो दुःख हुआ, वह आठ महीने बाद भी कितना कड़ा था, यह द अक्टूबरके फ्राइलिश्ट द्वारा मार्क्स्टोंको लिखे पत्रसे मालूम होता है: “मुझे इस बातके लिये भारी अफसोस है, कि आपकी वह बड़ी ज्ञाति आज भी इतना जबर्दस्त दुःख दे रही है। दुर्भाग्यसे इसके सम्बन्धमें कुछ करना या समझना एक मित्रकी शक्तिसे बाहर है। मैं आपके दुःखको समझता हूँ और उसको सम्मानकी दृष्टिसे देखता हूँ, लेकिन अपने ऊपर आपको ऊपर काढ़ पानेकी कोशिश करनी चाहिये, यह आपके उप्रिय बच्चेकी सृतिके प्रति कृतश्चर्ता नहीं होगी।” मार्क्स परिवार कुछ वर्षोंसे बीमारीका डेरा बन गया था, जिसका अन्तिम प्रदर्शन एडगरकी मृत्युके साथ हुआ। पिछले वसन्तमें मार्क्स स्वयं बीमार पड़ गये थे, और अभी वह अच्छी तरह स्वस्थ नहीं हो पाये थे। खास शिकायत थी पेटकी, जिसे कि मार्क्स अपने पिताका दायभाग समझते थे। लेकिन इसमें घरकी अस्वास्थ्यकर अवस्था न था वैसा ही पास-पड़ोस भी कारण था, इसमें शक नहीं। १८५४ ई० की गर्मियोंमें वहाँ भारी हैजा फूट निकला, जिससे इतने आदमी मरे, कि उन्हें दफनानेके लिये १६६५ के भयंकर हँगे में मरे आदमियोंकी कब्रोंके ऊपर नई स्वाइयाँ खोदी गईं। डाक्टरने मार्क्स्टोंको सोहो-स्क्वायरके पास-पड़ोस छोड़ देनेके लिये हिदायत की थी, जिसको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये अब मजबूरी हुई। १८५५ ई० के ग्रीष्म की गर्मियों (ग्रीष्म-वर्षा) में जैनी मार्क्स अपनी तीनों लड़कियोंके साथ माँकी बीमारीके कारण उसे देखने द्वारा चली गई। यारह दिनकी बीमारीके बाद जब माँ अपनी आँखोंको मंद रही थीं, उसी समय बेटी और नतनियाँ वहाँ पहुँची थीं। माँकी सम्पत्तिमेंसे कुछ सौ थालर फ्राउ मार्क्स्टोंको भी मिले। इसी समय जैनीको अपने स्काच सम्बन्धियोंसे भी कुछ दायभाग शिला। यह दोनों आमदनी इतनी काफी थी, कि १८५६ ई० की शरदमें परि-

वार हेस्टेडहीथके पास ह ग्रेफेन टेरेस, मेडलैंड पार्क, हेवेरस्टॉक-हिलमें एक छोटा-सा घर किराये पर लेकर वहाँ चला गया, किराया ३६ पौंड वार्षिक था। जेनीने अपने एक पत्रमें इस घरके बारेमें लिखा था : “जिन मॉदोमें हम अब तक रहते रहे, उनकी तुलनामें यह राजमहल सा मालूम होता है। यद्यपि हमारे पास जो कुछ फर्नीचर (अधिकांश कचाड़ी का कूड़ा करकट) है, उसका दाम ५४० पौंडसे कुछ ही अधिक होगा, पर आरम्भमें मैंने अपनी नई बैठकमें अपनेको बड़ा अनुभव किया। सभी मलमलों और पुरानी समृद्धिके दूसरे अवशेषोंको मामाके हाथसे उत्तरी एक बार फिर मैं आनन्दके साथ अपने पुरानी दमिश्की नेपकिनोंको अपने पास देख रही थी। किन्तु, यह भूठा आनन्द देर तक नहीं रहा, जल्दी ही उनमेंसे एकके बाद एक पौप-शौप (कासेकी तीन घटियोंके चिन्हके कारण बन्धक रखनेवाले घरको बच्चे इस नामसे पुकारा करते थे) में पहुँच गये। तो भी, हम बहुत प्रसन्न थे, क्योंकि एक बार फिर हम बूज्जी मुख्कर वातावरणमें अपनेको पा रहे थे।”

मृत्युने उस बक परिवारके दूसरे मित्रोंके घरोंमें भी फेरा दिया था। दानि-याल १८५४ ई० के शरदमें मरा, वीर्य हैतीमें रहते जनवरी १८५६ ई० को चल वसा। १८५८ ई० के आरम्भमें जर्सी द्वीपमें कोनराड शाम्ब भी साथ छोड़ गया। मार्क्स और एंगेल्सने अपने पुराने सहयोगी मित्रोंके प्रति शोक प्रकट करते हुये छोटी सूचनायें प्रकाशित करानेका असफल प्रयत्न किया। वह बड़ा अफसोस प्रकट करते थे, कि पुराने कान्तिकारी एकके बाद एक चलते जा रहे हैं, और उनकी जगह लेनेवाले नए नहीं आ रहे हैं।

लीब्कनेल्ट इस समय लन्दनमें जब तक डीन स्ट्रीटमें रहा तब तक वह मार्क्स परिवारमें प्रतिदिन जाया करता। उसे भी भीषण गरीबीका सामना करना पड़ रहा था। यही बात कम्युनिस्ट लीगके दूसरे पुराने साथियों—लेस्नेर, लांबनेर, इकेरियस और शापरकी थी। दूसरे साथी चिखर चुके थे : ड्रोन्के लिवरपुल और पीछे ग्लासो में व्यापारी बन गया था, इमान्ट डंडीमें प्रोफेसर था, शिले पैरिसमें एडवोकेट था, जहाँ कवि हाइनेका अन्तिम वर्षोंका सेक्रेटरी राइनहार्ट भी रहता था।

३. १८५७ ई० का आर्थिक संकट

१८५७ ई० में भारत अंग्रेजी गुलामीसे आजाद होनेके लिये प्रयत्न कर रहा था। किसान-पुत्रों और गरीबोंकी अपार कुर्बानियाँ सामन्तोंके ईर्ष्या, लोम और अव्यवस्थापूर्ण नेतृत्वमें असफल रहीं। इसी समय पूँजीवादके शौरस पुत्र समयपर होनेवाले आर्थिक संकटने युरोपमें अपनी भीषणता दिखलाई थी। १८५० ई० के शरदमें सार्वजनिक जीवनसे अलग होते वक्त मार्क्स और एंगेल्सने कहा : “नई क्रान्ति एक नये संकटके परिणामस्वरूप ही सम्भव हो सकेगी, और ऐसे संकटका आना भी उसी तरह निश्चित है।” तबसे वह उस नये संकटकी बाट जोह रहे थे। कितनी देरकी प्रतीक्षाके बाद १८५७ ई० में वह संकट आन मौजूद हुआ। मार्क्सने एंगेल्स द्वारा विलहेल्म बोल्फको कहा था : मैं सावित कर सकता हूँ, कि जिस समय इस संकटको आना चाहिये था, कुछ कारणोंसे वह उसके दो वर्ष बाद आया। संकटके आम आगमनका पता युक्तराष्ट्रसे मार्क्सको पहले-पहल मिला, जब कि “न्यूयार्क ट्रिव्यून” ने उनके पारिश्रमिकको आधा कर दिया। यह भारी चोट थी, क्योंकि परिवारका वह एक सबसे बड़ा सहारा था। ग्रेफ्टन टेरेसमें ढीन स्ट्रीटकी तरह परिवार अपने जीवन-को नहीं बिता सकता था, इसलिये उनकी कठिनाइयाँ और बढ़ गई थीं। कहींसे आमदनीका कोई रास्ता दिखलाई नहीं पड़ता था, और उधर खर्च कम होनेकी जगह बढ़ता ही जा रहा था। २० जनवरी (१८५७ ई०) को मार्क्सने एंगेल्स-को लिखा था : “मुझे कुछ नहीं समझमें आता, कि इसके बाद क्या करूँ। बस्तुतः मेरी स्थिति उससे कहीं खराब है, जैसी कि पाँच वर्ष पहले थी।” एंगेल्सको यह चिट्ठी बज गिरने जैसी मालूम हुई। वह तुरन्त अपने मित्रकी सहायता करनेमें लग गये और यह शिकायत करते हुये कि स्थितिके बारेमें मुझे पहले क्यों नहीं बतलाया। एंगेल्सने अभी-अभी अपने लिये एक घोड़ा खरीदा था, जिसके लिये उनके पिताने बड़े दिनकी भेंटके तौरपर कुछ पैसे दिये थे। उन्होंने लिखा : “मैं सचमुच ही इसे बहुत बुरा समझता हूँ, कि मैं यहाँ एक घोड़ा बाँधू, जब कि आप और आपका परिवार लन्दनमें ऐसी आफतमें पड़ा है।” एंगेल्सको कुछ महीने बाद यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि डाना एक

विश्वकोषकी योजनामें मानवसंकी सहायता लेना चाहता है। उसके पारिश्रमिकसे परिवारकी आर्थिक हालत सुधर जायेगी, यह विश्वास हो चला था, लेकिन अन्तमें वह ख्याल हवाई किला साबित हुआ। दोनों मित्र विश्वकोषके तीसरे अन्तर तक थोड़ा-बहुत सहयोग करते रहे, जिनके बाद वह ठप्प हो गया।

१८५७ ई० की गर्मियोंमें गिल्टीकी बीमारीके कारण एंगेल्सको देर तकके लिए समुद्रके किनारे जाकर रहना पड़ा। मानवसंकी स्थिति भी काफ़ी बुरी थी पेट-की बीमारी फिर उभड़ आई, जिसके कारण बहुत कठिनाईके साथ वह बहुत थोड़ा सा ही काम कर सकते थे। जुलाईमें मार्क्स-पल्लीको एक मृत बच्चा ऐसी स्थितिमें पैदा हुआ, जिससे मानवसंको बहुत दुःख हुआ। उनके पत्रको पढ़कर एंगेल्सने लिखा था : “आपपर भारी चोट पड़ी होगी, जभी आप इस तरह लिख रहे हैं।”

इस तरहका वैयक्तिक दुःख और चिन्ता चारों ओर घेरे हुये थे, लेकिन जैसे ही शरदमें संकट इगलैंडमें दाखिल हुआ, फिर यूरोपमें फैलने लगा; वैसेही मार्क्स सारी बातें भूल गये और उन्होने १३ नवम्बरको लिखा : “यद्यपि मैं स्वयं भयंकर आर्थिक कठिनाईयोंमें पड़ा हूँ, लेकिन १८४८ ई० के बाद मैंने कभी ऐसा आनन्द अनुभव नहीं किया था, जैसा कि आज इस भूकप्य (आर्थिक संकट) के समय !” पत्रके उत्तरमें अगले दिन एंगेल्सने लिखा था : “मैं समझता हूँ, अच्छा यही होगा, कि स्थायी (कानिक) संकटमें ‘सुधार’ कहीं द्वितीय और निराणीय प्रहारके पहले ही न होने लग जाय। लोगोंको गरम करने के लिये थोड़ी देरके बास्ते दीर्घ स्थायी (पुराने) दबावकी आवश्यकता है, तब सर्वहारा स्थितिके बेहतर ज्ञानके साथ एकत्रावद हो अच्छी तरह लड़ेंगे, जिस तरह कि रिसालेका हमला तभी ज्यादा जीवट बाला होता, जब घोड़े दुश्मनपर प्रहार करनेकी जगहसे पहले पौच्छी कदम दौड़नेका मौका पाये। मैं ऐसी किरी चीजेको बहुत जल्दी, उस समयसे पहले घटित होना नहीं पसन्द करूँगा, जब तक कि सारा यूरोप इसमें पूरी तौरसे फँस न जायः क्योंकि तब बादका सघर्ष अधिक कठोर, अधिक मुश्किल और अधिक उतार-चढ़ावका होगा। मई और जूनका समय ग्रायः बहुत पहलेका होगा। लम्बे असें तक समृद्धके भीतर शुजरते हुये

जनगण बहुत शलय हो गया है ।...हाँ, मैं भी उसी तरह महसूस करता हूँ जैसे आप । एक बार यदि न्यूयार्कमें धोला-धड़ीकी इतिश्री हो गई, तो जर्सीमें भेरे पास एक टुकड़ा भी नहीं रह जायेगा, किन्तु, मैं इस आम इतिश्रीका बहुत सुन्दर अनुभव कर रहा हूँ । चाहे पिछले कुछ वर्षोंमें बूर्जा कीचड़ मुझसे भी चिपट नया है, लेकिन अब मैं उसे धोकर अपनेको नया आदमी अनुभव करने लगूँगा । समुद्रतट निवास सा ही यह संकट मेरे स्वास्थ्यके लिये लाभदायक होगा, इसे मैं अभीसे अनुभव कर रहा हूँ । १८४८ ई० में हम सोच रहे थे, हमारा समय आ रहा है और कुछ अर्थोंमें वैसा हुआ भी, लेकिन, इस समय वह बख्तः आ रहा है और सभी चीज दाँवपर है ।”

एंगेल्सने अपने पत्रमें दावपर सब चीजोंके रखे होनेकी जो बात कही थी, वह गलत साक्षित हुई । संकटका प्रभाव उनकी सूक्षके अनुसार बिल्कुल ही न पढ़ा हो, यह बात नहीं लेकिन सर्वहाराके ऊपर जो चरम प्रभाव पड़नेवाला था, और जिसके कारण इस विराट संसारमें प्रलय मच जाने वाली थी वह तब आनेवाला था, जब कि दोनों मित्र सदाके लिए आँखें मूँद चुके होंगे । १८५८ दिसम्बरके पत्र में मार्क्सने अपने मित्रको लिखा था : “मैं बहुत जवर्दस्त परिमाणमें काम कर रहा हूँ, ४ बजे सबेरे तक । मेरा काम दो तरहका है : (१) राजनीतिक अर्थ-शास्त्रके मौलिक सिद्धान्तोंकी रूपरेखा... और (२) वर्तमान संकट ।

आर्थिक संकट में मार्क्सने इस बातका पता लगाया, कि दुनियाके शोषण और उत्पीड़नके खातम करनेके लिये आवश्यक सबसे शक्तिशाली हरावल दस्ता सर्वहारा है । लेकिन, सर्वहारा हर समय इसके लिये पूरी तौरसे तैयार होकर अपना जवर्दस्त और मरणान्तक प्रहार नहीं कर सकता । मरणान्तक और निर्णायक प्रहारके लिये एकमात्र समय है आर्थिक संकटका काल । आर्थिक संकटकाल-को टालनेके लिये पीछे पूँजीवादियोंने युद्धोंकी शरण ली । आज भी हम यह साफ देख रहे हैं, कि पूँजीवादी युद्धसे उतना नहीं जितना शान्तिसे काँपने लगते हैं । कोरियामें शान्तिकी बातचीत करते ही बाल स्ट्रीटके सटोरियोंमें हलचल मच गई, चारों ओर उन्हें दिवाला ही दिवाला दिखलाई देने लगा, और उनके हाथकी कठपुतली अमेरिकन सरकार किसी न किसी बहाने शान्तिकी बला-

को टालनेकी कोशिश करने लगी। आर्थिक संकटको आते देख उसे सर्वहारा-क्रान्तिके लिये पुण्य-पर्व समझ मार्क्सके हृदयमें क्यों न अधिक प्रसन्नता और उत्साह पैदा होता। ८ दिसम्बरके अपने पत्रमें जेनी मार्क्सने मरणासन्ध कोनराड समझके पास जर्सीमें जो पत्र मैजा था, उसकी कुछ पंक्तियाँ मार्क्सके इस समयके उत्साहके ऊपर प्रकाश डालती हैं : “यद्यपि हम अमेरिकन संकटको अपने पाकेट पर बुरी तरहसे अनुमत करते हैं, क्योंकि कार्ल ‘ट्रिब्यून’के लिये दोकी जगह अब केवल एक लेख लिखता है। ट्रिब्यूनने’ ब्यार्ड हैलर और कार्लको छोड़कर अपने सभी यूरोपियन संवाददाताओंको अलग कर दिया है। लेकिन, हुम समझ सकते हो कि इस समय मूर (मार्क्स) कितना प्रसन्न है ! उसकी काम करनेकी क्षमता और फुर्ती इतनी ताजगी और वेग के साथ लौट आई है, जो कई वर्षोंसे नहीं देखी जाती थी तबसे जब कि हमारे नन्हे बेटेके उठ जानेसे हमे भारी दुःख हुआ, ऐसा दुःख जो मेरे हृदयको सदा उदास बना देता है। दिनको कार्ल हमारी रोजकी रोटीके लिये काम करता है और रातको राजनीतिक अर्थशास्त्रपर अपनी पुस्तक समाप्त करनेके लिये काम करता है। अब जब, कि इस तरहकी पुस्तक इतनी आवश्यक हो गई है, निश्चय ही हम किसी दुर्युक्तिये प्रकाशकको पानेमें सफल होवेंगे।”

लाजेलके प्रयत्नसे एक प्रकाशक मिल भी गया। अग्रेल १८५७को मार्क्स को पत्र लिखते हुये लाजेलने इस बातपर आश्चर्य प्रकट किया, कि बहुत समयसे उसे मार्क्सका पत्र नहीं मिला। मार्क्सको मौन देखकर लाजेलको बहुत दुःख हुआ। उसकी शिकायत करने पर जो पत्र मार्क्सने लिखा भी, वह भी बहुत छोटा और वेमनसे लिखा हुआ था।

जनवरी १८५८ ई० में लाजेलकी पुस्तक “हेराकिल्टु” की एक कापी लन्दन पहुँची, जिसमें बर्लिनमें उसके ऊपर हुई आत्मोन्नामों और सम्पत्तियोंमेंसे भी कुछ थीं। मार्क्सने पुस्तकमें विद्वत्ताके भारी प्रदर्शनको पसन्द नहीं किया। उन्होंने कहा, उदाहरणपर उदाहरण भर कर पुस्तकको बढ़ा और काफ़ी पैसा होनेपर उसको छोपाया जा सकता है। लाजेल को अभी भी पता नहीं था कि मार्क्स मुझसे नायज है। फरवरी (१८५८) में उसने मार्क्सको लिखा कि मै

आपके राजनीतिक अर्थशास्त्रके लिये एक प्रकाशक ढूँढ़नेको तैयार हूँ। मार्क्सने इसे स्वीकार कर लिया। मार्चके अन्त तक लाज़ेलने अपने प्रकाशक फ्रांज डुंकेर से सब बात तैयार करके प्रतिज्ञानामा भी तैयार कर लिया और उससे कहीं अच्छी शर्तपर, जिन्हें कि मार्क्सने माँगा था। आम तौरसे पारिश्रमिक एक फार्मके दो फ्रीडरिख्स डोर (१६-१७ मार्क्सका उस समयका प्रशियाका सोनेका सिक्का) होता था, लेकिन डुंकरने तीन फ्रीडरिख्स डोर देना स्वीकार किया था। पर, प्रकाशक यह शर्त रखती थी, कि अगर पहले भागकी संतोषजनक बिक्री नहीं हुई, तो आगे उसे प्रकाशित नहीं करेगा। १८५८ ई० का बड़ा दिन आया, जिसके साथ क्रिस्मसके आनन्दकी जगह मार्क्स-परिवारमें चिन्ता और दुःखका स्वागत था। २१ जनवरी १८५८ ई० को ग्रंथका हस्तलेख तैयार हो गया, लेकिन एक पैसा भी धरमें नहीं था, कि हस्तलेखको डाकसे मेजनेके लिए टिकट खरीदा जा सके। मार्क्सने एंगेल्सको डाकखर्चके लिये पैसा मेजनेके लिए लिखते हुये कहा था : “मैं नहीं समझता हूँ, कभी भी किसी आदमीने ‘पैसे’ के बारेमें लिखा हो, और उसे स्वयं उसके अभावके लिए इतना कष्ट हुआ हो। अधिकांश लेखक जिन्होंने इस विषयपर लिखा है, वह अपने शोधके लक्ष्य (पैसे) के साथ सबसे बढ़िया सम्बन्ध कायम रख सकते थे।”

४. “राजनीतिक अर्थशास्त्रकी आलोचना” (१८५८-६६ ई०)

काममें हाथ लगानेसे पन्द्रह वर्ष पहले मार्क्सने राजनीतिक अर्थशास्त्रके ऊपर एक विस्तृत ग्रंथ लिखनेकी योजना बनाई थी, जिसमें वह उत्पादनके पूँजी-वादी ढंगके मौलिक सिद्धान्तोंको बतलाना चाहते थे। फ्रांसकी मार्च-क्रान्तिके पहले भी प्रूधोंको जवाब देते समय उनके मनमें इसका ख्याल आया था लेकिन, क्रान्तिकारी संघर्षोंमें पड़कर उसके लिये वह कुछ नहीं कर सके। उनसे छुट्टी पानेके बाद २ अप्रैल १८५१ को उन्होंने एंगेल्सको लिखा था : “इस बक्त मैं इतना दूर तक चला गया हूँ, मैंने अर्थशास्त्रके सभी नीरस भंडटोंको खत्म कर दिया है। इसके बाद मैं धरमें बैठकर अपनी किताबको समाप्त करूँगा और म्युजियममें किसी दूसरे विज्ञानमें हाथ लगाऊँगा...ऐडम स्मिथ और

डेविड रिकार्डों (दो अंग्रेज अर्थशास्त्री) के समयसे राजनीतिक अर्थशास्त्र विज्ञानने कोई नई मौलिक प्रगति नहीं की है ।” एंगेल्सने बहुत प्रसन्न होकर जवाब दिया : “मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि अन्तमें तुम अपने राजनीतिक अर्थशास्त्रको पार कर गये । बस्तुतः यह काम बहुत देर तक लटका रहा ।” और साथ ही यह भी कहा : “लेकिन जब तक तुम्हारे सामने अभी भी कोई ऐसी एक पुस्तक है, जिसे तुम महत्वपूर्ण समझते हो और जो पढ़ी नहीं गई है, तब तक तुम अपनी लेखनीको कागज पर नहीं धरोगे ।” एंगेल्स जानते थे कि और कठिनाइयोंके अतिरिक्त एक बड़ी कठिनाई मार्क्सके लिये यह थी कि उन्हें एक-एक कदमको फूँक-फूँककर आगे रखनेकी आदत थी । फूँक-फूँककर पैर रखनेकी आदतको एंगेल्स बेकार नहीं समझते थे । और यही हुआ । १८५३-५४ ई० में मार्क्सके लिखनेसे मालूमसे होता था, कि उनका यह ग्रंथ समाप्त ही होने जा रहा है, लेकिन उसमे उन्हें अभी और आठ वर्ष लगाने पड़े । वृष्टिश म्युजियममें इस विषयपर जो विशाल सामग्री रखी हुई थी, उसका एकके बाद एक पता लगता गया और मार्क्स फिरसे अपनी पुस्तकपर काम करने लगे । इस प्रकार १८५३-५४ ई० में ही वह पुस्तक को प्रकाशनके योग्य बनानेके लिए काम करने लगे ।

(ग्रंथ संक्षेप)—ग्रथकी भूमिकामे और बातोंके साथ मार्क्सने ऐतिहासिक भौतिकवादके सिद्धान्तको संक्षेपमें कहते हुए लिखा है ।

“(हेगेलीय विज्ञान (कानून)-दर्शनकी परीक्षा करते हुये मैं इस निष्कर्ष-पर पहुँचा, स्वयं अपनेमें या मानव-बुद्धिके तथाकथित आम विकाससे न कानूनी सम्बन्धोंको समझा जा सकता है, और न राज्यके रूपोंको ही, क्योंकि उनकी जड़ जीवनकी भौतिक स्थितियोंमे निहित है; जिसके पूर्ण योगको १८ वीं शताब्दीके अंग्रेज और फ्रेच बिद्वानोंके उदाहरणोंका अनुगमन करते हुए हेगेलने ‘बूर्जा-समाज’ की परिभाषामे सक्षिप्त करके कहना चाहा । बूर्जा-समाजके शारीरिक ढाँचेको राजनीतिक अर्थशास्त्रमें ही ढूँढना होगा । ..मैं जिन सामान्य निष्कर्षोंपर पहुँचा हूँ, और जो मेरे अंग्रेजे के अध्ययनमें पथ-प्रदर्शनका काम करेंगे, उन्हें संक्षेपमें निम्न प्रकार कहा जा सकता है : सामाजिक उत्पादनमें मानव-प्राणी

एक दूसरे के साथ निश्चित और आवश्यक सम्बन्धोंमें प्रवेश करता है, और उसका यह प्रवेश करना अपनी इच्छासे विलकुल स्वतंत्र होता है। यह उत्पादक-सम्बन्ध भौतिक उत्पादन-शक्तियोंके विकासकी एक निश्चित अवस्थाके अनुसार होते हैं। इन उत्पादक-सम्बन्धोंका आकार सामूहिकरूपेण समाजके आर्थिक ढाँचा और भौतिक आधार बनते हैं, जिनके ऊपर वैधानिक (कानूनी) और राजनीतिक ऊपरी ढाँचा खड़ा है, और सामाजिक चेतनाके निश्चित आकार भी उसीके अनुसार होते हैं। भौतिक जीवनका उत्पादन-प्रकार आमतौरसे जीवनके सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक प्रक्रियाका निर्णय करता है। मानवप्राणीकी चेतना उसके अपनेपनकी निर्णायक नहीं है, बल्कि इसके विरुद्ध उसका सामाजिक अस्तित्व उसकी चेतनाका निर्णय करता है। अपने विकासकी एक निश्चित अवस्थामें पहुँचकर समाजकी भौतिक उत्पादक-शक्तियाँ तत्कालीन उत्पादक सम्बन्धोंके साथ अथवा तत्कालीन सम्पत्तिक-सम्बन्धोंके साथ विरोधी बन जाती हैं—तत्कालीन सम्पत्तिक सम्बन्ध एक उसी चीजकी कानूनी अभिव्यक्ति है, जिसमें कि अबसे पहले वह चलती रहीं। तब यह सम्बन्ध उत्पादक-शक्तियोंके विकासके आकारोंसे उत्पादक-शक्तियोंकी बेड़ीके रूपमें परिणत हो जाते हैं, जिससे कि सामाजिक क्रांतिका एक युग आरम्भ होता है। समाजके आर्थिक आधारके इस परिवर्तनके साथ सारा ऊपरी विशाल ढाँचा कम या बेशी जल्दी से बदल जाता है। इन परिवर्तनों को देखते हुये आदमीको सदा उत्पादनकी आर्थिक स्थितियोंमें भौतिक परिवर्तनोंको वैज्ञानिक सूक्ष्मताके साथ हृदयांगत करना होगा, और वैधानिक, राजनीतिक, धार्मिक, कलाकारिक और दर्शनिक-संक्षेपमें उनको वैचारिक आकारोंके बीच सदा फँक करना होगा जिनमें कि पहुँचकर मानवसत्तायें इस विरोधको महसूस कर उनसे लड़ने लगती हैं। जिस तरह हम एक व्यक्तिकी परख उससे नहीं कर सकते, जैसा कि वह अपने बारेमें सोचता है, उसी तरह हम इस प्रकारके परिवर्तनके एक युगका उसकी अपनी चेतना द्वारा नहीं परख सकते, बल्कि हमें भौतिक जीवनके विरोधोंसे, सामाजिक उत्पादक-शक्तियों और उत्पादनकी स्थितियोंके बीच विद्यमान विरोधसे इस चेतनाकी व्याख्या करनी होगी। समाजका कोई रूप तब तक पतनोन्मुख नहीं होता, जब

तक कि उत्पादनकी सारी शक्तियाँ अपने विकासकी अपनी निजी अवस्थाके अनुसार विकसित नहीं हो जातीं, और नये तथा ऊँचे उत्पादक-सम्बन्ध पुरानों का स्थान तब तक नहीं ग्रहण करते, जब तक कि स्वयं पुराने समाजके खोलके भीतर उनके अस्तित्वके लिये भौतिक स्थितियाँ विकसित नहीं हो जातीं। इसी-लिये मानवता किसी ऐसे कामको अपने सामने नहीं रखती, जिसके पूरा करनेकी अवस्थामें वह नहीं है। क्योंकि यदि हम वस्तुका और नजदीकसे परीक्षण करें, तो हमें बराबर यही मिलेगा, कि कोई कार्य अपनेको पूरा करनेके लिये हमारे सामने तब तक उपस्थित नहीं होता, जब तक कि उसे पूरा करनेके लिये पहले हीसे भौतिक स्थितियाँ विकसित अथवा विकासोन्मुख न हो।

“आम तौरसे कहने पर (१) एसियाई, (२) ब्रिटिश (प्राचीन यूनानी) (३) सामन्ती और (४) आधुनिक पूँजीवादी उत्पादनके ढंग आर्थिक, सामाजिक आकारोंके प्रगतिशील युगोंके नाम हो सकते हैं। पूँजीवादी (बूज्वा) उत्पादक-सम्बन्ध सामाजिक उत्पादनकी प्रक्रियाका अन्तिम विरोधी आकार—वैयक्तिक विरोधके अर्थमें नहीं, बल्कि ऐसे विरोधके रूपमें, जो कि व्यक्तियोंके जीवनकी सामाजिक स्थितियोंसे विकसित होता है—ऐदा होता है। अस्तु, बूज्वा-समाजके ढाँचेके भीतर विकसित हुई उत्पादक शक्तियाँ साथ ही ऐसी भौतिक स्थितियाँ उत्पन्न करती हैं, जो इस विरोधको खत्म करनेवाली हैं : इसलिये समाजके इस रूपके साथ मानवसमाजके प्रारम्भिक इतिहासका अन्त होता है।”

अपने इस महान् ग्रंथके रूपमें मार्क्सने राजनीतिक अर्थशास्त्रको एडेम स्पिथ, डेविड रिकार्डों एवं दूसरे विचारको द्वारा स्थापित बूज्वा राजनीतिक अर्थशास्त्रने सौदाके मूल्यका निर्धारण उसके उत्पादनमें आवश्यक श्रमके-समय-की मात्रा द्वारा किया था, वह उत्पादनके बूज्वा ढंगको सामाजिक उत्पादनका सनातन और स्वामानिक आकार मानता था, इसलिए वह समझता था, कि मूल्यका सुनन मानव श्रम-शक्तिकी स्वामानिक विशेषता है, जैसा कि वह व्यक्ति-की सरकार श्रम-शक्ति में पाया जाता है। अपने इस निष्कर्षके कारण उसने अनेक विरोध ऐदा कर दिये, जिनका समाधान करनेमें वह असमर्थ रहा।

लेकिन इसके विरुद्ध मार्क्सने उत्पादनके बूज्यों-दंगको सामाजिक उत्पादनका सनातन और स्वाभाविक आकार नहीं माना, बल्कि उसे केवल अपने पहलेके आकारोंके परम्पराओंके उत्तराधिकारी सामाजिक उत्पादनका एक निश्चित ऐतिहासिक आकार माना। इस दृष्टिकोणसे उन्होंने श्रम-शक्तिकी मूल्य-उत्पादक विशेषताकी पूरी तौरसे परीक्षण किया कि किस तरहकी श्रम-शक्ति मूल्य पैदा करती है और कैसे ? और क्यों मूल्य इस प्रकारकी श्रम-शक्तिका साकार छोड़ और कुछ नहीं है ।

मार्क्सके इस महान् ग्रन्थके महत्वको उस समय उनके सहकारी और मित्र भी अच्छी तरह नहीं समझ सके, लेकिन धीरे-धीरे उसकी सच्चाइयाँ प्रकट होने लगीं। पैसे (Money) के सिद्धान्तके बारेमें मार्क्सने जिस तथ्यका प्रतिपादन रखिया, उसे बूज्यों-अर्थशास्त्रियोंने भी चुपकेसे स्वीकार कर लिया, सात वर्ष बाद जर्मन राजनीति-अर्थशास्त्रके विश्वकोषने भी मार्क्सका लोहा माना। आज तो आधी मानवता मार्क्सके इसी राजनीतिक अर्थशास्त्रपर चल रही है ।

अध्याय १३

मतभेद

१. लाजेलसे फ़गड़ा

एंगेल्सने मार्क्सकी सम्मतिसे “पो और राइन” के नामसे एक पम्फ्लेट लिखा, जिसे लाजेल द्वारा फ्रांज डुकरने छुपवाया। आस्ट्रियाके हाब्सबुर्ग राजवंश इतालीकी प्रसिद्ध नदी पोको राइनकी प्रतिरक्षाका मुख्य स्थान कहता था। आजकलके अमेरिकनोंकी तरह राजवंशका भी राज्यका-लोभ निस्तीम हो गया था। वह कहता था, कि जब तक इतालीकी भूमिको दाढ़ करके रक्खा नहीं जायगा, तब तक हम जर्मनीकी रक्खा नहीं कर सकते। उधर फ्रास राइन नदीको अपनी प्राकृतिक सीमा मानता था। लेकिन प्राकृतिक सीमा ही राज्यसीमा हो, यह बहुत कम ही देखा जाता है। एंगेल्सने अपने पम्फ्लेटमें आस्ट्रियाके शासकोंके दावेको गलत कहा। पुरानी जर्मन कहावतके अनुसार गदहेके मतलबसे यह बोरीको पीटना था। यदि फ्रासके लिये राइनका बोंया तट अपने हाथमें करना आवश्यक है, तो जर्मनी पोके तटको कैसे छोड़ सकता है? मार्क्सने इस पम्फ्लेटको पढ़कर एंगेल्सको लिखा था : “असाधारणतया ठीक : इसका राजनीतिक पहलू भी, जो कि सौरा बहुत कठिन है। पम्फ्लेट बहुत सफल होगा।” लेकिन लाजेल एंगेल्सके विचारोंसे सहमत नहीं था। उसने “इतालियन युद्ध और प्रशियाके लिये करणीय” के नामसे तुरन्त एक पम्फ्लेट छापकर निकाल दिया, जिसमें उसने एंगेल्सके विचारोंका खड़न करते, अपने विचारोंको रखक्खा। दोनोंने एकही तरहकी स्थितियोंका अपने पम्फ्लेटमें उल्लेख किया था और उनके विचारोंमें मौलिक मतभेद नहीं था, वल्कि मार्क्सके एक साल बादकी रायके अनुसार यह “उन्हीं स्थितियोंसे परस्पर विरोधी निर्णय पर पहुँचना था।” दोनोंके राष्ट्रीय या क्रान्तिकारी विचार एक से थे, दोनों ही सर्वहाराकी मुक्ति अपना अन्तिम लक्ष्य मानते थे, जिसके लिए बड़े जातीय राज्योंका निर्माण आवश्यक था।

जर्मन होनेके कारण दोनों जर्मन जातीय एकतामें सबसे अधिक दिलचस्पी रखते थे, जिसके लिए जरूरी था कि जर्मनीके मिश्र-भिन्न राजवंश समाप्त कर दिये जायें। दोनों ही जर्मन सरकारोंको पसन्द नहीं करते उनकी हार चाहते थे। युद्धके समय मज़ूर-वर्ग अपनेको शासक-वर्गके हाथमें इस्तेमाल करनेके लिए दे दे, यह भाव भी उनमें नहीं था। मार्क्स लाजेलको “मज़बूत पट्टा” कहते थे और यह भी जानते थे, कि वह बूज्या पार्टीसे कभी नहीं मिल सकता। लेकिन, मार्क्सका सन्देह अभी पूरी तौरसे दूर नहीं हुआ था।

२. “डास फॉल्क”

दुख्यात किंकल फिर मैदानमें उतरा और उसने १ जनवरी १८५६ से एक “साप्ताहिक” “डेर हेरमान” निकालना शुरू किया। कवि फ्राइलिघथके अनुसार : “देश लौटनेके लिए बेकरार बीरो” का वह बड़ा प्रिय मुख्यपत्र था। लेकिन, सभी बूज्या निर्वासित पत्रसे ग्रसन्न नहीं थे। मुक्त-व्यापारवादी फौखेने “ही नोये जाइट” को बचानेके लिए धन-संग्रह करनेकी एक कमेटी बनाई, जिसमें वह सफल रहा और एलार्ड बिज़काम्पके सम्पादकत्वमें वह अब “डास फॉल्क” (जनता) के नामसे निकलने लगा। बिज़काम्प “ही नोये जाइट” में मक्सिलसे लेख लिखा करता, कहीं अध्यापकी करता था। अब उसने अपना सारा समय इस कामके लिये देनेका निश्चय किया। पत्र निकलनेके थोड़े ही समय बाद लीबकनेस्टके साथ मार्क्ससे मिलकर उसने अपने पत्रके लियें लेख माँगा। १८५० ई० में जो झगड़ा हुआ था तबसे उन्होंने कमकर शिक्षा लीगसे अपना कोई सम्बन्ध नहीं रखा था, बल्कि लीबकनेस्टका लीगके साथ सम्बन्ध जोड़ना भी उन्हें पसन्द नहीं था। मार्क्स लेख लिखनेके पक्षमें नहीं थे, लेकिन साथ ही वह नहीं चाहते थे, कि किकेलको आखाइमें अकेला छोड़ दिया जाय, इसलिए उन्होंने लीबकनेस्टके पत्रमें सम्पादनमें बीज़काम्पकी सहायता करनेमें सहमति प्रकट की। अपने बारेमें कह दिया कि मैं अपने और एंगेल्स द्वारा सम्पादित पार्टी-पत्रके सिवाय और मैं लेख नहीं लिखूँगा। “डास फॉल्क” का खर्च चलाना आसान नहीं था, यद्यपि एंगेल्स अपनी लेखनीसे उसे पूरी सहायता कर रहे थे।

आखिर अगस्तके अन्तमें पत्र बन्द हो गया। मार्क्सने अपनी अव्यवहारिकतासे पत्रके मुद्रक की बिलकी जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली, जिसने मार्क्सके ऊपर पैसेके दावा करनेकी घमकी दी और अन्तमे पॉच पौंड देकर मार्क्सने अपना पिंड कुछाया।

३. “हेर फोट” *

१ अप्रैल १८४४ को एक जर्मन निर्वासित कार्ल फोट इतालियन युद्धके प्रति जर्मन जनतात्रिकताका एक राजनीतिक प्रोग्राम लन्दनके निर्वासितोंके पास भेजा, जिसमे उसने स्वीजरलैंडसे एक नये सासाहिकके प्रकाशनके लिये लन्दन-वालोंके सहयोग माँगा। फोट फोलेड बन्धुओंका माजा था, जिन्होने जो कि फ्राकफोर्ट एसेम्बलीके वामपक्षी नेताओंमेंसे थे इस तथा कथित पार्लियामेन्टमें अपने मरनेके समय राइखके पॉच रिजेन्टोंमेंसे एक फोटको भी बनाया था। फोट इस समय जेनेवामें भूत्वका प्रोफेसर था। प्रोग्रामकी एक कापी कवि फाइलिग्रथको भी मिली और उसने फोटके बारेमें मार्क्सकी राय पूछी। उन्होंने अनुकूल राय नहीं दी। मार्क्सने विस्तारपूर्वक एंगेल्सको बतलाया था : “जर्मनी अ-जर्मन भूमिको त्यागती है। वह आस्ट्रियाका समर्थन नहीं करती। फ्रेच निरकृशता अस्थायी है, आस्ट्रियन निरकृशता स्थायी। दोनों निरकृश अपनेको लोहूलोहान करते मरना चाहते हैं।... जर्मनीके लिये सशब्द तटस्थता। जर्मनीमें हमारे जीवन तक किसी कातिकारी आन्दोलन नहीं सौचना चाहिए। फोट प्रत्यन्त विश्वसनीय खोतोंसे सूचना पाये हैं, जिसके परिणामस्वरूप जैसे ही प्रास्ट्रियाको बोनापार्ट च्वस्त करेगा, पिरुभूमिमें कुमार-रिजेन्टके अधीन एक उदार-राष्ट्रवादी (नरम) दल खड़ा हो जायगा और फोट हो सकता है दरवारी बेदूषक बन जाये।”

जूनके आरंभमें मार्क्स अपने मित्रों और सहानुभूतिकारोंसे “डास फोल्क” नी सहायताके लिये धन जमा करने मान्वेस्टर गये थे। उनकी अनुपस्थितिमें जीवनेखड़को एक पम्लेटका गेली प्रूफ मिला, जिसमे फोट पर आक्रमण किया

गया था, और उसके बारेमें ब्लिंडके दोषारोप थे। कम्पोजिटर फोगेलेने बतलाया कि पम्पलेट तो स्वयं ब्लिंडने दिया था, और गेलीमें प्रूफ शोधन भी उसीके हाथ का है। कुछ दिन बाद लीबकनेहटने उस पम्पलेटकी एक छुपी कापी पाकर उसे आगस्टुर्गमें “अल्गोमाइन जाइटुंग” पत्रमें भेज दिया, जिसका कि वह कितने ही चाँपोंसे संबाददाता रहता आया था। पम्पलेटके साथ भेजे गये अपने पत्रमें उसने लिखा था, कि यह एक सम्भान्त जर्मन-निर्वासितका लिखा हुआ है और इसमें उल्लिखित दोषारोप प्रमाणित किये जा सकते हैं।

“अल्गोमाइन जाइटुंग” ने उसे प्रकाशित कर दिया, जिस पर फोग्ने पत्रके ऊपर मानहानिका दावा कर दिया। पत्रने लीबकनेहटसे सबूत माँगे। लीबकनेहटने ने ब्लिंडसे जब इसके बारेमें पूछा, तो उसने कहा कि उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है, और न मैंने पम्पलेट लिखा है। यद्यपि उसे बाध्य होकर हतना मानना पढ़ा, कि पम्पलेटकी कुछ बातें मैंने मार्क्सको बतलाई थीं, तथा उनमेंसे कुछको अर्कहार्टके पत्र “दि क्रीप्रेस” में छपवाया था। आगस्टुर्गमें अभी सुकदमा खुला नहीं था, इसी समय १० नवंबर (१८५६) को जर्मन महाकवि शिलेरकी शताब्दी मनानेकी तैयारी हुई। इसमें एक और वैमनस्य उठ खड़ा हुआ : देशके बाहरके जर्मनोंने हर जगह महोत्सवकी तैयारी की थी, लन्दनमें भी उसकी तैयारी हुई, जिसके प्रबन्धको किंकलकी मंडलीने अपने हाथमें कर लिया और उसने लन्दनके प्रशियन दूतावासके लोगोंको भी निमंत्रित किया, दूसरी तरफ जर्मन सर्वहारा निर्वासितोंको उससे अलग रखनेकी कोशिश की। ऐसी रिथितमें मार्क्स और एंगेल्स उसके साथ सहानुभूति नहीं रख सकते थे। उनको आश्चर्य हुआ जब फ्राइलिग्रथने किंकलके भाषणके बाद वहाँ एक कविता पढ़ी। उसके बाद किंकलके पिट्ठू वेटजीव उपनाम बेयने कविकी प्रशंसा करते हुये पत्रमें एक लेख छाप दिया, जिसके अन्तमें मार्क्सपर भी आक्रमण किया। मार्क्स और फ्राइलिग्रथ के बीचके इस सबके कारण वैमनस्य पैदा हो गया, लेकिन दोनोंकी मित्रता अकस्मात् नहीं हुई थी, इसलिये दो-एक पत्रोंकी लिखा-पढ़ीके बाद १८५६ ई० के समाप्त होनेके साथ यह वैमनस्य भी खत्म हो गया।

१८५० ई० के नववर्षके समय फोग्ने “अल्गोमाइन जाइटुंगके विरुद्ध

“मेरी कार्बाई” के नामसे एक पुस्तक छापी, जिसमें मुकदमेकी सारी कार्बाई और सबूत पूरी तौरसे बड़ी शुद्धताके साथ सम्मिलित किये गये। साथ ही उसने मार्क्सपर भी आक्रमण करते हुये अपने एक पहले लेखको उद्धृत किया, जिसमें मार्क्सको गुन्डोकी मडलीका नेता बतलाया था और पिनूभूमिके लोगोंको तंग करके उनसे ऐसे ऐंठनेवाला कहनेसे भी आनाकानी नहीं की थी : “एक पत्र नहीं, बल्कि सैकड़ों पत्र लोगोंके पास जर्मनी मेजे गये, जिनमें धमकी दी गई, कि एक निश्चित रकम यदि निश्चित पते और निश्चित तिथि-पर नहीं मेजेंगे, तो इस या उस क्रातिकारी कार्बाईमें भाग लेनेके लिए उनके भेदको खोल दिया जायगा।”^१ फोटने, सच्ची बातोंके साथ सोलहो आना सूठी बातोंको मिलाकर मार्क्सके ऊपर, ऐसे कठोर आक्षेप किये थे, कि जिनमें क्या सच है क्या झूठ है, इसका पता लगाना मुश्किल था। जर्मनीमें इस पुस्तकसे बड़ी सनसनी फैली और मार्क्सके विरोधी सारे बूर्बा-प्रेसने उसका स्वागत किया। “नेशनल जाइटंग” ने फोटकी पुस्तकके आधारपर दो लम्बे सम्पादकीय लेख लिखे। जनवरीके अन्तमें जब पत्रकी कापियाँ लन्दन पहुँची, तो वहाँ मार्क्सके परिवार—विशेषकर फ्राउ मार्क्स—को बहुत धक्का लगा। लन्दनमें फोटकी पुस्तक कहीं नहीं मिली, तो मार्क्सने फ्राइलिग्रथसे पूछा कि उम्हारे “मित्र” फोटने कोई कापी मेजी होगी, उसे देना। फ्राइलिग्रथको यह बहुत बुरा लगा और उसने कहा, कि फोट मेरा मित्र नहीं है और न मैंने उससे कापी पाई।

अपने ऊपर वैयक्तिक आक्रमणका जवाब देना मार्क्स पसन्द नहीं करते थे, लेकिन इस बक्त वह उसे अत्यन्त आवश्यक समझते थे, साथ ही “नेशनल जाइटंग” के ऊपर मानहानिका दावा करनेका भी उन्होंने निश्चय कर लिया। खास कर अपनी बीची और लड़कियोंके ऊपर जो काशरतापूर्ण आक्षेप उस पत्रने किये थे, उसके लिये न कुछ करना वह पसन्द नहीं कर सकते थे। मार्क्सने पहले ट्विंडसे फोटके बारेमें किये गये आक्षेपका सबूत माँगा, लेकिन उसने आनाकानी की। एंगेल्सका खाल था, कि हर फोटपर जो दोष लगाये गये, उन्हें ट्विंडने स्वयं गढ़ा। इसके बारेमें पूरी जांच-पढ़ताल करनेके बाद ४ फरवरी-को मार्क्सने “दि फ्री प्रेस” में एक घोषणा निकाली, कि जिना नामका छपा

पम्फ्लेट होलिंगरके प्रेसमें नहीं छुपा, यह कहना गलत है। कार्ल बिलंड़ सूठा है, अगर वह इसे अनुचित समझता हो, तो मेरे ऊपर अग्रेजी अदालतमें मुकदमा कर सकता है। बिलंड़ को मुकदमा चलानेकी हिम्मत कहाँ थी, हाँ, उसने “अलगेमाइन जाइट्स” में अपना एक लम्बा वक्तव्य प्रकाशित कराया, जिसमें फोटोकी निन्दाकी, और उसके ऊपर रिश्वत लेनेका आचेप किया, साथ ही उक्त पम्फ्लेटका लेखक होनेसे इन्कार किया। मार्क्स इतनेसे जान छोड़ने वाले नहीं थे, उन्होंने मजिस्ट्रेटके सामने वीहेसे यह वक्तव्य दिलाया, कि वीहेने “दास फोल्कमें”* छापने के लिये उस पम्फ्लेटको कम्पोज किया था, और गैली मूफका संशोधन बिलंडके हाथों हुआ था, जिसे मैं पहचानता हूँ। मुझे वक्तव्य देनेसे होलिंगर और बिलंडने रोका। पहलेने पैसेका लोभ दिलाकर और दूसरेने भविष्यमें कूण रखनेके बादेसे। इस इजहारके बाद बिलंडपर मुकदमा चलाया जा सकता था, लेकिन उसके परिवारके ख्यालसे मार्क्सने बैशा नहीं किया। मार्क्सने वीहेके इजहारकी एक कापी लुइ ब्लांकके पास भेज दी, जो बिलंडका मित्र था, जिसमें यह भी लिखा था, कि क्यों मैंने आगे कार्रवाई करना छोड़ दिया।

इस तरह फोट-कांडकी बड़ तक पहुँचनेके बाद अब उसका जवाब देना था, लेकिन उससे पहले फ्राइलिग्रथके साथ मनमुटावका दूर करना आवश्यक था। मार्क्सने कविके पास वीहेके इजहार और बिलंडके विशद्ध अपने वक्तव्यकी कापी भेजी, लेकिन कविने उसका कोई जवाब नहीं दिया। मार्क्सने पिर लिखा : “यदि मैंने किसी तरह तुमको नाराज किया हो, तो मैं किसी समय भी अपनी भूलको खुशीसे माननेके लिये तैयार हूँ। कोई भी मानवीय बात मेरे लिये पराई नहीं हो सकती।...हम दोनों अच्छी तरह जानते हैं, कि वर्षों तक हमसेसे हरेकने अपने दंगसे अत्यन्त निःस्वार्थ भावसे अपने निजी हितोंकी अवधेलना करते हुये अत्यन्त मेहनती और अत्यन्त दुःखपीड़ित वर्गके भाँडेको ढोंगियोंके सिरके ऊपर रखता। इतिहासके प्रति यह एक कुद्र अपराध होगा, यदि हम

* “Das Volk”.

छोटी-छोटी बातोंमें, किसी गलतफहमीके कारण अलग-अलग वह चलें। पत्रको समाप्त करते हुये मार्कर्सने कविके प्रति अपनी गहरी मित्रताके भावको प्रकट किया। फ्राइलिग्रथने मित्रताके लिये आगे बढ़े हाथको अपने हाथमें लिया जरूर लेकिन पूरी तौरसे नहीं, जैसा कि उसके पत्रके अन्तिम भागसे मालूम होता है, “मविष्यमें भी मैं स्वतन्त्र, केवल अपने अधीन अपनी जानमें उचित कामको करनेके लिये स्वतन्त्र रहना चाहता हूँ।”

फोटके ऊपर मुकदमा चलानेके बारेमें लाजेलकी राय नहीं थी और सच-मुच मुकदमा करनेपर प्रशियन अदालतने सबूतके अपर्याप्त होनेके कारण उसे खारिज भी कर दिया। अपीलमें भी वही बात हुई। अब मार्कर्सको पुस्तकके रूपमें जबाब देनेके सिवा और कोई चारा नहीं था। लेकिन, पुस्तक लिखने तथा फोटके उठाये सभी अफवाहों और देखोंको दूर करनेके बास्ते दुनियाके भिन्न-भिन्न भागोंमें विखरे हुये लोगोंसे लिखा-पढ़ी करके सामग्री जमा करना जरूरी था। उसमें काफी समय लगा और अन्तमें १७ नवम्बर १८६० है० को हीर फोटके नामसे मार्कर्सने अपनी पुस्तक तैयार की। मार्कर्सकी यह कृति तब तक पुनः प्रकाशित नहीं हुई, जब तक कि बोल्शेविक-कान्तिके (१८६७ है०) सफल होनेके कितने बर्षों बाद मार्क्सोंके मार्कर्स-एरेल्स-लेनिन प्रतिष्ठानने उसे प्रकाशित नहीं किया। पुस्तक छोटी नहीं, बल्कि १८२ घने छपे हुये पृष्ठोंमें समाप्त हुई थी, जिसे साधारण तौरसे छपनेपर दूनी जगहकी आवश्यकता होती। भाषाके चमत्कारको दिखलानेमें यह एक सुन्दर साहित्यिक कृति है। पुस्तकका विषय रुखा था, लेकिन उसमें मार्कर्सने बड़ी रोचकता भर दी है, साथ ही जगह-जगह सुहावरों और उद्धरणोंसे पता लगता है, कि मार्कर्सका प्राचीन और अर्वाचीन साहित्यसे कितना विस्तृत परिचय था। मार्कर्सके इस काममें लोगोंने जगह-जगहसे बहुतसी ज्ञातव्य बातें भेजी थीं। एक-एक करके अपने ऊपर किये गये सभी आचेपोंका मार्कर्सने जबाब दे, फोटके ऊपर आक्रमण किया। फ्रासमें-नकली बोनापार्टके शासनके खतम होनेके बाद जो कागज-पत्र राष्ट्रीय-प्रति-रक्षाको सरकारने प्रकाशित किये, उनमें अगस्त १८५६ है० में फोटके हस्ताक्षर-बाली एक रसीद भी मिली, जिसमें तीस चाँदीके सिक्कोंके पानेकी स्त्रीकृति दी

गई थी। मार्क्सने अपनी पुस्तकमें लिखा था, कि हेर फोटको बोनापार्टने अपने पक्षमें प्रोपेगेंडा करनेके लिये पैसा दिया था। इस पुस्तकसे तत्कालीन यूरोपके कई भीतरी पहलुओंपर प्रकाश पड़ता है। लोदर बुखेरने पुस्तकको समसामयिक इतिहासका एक संग्रह ग्रंथ बतलाया था, लाजेलने हरेक वृष्टिसे “मास्टरपीस” कहा था। एंगेलसने इसे खंडन-मंडनकी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक माना “१८ वीं बूमियेरसे भी; यद्यपि “१८ वीं बूमेरका” जितना स्थायी महत्व आज भी है, उतना “हेर फोट” का नहीं रहा। आद्येप और खंडन-मंडन करते समय भी मार्क्स कहीं नीचे नहीं उतरे। फ्राउ मार्क्सके अनुसार “हमारा पुराना शत्रु रुग्न भी मानता है, कि यह किताब एक सुन्दर प्रहसन है।” एंगेलसने जर्मनीमें पुस्तक छपवानेकी सलाह दी, लेकिन मार्क्सने लन्दनके एक तसण जर्मन प्रकाशको लाभान्वित करना चाहा और छापनेके लिये भी पचीस पौंड अग्रिम दिया। पुस्तक छप तो गई, लेकिन जर्मनीमें उसके बेचनेका कोई प्रबन्ध नहीं किया जा सका। मार्क्सके अग्रिम दिये पैसोंमेंसे कुछ नहीं लौटा। यही नहीं, बल्कि प्रकाशकके पार्टनरने घमकी देकर छपाईके सारे खर्चको मार्क्ससे वसूल किया—पचीस पौंड अग्रिम देते वक्त मार्क्सने कोई कागज-पत्र नहीं लिखवाया था।

४. घरेलू स्थिति

फोटने फ्राउ मार्क्स (श्रीमती मार्क्सके) ऊपर जो धृणित आद्येप किये थे, उसके कारण जेनी हृदयको भारी आघात लगा था। कई रातें उन्हें नींद नहीं आई और स्वास्थ्य खराब होने लगा, तो भी मार्क्सके जवाबकी शुद्ध कापी तैयार करनेमें उह्वोने भारी मेहनत की। इस कामके समाप्त होते-होते जेनी चारपाईपर पड़ गई। डाक्टरने चेचककी श्रीमारी बतलाई और बच्चोंको तुरन्त घरसे अलग करनेके लिये कहा। बच्चे लीवकनेल्टके पास बेज दिये गये और मार्क्स तथा बरकी अनुरक्त नोकरानी लेनचेन देसुथ जेनीकी सेवा-सुश्रुशा करने लगे। वह ज्वालाके मारे तड़फ़ड़ती रहीं, लेकिन मार्क्स एक घंटेके लिये भी पत्नीके पाससे हटनेको तैयार नहीं थे। जेनी एक सप्ताह तक जीवन और मृत्युके झूलेमें भूलती रहीं। खैरियत यही हुई, कि दो बार चेचकका टीका लगा चुकी थीं, इसलिये

परम अनिष्ट नहीं होने पाया। बीमारीके पज्जेसे क्लूटनेके बाद भी उन्हें बहुत दिनों तक दुर्बल रहना पड़ा। डाक्टरने बतलाया खैरियत हुई जो बीमारी कि हो गई नहीं तो जिस तरहका मानसिक परिताप और छोम उनके ऊपर पड़ रहा था, उसके कारण और कोई भयकर आफत सिरपर आती। फ्राउ मार्कस्टके रोग-मुक्त होनेके साथ ही अब अपनी शारीरिक और मानसिक परेशानीके कारण मार्कस्ट बीमार पड़ गये, जिसमें आर्थिक चिन्ता भी कारण थी, क्योंकि “हैरपोर्ट” में घाटा ही घाटा सहना पड़ा था और उधर न्यूयार्क ट्रिब्यून अब आधा ही-पारिश्रमिक दे रहा था। बीमारीसे उठनेके बाद मार्कस्टने इधर-उधरसे कुछ पैसा-लानेका निश्चय किया, जिसके बारेमें उनकी पत्नीने फ्राउ वेडेमेयरको लिखा था : “अपने बाप-दादों तथा तमाकू और पनीरकी भूमि हालेड तक धावा मारने जा रहे हैं ताकि अपने चचासे कुछ प्राप्त करनेकी कोशिश करें।” यह पत्र जेनी ने १६ मार्च १८६१ को लिखा था। इन सारे कष्टोंमें तीनों लड़कियों पिता-माताके आनन्दकी सबसे बड़ी साधन थी। सात सालकी जेनी ‘अपने बाप जैसी काले बालों, काली आँखों और सॉवले शरीरवाली थी। पन्द्रह सालकी लोरा-अधिकतर माँ जैसी थी, उसके बाल धूंघराले तथा भूरे, उसकी पुतलियाँ माँकी तरह चमकीली तथा हरे रंगकी थीं। दोनों बड़ी लड़कियों बड़ी मुरल थीं, लेकिन उनमें किसी तरहका व्यर्थका अभिमान छू नहीं गया था। दोनों माँ-बापको तो प्रिय थी ही, लेकिन सबसे छोटी एलिनोर धरकी प्रिय गुडिया थी, जिसे प्यारसे दूसी कहा जाता था। माँने उसके बारेमें लिखा था : यह बच्ची उस वक्त पैदा हुई, जबकि हमारा बेचारा नन्हा एडगर मरा। हमारे हृदयमें उसके प्रति जो प्रेम और कोमल भाव थे, उन सबको हमने उसकी ब्रह्मनके ऊपर स्थानातरित कर दिया, आर दोनों बड़ी वहने माँकी तरह उसकी देखभाल करती हैं। साथ ही इतना प्यारके लायक, चित्र जैसा मुन्द्र और स्वभावका मधुर बच्चा पाना मुश्किल होगा।...हम सब लंचे स्वरसे उसके सामने परियोंकी कहानियाँ पढ़ते-पढ़ते थक जाते हैं, लेकिन हमारी बुरी गति हो, अगर नीली चिकिया या नन्हे हिमश्वेत...की कहानीका एक शब्द भी छोड़ जाये। इन परियोंकी कहानियोंके सुननेके कारण लड़कीने जर्मन सीख लिया और वह उसे अत्यन्त शुद्ध तथा

न्याकरणानुसार बोलती है, और साथ ही अँग्रेजी भी यों ही सीख गई है। बच्ची कार्ल को बहुत प्रिय है। उसकी हँसी, उसकी मीठी-मीठी बातें बापकी सारी परश्चानियाँ दूर कर देती हैं। फिर जेनी अपने अनुरक्त मित्र तथा नौकरानी लेनचेन की तारीफ करती अपने पतिकी बातको दोहराती है : वह कहेगा, कि इसके (लेनचेन) के रूपमें तुम्हें एक भारी निधि मिली है। वह सोलह वर्षोंसे हमारे साथ है, हमारे जीवनके उत्तर-चदावका उसने बड़ी बहादुरीसे सामना किया।

हालेंडर्से मार्क्सका अभियान सफल रहा। वह वहाँ अपने चचा फिलिप मार्क्ससे मिले। फिर बर्लिन गये। इच्छा थी पार्टीका सुखपत्र निकालनेके लिये कुछ ऐसा जमा करें। प्रशियाके तख्तपर अलहेल्म बैठा था, जिससे जनवरी १८६१में सार्वजनिक ज्ञामा प्रदानकी घोषणा की थी, जिसके कारण मार्क्सको जर्मनी जाने का सुभीता मिला था। लाजेलने बर्लिनमें उनका स्वागत किया। बर्लिनमें मार्क्स को कोई आकर्षण नहीं मालूम हुआ। लाजेलने स्वयं पत्र निकालनेका सुझाव रखवा और सम्पादकके लिये अपने साथ मार्क्स और एंगेल्सको रखनेका भी प्रस्ताव किया। लेकिन, मार्क्सका लाजेलपर उतना विश्वास नहीं था। प्रशियामें उदारवादका दिखावा चाहे कितना ही किया जाय, लेकिन वह मार्क्स जैसे आदमीको अपने भीतर पचा नहीं सकती थी। लाजेलने भी कोशिश की कि मार्क्सको फिर प्रशियन नागरिकता का अधिकार मिल जाये, लेकिन सरकारके जवाब देह मंत्रियोंने उसे स्वीकार नहीं किया।

बर्लिनसे प्रस्थान करके मार्क्स अपने मित्रोंसे मिलने कोलोन गये, खासकर जुदिया माँसे भेंट करना वह जरूरी समझते थे। मईके आरम्भमें फिर वह लंदन लौट गये। बर्लिनमें रहते बीनाके पत्र “डी प्रेस” से उन्होंने बातचीत की, और पत्रने प्रत्येक लेखका एक पौँड और प्रत्येक रिपोर्टका दस शिलिंग देना स्वीकार किया। इसी समय “न्यूयार्क ड्रिव्यून” से भी सम्बन्ध बेहतर हो गया। इस तरह रुपयोंकी आमदनी कुछ बड़ी जरूर, लेकिन पुराने कर्जे पूरी तरह अदानहीं हो सके। बीमारी और जर्मनीकी यात्रामें खर्च भी अधिक हो गया।

१८६२ ई० में हालत बेहतर होनेकी जगह वह और खरांब हो गई। “डी प्रेस” से जो आशा थी, वह पूरी नहीं हुई। मार्चमें मार्क्सने एंगेल्सको

लिखा था : “मुझे इसकी आधिक पर्याह नहीं है, कि वह सबसे अच्छे लेखों... को नहीं छापते, लेकिन आर्थिक तौरसे मेरे लिये यह बदाश्तसे बाहरकी बात हो जाती है, जब कि वह चार या पाँच लेखोंमें सिर्फ एकको छापते और उसीका पारिश्रमिक देते हैं। जिससे पैसा पाँतीवाले लेखकके दर्जेसे भी मुझे नीचे गिरना पड़ता है।” इसी साल “न्यूयार्क ट्रिब्यून” से सम्बन्धविच्छेद हो गया, कारण शायद अमेरिकाका यह युद्ध था। यद्यपि यह युद्ध मार्क्स्टके लिये वैयक्तिक घटेका कारण हुआ, लेकिन राजनीतिक सम्भावनाओंके बढ़ जानेके कारण वह फिर अपने वैयक्तिक कल्टोंको भूल गये। मार्क्सने अमेरिकिन यह-युद्धके बारेमें उत्तरी राज्योंके अंतिम विजयपर अपना पूरा विश्वास प्रकट किया, और सितम्बर में अपने मित्रोंको लिखा था, “जहाँ तक यकियों (अमेरिकनों) वा सम्बन्ध है, मैं अब भी पूरी तरह विश्वास रखता हूँ, कि वे (उत्तरी राज्य) विजयी होंगे। जिस तरह वह लड़ाइयों लड़ रहे हैं, वह इतने दिनों तक धोखा-धड़ीसे शासन करनेवाले बूर्जा-गणराज्यके लिये विल्कुल स्वाभाविक है। दक्षिणी रियासतोंका शासन कुलीनशाही है और युद्ध करनेके लिये कुलीनशाही ज्यादा अनुकूल है, खास करके दक्षिणी रियासतोंकी कुलीनशाही, जहाँपर कि सारा उत्तादक अमनिगर (हञ्ची) करते हैं, और चालीस लाख गोरे पेशेसे लुटेरे हैं। लेकिन यह सब होते हुये भी मैं अपने सिरकी बाजी लगानेके लिये तैयार हूँ, कि अन्तमें इन पट्टोंको सबसे बुरे दिन देखने होंगे।” मार्क्स्टका विचार अन्तमें सच निकला।

आर्थिक कठिनाइयाँ बहुत बढ़ चुकीं थीं, पानी नाक तक आ गया था। मार्क्सने ४८ वर्षकी उमरमें किसी रेलवे कम्पनीकी नौकरी भी करनी चाही थी, लेकिन लिखावट अच्छी न होनेके कारण उसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। आर्थिक अवस्था जैसे-जैसे खराब होती गई, वैसे-वैसे मार्क्स्टको बार-बार बीमार पड़ना पड़ा। पुरानी पेटकी बीमारीके अतिरिक्त अब जहरबादके फोड़ेका भी आक्रमण हुआ, जो कि कई वर्षों तक पिंड छोड़नेके लिये तैयार नहीं था। बीड़ीका स्वास्थ भी विल्कुल खराब हो चुका था। लड़कियोंके पास कपड़ा और जूता नहीं था, कि स्कूल पढ़नेके लिये जायें। उनकी सहेलियाँ उस वक्त

इंगलैंडकी महान प्रदर्शनी देखने जाया करती थीं, लेकिन अपनी गरीबीके कारण मार्क्सकी लड़कियाँ मन मारे घरमें बैठी रहतीं। बड़ी लड़की लौरा अब इस अवस्थाकी हो गई थी, कि अपनी स्थितिको समझे, इसलिये वह धुल-धुलकर मरी जा रही थी, बाप-माँको बतलाये बिना एक बार उसने रंग-मंच पर जानेके लिये शिक्षा लेनी भी शुरू की थी।

अन्तमें अवस्था यहाँ तक बुरी हो गई, कि मार्क्सने अपना सारा फर्नीचर घरके मालिकके लिये छोड़ देनेका निश्चय किया और यह भी कि अपने कर्जे देनेवालोंको दिवालिया होनेकी स्वत्तना दे दें, दोनों लड़कियोंको अपने मित्रोंके द्वारा किसी परिवारमें गवर्नेंस रखवा दें, अनुरक्त लेनशेन देमोथको कोई और काम दिलवा दें और अपनी छोटी लड़की तथा बीबीके साथ गरीबोंके लायक किसी कोठरी में चले जायँ।

लेकिन, एंगेल्सने मार्क्सके इस निश्चयको पूरा होने नहीं दिया। १८६० ई० के वसन्तमें एंगेल्सके पिता मर गये और एरमेन तथा एंगेल्स फर्ममें उनको अच्छा स्थान मिल गया, जिससे आगे वह पार्टनर भी बन सकते थे। लेकिन, इसी समय अमेरिकन यू-युद्धके हो जानेके कारण व्यवसाय की हालत अच्छी नहीं रही और उन्हें स्वयं अपना खर्च कम करना पड़ा। तो भी एंगेल्सने मार्क्स की सहायता करके उनको उनके इरादेसे बाज रखवा। १८६३ ई० के आरभिक महीनोंमें एंगेल्सको भी एक भारी दुःखका सामना करना पड़ा। दस वर्षोंसे वह एक आइरिश तस्णी मेरी वर्न्सके साथ पति-पत्नीके तौरपर किन्तु समाजके मुहर बिना रहते आये थे। इसी साल मेरी मर गई। एंगेल्सको भारी मानसिक आश्रात लगा। मार्क्सको इसके बारेमें लिखते हुये उन्होंने कहा था : “मैं अपने भावोंको विल्कुल ही वर्णित नहीं कर सकता। बेचारी लड़की पूरे दिलसे मुझे प्यार करती थी।” एंगेल्सको आशा थी, कि मार्क्सके लिये सान्त्वना अधिक शब्दोंमें प्रकट करेंगे, लेकिन जो शब्द जवाबमें मिलें, वह थोड़े और निर्वल थे, जिसके बाद धरकी शार्थिक कठिनाइयोंका रोना था। एंगेल्सको मार्क्सका यह वर्ताव तुरा लगा। एंगेल्सने भी पत्रका जवाब कुछ देरसे ही देना अच्छा समझा और मार्क्सने भी कुछ और दिल ठंडा हो जाने तक अपने मित्रको लिखनेकी

जल्दी नहीं की। फिर मार्कर्सने चिट्ठी लिखते वक्त “हृदयहीन होने” से इन्कार करते हुये यह स्वीकार किया, कि मैंने उचित सहानुभूति प्रकट करनेमें कोताहीसे काम लिया। एगोल्सको सबसे बड़ी शिकायत यह थी, कि श्रीमती मार्कर्सने उनके इस दुःखमें एक भी सहानुभूतिका शब्द नहीं लिख भेजा। इसपर मार्कर्सने लिखा : “‘खियों विचित्र जन्म्तु हैं, उनमें अत्यन्त बुद्धिमान भी। सबेरे मेरी छी मेरीकी मृत्यु और तुम्हारे दुःखके लिये इतनी रो रही थी, कि वह अपने दुर्भाग्य को बिलकुल भूल गई, जो कि उसी दिन ऊपर पड़ा था, लेकिन शामको वह अनुभव करने लगी, मानो तब तक दुनियामें कोई जानता ही नहीं, दुःख क्या है, जब तक कि घरमें कर्ज उगाहनेके लिये अमीन न आ जाय, या बच्चोंके खिलानेकी चिन्ता न हो।”

एगोल्सने अपने सारे भावोंको भूलकर तुरन्त लिखा : “कोई आदमी वर्षों तक एक छोटीके साथ रहनेके बाद, हो नहीं सकता, कि वह उसकी मृत्युपर भारी दुःख न अनुभव करे। मैं अनुभव करने लगा, कि उसके साथ मेरी जवानी भी कब्रमें दफना दी गई। जिस समय मैंने तुम्हारा पत्र पाया, उस समय तक अभी वह दफनाई नहीं जा चुकी थी। साफ कहूँ, तुम्हारा पत्र एक सप्ताह तक मेरे सिरमें चक्कर काटता रहा, मैं उसे भुला नहीं सकता था। और, तुम्हारे अन्तिम पत्रने सब-ठीक कर दिया। और मैं दिलसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ, कि मैंने मेरीके साथ अपने सबसे पुराने और सबसे अच्छे मित्रको नहीं खो दिया।” यह प्रथम और अन्तिम मनमुटाव था, जो कि इन दोनों मित्रोंके सारे जीवनमें एक दूसरेके प्रति देखा गया।

एगोल्सने दौड़-धूप करके एकसौ पौड़ इकट्ठा करके दिया, जिससे मार्कर्सकी स्थिति कुछ सुधरी और उन्हें अपने घरको छोड़ दूसरी जगह जानके लिये मजबूर नहीं होना पड़ा। इस प्रकार १८६३-६४० का साल किसी तरह एउटर गया, जिसके अन्तमें मार्कर्सकी माँ मर गई, लेकिन माँसे शायद बहुत थोड़ा ही बहुत दायमांगका मिला। हाँ, विलहेल्म वोल्फने आठ या नौ सौ पौँड मार्कर्सके लिये छोड़े थे, जिससे उनको बड़ी सहायता मिली। विलहेल्म वोल्फ १८६४-६५ में मरा, जिसका मार्कर्स और एगोल्सको बहुत दुःख हुआ। मरते समय

बोल्फकी अवस्था अभी ४५ साल ही की थी। वह कुछ ही वर्षों के निवासित जीवन के बाद मैन्चेस्टर में कुछ कारबार करने लगा था और मरने से कुछ ही समय पहले बाप की वरासत में से भी कुछ सम्पत्ति उसे मिली थी। बोल्फने अपने धन का उपयोग इससे बढ़कर अच्छा नहीं समझा, कि उसे अपने गुरु के चरणों में भेंट कर दें। मार्क्सने पीछे अपने अमर ग्रंथ “डास कपिटल” के प्रथम भाग को “अविस्मरणीय मित्र, और सर्वहाराके बहादुर, ईमानदार और भद्र अग्रदूत” कहकर विल्हेल्म बोल्फको समर्पित किया था। १८६३ ई० के साथ मार्क्स के जीवन से सारी कठिनाइयाँ और चिन्तायें यद्यपि समाप्त नहीं हो गईं, लेकिन वह फिर उसी मात्रामें कभी नहीं लौटीं। इसका एक कारण यह भी था, कि सितम्बर १८६४ ई० में एंगेल्स अब अपने फर्म में पार्टनर हो गये थे और तबसे वह और अधिक परिमाण में लगातार सहायता देने लगे थे।

५. लाजेल आन्दोलन

जुलाई १८६२ ई० में लाजेल लन्दन आया। यह वह समय था, जब कि मार्क्स-परिवार भीषण आर्थिक कष्ट में पड़ा हुआ था, तो भी मार्क्स-पत्नी शिष्टा-चार-प्रदर्शन करने में किसी तरह पीछे नहीं रहना चाहती थीं। लाजेल को घर की स्थितिका कोई पता नहीं था। कई सप्ताहों तक लाजेल की मेहमानी होती रही और जानेके समय ही उसे वास्तविकता का पता लगा। फिर उसने वर्षों के अन्त में पन्द्रह पौंड देनेकी बात कहते हुये यह भी बतलाया कि एंगेल्स या किसी दूसरे की जमानत पर मेरे खाते से मार्क्स हुए भी ले सकते हैं। मार्क्सने बोर्क-हाइम की सहायता से चार सौ थालर लेना चाहा, इस पर लाजेलने एंगेल्स की जिम्मेवारी चाही, जिसका साफ मतलब था कि वह मार्क्स पर विश्वास नहीं करता है। मार्क्स को यह बहुत बुरा लगा, लेकिन एंगेल्सने उन्हें समझाया और जमानत देना स्वीकार कर लिया। उस समय तो लेनदेन हो गया, लेकिन अन्त में यही मार्क्स और लाजेल में गलतफहमी का एक भारी कारण बना। राजनीतिक मतभेद भी उठ खड़ा हुआ था, जिसके कारण १८६३ ई० के आरम्भ में मार्क्सने लाजेल के साथ पत्र-व्यवहार बन्द कर दिया था। लाजेल

अपने गुरु मार्कर्सकी हेरेक बातका मूल्य समझता था, लेकिन अपनी कमजोरियों-के कारण वह उन्हें असन्तुष्ट कर बैठा। मार्कर्स अतिमानव नहीं थे—और दुनियामें ढोगी ही अतिमानव हो सकते हैं। मार्कर्स साफ कहते थे, कि मानवके लिये समझ कोई भी बात भेरे लिये पराई नहीं है। लाजेल मार्कर्स और एगेल्स-के जीवनमें प्राप्त अनुयायियोंमें अत्यन्त चमत्कारिक व्यक्ति था, लेकिन वह अपने शुश्द्धयके मौलिक सिद्धान्त—ऐतिहासिक भौतिकवाद—को अच्छी तरह कभी न समझ पाया। हेगेलके बारेमें कहा जाता है, कि शैव्या पर पड़े हुये उसने अपने शिष्योंके बारेमें कहा था उनमेंसे केवल एकने मुझे समझा, और उसने भी गलत समझा। लाजेलने मार्कर्सके मूल्य-सिद्धान्तके एक ही अंशको स्वीकार किया, जो कि उसके वैधानिक और दार्शनिक दृष्टिसे दुनियाके देखनेके लिये अनुकूल था : आम सामाजिक श्रम-समय—जो कि मूल्यका निर्णय करता है, अपनी मेहनतकी पूरी उपज कमकरको प्राप्त करनेके लिये आम सामाजिक उत्पादन आवश्यक कर देता है। लेकिन मार्कर्सके लिये मूल्य-सिद्धान्त उत्पादनके पूँजीबादी ढंगकी सभी पहेलियोंका हल था। मूल्य और अतिरिक्त मूल्यके निर्माणकी ऐतिहासिक प्रक्रिया के तौरपर वह कुंजी थी, जोकि अनिवार्यतया समाजकी पूँजीबादी व्यवस्थाको समाजबादी व्यवस्थामें बदलकर रहेगी। लाजेल उस मेहनतों नहीं देख सका, जो कि उपयोग-मूल्यको पैदा करनेवाली श्रम-शक्ति और विनियम-मूल्यको पैदा करनेवाली श्रम-शक्तिके परिणामस्वरूप होती है। श्रमका सौदेके रूपमें मौजूद उसका दोहरा स्वरूप मार्कर्सके लिये “मौलिक-बात” थी, जिसके ऊपर ही राजनीतिक अर्थशास्त्रका समझना निर्भर करता था।

मार्कर्स और लाजेल दोनोंकी मूल्यके बाद एगेल्सने लाजेलके ढंगकी सराहना की थी। १८८६-८७ ई० में युक्तराष्ट्र अमेरिकामें सर्वहारा-आन्दोलन बढ़ने लगा किन्तु उसके प्रोग्राम गलत-सलत थे। उसी समय एगेल्सने अपने मित्र सोर्गको लिखा था : “आन्दोलनमें नये-नये दाखिल होनेके लिये किसी देशमें सबसे पहला बड़ा कदम जो उठाना है, वह है कमकरोका एक स्वतन्त्र राजनीतिक दलके रूपके संगठित करना, जैसे भी हो उसके लिये एक निश्चित कमकर पार्टी तैयार करना।” आगे एगेल्सने बतलाया, कि ऐसे दलने जिस प्रोग्रामको

स्वीकार किया है, अगर उसमें गड़वड़ी, बहुत बुद्धियाँ हों, तो भी कोई पर्वाह नहीं, क्योंकि यह अनिवार्य है और वह दोष कुछ समयके लिये ही होते हैं।” इसी समय अमेरिकाके दूसरे पार्टी-मित्रोंको भी उन्होंने लिखा था, कि मार्क्स-चादी सिद्धान्त कैथलिक चर्चकी तरह निर्भान्त होनेका दावा नहीं करता, वल्कि वह विकासकी प्रक्रियाकी व्याख्या करता है। मजरू-वर्गके प्रथम सक्रिय करनेके समय विचारोंकी गड़वड़ी अनिवार्यतया होती है। उसे और भी जटिल बनानेके लिये ऐसे विचारोंको कमकरोंके गलेके नीचे नहीं उतारना चाहिये, जिन्हें कि उस समय वह पचा नहीं सकते और जिन्हें पीछे वह स्वयं अपनी इच्छासे स्वीकार करेंगे।” अपनी बातोंके समर्थनमें एंगेल्सने अपने और मार्क्सके जर्मनीके कार्यकारी वर्षोंके समयके मनोभावको बतलाते हुये कहा : “१८४८ ई० के चसन्तमें हम जर्मनी लौटकर जनतंत्रतावादी पार्टीमें शामिल हो गये, क्योंकि मजरू-वर्गके कानोंमें अपनी बात पहुँचानेका वही एकमात्र साधन थी। यद्यपि हम पार्टीके अत्यन्त आगे बढ़े हुये थ्रांग थे, लेकिन तो भी हम उसके एक हिस्से ही थे” “नोये राइनिशो जाइटुंग” जिस तरह कम्युनिस्ट घोषणापत्रका जिक्र करनेसे अपनेको बचाता रहा, उसी तरह एंगेल्सने अमेरिकन साथियोंको भी बतलाया, कि उसे त्रुपत्तका अपना शास्त्र तुम्हें नहीं बना लेना चाहिये, क्योंकि मार्क्सके दूसरी कितनी ही साधारण कृतियोंकी तरह अमेरिकन कमकरोंके लिये इस समय उनका समझना मुश्किल है। कमकर पहले-पहल आन्दोलनमें आ रहे हैं। अब भी वह सैद्धान्तिक बातोंमें वेसूल-सालके तथा अत्यन्त पिछड़े हैं : हमें प्रतिदिनके व्यावहारिक आन्दोलनको आगे बढ़ानेके लिये सहारा लेना चाहिये, जिसके लिये हमें एक बिल्कुल नये साहित्यकी आवश्यकता है। जब एक बार अमेरिकन कमकर थोड़ा बहुत ठीक रस्तेपर चल पड़ेंगे, तो घोषणापत्र उनपर प्रभाव डाले बिना नहीं रहेगा लेकिन इस समय बहुत ही कम कमकरोंपर प्रभाव डाल सकेगा।

लाजेलका मतभेद अपने गुरुओंसे रहा, लेकिन ३ सितम्बर १८६४ को साजेलकी मृत्युकी खबर पाकर फ्राइलिग्रथने जब एंगेल्सको ३ सितम्बर १८६४ को उसके बारेमें तार दिया, तो दूसरे ही दिन एंगेल्सने जवाब दिया : “तुम

समझ सकते हो, कि इस खबरने मुझे कितना हैरान कर दिया। निजी तौरसे लाजेल कुछ भी रहा हो, साहित्यिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोणसे कुछ भी रहा हो, लेकिन राजनीतिक तौरसे वह निश्चय ही जर्मनीके अत्यन्त बढ़िया दिमागों मेंसे एक था। हमारे लिये इस समय वह अत्यन्त अनिश्चित मित्र था और यह भी बहुत कुछ निश्चित है, कि भविष्यमें वह निश्चित शत्रु होता, लेकिन जो कुछ हो, यह देखकर हमें बहुत कष्ट हो रहा है, कि चरमपंथी दलके कम या बेशी सक्षम पुश्टोंको जर्मनी किस तरह नष्ट कर रही है। कारखानेवालों और प्रगतिशील सश्वर कितना आनन्द मना रहे होंगे!—आखिर, जर्मनीमें लाजेल ही एक ऐसा आदमी था, जिससे वह डरा करते थे।

मार्क्सने कुछ दिनों बाद ७ सितम्बरको लिखा था : “पिछले कुछ दिनों लाजेलकी मृत्यु मुझे बड़ी बुरी तरहसे परेशान कर रही है। आखिर, वह पुराने गारदोंमेंसे एक था और हमारे शत्रुओंका शत्रु : जो सब कुछ होते भी मुझे इसका बहुत अफसोस है, कि पिछले कुछ वर्षोंमें हमारे सम्बन्ध अच्छे नहीं थे, यद्यपि दोष उसका था।” कौटेस हाट्जफेल्टके पास सहानुभूतिका पत्र लिखते हुये मार्क्सने कहा था : वह युद्धमें अचिलेसकी तरह तरुण मरा। कुछ सालों बाद लाजेलके उत्तराधिकारी श्वाइंजरको पत्र लिखते हुये मार्क्सने कहा था : लाजेलकी सेवा अमर है।

अध्याय १४

प्रथम इन्टर्नेशनल (१८६४ है०)

१. इन्टर्नेशनलकी स्थापना

प्रथम इन्टर्नेशनलकी स्थापनाके बारेमें मार्क्स-एंगेल्स प्रतिष्ठानने जो सामग्री प्रस्तुत की हैं, उससे निम्न बातें मालूम होती हैं ।

३१ फरवरी १८६४ को एक कमेटीने पैरिसके कमकरोको लन्दन-विश्व-प्रदर्शनमें अपना प्रतिनिधि भेजनेके लिये लिखा था । दो लाल कमकरोने मिलकर दो सौ प्रतिनिधि चुने, जिनमेंसे पहला दल १६ जुलाईको और अन्तिम दल १५ अक्टूबर १८६२ को पैरिससे लन्दनके लिये रवाना हुआ । “वकिंग मैन” (कमकर मनुष्य) पत्रकके सम्पादकके सुभाव पर फ्रैंच कमकरोके स्वागतके लिये जुलाईमें लन्दनमें एक कमेटी बनाई गई । ५. अगस्तको वहाँके फ्रीमेसन हालमें एक बैठक हुई, लेकिन वूर्जा बैठक होनेके कारण लन्दनके मजदूर परिषद् (ट्रेड कॉसिल) ने उसमें भाग नहीं लिया । फ्रैंच-प्रतिनिधियोंमेंसे कुछ ने, जिसमें इमारती कमकर तोलें भी शामिल था, लन्दनकी मजदूर सभाओंसे सम्बन्ध स्थापित किया । फ्रैंच-प्रतिनिधियोंके दो टुकड़े हो गये, जिनमें बोनापार्टी दलके विरोधी अलग हो गये, तोलें आदि इसीमें थे । २ जुलाई १८६३ को सेन्ट जेम्स हालमें एक सभा हुई, जिसमें लन्दन मजदूर सभाओं एवं अबोनापार्टी फ्रैंच कमकरोके प्रतिनिधि शामिल हुये । २३ जुलाईमें लन्दन-मजदूर सभाने फ्रैंच-प्रतिनिधियोंके साथ ओल्डवेलीके “वैल्हन” (घंटासराय) में एक अधिवेशन किया । पाँच सदस्योंकी एक कमेटी नियुक्त की गई, जिसे फ्रैंच कमकरोंके पास अपील तैयार करनेका काम सौंपा गया । १० नवम्बरको “वैल इन”की दूसरी बैठकमें यह अभिभाषण (अपील) “स्वीकार किया गया, जो ५ दिसम्बर १८६३ के मधुच्छत्र” ॥ में प्रकाशित हुआ । फ्रैंच कमकरोका जवाब आनेमें आठ महीने लगे । जवाबको सेन्ट मार्टिन हालकी एक सार्वजनिक सभामें

२८ सितम्बर १८६४ को पढ़ा और उसपर बहस की गई। मार्क्स उस समय मध्यपर मौजूद थे। लेकिन उन्होंने उसमें भाषण द्वारा भाग नहीं लिया। मार्क्स एकेरियसको बोलनेके लिये प्रस्ताव किया। एक अस्थायी कमेटी चुनी। गई, जिसमें जर्मन कम्पनीकी ओरसे प्रतिनिधित्व करनेके लिये एकेरियस और मार्क्स चुने गये। इसी सभामें ऑग्रेज और फ्रेंच अभिभाषणोंके आघारपर, सूचना और बहसके लिये इन्टर्नेशनल एसोसियेशन को एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठनके तौरपर निर्माण करनेका निश्चय किया गया। इस एसोसियेशनके नियमों-पनियम तैयार करनेके लिये जो सबकमेटी बनी उसमें मार्क्स भी रखे गये। नवम्बर, १८६८ के बाद आस्ट्रियन पुलिसके दस्तावेज कागज पत्रोंके देखनेपर पता लगा, कि जार्ज एकेरियसने आस्ट्रियन पुलिसको जेनरल कौसिलकी शुस्त रिपोर्ट में जी थीं। मार्क्सने उस समय भी उसपर सन्देह प्रकट किया था।

इस प्रकार इन्टर्नेशनल वर्किंग मेन्स एसोसियेशन (अन्तर्राष्ट्रीय कम्पकर सभा) लन्दनके सेन्ट मार्टिन हालकी एक बड़ी सभामें लाजेलकी मृत्युके कुछ सप्ताहों बाद २८ सितम्बर १८६४ को स्थापित किया गया। इन्टर्नेशनलका सर्वहाराके संघर्षमें बहुत ऊँचा स्थान है। शोषणमें कोई हाथ न रखने तथा सारी शोषितोंको स्वतन्त्र करनेकी स्वाभाविक भावनाके कारण सर्वहारामें अन्तर्राष्ट्रीय वैमनस्य और झगड़ेके भावोंके पैदा होनेका कारण नहीं है, इसलिये खुले और साफ दिलसे यदि किसी वर्गका अन्तर्राष्ट्रीय संगठन एक ही उद्देश्यके लिये हो सकता है, तो सर्वहारा ही का। और यह प्रथम इन्टर्नेशनल दुनियाके सर्वहारों का इस तरहका पहला संगठन था। यह देख ही चुके हैं, कि फ्रासके दो लाख कम्परोंने अपने प्रतिनिधियोंके चुननेमें भाग लिया था, इसलिये इन्टर्नेशनल की स्थापनाके विचार आरम्भ ही से बहुत व्यापक थे। उत्पादनका पैरौंजीवादी तरीका विरोधका कारण नहीं, बल्कि उसका स्वरूप ही है, वह आधुनिक राज्योंको बनाने और विगड़ने दोनोंका काम करता है। सौदेके फैलाव और बाजारोंके विस्तारके लिये एक और वह राज्योंकी सीमाओंको नष्ट करता है, तो दूसरी ओर छोटे राज्योंकी सीमाओंको नष्ट कर उन्हें नये रूपमें संगठित करता है। व्यापारिक प्रतियोगिता और बाजारोंकी छीना-फाटीके कारण वह राज्योंमें भीपरण

बैमनस्य और संघर्ष पैदा करता है। व्यापक परिमाणमें इतने बड़े युद्धों को कराना उसीका काम है। जब तक उत्पादनका पूँजीवादी ढंग मौजूद रहेगा, जब तक चढ़ती हुई टेक्नीकके साथ कल-कारखाने केवल नफेके लिये बाजारके बास्ते भारी परिमाणमें माल पैदा करते रहेंगे, तब तक लड़ाइयोंसे मुक्ति नहीं हो सकती; तथा मानव आत्माव केवल जीभसे कहनेकी बात रहेगी। बड़े पैमाने के उद्योग-धन्धे एक ओर शान्ति और स्वतन्त्रताके गीत गाते हैं, तो दूसरी ओर राष्ट्रोंको नयेसे नये हथियारोंसे सज्जित होकर खूनी लड़ाइयोंके लिये तैयार करते हैं।

दुनियामें युद्ध और अशान्तिका कारण यह विरोध तभी नष्ट होगा, जब कि उत्पादनका यह ढंग खत्म हो जायेगा। सर्वहारा अपनी मुक्तिका प्रथल अपनी राष्ट्रीय सीमाओंके भीतर ही करते हैं, लेकिन सभी सर्वहारे एक नावमें बैठे हुये हैं, सबको एक तरहसे शोषणसे मुक्त हो सच्छन्द और मुखी जीवन जितानेकी लालसा है, और सो भी लाभ-शुभके आधार पर नहीं; इसलिये सर्वहारोंके राष्ट्रीय संगठनोंके अन्तर्राष्ट्रीय संगठनोंमें परिणत होनेमें इसके सिवाय कोई भारी रुकावट नहीं है, कि पूँजीपतियोंके राष्ट्रीय दलाल सर्वहाराका नेतृत्व करते उन्हें भूल-भुलैया में डाल अपने उद्देश्यसे दूर रखते हैं—जैसा कि इंगलैंड की मजदूर पार्टी और अमेरिकाके मजदूर-संगठन कर रहे हैं। लेकिन, सर्वहारा के लिये मुक्तिका रास्ता अपने अन्तर्राष्ट्रीय वर्ग-सहयोगसे ही होकर जाता, इसलिये यह गुमराह करने वाले चिरकाल तक सफल नहीं हो सकते। सर्वहारा की अन्तर्राष्ट्रीय भावनाको पूँजीवादी और उनके समर्थक राष्ट्रीयता-विरोधी बतलाते हैं। वह कहते हैं, कि अन्तर्राष्ट्रीयतावादी अपने दिलमें कभी राष्ट्रीय भावना नहीं रख सकता। विरोधोंके ही समागमको वह अपने भीतर चारों ओर देखते हैं, इसीलिये उनको यह समझमें नहीं आता, कि सच्ची राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयताके भावोंमें कोई विरोध नहीं है। मानव-बंधुताका अपने देश-भाइयोंके प्रेमके साथ कोई विरोध नहीं है। अगर इस तरहका भाई-चारा न हो, तो एक देशके सर्वहारोंको दबानेके लिये दूसरे देशके सर्वहारोंको उनके मालिक इस्तेमाल कर सकते हैं।

कम्युनिस्ट घोषणा पत्र ने दुनिया मरके सर्वहारोंको एक हो जानेका सन्देश दिया था, इसलिये यदि उसके प्रकाशित होनेके सोलह वर्ष बाद इटने-शनलकी स्थापना हो, तो यह कोई विचित्र बात नहीं थी। घोषणाके प्रकाशित होनेके आस-पास ही फ्रासमें क्रान्ति, इंगलैडमें चार्टर्स-आन्दोलन जैसा जर्ब-दस्त संघर्ष, और जर्मनी तथा इतालीमें राष्ट्रीय स्वतन्त्रताके लिये सशक्त विद्रोह हुये। उसके बाद ही सर्वहारा एक स्वतन्त्र शक्तिके तौर पर युद्धके मैदान में उतरे। सभी जगह यह संघर्ष असफल रहे, लेकिन उसी श्रृंखलामें, जिस तरह की प्रथम साल बढ़कर जमीकन्द अपनेको धरतीके भीतर सबा असफल सा जान पड़ता है, पर, अगले साल वह और अधिक शक्ति दिखलाते हुये दूना-तिशुना रूप धारण करता है, सर्वहारोंका कोई प्रयत्न विफल नहीं कहा जा सकता, बल्कि यह असफलताये उसको आगे के लिये और शक्ति प्रदान करती है, अपने भूलोंसे सीख लेनेका मौका देती है। फ्रासमें क्रान्तिके असफल होनेके बाद कमकर-वर्गमें जो निराशा और अवसाद पैदा हुआ, उसके कारण, समूह रूपेण कुछ करना असम्भव था। लेकिन, अपने विरोधियोंके प्रति तीव्र रोष तो उनमें था ही। उनके एक भागको लुई ब्लाकने अपनी ओर लीचा। उसके सामने कोई वास्तविक समाजवादी प्रोग्राम नहीं था। वह आतकवादीके तौर पर षड्यंत्र और अतिसाहस द्वारा राजशक्ति पर अधिकार करना चाहता था। प्रूंधों भी कमरोंको उटोपियन हवाई किला दिखलाकर वास्तविक संघर्षसे पथप्रब्ल्यू करना चाहता था। “१८वीं बूमेरेमे” मार्क्सने लिखा था, कि किस तरह प्रूंधों का आन्दोलन पुराने संसारको बदलनेके वास्तविक सामुदायिक प्रयत्नोंको छोड़ बैश्यकिंच प्रयत्न और हृदय-परिवर्तन द्वारा सर्वहारोंको मुक्त करना चाहता था—जैसा कि उससे सौ वर्ष बाद आज भी कुछ गांधीवादी करना चाहते हैं, चाहे वह प्रयत्न तज्ज्वल द्वारा हजार द्वारा असफल साजित हुये हो। शुभराह करने के लिये, जनताकी क्षेत्र स्थृतिसे फायदा उठानेमें चालाक कब पीछे रह सकते हैं? इंगलैडमें चार्टर्स-आन्दोलनके खत्म हो जाने पर वहाँ भी फ्रासकी तरह ही पथप्रब्ल्यू देखी गई। रावर्ट औवेन जैसा महामना उटोपियन समाजवादी अब भी वहाँ जिन्दा था। यद्यपि वह बहुत बूढ़ा था, किन्तु उसके अनुयायी अपशः

एक स्वतंत्र-विचारक धार्मिक सम्प्रदायके रूपमें परिणत हो गये, जैसा कि गांधी के अनुयायी आजकल दीख रहे हैं। ओवेनके अनुयायियोंके साथ-साथ किंग्स्ले और मौरिसका ईसाई समाजवाद भी फैलने लगा। अंग्रेज मजदूर सभायें भी अपने तुरन्तके हितोंकी ओर ही ध्यान देती, राजनीतिक संघर्षोंसे अलग रहना चाहती थीं। पीछे तो जब इंगलैंड के मजदूर-संगठनों और मजदूर-सभाओंकी आगड़ोर बहाँकी हिजड़ी भ्रष्ट नेताशाहीके हाथमें चला गया, तो उसने उन्हें और गुमराह करके दुनियाके सफल सर्वहारोंके विरोधी नहीं तो तटस्थ रखने का पूरा प्रयत्न किया।

लेकिन, जैसा कि मार्क्सने बतलाया है, आर्थिक संकट सर्वहाराको प्रबुद्ध तथा लड़ाकू बनानेके लिये मुख्य कारण होते हैं। जिस साल १८५७ ई० में भारतमें स्वतन्त्रता-युद्ध लड़ा जा रहा था, उसी समय दुनियामें एक जबर्दस्त व्यापारिक संकट आया था। उसके दो साल बाद १८६० ई० उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकन राज्योंके यह-युद्धने भी इस संकटमें आगमें धीका काम दिया। १८५७ ई० के व्यापारिक संकटने फ्रांसमें मजदूरोंको बेकार और किसानोंको अनाजकी सस्तीके कारण पामाल करना शुरू किया। इसे वह चुपचाप सह नहीं सकते थे। पूँजीवादी सरकारको भय लगा कि कहीं इस-प्रोधानिकी बलि हम न चढ़ जायें। ऐसे समय हमेशा पूँजीवादी भीतरसे लोगोंका ध्यान हटाने, तथा असाधारण राजनीतिक स्थिति पैदा करनेके लिये अपने विरोधमें लगनेवाली क्रांतिकी शक्तिको विदेशी युद्धमें डालनेकी कोशिश करते हैं। साथ ही बोनापार्टी सरकारने देशमें भी कमकरोंके भावोंको दमन द्वारा दबाना चाहा। यद्यपि उसने मजदूर-सभाओंके संगठित करनेकी अनुमति दे रखी थी, लेकिन वह कोई भी। राजनीतिक अधिकार देनेके लिये तैयार नहीं थी। राजनीतिक संगठनोंके विरोधी कानून बनाकर फ्रैंच सरकारने १८५३ से १८६६ ई० के बीचमें ३६०६ मजदूरोंको सजा दी, और ७४६ संगठनोंके ऊपर संगठन-विरोधी-कानूनका प्रयोग किया। फ्रैंच बुज्जर्जीने शाम और दाम दोनोंसे काम लिया—कैद किये हुये कम-करोंमें बहुतोंके दंड उसने माफ कर दिये, और १८६२ ई० में लन्दनमें

होनेवाली महान् प्रदर्शनीमें फ्रैंच कमकरों द्वारा प्रतिनिधियोंके भेजे जानेका समर्थ भी किया ।

हम देख चुके हैं, कि फ्रैंच मजूरोंने अपने दो सौ प्रतिनिधि चुनकर लन्दन भेजे थे । इसके लिये एक सौ पचास पेशोंके पचास पोलिंग (बोट देने के) स्टेशन कायम किये गये थे । जो प्रतिनिधि लन्दन गये, उनकी यात्राका खर्च कुछतो चन्द्रेसे पूरा किया गया और कुछ सरकारी और म्युनिसिपैलिटीके खजानेसे दिया गया—सरकारी खजाने और म्युनिसिपैलिटीमेंसे प्रत्येकने बीस-बीस हजार फ्रांक प्रदान किये थे । इस उदारतासे फ्रासके बूर्जा समझते थे, कि मजदूर हमारे कृतज्ञ होंगे । लेकिन, मजदूरोंने उनकी आशा पर पानी फेर दिया, जब कि १८६३ ई० के चुनावोंमें पेरिस में सरकारी उम्मीदवारोंको केवल ८२ हजार बोट मिले, जब कि उनके विरोधियोंको १ लाख ५३ हजार—इससे पहले १८५७ ई० वाले चुनावमें सरकारी उम्मीदवारोंको १ लाख ११ हजार और उनके विरोधियोंको ६६ हजार बोट मिले थे । सगठन-विरोधी कानूनको ढीला करनेसे मजदूरोंके भावोंमें कुछ परिवर्तन आये, इसके लिये बोनापार्टने मई १८६४ में एक कानून बनाया । इंगलैडमें इस तरहका एक कानून १८२४ ई० में ही पास हो चुका था । इंगलैडके मजदूरोंने, जब अधिक मजूरी और कामके घटेकी कमीकी माँग की, तो वहाँके पैनीपतियोंने फ्रास, वेल्जियम, जर्मनी और दूसरे देशोंसे सस्ती विदेशी श्रम-शक्ति (मजूरों) को ले आनेकी धमकी दी । इसी समय अमेरिकन यह-युद्धके छिड़ जानेसे कपासकी आमदनी रुक गई और मैन्चेस्टर तथा लकाशायरके कपड़ेके कारखानोंके मजदूरोंमें भारी बेकारी फैल गई । इंगलैड प्रधान-मन्त्री पामर्टन नहीं चाहता था, कि अमेरिकन यह-युद्धमें दास-प्रथाके जबर्दस्त हामी तथा सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी दक्षिणी रियासते हार खाये, इसलिये वह उनके पदमें होकर युद्धमें दखल देना चाहता था, लेकिन इसी समय सेन्ट जेम्स हालमें जान ब्राइटकी अव्यक्तिमें एक जबर्दस्त सभा हुई, जिसने पामर्टनके इरादेका जबर्दस्त विरोध किया । १८६४ ई० के वसन्तमें इतालीका मुक्तिदाता गेरीबाल्दी जब लन्दनमें आया, तो उसका जबर्दस्त स्वागत किया गया । इस प्रकार हम देख रहे हैं, कि कम-

करोंमें अन्तर्राष्ट्रीयताकी भावना जग रही थी। १८६२ ई० में महान् प्रदर्शनीके समय अँग्रेज कमकरों और फ्रेंच कमकर-प्रतिनिधियोंका जो मेल-मिलाप हुआ, वह उसी अन्तर्राष्ट्रीय भावनाका सूचक था।

जैसा कि हम बतला चुके हैं, २८ सितम्बर १८६४ को प्रोफेसर वीसली * की अध्यक्षतामें फ्रेंच प्रतिनिधियोंका स्वागत करनेके लिये लन्दनके सेन्ट मार्टिन हालमें एक सभा दुर्व्वा। दोनों देशोंके कमकर वर्गने आपसमें भाइंचारा स्थापित किया। इसी सभामें इन्टर्नेशनल (अन्तर्राष्ट्रीय) कमकर एसोसियेशन (सभा) के नियमोपनियम बनानेके लिये एक कमेटी बनाई गई, इसका मी जिक्र हम कर चुके हैं। इस कमेटीमें कार्ल मार्क्स भी सम्मिलित हुये थे, जिनका नाम तत्कालीन अखबारोंने सभी मेम्बरोंके अन्तमें छापा था। इस मीटिंगमें मार्क्सने सक्रिय भाग नहीं लिया था, लेकिन भाषण करनेवालोंमें उन्होंने इकेरियसका नाम दिया था। अभी मार्क्सको अपना वैज्ञानिक कार्य अधिक महत्वका मालूम होता था, तब भी अन्तर्राष्ट्रीय संगठनकी इस प्रथम भावनाको वह विल्कुल महत्वहीन नहीं समझते। उसी समय उन्होंने वेडेमवर और अपने दूसरे मित्रोंको लिखा था : हालमें जो इन्टर्नेशनल कमकर-कमेटी बनाई गई, वह महत्वहीन वेमहत्वकी नहीं है। इसके अँग्रेज मेम्बर मुख्यतः मजदूर सभाओंके सुखिया हैं, अर्थात् लन्दनके मजदूर-स्वामी, जिन्होंने गेरीवाल्दीके स्वागतके लिये जबर्दस्त संगठन किया और सेंट जेम्स हालमें विशाल सभाकी, जिसने पारमर्ट्सन्को उत्तरी राज्योंके विरुद्ध लड़ाई घोषित करनेके इरादेसे बाज रखा। जहाँ तक फ्रांसीसियोंका सम्बन्ध है, कमेटीके मेम्बर बहुत महत्व नहीं रखते, लेकिन वह पेरिसके कमकरोंके साक्षात् प्रतिनिधि हैं। उन इतालियन एसोसियेशनोंसे भी सम्बन्ध स्थापित किया गया है, जिन्होंने कि हाल ही में नेपल्समें अपनी कांग्रेस की थी। यद्यपि वर्षोंसे मैं वरावर किसी संगठनमें भाग लेनेसे इन्कार करता रहा हूँ, लेकिन इस बार इसीलिये ल्कीकार किया, कि यहाँ कुछ वास्तविक भलाड़ करनेकी संभावना है।

मार्क्सिका नाम कम महत्व समझकर अँग्रेज आखतवारोंने कमेटीके मेम्बरोंकी सूचीके अन्तमें छापा था, लेकिन वही इस संगठनके प्रधान नेता बन गये और बिल्कुल स्वाभाविक रीतिसे यह इसीलिये हुआ, कि मजदूरोंके दर्शनका प्रधान-आचार्य और उनके संगठन और संघर्षके श्रेष्ठ पथ-प्रदर्शक वही हो सकते थे। कमेटीने नये मेम्बरोंको भी जोड़ा गया और इस प्रकार उनकी संख्या पचास हो गई। इनमें आधी सख्ता अँग्रेज कमकरोंकी थी, बाकीमें सबसे मजबूत टोली चर्मनोंकी थी, जिनमें मार्क्स, इकेरियस, लेस्नेर, लाखनेर, प्लान्डर थे, जो सभी विलुप्त कम्युनिस्ट लीगके मेम्बर रह चुके थे। कमेटीमें फ्रासके ६ इतालीके ६, पीलन्द और स्वीजलैंडमेंसे प्रत्येकके २-२ मेम्बर थे। कमेटीने प्रोग्राम और नियमोपनियम बनानेके लिये एक सब-कमेटी नियुक्त की, जिसमें मार्क्स भी चुने गये, लेकिन बीमारी तथा निमत्रणोंके पीछे पहुँचनेके कारण वह इस सब-कमेटीकी बैठकोंमें शामिल नहीं हो सके। सब-कमेटीने मार्क्सके बिना अपने कामको करना चाहा। मेजिनीके प्राइवेट-सेक्रेटरी मेजर बोल्फ, अँग्रेज बेस्टन और फ्रासीसी लुबेज कोशिश करके हार गये, पर काम करनेमें सफल नहीं हुये। अन्तमें मार्क्सको हस्तावल देना पड़ा। उनके दिमागमें तो यह सभी बातें पहलेसे ही सोची और स्पष्ट थीं। उन्होंने दूसरे मसौदेको बेकार और उनकी बातोंसे पूरी तौरसे मुक्त कर मजदूर-वर्गके लिये एक अभिभाषण तैयार किया, जिसका ख्याल सेट मार्टिन हालकी मीठियमें नहीं आया था। इस अभिभाषण द्वारा १८६८ ई० में प्रकाशित कम्युनिस्ट घोषणापत्रके बादके मजदूर-वर्गके इतिहास-पर प्रकाश ढाला गया। इस अभिभाषणमें १८६८ ई० के बादके सोलह वर्षोंके मजदूर वर्गके इतिहासको भूमिकाके तौरपर खख्ला गया। सब-कमेटीने मार्क्सके तैयार किये अभिभाषणको तुरन्त स्वीकार कर लिया, हाँ केवल जहाँ-तहाँ अधिकार और कर्तव्य, सत्य, नैतिकता और न्याय जैसे कुछ वाक्य जोड़ दिये। लेकिन, जैसा कि एंगेल्सके पास मेजे अपने पत्रमें मार्क्सने लिखा था : मैंने इन शब्दों-को ऐसी जगह रख दिया है, कि जहाँ यह कोई नुकसान न कर सकते। मार्क्स-ने “उद्घाटन अभिभाषण और अस्थायी नियम तैयार किये थे, उन्हें कमेटीने भी वडे उत्ताहके साथ स्वीकार कर लिया। मार्क्सके इस अभिलेखकके बारेमें

पीछे प्रोफेसर ब्रीसलीने घोषित किया था, कि मध्य-वर्गके विरुद्ध मजदूर-वर्गके पक्षका एक दर्जन पन्नोमें इतना अत्यन्त जवर्दस्त और प्रभावशाली प्रतिपादन इससे पहले कभी नहीं लिखा गया। आरंभमें ही इसमें इस बातका उल्लेख किया गया था, कि १८६४ ई० के बीचके सोलह वर्षोंमें मजदूर-वर्गके हुँख और कठिनाइयाँ कम नहीं हुई, यद्यपि इन्हीं सोलह वर्षोंमें औद्योगिक विकास और व्यापारिक प्रसार जितना हुआ, उतना पहले कभी नहीं देखा गया। अभिभाषणमें अपनी बातकी पुष्टिके लिये सरकारी नील-पुस्तिकाओं और वित्त-मन्त्री (ग्लेडस्टन)के भाषणोंमें दिये हुये आंकड़ोंसे की थी। ग्लेडस्टनके अनुसार “धन और शक्तिकी मतवाला बनानेवाली बृद्धि” का फायदा केवल सम्पत्तिवाले वर्गने उठाया। इसका एक ही अपवाद यह था, कि इंगलैंडके कम्पकरोंका एक बहुत छोटा सा भाग कुछ अधिक बेतन पाने लगा, यद्यपि चीजोंके दाम बढ़ जानेके कारण उसका बास्तविक मूल्य उतना नहीं बढ़ा, जितना कि दिखलाया जाता था। आगे कहा था : सभी जगह मजदूर-वर्गका भारी जनसमूह दुःखों और कष्टोंमें उससे कहीं अधिक गहरा और व्यापक रूपमें हूँचा, जितने कि ऊपरी वर्गवाले सामाजिक स्तरमें ऊपर उठे। युरोपके सभी देशोंको देखनेसे इस अकाल्य सत्यसे कोई पत्तपातहीन शोधकर्ता इन्कार नहीं कर सकता। इसे सिर्फ वही लोग इन्कार कर सकते हैं, जिनका कि दूसरोंके दिलमें घोलेवाली आशा जगानेमें अपना स्वार्थ संधता है। मशीनों की पूर्णता और उद्योग तथा कृषिमें साइन्सके उपयोग, अथवा संचार-यातायातके साधन और उपाय नये उपनिवेश और प्रवासन, नये बाजारों पर विजय अथवा मुक्त-व्यापार, ये सभी बातें मिलकर भी मजदूर-वर्गके कष्टको लतम करनेमें सफल नहीं हो सकती। बल्कि इसके विरुद्ध स्थितियोंके भूठे आधारपर श्रमकी सृजनात्मक शक्तिका हरेक नया विकास सामाजिक विरोधको बढ़ाता तथा सामाजिक झगड़ोंको तीव्रतर करता है। आर्थिक प्रगतिके मतवाला बनानेवाले इसी कालमें भुखमरी ब्रिटिश साम्राज्यकी राजधानीमें एक सामाजिक प्रतिष्ठानके दर्जे पर पहुँच गई। काल इतिहासके पन्नोंमें “पूँजीके” बहुत तीव्र गतिसे लौटने तथा औद्योगिक एवं

व्यापारिक संकटके नामसे मशहूर सामाजिक महामारीके विस्तृत प्रहार और भारके प्रभावका काल है ।

“अभिभाषणमें १८५० ई० के बादवाली शताब्दीमें नज़दूर वर्गके आन्दोलनकी असफलताओंका भी जिक्र किया गया था, लेकिन साथ ही उसकी असफलता का दो सफलताओंका भी जिक्र किया गया था : इंगलैंडमें दस घटेके काम के लिये कानूनका बनाना जिसका कि प्रभाव ऑफ्रेज सर्वहारोपर पड़ा” इसलिये दस घटा बिल (विधेयक) केवल एक बड़ी व्यवहारोपयोगी सफलता ही नहीं थी, बल्कि वह सैद्धान्तिक विजय भी थी, क्योंकि यहाँ पहली बार बूज्जीजीके राजनीतिक अर्थशास्त्रको मज़र-वर्गकी राजनीतिक अर्थनीतिने पराजित किया । “इससे भी बड़ी विजय को-ओपरेटिव (सहयोगी) आन्दोलनकी हुई । मज़दूरोंने सहयोगके सिद्धान्तके आधारपर कल-कारखाने खोले और उन्हें सफलतापूर्वक चलाया । इस महान् सामाजिक वर्जनेका मूल्य बहुत भारी है :” बहस करनेकी जगह इन सहयोगी (सहकारी) कल-कारखानोंने “सिद्ध कर दिया, कि कमकरोंके एक वर्गको काम देनेवाले मालिकोंके एक वर्गके न रहनेपर भी वडे पैमानेपर आधुनिक साइंसके कानूनोंके अनुसार उत्पादन सम्भव है । धन उत्पादन करनेके लिये मज़दूरोंके हथियारोंको कमकरोंके ऊपर शोषक प्रभुताके हथियारोंके तौरपर इजारेदारीकी आवश्यकता नहीं । मज़री-श्रम भी दास-श्रम तथा किसानी अर्ध-दासता सर्प (Scyldorm) की तरह एक अस्थायी तथा गौण रूप है, जिसे कि सहकारी श्रमके सामने लुप्त होनेके लिये बाध्य होना पड़ेगा—यह सह-कारी श्रम अपने कठिन कामको स्वेच्छासे खुशीके साथ बिना दिक्कतके कर सकता है ।” तो भी, सहकारी श्रम, जो कि समय-समयके प्रयत्नों तक ही अपनेको सीमित रख सकता है—पूँजीके हजारेदारीको तोड़ नहीं सकता । “शायद इसी-लिये उच्च वर्ग, अपने विचारोंके लिये हृदयसे ।”

आगे अभिभाषणमें लिखा गया था, कि कमकरोंमें फिर चेतना बढ़ी है, जिसको हम इंगलैंड, फ्रास, जर्मनी और इतालीमें मज़दूर वर्गीय-आन्दोलनके पुनर्जागरणके रूपमें हम देख रहे हैं और साथ ही मज़दूरोंको राजनीतिक तौरसे पुनर्संगठित करनेके प्रयत्नके रूपमें देख रहे हैं । “मज़दूरोंके पास सफलताकी

एक कुंजी-संख्या मौजूद है। लेकिन तराजूमें संख्याका वजन भारी होता है, जब कि वह एक संगठनमें एक जट तथा एक सचेतन लक्ष्यकी ओर ले जायें।” पिछले तजर्वेसे मालूम होता है, कि सभी देशोंके कम्पकरोंके बीच भाइचारेकी जो आवश्यकता है, उसकी उपेक्षा और अपनी मुक्तिके लिये किये जानेवाले सभी संघर्षोंमें कधे से कन्धा मिलाकर उनके खड़े होनेके उत्साहको रोकनेका फल सदा उनके अपने एक दूसरेसे असंबद्ध प्रयत्नोंमें आम तौरसे असफल होनेका कारण बनता है। इसी विचारने सेन्ट मार्टिन हालकी मीटिंगको इन्टर्नेशनल कम्पकर एसोसियेशनके कायम करनेकी प्रेरणा दी। अभिमाणणका अन्त भी “कम्पनिस्ट घोषणापत्र” की तरह ही निम्न वाक्यों द्वारा किया गया था : “सभी देशोंके सर्वहारों, एक हो जाओ।”

इन्टर्नेशनलके अस्थायी नियमोंका भी इसी तरह गम्भीरतापूर्वक शुभकान किया गया था : मजूर-वर्गकी मुक्ति स्वयं कम्पकरोंका अपना करणीय है। मजूर-वर्गकी मुक्तिका संघर्ष विशेषाधिकार रखनेवाले एक नये वर्गको स्थापित करनेका संघर्ष नहीं है, बल्कि यह वर्ग-शासनको विलुप्त उठा देनेका संघर्ष है। कम्पकरों की आर्थिक पराधीनता उन लोगोंके कारण है, जो कि श्रमके हथियारों जीवनके स्रोतोंपर एकाधिकार रखते हैं। इसका परिणाम सब तरहकी गुलामी : सामाजिक कानून, वौद्धिक सुखदीपन और राजनीतिक पराधीनता है। इसलिये मजदूर-वर्गकी आर्थिक मुक्ति वह बड़ा लक्ष्य है, जिसके साधन सभी राजनीतिक आन्दोलनोंको पास होने चाहिये। अब तक इस लक्ष्यको प्राप्त करनेके सारे प्रयत्न इसलिये विफल हुये, कि प्रत्येक देशके भिन्न-भिन्न मजदूर वर्गके समूहों और भिन्न-भिन्न देशोंके मजदूर वर्गोंके बीच एकताका अभाव था। मजदूरोंकी मुक्ति न स्थानीय कृत्य है, और न राष्ट्रीय, बल्कि यह सामाजिक कृत्य है। यह ऐसा कृत्य है जो कि उन सभी देशोंके सामने है, जहाँ आधुनिक समाज मौजूद है। इसको सफलतापूर्वक तभी पूरा किया जा सकता है, जब कि सभी देशोंके बीच वाकायदा सहयोग हो।

इन्टर्नेशनलका नेतृत्व एक जनरल कॉस्टिल (महापरिषद्) के हाथमें थी, जिसमें भिन्न-भिन्न देशोंके कितने ही मजदूर शामिल थे। लेकिन, जब तक कि

जेनरल कौसिल चुनी नहीं गई तब तक सेन्ट मार्टिन हालकी समा द्वारा नियुक्त कमेटी ही इस कामको करती रही। जेनरल कौसिलका कृत्य था : भिज-भिज देशोंके मजदूर वर्गीय संगठनोंके बीच अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करना, प्रत्येक देशके कमकरोंको दूसरे देशोंके कमकरोंके कामोंके सम्बन्धमें सूचना देना, भिज-भिज देशोंके मजूर-वर्गोंकी स्थितिके सम्बन्धमें ओँकडे जमा करना, सभी मजूर-वर्गीय संगठनोंके सामान्य हितोंके प्रश्नों पर विचार करना, अन्तर्राष्ट्रीय भराडा उठ खड़ा होनेके समय सभी सम्बद्ध संगठनोंकी ओरसे एक ही साथ काम करना, इन्टर्नेशनलके कामके बारेमें नियमपूर्वक रिपोर्ट प्रकाशित करना और इसी प्रकारके और काम।

जेनरल कौसिलका निर्वाचन काग्रेसके हाथमें था, जो कि वर्षमें एक बार हुआ करेगी, वही कौसिलके स्थान और दूसरी काग्रेसकी जगह और समयका निर्णय करेगी। आवश्यकता पड़ने पर जेनरल-कौसिल नये मेम्बर क्वाप्ट कर (जोड़) सकती थी, और बरूरत पड़ने पर अगली काग्रेसके स्थानको बदल सकती है, किन्तु वह उसे स्थगित नहीं कर सकती। भिज-भिज देशोंके मजदूर-संगठन इन्टर्नेशनलसे सबद्ध होने पर भी अपनी संगठन-सम्बन्धी स्वतन्त्रताको कायम रख सकते हैं। कोई भी स्वतन्त्र स्थानीय संगठन जेनरल-कौसिलसे सीधे सम्बन्ध स्थापित कर सकता था, लेकिन आम तौरसे यह स्वीकार किया गया था, कि राष्ट्रीय आधार पर उनका संगठन अधिक उपयोगी होगा।

इन्टर्नेशनल यद्यपि एक बड़े दिमागकी उपज नहीं थी, लेकिन उसके पीछे एक बड़ा दिमाग—मार्क्सिक दिमाग—काम कर रहा था, इसमें सन्देह नहीं।

२. प्रथम कान्फ्रेंस (लन्दन)

यद्यपि मार्क्स इस समय बार-बार बीमारीका कष्ट भोग रहे थे और अपने वैज्ञानिक कार्यको पूरा करनेके लिये भी वह अधीर थे, लेकिन तब भी वह इन्टर्नेशनलके लिये समय और शक्ति देनेमें कभी नहीं नहीं करते थे। जल्दी ही यह सबको मालूम होने लगा, कि इन्टर्नेशनलके बात्तविक “मुखिया” मार्क्स हैं। इसके लिये उन्हें अपनेको आगे बढ़ानेकी जरूरत नहीं थी। मार्क्सको सत्ती

प्रसिद्धिके प्रति अपार घृणा थी । पर, इस अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलनको ठीकसे संचालित करनेके लिये आवश्यक सभी गुण असाधारण मात्रामें मार्क्सके ही पास मौजूद थे । ऐतिहासिक विकासके कानूनको बड़ी गहराई तक और साफ-साफ देखनेकी क्षमता उसमें थी, और वह पूरी शक्तिके साथ लक्ष्यकी ओर बिना इधर-उधर भटके उस महान् संगठनको ले जा सकते थे । लेकिन, साथ ही उनका रास्ता कंटकाकीर्ण था । मेम्बरोंमें वैयक्तिक भागड़े और वाद-विवाद उठ खड़े होते थे, विशेषकर 'इतालियन और फ्रेंच मेम्बरोंमें, जिनके दूर करनेमें मार्क्सको बड़ी परेशानी उठानी पड़ती थी । अंग्रेज मेम्बरोंके साथ उन्हें कम-कठिनाईका सामना करना पड़ता था । उस वक्तके अंग्रेज कमकर काफी अगे बढ़े हुये थे । उन्होंने अमेरिकन यह-युद्धमें दक्षिणी रियासतोंका पक्ष लेनेसे अपनी सरकारको बाज रखा, और जब अब्राहम लिंकन दुबारा अमेरिका का राष्ट्र-पति निर्वाचित हुआ, तो उसके पास उन्होंने अभिनन्दन मेजा । मार्क्सने इस अभिनन्दनको तौयार किया, जिसमें नये प्रेसीडेन्ट लिंकनको "मजूर वर्गका (ऐसा) पुत्र" सम्बोधित किया गया था, जिसे एक दासताबद्ध जातिके मुक्त करनेके लिये भव्य संघर्ष करनेका काम सौंपा गया था । लिंकनने भी इस अभिनन्दनका ऐसी गर्मजोशीके साथ जवाब दिया, जिसे सुननेके लिये लन्दनके पूँजीवादी पत्र तैयार नहीं थे ।

२६ जून १८६४ को जेनरल-कौंसिलके सामने मार्क्सने एक अभिभाषण "मूल्य, दाम और लाभ" के नामसे पढ़ा, जिसका वैज्ञानिक मूल्य कहीं अधिक था । इसका उद्देश्य था कौंसिलके कितने ही मेम्बरोंके इस विचारका खंडन करना, कि मजूरीकी आम छुट्टि मजूरोंके लिये किसी वास्तविक कामकी नहीं होगी, इसलिये मजदूर-समायें हानिकारक हैं । इस विचारका आधार यह गलत धारणा भी कि सौदेका मूल्य मजूरीके ऊपर निर्भर करता है, और यदि पूँजी-पति आज चारकी जगह पाँच शिलिंग मजूरी देगा, तो कल वह बढ़ती हुई माँग के पूरा करनेके लिये मालको चारकी जगह पाँच शिलिंग वेचेगा । मार्क्सने अतलाया कि यद्यपि वह बहुत ही उथले किसिमका तर्क है, और वह वस्तुओंके विकलुप अप्रधान रूपको लेता है, लेकिन तब भी इसमें जो अर्थशालीय प्रश्न

आते हैं, उनकी व्याख्या करना आसान नहीं है। लेकिन, मार्क्सने एक घटेके भीतर इस गंभीर प्रश्नकी बड़ी सुन्दर व्याख्या करदी।

इन्टर्नेशनलको पहली सफलता दिखलानेका मौका मताधिकारके सुधारके लिये बढ़ते हुये आन्दोलनके सम्बन्धमें प्राप्त हुई। १ मई १८६४ को मार्क्सने एगेल्सको सूचित किया : “सुधार लीग हमारा काम है। बारह (छ अजूर-वर्ग और छ मध्य-वर्गके प्रतिनिधियों) मेम्बरोंमें सारे मजूर-वर्गीय प्रतिनिधि हमारी जेनरल-कौसिलके मेम्बर हैं, जिनमें इकेरियस भी हैं। हमने मजूरोंकी आँखोंमें धूल भोकनेके मध्य-वर्गके सारे प्रयत्नको निष्फल कर दिया। अगर इस प्रयत्न द्वारा इंग्लैडमें राजनीतिक मजूर-वर्गीय-आन्दोलन। पुनर्जन्ममें सफलता हुई, तो हमारे एसोसियेशन (इन्टर्नेशनल) ने युरोपियन मजूर-वर्गके लिये उससे कहीं अधिक काम कर लिया, जोकि किसी दूसरे तरीकेसे सम्भव हो सकता था, और सो भी जिना अपने बारेमें हल्ला-गुला किये बगैर। यहाँ इसमें सफलताकी पूरी संभावना है।” ३ मईको एगेल्सने जवाब दिया : “बहुत थोड़े से समयमें और बहुत थोड़ा प्रयत्न करके इन्टर्नेशनल एसोसियेशनने बस्तुतः एक जबर्दस्त स्थान अपने लिये बना लिया।”

१८६४ ई० में बुशेल्समें इन्टर्नेशनलकी प्रथम काग्रेस करनेकी बात सोची गई थी। फ्रासके मेम्बर अपनी सारी शक्ति वैयक्तिक भूगर्भोंमें लगा रहे थे। डर था कि बुशेल्सकी काग्रेसमें भी वही रागिनी न अलापी जाय। बड़ी मुश्किल से मार्क्सको इसमें सफलता प्राप्त हुई, कि बुशेल्समें सार्वजनिक काग्रेस करनेकी जगह लन्दनमें एक आन्तरिक कान्फ्रेस की जाय, जिसमें मुख्य-मुख्य कमेटियोंके प्रतिनिधि सम्मिलित हो और जिसका काम भावी काग्रेसके लिये प्रारम्भिक विचार-विनियम करना हो। कान्फ्रेस २५-२६ सितम्बर १८६४ को लन्दनमें हुई। इसमें जेनरल कौसिलके प्रतिनिधि, उसके सभापति ओडेगेर, जेनरल सेक्रेटरी क्रेमर, मार्क्स और इन्टर्नेशनल उनके दो सहायक इकेरियस और युग (लन्दनमें रहनेवाला एक स्विस घड़ीसाज, जो कि ऑंग्रेजी, फ्रेच और जर्मन एक समान बोल सकता था) शामिल हुये। फ्रासके प्रतिनिधि तोले, फ्रीडुर्ग और लिमूसिन थे, जोकि सभी आगे इन्टर्नेशनलको छोड़ देने वाले थे, लेकिन

उनके साथ १८४८ ई० का मार्क्सका पुराना मित्र शिली* और एक दूसरा फ्रेंच कमकर वर्लिन† भी थे—वर्लिन पीछे पेरिस-कमूनके समय शहीद हुआ। इसी तरहसे स्वीजलैंड, वेल्जियम भी प्रतिनिधि आये। कान्फ्रेंसकेसामने संबंधे पहले खर्चचलाने के लिये पैसेका सवाल था। पता लगा, इन्टर्नेशनलकी प्रथम वर्षकी उल्ल आमदनी ३३ पौंड थी। मेम्ब्री चन्देके बारेमें कोई निश्चय नहीं हो सका, लेकिन यह स्वीकार किया गया, कि प्रचार तथा दूसरे खर्चोंके लिये एक सौ पचास पौंडका फंड उगाहा जाय, जिसने अस्ट्री पौंड इंगलैंडमें, चालीस पौंड फ्रांसमें और दस-दस पौंड वेल्जियम तथा स्वीजलैंडमें जमा किया जाय। इंगलैंडकी रिथिपिपर जेनरल-सेक्रेटरी क्रेमरने ‡ अपनी रिपोर्ट दी। फ्रीबुर्ग और तोलैंने बतलाया, कि फ्रांसमें इन्टर्नेशनलका अच्छा स्वागत हो रहा है। बेकेर और दुपलेने स्वीजलैंडके बारेमें संतोषजनक रिपोर्ट दी। जेनरल-कॉसिलकी ओरसे मार्क्सने प्रस्ताव किया, कि इन्टर्नेशनलकी पहली कांग्रेस १८५६ के सितम्बर या अक्टूबरमें जेनेवामें की जाये। स्थानके बारेमें सभी एक मत हुये, लेकिन समयके बारेमें फ्रेंच प्रतिनिधियोंके जोर देनेपर उसे मईका अन्तिम सप्ताह रखा गया।

कान्फ्रेंसकी निजी बैठकें पूर्वज्ञमें युगकी अध्यक्षतामें हुआ करती और अपराह्नहमें ओड्गेरकी‡ अध्यक्षतामें बहुत कुछ सार्वजनिक बैठकें होतीं। पूर्वाह्न हमें जिन प्रश्नोंपर जहापोह करके कोई निर्णय किया जाता, उनके ऊपर शामकी समाओंमें बहस होती। इन सभाओंमें मुख्यतः कमकर शामिल होते।

३. आस्ट्रिया-प्रशिया-गुद्द (१८५५ ई०)

आस्ट्रिया और प्रशिया दोनों ही जर्मन (ड्वाश) जातियाँ हैं। जर्मनी अभी पूरी तौरसे एक राष्ट्र नहीं बन पाया था और मिन्न-मिन्न राजवंशोंके सुधीतेके लिये वह अलग-अलग राज्योंमें बँटा हुआ था। प्रशिया जर्मन-राज्योंमें सबसे शक्तिशाली और बड़ा था। उसकी इच्छा रहती थी, कि सारे जर्मनीको एक राज्यमें बदल दिया जाय, लेकिन, आस्ट्रियाका राजवंश हान्सवर्ग अपनेको

* Schily. † varlin. ‡ Cremer. § Odgler.

पवित्र रोमन साम्राज्यका उत्तराधिकारी और सभी जर्मन जातियोंका संरक्षक मानता था, इसलिये वह नहीं चाहता था, कि प्रशियाका होटेनजुलर्न जैसा हल्का राजवंश सभी जर्मनोंका मुखिया बन जाये, इसलिये वह बराबर प्रशियाके मनोरथको विफल करनेका प्रयत्न किया करता था। ऐसी स्थितिमें आस्ट्रिया और प्रशियाके बीचमें संघर्ष होना स्वाभाविक था। इस संघर्षके बारेमें कहनेसे पहले मार्क्स्टकी घरेलू कठिनाईयोंके बारेमें कुछ कहना जरूरी है।

(मार्क्स परिवार)—३१ जुलाई (१८६५ ई०) को मार्क्सने एंगेल्सको सूचित किया, कि पिछले दो महीनोंसे हमारा परिवार बन्धक रखकर जी रहा है : “मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, कि इस चिट्ठीको लिखने की जगह मुझे अपनी ब्रॅगुली काट डालना अधिक अच्छा था। यह सचमुच ही असह्य है, कि आदमी अपने जीवनका आधा परवशतामें बिताये। मेरे दिलको सिर्फ यही समझकर सतोष है, कि तुम और मैं दोनों भागीदार हैं—मेरा काम है अपना समय सिद्धान्त तथा पार्टी-सम्बन्धी कामोंके लिये देना। मुझे मालूम होता है, कि इस घरमें रहना हमारी औकातसे बाहर है। इस साल और सालोंकी अपेक्षा हम कुछ अच्छी तरह रहे, लेकिन अपने बच्चोंका सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये इसके सिवाय अवसर देनेका कोई ऐसा रास्ता नहीं था, जिसमें कि वह अपना भविष्य सुरक्षित कर सके। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं, उन्होंने जो कुछ अब तक भुगता है, उसको देखते इससे योड़ा सा सतोष हुआ। मैं समझता हूँ, तुम मेरी इस बातसे सहमत होगे, कि शुद्ध कारबारकी दृष्टिसे देखनेपर भी पूरी तौरसे सर्वहारा जैसा पारिवारिक जीवन उपयुक्त न होगा, यद्यपि जहाँ तक मेरी छोटी और मेरा सम्बन्ध है, यह अच्छा होता, अथवा यदि लड़कियाँ नहीं हमारे लड़के होते।” एंगेल्सने द्वुन्त अपने मित्रके पास सहायता भेजी। लेकिन, कहाँ वर्षों तक मार्क्स आर्थिक चिन्ताओंसे मुक्त नहीं हो सके।

उसी साल (१८६५) के ५ अक्टूबरको लॉदेर बुखरे^{*} का एक पत्र मिला जिसने मार्क्सकी आर्थिक कठिनाई दूर करनेके लिये एक नया रास्ता बतलाया।

* Lother Bucher.

बुखेर पहले राजनीतिक निर्वासित था, जो पीछे जर्मनी लौटकर प्रुशियन सरकार का नौकर हो गया। उसने प्रस्ताव किया, कि “स्टाटसन्जाइगेर”* नामक मासिक पत्रमें मार्क्स लेख लिखें, खास तौरसे मालबाजारकी गतिविधिके सम्बन्धमें मासिक रिपोर्ट दिया करें, जिसके लिये काफी पारिश्रमिक दिया जायगा। बुखेरने फ्राउ मार्क्स और तस्ण महिलाओं, विशेषकर सबसे नन्होंका अभिनन्दन करते पत्रको समाप्त करते हुये लिखा था : “तुम्हारा आशाकारी और सम्मानपूर्ण सेवक !” मार्क्सने अपना सारा कांतिकारी जीवन प्रुशियन सरकारके भिज्ञामाँगनेके लिये नहीं चिताया था। उन्होंने बुखेरके प्रस्तावको माननेसे इनकार कर दिया। कहा जाता है, बुखेरने यह प्रस्ताव महामंत्री विस्मार्ककी रायसे किया था, यह मालूम ही है, कि प्रुशियाके नेतृत्वको आगे बढ़ाते सारी जर्मनीको एक राज्यमें परिणत करनेका काम विस्मार्कने किया था। बुखेर मार्क्सको इस प्रलोभन द्वारा खरीदना चाहता था। मार्क्ससे निराश हो बुखेरने डॉ० ड्विरिंगके सामने वही प्रस्ताव रखा जिसने उसे मंजूर किया।

आर्थिक कठिनाइयोंसे भी ज्यादा परेशानीकी बात यह थी, कि इन्टर्नेशनल-के कामों में फँसे रहनेके कारण मार्क्सका वैज्ञानिक कार्य रुक गया था, साथ ही स्वास्थ्य अधिक और अधिक खराब होता जा रहा था। १० फरवरी १८६६ को एंगेल्सने उन्हें लिखा था : “तुम्हें सचमुच कुछ ऐसा करना चाहिये, जिसमें इस कारबंकल (जहरबाद) से छुट्टी मिले।... कुछ समयके लिये अपने रातके कामको बन्द कर दो और अधिक नियमित जीवन चिताओ।” १३ फरवरीको मार्क्सने अपने मित्रको जवाब देते हुये लिखा : “कल मैं फिर एक बुरे फोड़ेके मारे पीठके बल पड़ गया, जो कि उसरंधिमें निकला है। अगर मेरे पास अपने परिवारके लिये पर्याप्त पैसा होता और मेरी पुस्तक खतम हो गई होती, तो मैं इसकी बिल्कुल पर्वाह नहीं करता, कि मैं आज कब्रिस्तानमें पहुँचूँ या कल।” एक सप्ताह बाद दूसरी भयंकर सूचना मिली, जिसे सुनकर एंगेल्सने अपने मित्र को जोर देकर कहा, कि कुछ सप्ताह कामसे विश्राम लेकर मार्गेट चले जाओ।

* Staatsanzeiger.

मारगेटमें पहुँचकर मार्क्स वहुत जल्दी प्रकृतिस्थ हो गये। उन्होंने अफनीं
लड़की लौराको लिखा था : “मैं वस्तुतः इस बातसे वहुत खुश हूँ जो
कि होटलमें न जा मैं एक निजी घर में ठहरा हूँ। होटलमें रहने पर मुझे
स्थानीय राजनीति, धरेलू दुराचार-कथाओं और पड़ोसियों की ऊटपटोंग बातोंसे
परेशान होना पड़ता। तो भी मैं नहीं कह सकता हूँ, कि मैं किसीकी पर्वाह नहीं
करता और कोई मेरी परवाह नहीं करता, क्योंकि आखिर यहाँ मेरी घर माल-
किन है, जो कि खम्मेकी तरह नहीं है, और उसकी लड़कीकी आवाज सदा
फटी-फटी सी रहती है। जो भी हो, वे अच्छे लोग हैं, मेरा ज्यान रखते हैं और
बीचमें दखल नहीं देते। मैंने चहलकदमी करनेकी आदत ढाल ली है। दिनकों
आधिक भाग मैं खुली हवामें धूमता रहता हूँ, और १० बजे सो जाता हूँ। मैं
कुछ नहीं पढ़ता, लिखता भी कम, धीरे-धीरे मैं निर्वाणकी स्थितिमें पहुँचनेकी
कोशिश कर रहा हूँ, जिसे कि बौद्ध धर्म मानव-आनन्दकी पराकाष्ठा मानता
है।” इस पत्रके नीचे एक छोटा सा चुट्की लेनेका बाक्य लिखा हुआ था,
जिससे आनेवाली घटनाकी पूर्वसूचना मिलती है : “वह छोटा शैतान लाफार्ग
अब भी मुझे अपने प्रूँघोंवादसे परेशान कर रहा है। मैं समझता हूँ, वह तक
संतुष्ट नहीं होगा, जब तक कि मैं उसकी खोपड़ीमें कुछ समझकी बात नहीं
डाल देता।” मार्क्स अभी मारगेटमें थे, इसी समय जर्मनीके ऊपर मँडराते
युद्ध-बादलोंमें पहली बिजली चमकती दिखाई पड़ी। द अपैलको विस्मार्कने
आस्ट्रियाके विश्वद इतालीके साथ एक आक्रमणात्मक मित्रताकी संधि की, और
दूसरे दिन उसने गेरमानिक-डीट (जर्मन जातियोंकी पार्लियानेन्ट) से कहा,
कि आम मताधिकारके आधारपर निर्वाचित एक जर्मन पार्लियामेन्ट बुलाई
जाय, जो कि जर्मन सरकारोंके पास रखनेके लिये लीगके एक सुधारपर विचार
करे। मार्क्सने इसके बारेमें अपने विचार प्रकट करते हुये कहा था : “मालूम
होता है जर्मन बूर्जाजी थोड़ा सा विरोध करनेके बाद वित्मार्कके प्रत्तावको
स्वीकार कर लेगी, क्योंकि आखिर बूर्जाजीका बास्तविक धर्म तो त्रोनापार्ट-
बाद है।”

इसी समय अपने नये नित्र हनोवरवासी डॉ० कुगेलमानको लिखे पत्रमें भी-

उन्होंने इन्हीं विचारोंको प्रकट किया। बहुत तरुण हँसी ही कुगलमान मार्क्स और एंगेल्सका समर्थक था। उसने बड़े प्रयत्नसे उनकी सारी कृतियोंका संग्रह किया था; लेकिन, उसका मार्क्सके साथ साक्षात् परिचय १८६२ ई० में ही हो पाया, जिसमें फ्राइलिग्रथ का हाथ भी था। कुगलमान जल्दी ही मार्क्सका विश्वासपात्र हो गया। उसके नाम मार्क्सने बहुत से ऐतिहासिक और सैद्धान्तिक महत्वके पत्र लिखे।

किसी भी वास्तविक परिस्थितिको अच्छी तरह देखे बिना किसी भी निर्णय का प्रकट करना बहुत सुशिक्ल है। मार्क्स और एंगेल्स का संबंध इस समय जर्मनीसे दूर चुका था, और वर्षोंसे वहाँकी घटनाओंका पूरा पता नहीं था। इसीलिये एंगेल्सने प्रशियाकी सैनिक योग्यताका ठीकसे मूल्यांकन नहीं कर पाया। जब प्रशियाकी विजयकी खबर उन्हें मिली, तो उन्हें अपनी इच्छाके विस्त्र वास्तविकताको स्वीकार करना पड़ा। २५ जुलाईको एंगेल्सने इसी बातको स्वीकार करते हुये लिखा था : “जर्मनीकी रियति इस समय मुझे बिल्कुल सीधी सी मालूम होती है। जबसे विस्मार्क ने प्रशियन सेनाके साथ अपनी योजनाको पूरा किया, और इतनी जर्वर्डस्ट सफलता प्राप्त की, तबसे जर्मनीमें “घटनाओंका विकास” इतने निर्णायिक रूपसे हुआ, कि दूसरोंकी तरह हम भी चाहे पसन्द करें या न करें इन तथ्योंको पक्के होनेको स्वीकार करना होगा।...कमसे कम इसका एक अच्छा पहल भी है, वह यही कि यह स्थितिको आसान बना देता है, और छोटी-छोटी बक्वासोंको हटाकर क्रान्तिको अपना काम करनेके लिये आसानी पैदा कर देती है। जो भी हो, जर्मन पार्लियमेन्ट, प्रशियन चेम्बर (भवन) से बिल्कुल अलग चीज़ है। अब सभी छोटे-छोटे राज्योंकी विशेषतायें आनंदोलनमें विस्ट आयेंगी, निकृष्टतम् स्थानीयताको मजबूत करने-वाले प्रभाव नष्ट कर दिये जायेंगे, और पार्टियाँ केवल स्थानीय होनेकी जगह बस्तुतः राष्ट्रीय बन जायेंगी।”

कोयनिग्रात्जके^५ युद्धने आरिद्याके खिलाफ अपना फैसला दे दिया, जर्मनी अब एक शक्तिशाली बूज्वा-सामन्तशाही राज्य था।

४. जेनेवा-कांग्रेस (१८६६ है०)

मईमें इन्टर्नेशनलकी प्रथम कांग्रेसके किये जानेका निश्चय किया गया था, लेकिन उस समय जर्मनी और आस्ट्रियाके युद्धके कारण उसे सितम्बर तकके लिये स्थगित करना पड़ा। अपने अस्तित्वके दूसरे वर्षमें इन्टर्नेशनलने और तेजी से प्रगति की। जेनेवा उस समय युरोपके आनंदोलनका एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया था। स्वीजलैंडके जर्मन-भाषामाषी तथा फ्रैंच-इस्तालियन भाषामाषी दोनों भागोंके कमकरोने अपने पार्टी-संगठन कायम किये थे। जर्मन-स्विस “डेर बोरबोटे” नामक एक मासिक प्रकाशित होता था, जिसका सम्पादक तपा हुआ कान्तिकारी बैकर था। इस पत्रमें प्रथम इन्टर्नेशनलके बारेमें जाननेकी बहुत महत्वपूर्ण सामग्री मौजूद है। पत्र जनवरी १८६६ में निकलना शुरू हुआ। बेल्जियमसे “ला त्रिबून दु पिल्ह” नामक एक दूसरा पत्र निकाला जाता था, जिसे मार्क्स जेनेवाके दोनों पत्रकी तरह ही इन्टर्नेशनलका अपना पत्र मानते थे। फ्रांसमें भी इन्टर्नेशनलने काफी प्रगति की थी। मार्क्स और एंगेल्स रसी जारशाहीको प्रति-कान्तिका जबर्दस्त और शक्तिशाली गढ़ मानते थे, इसलिए वह रसके प्रभावका विरोध करते थे। फ्रैंच प्रतिनिधि इससे सहमत नहीं थे। फरवरी १८६६ में इन्टर्नेशनलके फ्रैंच भागने जेनरल-कॉरिलके पोलिश प्रश्नको कांग्रेसके कार्यक्रममें खलनेका जबर्दस्त विरोध किया। वह कहते थे : कैसे पोल एकताको पुनः स्थापित करनेके द्वारा कोई रसी प्रभावके विरोध करने-की बात सोच सकता है, जब कि एक ओर रस अपने यहाँ किसान अर्ध-दासोंको मुक्त कर रहा है, जब कि पोल अभिजात्य-वर्ग और पादरी वैसा करनेसे इन्कार करते हैं। आस्ट्रिया-ग्रुशियाकी लड़ाईमें भी इन्टर्नेशनलके फ्रैंच मेम्बरोने जेनरल-कॉरिलमें बड़ी कठिनाइयों पैदा कीं। इसी सिलसिलेमें उन्होंने मार्क्स “बड़े अच्छे मित्रों” लापार्ग और लोगोंके ऊपर भी व्यग किया था—ये दोनों पीछे मार्क्सके दामाद बने, यद्यपि उस समय वह “प्रूघोंके धर्मदूत” बने हुये थे।

लेकिन इन्टर्नेशनलकी शक्तिका सबसे बड़े आधार फ्रास नहीं बल्कि अँग्रेजी

मजूर-संघ थे। मार्कर्स को अँग्रेज मजदूरों की उस विशाल सभासे बड़ी प्रसन्नता हुई, जो कि सेन्ट मार्टिन हालकी बैठक से कुछ सप्ताह पहले इन्टर्नेशनल के नेतृत्व में मतदान के सुधार के पक्ष में हुई। मार्च १८६६ में विग्रह (उदार) ग्लेडस्टन के उदार मंत्रिमंडल ने सम्पत्तिदान के सुधार के सम्बन्ध में एक चिल (विधेयक) उपरिधित किया, लेकिन वह सुधार ग्लेडस्टन के अपने दल के कुछ आदमियों को बहुत उग्र मालूम हुआ और वह टोरियों की ओर चले गये, जिसके कारण उदार सरकार टूट गई और उसके स्थान पर डिजराइली का दोरी मंत्रिमंडल कायम हुआ। डिजराइली ने उक्त सुधारों के सवाल को अनिश्चित काल के लिए स्थगित रखना चाहा, जिस पर जबर्दस्त आन्दोलन शुरू हो गया। ७ जुलाई को मार्कर्स ने एंगलैंड को लिखा था :—“लन्दन में मजदूरों के प्रदर्शन बड़े अद्भुत हैं। जो हमने १८५८ ई० के बाद अब तक इंगलैंड में जो देखा, उनसे तुलना करने पर यह केवल इन्टर्नेशनल का काम है। उदाहरणार्थ ट्रेफलगार स्कवायर के प्रदर्शन का नेता लुकरेफ्ट हमारी कौसिलिका मेम्बर है। “ट्रेफलगार स्कवायर” में शीस हजार आदमियों की सभामें लुकरेफ्ट व्हाइटहाल गार्डेन्स में एक प्रदर्शन करने का प्रस्ताव किया, “जहाँ हमने एक बार राजके सिक्को काट फौंका था।” थोड़े ही समय बाद साठ हजार आदमियों का एक बड़ा प्रदर्शन हाइड पार्क में हुआ, जिसने कि गरीब-गरीब विद्रोहका रूप धारण कर लिया।

इंगलैंड की मजदूर सभाओं ने अपने आन्दोलन को आगे बढ़ाने में इन्टर्नेशनल की सेवाओं को स्वीकार किया, वह दिल खोलकर इन्टर्नेशनल की आर्थिक सहायता भी करती थी। पाँच हजार मेम्बरों वाली चमारों की सभा पाँच पौंड वार्षिक चन्दा देती थी, नौ हजार मेम्बरों वाली बढ़दयों की सभा दो पौंड और दीन से चार हजार मेम्बर वाले ईंट जोड़ने वाले एक पौंड वार्षिक देते थे।

लेकिन, इंगलैंड में सुधार-आन्दोलन ने मजदूरों की लडाकू प्रवृत्तिका दम घोट दिया। दिवर्कमेन्स एडवोकेट (कम्करों का वकील) साप्ताहिक १८६६ ई० में इन्टर्नेशनल का पत्र माना गया था लेकिन अब फर्वरी में उसने अपना नाम

The Commonwealth दि कामन वेस्थ ही नहीं बदल दिया, चाल्क बूर्जा मतदान-सुधारकोकी सहायता प्राप्त करनेके लिये उसने इन्डियन शनलको भी भुला दिया ।

मार्क्स जेनेवा-काग्रेसमें सम्मिलित नहीं हुये, क्योंकि उस बक्त वह अपने शोध-कार्यमें बहुत व्यस्त थे । उन्होंने लन्डनसे जानेवाले प्रतिनिधियोंके लिये एक बक्तव्य तैयार किया, जिसमें कमकरोंके बीचमें तुरन्तके सहयोग एवं बर्गके तौरपर मजदूरोंके संगठनकी तुरन्तकी आवश्यकताओंके लिये काम करनेपर जोर दिया । इस बक्तव्य (मेमोरेंडम) का महत्व प्रोफ्रेसर बीसलीके “उद्घाटन अभिभाषण ” के बारेमें कहे गये शब्दों में था : इसमें थोड़े से पन्नोंमें पहलेसे भी अधिक अच्छे ढग और पूरी तौरसे अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहाराकी तुरन्तकी माँगोंको संक्षेपमें कहा गया है । जेनरल-कॉसिलके अध्यक्ष औहगेर उसके जेनरल-सेक्रेटरी केनर तथा एकेरियस और युंग कॉसिलके प्रतिनिधियोंके तौरपर जेनेवा-काग्रेसमें सम्मिलित हुये ।

काग्रेस ३-८ सितम्बरको हुई । उसमें साठ प्रतिनिधि आये थे । मार्क्स इस काग्रेसके कामको आशासे अधिक बेहतर कहा था, यद्यपि “पेरिसके भद्रपुरुषों” के बारेमें उनकी भारी शिकायत थी : “उनके दिमाग खोखले” प्रूधनीवाक्योंसे भरे हुये हैं । वह साइन्स की बातें बघाइते चिलकुल ही अज्ञ हैं । वह सभी क्रान्तिकारी कारवाईयों अर्थात् वर्ग-संघर्षसे उत्पन्न होनेवाले एकताबद्ध सामाजिक आन्दोलनों—जो राजनीतिक साधनो (उदाहरणार्थ कामके दिनकी कानूनी सीमा) द्वारा किये जा सकते हैं—को उच्छ्व दृष्टिसे देखते हैं । स्वतन्त्रता और सरकार-विरोध अर्थात् अधिकारीय व्यक्तिवादके विरोध—के बहाने ये भद्रपुरुष—जिन्होंने कि घोर अन्धाधुन्धी स्वेच्छाचारकों सोलह वर्षों तक सिर मुकाकर सहन किया और अब भी सहन कर रहे हैं, एवंवस्तुत : एक भद्रे बूर्जा आर्थिक-व्यवस्था प्रूधोंवाद का उपदेश करते हैं ।”

प्रतिनिधियोंमें इन फ्रेंचोंकी संख्या एक-तिहाई होनेसे काफी मजबूत थी । यद्यपि अन्तमें उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ, लेकिन बात बघाइनेमें वह पीछे नहीं रहे । उन्होंने प्रत्ताव रखता कि केवल शारीरिक काम करनेवाले कमकर

ही इन्हें शनलके मेम्बर स्वीकार किये जायें, और दूसरे हटा दिये जायें, किंतु वह स्वीकृत नहीं हुआ। उनके धार्मिक प्रश्नों-सम्बन्धी प्रस्तावको भी नहीं स्वीकार किया गया। सबसे ज्यादा खराब तथा तोलें और फ्रीड्युग द्वारा उपस्थिति जो प्रस्ताव स्वीकृत किया गया था। उसमें “श्रव्यताका सिद्धान्त” घोषित करते हुये ट्रियोका स्थान धरके भीतर बतलाया गया था। उसका विरोध बर्लिन तथा दूसरे फ्रैंच प्रतिनिधियोंने स्वयं किया। लेकिन उसके साथ जेनरल कौसिलका भी एक प्रस्ताव स्वीकार करके उसके विवरांत तोड़ दिये गये। इसमें शक नहीं फ्रैंच प्रतिनिधियोंने प्रधोवादकी कुछ बारें बुसानेमें सफलता पाई। जेनरल-कौसिलका नया नुसार हुआ। उसका हेडकवार्टर लन्दनमें रखा गया। कांग्रेसने कौसिलपर सभी दुनियाके मजदूर-वर्गकी स्थितिके विवरण-सहित आँकड़े तथा इन्हें शनलकी दिलचस्तीकी सभी बातोंपर ज्ञमतानुसार रिपोर्ट निकालनेका काम दौड़ा गया। खर्चके लिये निश्चय किया गया था कि इन्हें शनलका प्रत्येक मेम्बर ३० सौंतीम (.३ फ्रांक) वार्षिक चन्दा दे, एक अरथवा डेढ़ पैन्स सभी मेम्बरोंको अपनी सदस्यता-काउंडके शुल्कके अतिरिक्त देना चाहिये। प्रोग्राम-सम्बन्धी उसके निर्णय महत्वपूर्ण थे, जिनमें मजूरोंकी रक्षा और मजदूर-सभाओंके बारेमें निर्णय किया गया था। वयस्क स्त्री-पुरुष (१८ वर्षसे ऊपर के) कमकरोंके लिये अधिकसे अधिक प्रतिदिन आठ घंटा काम होना चाहिये। रातके कामका विरोध किया गया। खियोंको सिर्फ रातके ही कामसे नहीं, बल्कि उनके स्वास्थ्य और सदाचारके लिये हानिकारक सभी कामोंसे अलग रहनेकी माँग की गई। मजदूर-सभाओंके बारेमें कहा गया, कि उनका काम केवल उचित ही नहीं बल्कि आवश्यक है। मजदूर सभायें (ट्रेड यूनियन) सर्वहाराकी एकमात्र शक्ति, अर्थात् पूँजीवादके केन्द्रीकृत सामाजिक शक्तिके विरुद्ध इस्तेमाल करनेकी एकमात्र साधन है, और जब तक कि उत्पादनका पूँजीवादी दंग मौजूद है, तब तक मजदूर सभाओंके बिना कोई काम करना सम्भव नहीं। महीन ही नहीं बल्कि मजदूर-सभायें अन्तर्राष्ट्रीय समझदोंको स्थापित करके अपनी कार्रवाइयोंको समष्टि कर सकती हैं।

सब मिलाकर जेनेवा-कांग्रेसके निर्णयोंसे मार्क्सको बहुत आशा बँधी। १३

आक्तूबर १८६६ को कुगेलमानको उन्होने लिखा था : लन्दन मजदूर-परिषद्^{*} (जिसका मन्त्री हमारा प्रेसीडेट ओडगर है) इस समय एक सुभावपर विचार कर रही है, कि वह अपनेको इन्टर्नेशनलका अंग घोषित करे । यदि इस प्रस्तावको उसने स्वीकार कर लिया, तो एक वर्षमें यहाँका मजदूर-नगर हमारे नियंत्रणमें आ जायेगा, और हम आन्दोलनको और ज्यादा अच्छी तरहसे आगे ले चल सकेंगे ।” लेकिन कौसिलने इस प्रस्तावको दुकरा इन्टर्नेशनलके साथ बहुत मित्रतापूर्ण सम्बन्ध कायम करनेको स्वीकार किया ।

अपने जन्मके प्रथम वर्षमें भी इन्टर्नेशनलके नेता आगेके लिये बड़ी सफलताकी आशा रख सकते थे, लेकिन साथ ही वह यह भी समझ सकते थे, कि यह सफलतायें कुछ निश्चित सीमाओं के भीतर ही हो सकती हैं । मार्क्सको तब भी एक व्यवहारवादी आदर्शवादीके तौर पर काग्रेस कामोंसे संतोष हुआ । जेनेवा-काग्रेसके समय ही बालटिमोरमें अमेरिकन मजदूरोंकी काग्रेस हुई, जिसने आठ घंटे कामके दिनकी माँग घोषित करते हुये कहा : पूँजीवादकी बेड़ीसे पूर्ण तौरसे मजदूरोंको मुक्त करनेके लिये इस माँगका पूरा होना सबसे जरूरी और पहला काम है ।

* Trade Council

अध्याय १५

“कपिटाल” (१८६६-७८ ई०)

१. प्रसव वेदना

मार्क्स वर्षोंसे अपने अमर ग्रंथ “दास कपिटाल” (पूँजी) के लिखनेमें लगे हुये थे। इसके लिये उन्हें वर्षों तक करीब-करीब रोज दस-दस घंटे ब्रिटिश म्युजियममें संग्रहीत ग्रंथों, विवरणों और आँकड़ोंमें डूबा रहना पड़ता था। अब वह समय नजदीक आ गया था, जब कि इस दीर्घकाल-व्यापी श्रमके प्रथम फलको प्रकट किया जाय। इसी व्यस्तताके कारण वह जेनेवा-कांग्रेसमें सम्मिलित नहीं हुये, क्योंकि वह कमकरोंके हितके लिये कांग्रेससे भी अधिक इस ग्रंथके महत्वको समझते थे। इस समय वह “कपिटाल” के प्रथम चिल्डकी प्रेस-कापी अन्तिम तौरसे तैयार कर रहे थे। इसकी सामग्री यद्यपि वर्षोंसे जमा की जा रही थी, लेकिन लिखना १ जनवरी १८६६ से शुरू हुआ। इतनी अधिक “प्रसव-वेदना” के कारण लिखनेका काम बड़ी तेजीसे हुआ। यह प्रसव-वेदना साधारण मनुष्यकी गर्भावस्थाके महीनोंसे दूने वर्षों तक चलती रही और कैसी आर्थिक तथा दूसरी कठिनाइयोंके बीच मार्क्सने इस कामको जारी रखा, यह हम बतला चुके हैं। कई बार मार्क्सने ग्रंथ समाप्तिका काल निश्चित किया, लेकिन हर समय अवधि बढ़ती गई। १८५१ ई० में “पाँच सप्ताह” में समाप्त होनेकी वात कही, लेकिन १८५८ ई० में अभी भी “छ सप्ताह” की देरी थी। मार्क्स अपनी कृतिके स्वयं जबर्दस्त आलोचक थे, इसलिये उसमें जान-बूझकर कोई त्रुटि नहीं रहने देना चाहते थे। एंगेल्स जल्दी समाप्त करनेके लिये कितना ही जोर देते, लेकिन उसका कोई फल न होता। १८६५ ई० के अन्तमें काम यद्यपि खत्म हो गया, लेकिन जो हस्तलेख अभी तैयार हुआ था, उसे केवल मार्क्स ही प्रेस में देने लायक बना सकते थे, यह काम एंगेल्सके मानका भी नहीं था। जनवरी १८६६ से मार्च १८६७ तक लगकर मार्क्सने “कपिटाल”

की प्रथम जिल्दको प्रेसके लिये सुन्दर ढगसे उसी रूपमें तैयार किया, जिस रूपमें कि वह आज हमारे सामने है। करीब दो शताब्दियोंके परिश्रमस्वरूप जो प्रचुर सामग्री जमा हुई थी, उसका प्रथम भाग इस जिल्दके रूपमें सर्वतोभद्र रूपेण मार्कर्ने तैयार किया। सबा बर्षमें लगाकर पालिश करनेका काम जिस बत्त पूरा कर रहे थे, उसी समय मार्कर्सका स्वास्थ्य ही नहीं खराब था, बल्कि (फरवरी १८६६ ई०) वह भर्यकर बीमारीमें भी पड़ गये थे। कर्जके बोझके कारण चिन्ताये अलग बहुत बढ़ी हुई थीं और इसी बीचमें उन्हें इन्टर्नेशनलकी बिनेवा-काग्रेसके लिये भी कठोर परिश्रम करना पड़ा।

नवम्बर १८६६ में हस्तलेखका पहला बडल हास्तुर्गमें प्रकाशक ओटो माइज्नेरके पास भेजा गया, जिसने इससे पहले प्रशियन सैनिक समस्याके लिए एगेल्सकी एक छोटी सी पुस्तकको प्रकाशित किया था। अप्रैल १८६७ में पुस्तकके बाकी हस्तलेखको मार्कर्स अपने साथ हास्तुर्ग ले गये। मार्कर्सको माइज्नेर “भला आदमी” मालूम हुआ। थोड़ी सी बातचीतके बाद सब शर्तें निश्चित हो गईं। मार्कर्स तब तक जर्मनीमें रहनेके लिये उत्सुक थे, जब तक कि लाइप्जिंग (जहाँ पुस्तक छुट रही थी) से प्रथम प्रूफ आ जाये। इसी बीचमें वह अपने मित्र कुगेलमानसे मिलने हनोवर गये, जहाँ उनका बड़ा स्वागत-स्तक्तकर हुआ। कुगेलमान-परिवारमें उन्होंने कुछ सप्ताह बड़े आनन्दके साथ बिताये, जिसके बारेमें उन्होंने लिखा था : “जीवनके रेगिस्तानमें एक अत्यन्त आनन्दमय और अनुकूल हरियावल ।”

हनोवरके शिक्षित लोगोंने मार्कर्सके साथ जिस तरहका सन्मान और सहानु-भूति दिखलाई, वैसी अभी तक उन्हें नहीं मिली थी, इसलिये ४६ वर्षकी अवस्थामें मार्कर्सको उससे बहुत प्रसन्नता होनी ही चाहिये थी। २४ अप्रैलके पत्रमें उन्होंने एगेल्सको लिखा था, “तुम जानते हो, शिक्षित बूज्वर्डीके बीच हम दोनोंकी प्रसिद्धि उससे कहीं अधिक है, जितना कि हम सोचते हैं।” २७ अप्रैलके पत्रमें एगेल्सने जवाब देते मार्कर्सकी अमर कृतिका जिक्र करते हुये लिखा था : “मैं हमेशा अनुभव करता था, कि यह सौरी किताब, जिस पर कि तुम इतने लम्बे अर्सेसे काम कर रहे थे, तुम्हारे सभी दुर्भाग्योंका कारण

है कि उन दुर्भाग्यों पर कावू पानेमें तुम तब तक समर्थ नहीं होगे, जब तक कि तुमने इस भारको हटा नहीं दिया। इसके न पूर्ण करनेने शारीरिक, बौद्धिक और आर्थिक तौरसे तुम्हें बहुत नीचे की ओर घसीटा। मैं अच्छी तरह समझता हूँ, कि अब जब कि अन्तमें उससे मुक्ति ले ली, तो तुम अपनेको एक दूसरा ही आदमी समझो। विशेषकर अब जब तुम दुनियामें फिर लौटोगे, तो देखोगे, कि यह उस तरहकी अवसाद करनेवाली चीज नहीं है, जैसा कि पहले थी।” इसी पत्रमें एंगेल्सने अपने बारेमें लिखा कि मैं जल्दी ही “सौरे व्यवसाय” से अपनेको मुक्त करनेमें सफल हुँगा, क्योंकि अब फर्ममें पार्टनर होनेके बाद जिम्मेवारियाँ बहुत बढ़ जानेसे मेरी हालत मुश्किल हो गई है।

७ मईकी चिट्ठीमें मार्क्सने लिखा था : “मुझे पक्की आशा और विश्वास है, कि इस वर्षके अन्त तक मैं आदमी बन जाऊँगा, कमसे कम इस अर्थमें, कि अपनी आर्थिक स्थितिको पूरी तौरसे सुधार करनेमें समर्थ हो मैं अन्तमें अपने पैरों पर खड़ा हो सकूँगा। तुम्हारे बिना मैं कभी अपनी कृतिको पूरा नहीं कर सकता था। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, कि मेरी आत्मापर सदा यह ख्याल एक बड़े बोझकी तरह रहता है, कि तुम अपनी अद्युत योग्यताको व्यनियोगनमें घरवाद कर रहे हो, उसे मेरे लिये बेकार रख रहे हो और इस सबके ऊपर मेरी सारी दुखदायक परेशानियोंके लिये कष्ट उठा रहे हो। लेकिन मार्क्स अपने पत्रके अनुसार वर्षके अन्तमें क्या अपने जीवनभर अपनेको आर्थिक तौरसे निर्विन्द नहीं बना सके। हाँ, अब विपदाओंने जैसे कठोर रूपमें उनका पीछा करना छोड़ दिया।

मार्क्सको उनका पिता ‘दृदयहीन’ कहता था, दूसरे कितने ही मिलनेवाले भी उन्हें रखे स्वभावका समझते थे। लेकिन, इस दृदयहीन पुस्तके पास कितना महान् दृदय था, यह अपने एक समर्थक लान-इंजीनियर सिंगफ़रीड गेयर—जो कि किसी समय अमेरिका चला जानेवाला था—के नाम लिखे उनके एक पत्रसे मालूम होगा : “तुम मेरे बारेमें बहुत बुरे तौरसे सोच रहे होगे, और लास करके इसलिये जब मैं तुम्हें कहता हूँ कि तुम्हारे पत्र मेरे लिये वडे शानन्दकी चीज ही नहीं थे, वल्कि बिन कठिनाइयोंसे भरे समयमें वह मिले थे,

उन्होंने मुझे वास्तविक सान्त्वना दी। यह ज्ञान मेरी बड़ी ज्ञातिपूर्ति करनेवाला था, कि हमारी पार्टीके लिये एक योग्य तथा उच्च सिद्धान्तोवाला आदमी प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त तुम्हारे पत्र मेरे लिये वैयक्तिक तौरसे मित्रताके ऐसे गमीगरम शब्दोंमें सदा लिखे होते थे। ऐसे आदमीके लिये, जो कि सरकारी दुनियाके कठोर संघर्षमें लगातार लगा हुआ हो। अच्छा तो, तुम पूछोगे कि तब मैंने क्यों नहीं तुम्हें जवाब दिया? इसीलिये कि मैं लगातार कब्रके किनारे मँडरा रहा था और जब कि अपनेमें काम करनेकी ज्ञानतावाले समयके एक-एक मिनटको मैं अपनी उस पुस्तकको समाप्त करनेमें लगानेके लिये मजबूर था, जिसके लिये मैंने अपने स्वास्थ्य, अपने आनंद और अपने परिवारको बलिदान कर दिया। मैं आशा करता हूँ, कि इस व्याख्याको और अधिक बढ़ानेकी आवश्यकता नहीं है। तथाकथित ‘व्यावहारिक’ पुस्तों और उनकी बुद्धिपर मैं हँसता था। अगर मेरों चमड़ा बैलके जैसा (मोटा) होता, तो भी यह स्वामाविक था, कि मैं मानवताके दुःखोंकी तरफसे पीठ फेरकर कैवल अपने चमड़ेका ख्याल न करता। लेकिन, मेरी वह अवस्था नहीं है, इसलिये अगर अपनी पुस्तकको कमसे कम हस्तलेखके रूपमें बिना पूरा किये मैं मर जाता, तो मैं अपनेको अत्यन्त अव्यावहारिक समझता।” मार्क्सको किन भावनाओंने “कपिटाल” (पूँजी) को पूरा करनेके लिये अठारह बष्टों तक घेर तपस्याका जीवन बितानेके लिये मजबूर किया, यह उपरोक्त पक्षियोंसे स्पष्ट है।

हनोवरमें रहनेके समय वहाँके एक एड्वोकेट वार्नेबोल्डने* यह सूचना उनके पास पहुँचाते बतलाया, कि विस्मार्क आपकी महान् प्रतिमाको जर्मन-जनताके उपयोगके लिये इस्तेमाल करना चाहता है। मार्क्सका ख्याल था : “इस पट्टेके बौद्धिक वित्तिजमें अपने सोचनेके तरीकेकी यह विशेषता है, जो कि यह हरेक आदमीको अपने जैसा समझता है।”

विस्मार्कसे तो कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका, लेकिन जब मार्क्स जर्मनी

* Warnebold.

से लन्दन लौट रहे थे, तो स्टीमरमें उन्हें एक जर्मन-तरशी मिली, जो विस्मार्क-की समव्याप्ति थी। लड़की मरदाना, करीब-करीब सैनिक रोब-दावकी थी। जब उसे मालूम हुआ, कि उसका सहयोगी भी लन्दन जा रहा है, तो उसने उनसे रेलवे-ट्रेनके बारेमें जानकारी हासिल करनी चाही। मालूम हुआ, उसे अपनी ट्रेन पानेके लिये कुछ धर्टों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मार्क्सने उसका दिल बहलानेके लिये इन धर्टोंको साथमें हाइड-पार्कमें घलते बितानेकी हच्छा प्रकट की। कुरोलमानको उन्होंने इसके बारेमें लिखा था : “मालूम हुआ कि उसका नाम एतिजावेथ फान पुट्कामर* था, और वह विस्मार्ककी भाँजी थी, जिसके साथ अभी बर्लिनमें वह कुछ सप्ताह रही थी। उसे सारी सेना-सूची कंठाप्रा थी, क्योंकि उसका परिवार हमारी सेनाको सम्पादित भद्र पुरुषोंको प्रदान करता है।... वह बहुत बड़ी आनन्दी और मुश्शिंदिता लड़की थी, लेकिन अन्त-सत्र तक आभिजात्यवर्गीय थी। उसे यह जानकर कम आश्चर्य नहीं हुआ, कि वह लाल हाथोंमें पढ़ गई है।” लेकिन तरुणीको जान पड़ता है इस जान-कारीसे कोई खेद नहीं हुआ। उसने मार्क्सकी इस कृपाके लिये उन्हें अपने पत्रमें दिलसे धन्यवाद दिया। यही नहीं उसके माता-पिताने भी अपनी लड़किके प्रति इस “हृदयहीन” की विशाल-हृदयताकी बात सुनकर उन्हें बहुत धन्यवाद मैजा।

लन्दन पहुँचकर मार्क्स अपनी पुस्तकके प्रूफ शोध कर मैजते रहे, लेकिन मुद्रककी सुस्तिसे उनको कई मर्तवे भूँफुलाना पड़ता था। १६ अगस्त १८६७ के भिनसरके दो बजे ऐगेल्सको मार्क्सने अभी-अभी अन्तिम प्रूफ देखकर समाप्त करनेकी सूचना देते हुये लिखा था : “सो यह जिल्द अब समाप्त हो गया। यह सम्भव हो सका, इसके लिये मैं केवल तुम्हें धन्यवाद दूँगा। तुम्हारे बलिदानोंके बिना, तीनों जिल्दोंके लिए विशाल माजामें जो कार्य करना पड़ा, उसे मैं शायद कभी नहीं कर सकता था। मैं हृदयसे धन्यवाद देते हुये तुम्हारा आलिंगन करता हूँ। अभिनन्दन, प्रेमपूर्वक मेरे प्रिय मित्र !”

२. प्रथम जिल्द

“कपिटाल” मार्क्स की अमर और वैज्ञानिकतापूर्ण कृति है, जिसे पढ़नेका धैर्य बहुत कम लोगोंको होता है। उसके प्रथम भागको संक्षेपसे यहाँ देना भी बाल्फनीय नहीं है, लेकिन कुछ शब्द इसके बारेमें यहाँ लिखने जल्दी हैं। १८५६ ई० में “राजनीतिक अर्थशास्त्रकी आलोचना” मार्क्सने लिखी थी, जिसमे मालों^{*} (परयो) और पैसेके स्वभावके बारेमें लिखा गया था। “कपिटाल” की प्रथम जिल्दके प्रथम अध्यायमें उसीको संक्षेपसे लिखा गया है। जर्मन प्रोफेसर प्रथम अध्यायको “रहस्यवादकी बात” कहकर नाक-भौं सिकोड़ते थे। मार्क्सने यहाँ कहा था : “पहली नजर डालनेपर माल आसानीसे समझी जानेवाली एक मामूली सी चीज मालूम होती है। किन्तु, इसका विश्लेषण करने पर मालूम होता है, कि यह अत्यन्त दुर्लह वस्तु अतिभौतिक सूक्ष्मताओं और धर्मशास्त्रीय चालाकियोंसे भरी हुई चीज है। यहाँ तक उपयोग-मूल्यके रूपमें यह पाई जाती है, इसमें कोई भी रहस्यवाद जैसी बात नहीं है।... काष्ठका आकार बदल जाता है, जब हम उसकी एक मेज बनाते हैं, तो भी मेज काष्ठ ही, एक साधारण तौरसे प्रत्यक्ष देखी जानेवाली चीज रहती है। पर जैसेही यह माल (सौदा) के रूपमें प्रकट होती है, वैसे ही यह सर्वातिरिक्त तथा साथ ही अप्रत्यक्षकरणीय बन जाती है। वह अपने चारों पैरोंके बल पृथिवीपर दृढ़ता-पूर्वक केवल खड़ी ही नहीं होती, बल्कि दूसरे मालोंके सम्बन्धमें उलटे सिर खड़ी होती है, और अपरिचितके लिये उसका काष्ठका सिर उससे कहीं विचित्र भन-मानापन विकसित करता है, जितना कि बिना मानवी सहायताके वह नाखना आरम्भ करके करता है।”

पहली जिल्दके पहले अव्यायके वर्णविन्यास और लिखावट लेखनकलाकी दृष्टिसे अद्वितीय है। मार्क्स पहले मालके बारेमें कहते हैं, फिर आगे यह बतलाते हैं कि किस तरह पैसाः पैंडी (कपिटाल) के रूपमें परिणत होता है। अगर समान मूल्योंको मालके परिचार (परिभ्रमण) में समान मूल्यपर विनि-

* Commodities. † Transcendental ‡ Money.

मय किया जाता है, तो कैसे ऐसेवाला आदमी उनके मूल्यपर मालोंको खटीदकर उन्हींके मूल्यपर बैचते भी अपने दिये मूल्यसे अधिक मूल्य प्राप्त करता है ? इसलिए वर्तमान सामाजिक सम्बन्धोंमें वह मालको मालके बाजारमें ऐसे विचित्र स्वभावका पाता है, कि उसका उपभोग नये मूल्यका स्रोत बन जाता है। यह माल है श्रम-शक्ति, जो जीवित कमकरके रूपमें मौजूद है। कमकरके अपने जीवन और परिवारको कायम रखनेके लिये कुछ मात्रामें खाद्य वस्तुओंकी आवश्यकता होती है—उसका परिवार कमकरके मरजानेके बाद आगे भी सजीव श्रम शक्तिके बने रहनेकी गरिमी करता है। खाद्य वस्तु आदिकी इस मात्राके पैदा करनेके लिए जो श्रम-समय आवश्यक है, वही श्रम-शक्तिका मूल्य है। तथापि, मजूरीके रूपमें यह मूल्य जो दिया जाता है, वह उस मूल्यसे बहुत कम है, जिसे कि श्रम-शक्तिका खरीदार कमकरसे निचोड़नेमें समर्थ होता है। उसकी मजूरीके रूपमें मूल्यकी जगह लेनेवाले आवश्यक श्रम-समयके ऊपर और अधिक जो कमकरका अतिरिक्त श्रम है, वही अतिरिक्त-मूल्यका ऐसा स्रोत है, जो कि लगातार बढ़ते हुये पूँजी-संचयनका स्रोत है। कमकरका मुफ्तमें लिया यह श्रम समाजके सभी श्रम न करनेवाले मेरमरोंमें बाँदा जाता है, और वह सारी सामाजिक व्यवस्था इसीपर आधारित है, जिसमें हम रहते हैं।

(१) पूँजीबाद—बिना मजूरी दिये (मुफ्तका) श्रम निश्चय ही आधुनिक बूर्जा-समाजका केवल अपना शुण (विशेषता) नहीं है। जब तक दुनियामें सम्पत्तिमान् और सम्पत्तिहीन वर्ग मौजूद है, तब तक सम्पत्तिहीन वर्गको हमेशा मुफ्तका श्रम करना पड़ेगा, जब तक कि समाजके एक भागके हाथमें उत्पादनके साधनोंकी इजारादरी है, तब तक कमकर चाहे स्वतन्त्र हो या अस्वतन्त्र, उसे उससे कहीं अधिक समय तक काम करना पड़ेगा, जितना कि उत्पादन-साधनोंके स्थानियोंसे खाद्य-वस्तु आदिको प्राप्त कर अपना अस्तित्व कायम रखनेके लिये समयकी आवश्यकता है। मजूरी-श्रम उस मुफ्त श्रम-व्यवस्थाका केवल एक विशेष ऐतिहासिक रूप है, जो कि समाजके वर्गोंके रूपमें विभाजित होनेके समयसे मौजूद रहती चली आई है, और जिसे ठीकसे समझने-के लिये, इसी रूपमें उसकी परीक्षा करनी होगी।

अपने पैसेको पूँजीके रूपमें परिणत करनेके लिये पैसेवाले आदमीको बाजारमें स्वतन्त्र कमकरोको ग्राप्त करना होगा—स्वतन्त्र दोहरे अर्थोंमें, सबसे पहले यह, कि वे अपनी श्रम-शक्तिको मालके तौरपर बेचनेमें स्वतन्त्र हैं, और दूसरे यह कि उनके पास बेचनेके लिये और कोई चीज नहीं है। स्वतन्त्र इस अर्थमें भी कि स्वतन्त्र रूपसे अपनी श्रम-शक्तिके प्रयोगके लिये आवश्यक कोई साधन उनके पास मौजूद नहीं है। यह ऐसा सम्बन्ध है, जिसका आधार प्राकृतिक नियम नहीं है, क्योंकि प्रकृति न एक और मालो, पैसेके स्वामियोंको पैदा करती, और न दूसरी ओर उनको पैदा करती है, जिनके पास अपनी श्रम-शक्ति-के सिवा और कुछ नहीं है। इसके साथ ही यह बात भी है, कि इतिहासके सभी कालोंके लिये एक सा सामाजिक सम्बन्ध नहीं है, बल्कि वह ऐतिहासिक विकासके एक लम्बे कालका परिणाम-श्रेनक आर्थिक परिवर्तनों और सामाजिक उत्पादनके पुराने रूपोंकी सारी परम्पराओंके पतन और विलोपकी उपन है।

पूँजीका आरम्भ स्थान है मालका उत्पादन। माल-उत्पादन, माल-प्रिभ्रमण और विकसित माल-प्रिभ्रमण, व्यापार—ये उन स्थितियोंको पैदा करते हैं, जिनके भीतर पूँजी विकसित होती है। आधुनिक पूँजीका इतिहास आधुनिक विश्व-व्यापार और आधुनिक विश्व-बाजारके पैदा होनेसे सोलहवीं सदीमें शुरू होता है। गँवार अर्थशास्त्रियोंका यह समझना केवल भ्रम मात्र है, कि अत्यन्त प्राचीन कालमें एक समय परिश्रमी पुरुषार्थी पुरुषों की एक छोटीसी मंडली थी, जिन्होने धनको जमा किया और दूसरी ओर आलसी और निठल्ले आदमियोंका एक भारी समुदाय था, जिनके पास बेचनेके लिये अपना देह छोड़ और कोई चीज नहीं रह गई थी—यह बेकारकी बात है। इसी तरह अधकक्षरे ज्ञानके साथ बूर्जा-इतिहासकार अर्थ-उत्पादनके सामन्तवादी ढंगके विलोप और कमकरकी स्वतन्त्रताका वर्णन करते हैं, लेकिन साथ ही सामन्तवादी ढंगके विकासका पूँजीवादी ढंगमें विकसित होना नहीं बतलाते। उनका यह आदिम धन-संचयका वर्णन गप्से बढ़कर नहीं है। दास और अर्धदासकी तरह कमकर न अब उत्पादन-साधनकी वस्तुओंमें परिणित किया जाता, न वह अपने लिये काम करनेवाले किसान या शिल्पकारकी तरह उत्पादन-साधनका रखनेवालाही

कार्ल मार्क्स

रह जाता है। अँग्रेजी इतिहासके आधारपर मार्क्स बतलाते हैं कि कैसे बहुसंख्यक जनसमूहको लगातार कितने ही हिंसात्मक और पाशविक उत्तीर्णों द्वारा उत्पादन साधनों, भूमि और अन्नसे वंचित किया गया। उन्होंने इसे प्रारम्भिक संचयन-वाले अध्यायमें बतलाया है। इस प्रकार आहार आदिमें स्वावलम्बी बनानेवाले सारे साधनोंसे वंचित करके ऐसे स्वतंत्र कमकरोंकी सृष्टि की गई, जिनको पूँजी-वादी उत्पादन-शैलीकी आवश्यकता थी। पूँजी इस प्रकार रोम-रोममें खूब और कीचइसे लतपथ होकर संसारमें आई, जैसे ही वह अपने संसारमें खड़ी हुई, वैसे ही उसने अपनी श्रम-शक्तिके उपयोगके लिये आवश्यक साधनोंसे कमकरके बिलगावको केवल कायम ही नहीं रखता, बल्कि इस बिलगावको लगातार बढ़ते हुये पैमानेपर पुनः उत्पन्न किया।

सुप्त श्रमके पुराने रूपोंसे इस श्रम-शक्तिका भेद इसी बातका परिणाम है, कि पूँजीका गमनागमन असीम है और अतिरिक्त-श्रमके लिये पूँजीकी जटाग्नि कभी न तृप्त होनेवाली है। जिन समाजोंमें किसी मालका उपयोग-मूल्य, उसके विनियम-मूल्यसे अधिक महत्व रखता है, उनमें आवश्यकताओंके विस्तृत चक्कर के भीतर कम या बेशी अतिरिक्त-श्रम सीमित रहता है, लेकिन उत्पादन के इस ढंगकी प्रकृति परिणामतः अतिरिक्त-श्रमके लिये असीम माँग नहीं पैदा करती। जब मालका विनियम-मूल्य उपयोग-मूल्यसे अधिक महत्व रखता है तब स्थिति बिलकुल भिन्न हो जाती है। पराई श्रम-शक्ति द्वारा माल-उत्पादन करनेके अतिरिक्त श्रमको चूसने और श्रम-शक्तिको शोषण करनेमें पूँजी-शक्ति, निष्ठुरता और प्रभुता की दृष्टिसे सीधे जबर्दस्ती लिये गये वेगार-श्रमपर आधारित उत्पादनके सभी पुराने ढंगोंको मात करती है। पूँजीके लिये मूल्य बहुत न श्रमकी प्रक्रिया है और न उपयोग-मूल्योंका उत्पादन, बल्कि उसका मुख्य लक्ष्य है उपयोग, विनियम-मूल्योंका उत्पादन, जिनसे कि लगे मूल्यसे-अधिक मात्रामें मूल्य निचोड़ा जा सके। पूँजीपतिकी अतिरिक्त-मूल्यकी प्यास कभी नहीं तृप्त हो सकती। विनियम-मूल्योंका उत्पादन ऐसी किसी सीमाको नहीं स्वीकार करता, जो कि तुरन्तकी आवश्यकताओंकी पूर्तिके द्वारा उपयोग-मूल्योंके उत्पादनसे बनाई जाती है।

जिस प्रकार माल उपयोग और विनियम-मूल्योंका सम्मिश्रण है, उसी तरह माल-उत्पादनकी प्रक्रिया, श्रम-प्रक्रिया और मूल्य सूजन करनेवाली प्रक्रिया-का सम्मिश्रण है। मूल्य-सूजन करनेकी प्रक्रिया उस जगह तक चलती रहती है, जहाँ मजूरीके रूपमें चुकाये गये श्रम-शक्तिके मूल्यका स्थान समान मात्रावालों मूल्य लेता है। इस स्थानसे परे वह अतिरिक्त-मूल्य उत्पादन करनेकी प्रक्रिया उपयोग करनेकी प्रक्रियाके रूपमें विकसित होता है। वह श्रम-प्रक्रिया और उपयोग करनेकी प्रक्रियाके सम्मिश्रणके तौरपर पूँजीवादी उत्पादनकी प्रक्रिया, माल-उत्पादनका पूँजीवादी रूप बन जाता है। श्रम-प्रक्रियामें श्रम-शक्ति और उत्पादन-साधन दोनों मिलकर काम करते हैं। वही उपयोग करनेकी प्रक्रियामें पूँजी-का अश स्थिर और चल पूँजीके रूपमें प्रकट होता है। स्थिर-पूँजी उत्पादनकी प्रक्रियामें उत्पादन-साधनों, कच्चे मालों, सहायक सामग्री, उत्पादनके हथियारों—के रूपमें परिणत हो अपने मूल्यको नहीं बदलती। चल-पूँजी उत्पादनकी प्रक्रियामें श्रम-शक्तिके रूपमें परिवर्तित होती है, और उसका मूल्य बदल जाता है : वह अपने निजी मूल्यको पैदा करती है, फिर मूल्य से अधिक और ऊपर अतिरिक्त-मूल्य पैदा करती है, जो कि परिस्थितियोंके अनुसार मात्रामें बढ़ा या छोटा हो सकता है।

(२) अतिरिक्त मूल्य—इस तरह विवेचन करनेके बाद मार्क्सने अतिरिक्त-मूल्यके परीक्षणमें हाथ लगाया। अतिरिक्त-मूल्य दो रूपोंमें प्रकट होता है, सापेक्ष-अतिरिक्त-मूल्य और परम-अतिरिक्त-मूल्य। इन दोनों प्रकारके मूल्योंने पूँजीवादी उत्पादनके ढगके इतिहासमें भिन्न-भिन्न किन्तु निर्णायक पार्ट अदा किये हैं।

परम अतिरिक्त-मूल्य उस समय पैदा होता है, जब कि पूँजीपति कमकरसे उस समयसे आगे काम करवाता है, जिसकी कि उसे अपनी श्रम-शक्तिके पुनरुत्पादनमें आवश्यकता होती है। अगर पूँजीपतिका वस चलता, तो वह अपने कामका दिन चौबीस घण्टोंका रखता, क्योंकि जितना ही बड़ा कामका-दिन होगा, उतना ही अधिक अतिरिक्त-मूल्य पैदा किया जा सकेगा। लेकिन दूसरी ओर, कमकरका यह समझना विलक्षुल उचित है, कि अपनी मजूरीके उत्पादनकी

आवश्यकतासे अधिक और ऊपर जितना भी धंटा, हमें काम करनेके लिये मजबूर रखिया जाता है, वह अन्यायपूर्वक हमारा निचोड़ना तथा अत्यधिक श्रम-समयके लिये अपने स्वास्थ्यका खोना है। पूँजीपति और कमकरके बीचमें कामके दिनकी लम्बाईके सम्बन्धमें संघर्ष उसी दिनसे आरम्भ हुआ, जब कि ऐतिहासिक तौरसे प्रथम बार स्वतन्त्र कमकर बाजारमें दीखे जाने लगे। वह संघर्ष आज तक चला जा रहा है। पूँजीपति लाभ-शुभके लिये लड़ा है, चाहे वह व्यक्तिगत तौरसे भलेमानुस हो। या गुण्डा। अपने सहयोगी दूसरे पूँजीपतियोंके साथ उसकी जो प्रतियोगिता है, वह उसे मजबूर करती है, कि मनुष्यकी बद्रीशतकी सीमा जहाँ तक है, वहाँ तक कामके दिनको बढ़ानेके लिये हरेक तरहकी समझ कोशिशें करें। दूसरी ओर कमकर अपने स्वास्थ्यको कायम रखने तथा काम करने, खाने, कोनेके अतिरिक्त दूसरे मानवीय जीवनके कामोंमें लगानेके लिये प्रतिदिन कुछ स्वतन्त्र धंटोंको बचानेके लिये लड़े। मार्कर्सने बड़े शक्तिशाली शब्दोंमें इंगलैंड-के मजदूर वर्ग और पूँजीपति वर्गके जीके पचास साल तक चलते बड़े पैमानेके उद्योगके पैदा होनेके समयसे यह-युद्धका वर्णन किया है। प्रकृति और श्रीति-रिवाज, आयु और पुरुषस्त्री भेद तथा दिन और रातने सर्वहाराके शोषणके ऊपर जितनी रोक लगा रखती थी, उन्हें तोड़ फेंकनेके लिये बड़े पैमानेके उद्योग-धन्धेने पूँजीपतियोंको तब तक मजबूर किया, जब तक कि दोनोंका संघर्ष इस तरह चलता रहा, जब तक कि दस धंटा-बिलने कानूनका रूप नहीं धारण कर लिया। इस कानूनको पूँजीपतियोंके साथ संघर्ष करके मजदूर वर्गने जीता। पूँजी अत्यन्त शक्तिशाली सामाजिक बाधा है, वह अपने साथ स्वतन्त्र ठेकाकरके कमकरोंको अपने और अपनी जाति बालोंको मूल्य और दासताके रूपमें बेचनेके लिये मजबूर करती है।

सापेक्ष अतिरिक्त-मूल्य उस समय पैदा होता है, जब कि श्रम-शक्तिके उत्पादनके लिये आवश्यक श्रम-समय कम करके उसे अतिरिक्त-श्रममें लगाया जाता है। श्रम-शक्तिका मूल्य उन उद्योग-धन्धोंमें श्रम-शक्तिकी उत्पादकताकी चृद्धि द्वारा किया जाता है, जिनकी उपज श्रम-शक्तिके मूल्यको निर्धारित करती है। इस मतलबसे उत्पादन-शैलीमें लगातार भारी परिवर्तन-श्रम-प्रक्रियाकी

टेक्नीक और समाजवादी स्थितियोंमें क्रान्ति उपस्थित करना आवश्यक है। इसके आगे मार्क्स वडे पैमानेके उद्योगके भीतरकी बहुत सी बातो—सहकारिता, श्रम और माल-निर्माणके विभाजन, मशीन आदिका—कितने ही अध्यायोंमें वर्णन करते हैं।

मार्क्सने सिर्फ यही नहीं बतलाया, कि मशीन और वडे पैमानेके उद्योग-धन्वेने पहलेके इतिहासमें पाये जानेवाले पहलेके उत्पादनके ढंगोंकी अपेक्षा अधिक दुःख और दारिद्र्य ही पैदा किया, बल्कि वह साथ ही पूँजीवादी समाज-के लगातार भारी परिवर्तनोंके कारण और अधिक कैंचे सामाजिक रूपके लिए रास्ता तैयार करते हैं। फैक्ट्री-सम्बन्धी कानून उत्पादन-प्रक्रियाके अग्राकृतिक रूपके प्रति समाजकी प्रथम सचेतन और बाकायदा प्रतिक्रिया थी। जब समाज कारखानों और फैक्ट्रियोंमें श्रमको कानूनबद्ध करता है, उस समय वह केवल पूँजीके शोषण-सम्बन्धी अधिकारोंमें दखल देना जैसा मालूम होता है। लेकिन परिस्थितियों जल्दी ही समाजको इसके लिए मजबूर करती हैं, कि वह घरेलू श्रमको भी कानूनबद्ध करे, मातापिताके अधिकारोंमें दखल दे। इस प्रकार वडे पैमानेका उद्योग-धन्धा पुरानी पारिवारिक व्यवस्था तथा तदनुकूल पारिवारिक श्रमके साथ पुराने पारिवारिक सम्बन्धोंको खत्म कर देती है। “पूँजीवादी व्यवस्थाके द्वारा पुरानी पारिवारिक व्यवस्थाका विलोपन चाहे कितना ही भयकर और धृणासद कृत्य क्यों न जान पड़े, किन्तु उत्पादनकी सामाजिक प्रक्रियामें छियों, तरुणों और बच्चोंको घरेलू ज़ेतरे बाहर निकल एक निर्णायक पार्ट अदा करनेका अधिकार दे वडे पैमानेका उद्योग परिवारके उच्चतर रूप तथा छी-पुरुष के सम्बन्धके बारेमें एक नया आर्थिक आधार पैदा करता है। वस्तुतः यह उसी तरह बेवकूफीकी बात है, जैसे कि खिस्तानी-जर्मनिक परिवारके रूपको परम मान लिया जाय या, प्राचीन रोमन रूप अथवा प्राचीन ग्रीक रूप अथवा उसके प्राच्य रूपको परम सत्य मान लिया जाय। यह रूप विकासकी ऐतिहासिक सीढ़ियोंको बतलाते हैं। यह भी उसी तरह स्पष्ट है, कि छी-पुरुषों और मिज-मिज आयुवाले मजूरोंका इस प्रकार एकताबद्ध होना उपयुक्त स्थितियोंमें मानव-प्रगतिके स्रोतके रूपमें परिणत हो सकता है, यद्यपि अपने अनियंत्रित पशुता-

पूर्ण पूँजीवादी रूपमें (जिसमें कि कमकर उत्पादन प्रक्रियाके लिये जाते हैं, न कि उत्पादन-प्रक्रिया कमकरोंके लिये) यह भ्रष्टाचार और दासताका गदा थोड़ा है। “कमकरको नीचे शिराकर जो मशीन अपना पुछल्ला बनाती है, वह साथ ही ऐसी सम्भावनाको भी पैदा करती है, जिसमें कि समाजकी उत्पादक-शक्तियाँ इतनी हद तक बढ़ जायें, कि तिना किसी अपवादके समाजके सभी व्यक्ति-मानव-प्रणालीके योग्य विकासकी एक सी सम्भावनाओंका उपयोग कर सकें। वह एक ऐसी बात है, जिसे कार्यरूपमें परिणत करनेमें सभी पुराने समाज आसानी से थे।

परम-आतिरिक्त-मूल्य और सापेह-आतिरिक्त-मूल्यके उत्पादनका परीक्षण करनेके बाद मार्क्सने राजनीति अर्थशास्त्रके इतिहासमें पहले-पहल आये मज़बूतीके बुद्धिवादी सिद्धांतका प्रतिपादन किया। मालका दाम उसका ऐसेके रूपमें प्रकट किया जानेवाला मूल्य है, और मज़बूती श्रम-शक्तिका दाम है। श्रम स्वयं मालके बाजारमें नहीं आता, बल्कि वह सजीव साकार कमकरके रूपमें आता है। कमकर अपनी श्रम-शक्तिको बेचनेके लिये रखता है, और श्रम मालकी श्रम-शक्तिके उपयोगके रूपमें ही केवल प्रकट होता है। श्रम मूल्योंका द्रव्य और आन्तरिक परिमाण है। लेकिन, वह स्वतः अपना कोई मूल्य नहीं रखता। तो भी, श्रम मज़बूतीके रूपमें अपना पारिश्रमिक पाते दिखाईं पड़ता है, क्योंकि कमकर अपनी मज़बूतीको श्रम पूरा कर लेनेके बाद ही पाता है। जिस रूपमें मज़बूती मिलती है, वही अपने भीतर कामके दिनके विभाजनके चिह्नोंको सुफ्ऱत या नसुफ्ऱत श्रम-समयके रूपमें भली-भाँति छिपाये रखता है। दासोंके लिये इससे बिल्कुल उल्टी बात थी। दास सभी समय-उस समय भी जब कि वह अपनी खाद्य-वस्तुके मूल्यके उत्पादनके लिये ही काम करता होता था—अपने मालिकके लिये काम करता होता था। जान पड़ता था उसका सारा श्रम सुफ्ऱतका है। लेकिन मज़बू दास-श्रमके प्रति इस धारणाके विरुद्ध मज़बूती-श्रमका सारा श्रम—जिसमें सुफ्ऱत श्रम वाला अंश भी शामिल है—नसुफ्ऱत सा मालूम होता है। दास-श्रमके बारेमें सम्पाद्य-सम्बन्ध इतर तथ्यको ढाँक देता है, कि दास अपने श्रमके कुछ समयमें अपने लिये काम करता है। मज़बूती-श्रम-व्यवस्थामें यह ऐसेका सम्बन्ध

ही है, जो कि इस तथ्यको ढाँक देता है, कि मजूरी पाने वाला कमकर छुड़ समय मुफ्तमें काम करता है। इसलिये हम मूल्य तथा श्रम-शक्तिके दामके मजूरीके रूपमें या स्वयं श्रमके मूल्य और दामके रूपमें परिणत होनेको निर्णायिक महत्वको समझ सकते हैं। इसी दिखलावेके ऊपर पूँजीपतियों और कमकरों दोनोंकी सारी कानूनी धारणायें आधारित हैं। उत्पादनके पूँजीवादी दृग्के सभी रहस्यापादन तथा पूँजीवादी उत्पादन द्वारा स्वतन्त्रताका भ्रम पैदा करना और गँवारू राजनीतिक अर्थशास्त्रकी कमकरोंके प्रति सभी बेहूदगियाँ यही हैं वे चीजें हैं, जो कि वास्तविक अवस्थाका छिपाकर हमें उल्टी दिशामें झटकाना चाहती हैं।

मजूरीके दो मुख्य रूप हैं : समयके अनुसार मजूरी और कामके अनुसार मजूरी (खंड-मजूरी)। कामके दिनको अस्थायी तौरसे कम करने पर मजूरी कम हो जाती है, लेकिन स्थायी तौरसे उसे कम करने पर मजूरी बढ़ जाती है। जितना ही बड़ा कामका दिन होगा, उतनी ही मजूरी कम होगी। कामके अनुसार मजूरी या खंड-मजूरी समयानुसार मजूरी का ही एक परिवर्तित रूप है। पूँजीवादी उत्पादन-प्रक्रियाके लिये यही सबसे अनुकूल मजूरीका रूप है। यह पूँजीपतियोंके बास्ते इसलिये अधिक सुभीतेका है, क्योंकि तब उन्हें देख-रेखकी आवश्यकता नहीं रह जाती, और साथ ही मजूरी काटनेके लिये कई बहाने उन्हें मिल जाते हैं। दूसरी ओर कामके अनुसार मजूरीका ढंग कमकरोंके लिये बहुत असुविधायें पैदा करता है : अधिक काम करनेकी लालचसे अधिक परिश्रम करके कमकर अपनेको डुरी तौरसे यका देता है। इस प्रयत्नमें उसकी मजूरीकी कम होनेकी नौबत आती है। मजूरोंके भीतर अधिक पैसा कमानेके लिये जो होड़ होती है, उसके कारण उनकी एकताको नुकसान पहुँचता है। इसके कारण पूँजीपतियों और कमकरोंके बीच में—सरदार आदि जैसी जोकें आ मौजूद होती हैं, जो कि कमकरोंकी मजूरीका काफी भाग अपने पाकेटमें डालती हैं।

अतिरिक्त-मूल्य और मजूरीके बीचके आपसी सम्बन्ध, उत्पादनकी पूँजीवादी शैली पूँजीपतिके लिये केवल पूँजीको ही नहीं, बल्कि कमकरके लिये गरीबीको भी लगातार पुनरुत्पादित करती रहती है। एक और पूँजीपति-वर्ग है, जिसके

पास सभी खाद्य-सामग्री, सभी कच्चा-माल और सभी उत्पादन-साधन हैं, और दूसरी ओर कमकर-दर्गा-मानवताका विशाल जनसमूह है, जो कि अपनी श्रम-शक्तिको पूँजीपतियोंके हाथमें खाद्यकी उस मात्राके वास्तेवेंचनेके लिये मजबूर है, जो कि अधिक से अधिक इतना ही कर सकती है, कि कमकरको काम करनेकी रितिमें कायथ रखते और सर्वहारोंकी एक नई पीढ़ीको पैदा करानेमें सहायक हो। लेकिन पूँजी केवल अपनेको फिरसे उत्पन्न ही नहीं करती, बल्कि वह अपने परिमाणाको लगातार बढ़ाती भी जाती है।

(२) पूँजी संचयन—मार्क्सने पहली जिल्दके अन्तिम भागमें “संचयन-की प्रक्रिया” की व्याख्या की है। पूँजीसे केवल अतिरिक्त मूल्य ही नहीं पैदा होता, बल्कि अतिरिक्त मूल्यसे पूँजी भी पैदा होती है। जो अतिरिक्त-मूल्य पैदा किया जाता है, हर साल उसका एक भाग सम्पत्तिमात्र बांधे जाता है जिसे वह आयके तौर पर उपभोग करते हैं। लेकिन, इस विभाजित अतिरिक्त मूल्यका दूसरा भाग पूँजीके रूपमें भी संचित होता रहता है। इस प्रकार जो मुफ्त-श्रम लाभ-शुभके रूपमें कमरोंसे छीना गया है, वह आगे उनसे और भी मुफ्त श्रम छीनेके लिये साधन बन जाता है; और उत्पादनके प्रवाहमें आरम्भमें जो पूँजी लगाई गई थी, वह प्रत्यक्षतः संचित पूँजीकी तुलनामें एक नगर्य मात्रामें रह जाती है; अर्थात् अतिरिक्त-मूल्य अर्थवा अतिरिक्त-उपज, जो कि फिरसे ऐसी पूँजीके रूपमें परिणत की जाती है (जो चाहे आरम्भमें संचित करनेवालेके हाथमें काम कर रही हो, या दूसरेके हाथमें) वह साक्षात् तौरसे संचितकी हुई पूँजीकी तुलनामें नगर्य सी मालूम होती है। माल-उत्पादन और माल-परिव्रमणके आधार पर स्थापित वैयक्तिक सम्पत्तिका कानून अपनेको विलुप्त उलटे रूपमें अपने आन्तरिक और अनिवार्य द्वन्द्वात्मकताके कारण परिणत कर देता है। माल-उत्पादनके कानून वैयक्तिक श्रममें सम्पत्ति-अधिकारको उचित बतलाते जान पड़ते हैं। समान अधिकार बाले मालिक एक दूसरेके मुकाबिलेमें लड़े होते हैं। दूसरे मालको केवल अपने मालकी विक्रीसे ही वह प्राप्त कर सकते हैं और अपना माल केवल श्रम द्वारा ही उत्पादित करा सकते हैं। पूँजीपतिके पक्षमें सम्पत्ति अब दूसरेके मुफ्त-श्रम या उसकी

उपजको मार लेनेका अधिकार दीख पडती है, और कमकरोकी तरफ देखने पर उनकी उपजके उडा लेनेकी असंभवनीयता सी दीख पडती है।

- पूँजीवादी संचयनका साधारण नियम निम्न प्रकार है : पूँजीकी वृद्धिमें इसका चल अंश अर्थात् वह भाग भी शामिल है जो कि श्रम-शक्ति में बदला है। अगर पूँजीकी बनावट अपरिवर्तित रहे, यदि उत्पादनके साधनोंकी कुछ मात्राको सदा उसे गतिशील रखनेके लिये उतनी ही मात्रामें श्रम-शक्तिकी आवश्यकता हो, तो यह स्पष्ट है, कि श्रम-शक्तिकी आवश्यकता पूँजीकी वृद्धिके अनुपातसे बढ़ेगी, जितनी ही जल्दी पूँजी बढ़ेगी, कमकरोके जीवनयापनके लिये धनकी आवश्यकता भी उतनी ही जल्दी बढ़ेगी। बिस प्रकार सीधा-सादा पुनरुत्पादन स्वयं लगातार पूँजी संबन्धको पुनरुत्पादित करता है, इसी प्रकार पूँजीका संचयन बड़ी मात्रामें पूँजी-संबन्धको पुनरुत्पादित करता है। एक और पूँजीपति अथवा बड़े पूँजीपति बढ़ते हैं और दूसरी ओर अधिक संख्यामें मजूरी-कमकर बढ़ते हैं। इस प्रकार पूँजीके संचयनका अर्थ है सर्वहाराकी भी वृद्धि। मान लो, यह वृद्धि कमकरोके लिये अत्यन्त अनुकूल अवस्थामें होती है : उनकी अपनी अतिरिक्त उपजका अधिक भाग—जो कि बराबर बढ़ता हुआ पूँजीके रूपमें परिवर्तित होता है—उनके पास बेतनके साधनोंके रूपमें लौटता है, और इस प्रकार वह अपने-अपने भोगकी वस्तुओंको बढ़ा सकते हैं, कपड़ा सामान आदि अधिक उदारतासे अपने लिये खरीद सकते हैं। तथापि किसी तरह भी पूँजी-पतियोंकी तरफ उनकी परतंत्रताका सम्बन्ध नहीं बदलता, उसी तरह जैसे एक दासको कितना ही अच्छी तरह खिलाया-पहनाया जाय, वह दास छोड़ और नहीं हो सकता। कमकरोंको हमेशा कुछ परिमाणमें मुफ्तका श्रम देना ही पड़ेगा। हो सकता है मुफ्त श्रम मात्रा कम होती जाय, लेकिन यह मात्रा उतनी दूर तक कम नहीं हो सकती, जिसमें कि वह उत्पादनकी प्रक्रियाके पूँजीवादी रूपको भारी खतरेमें डाल दे। अगर मजूरी इस सीमासे ऊपर उठी, तो लाभ-शुभका आकर्षण बोझिल हो जायगा और पूँजीका संचयन सुस्त होते-होते वह वहाँ तक पहुँच जायगा, कि मजूरी पुनः उसके उपयोगकी आवश्यकताओंके अनुकूल तल-पर गिर जायेगी।

तथापि तभी, जब पूँजीका संचयन अपने दियर-अंशों और चल-अंशोंके बीचके सम्बन्धमें विना किसी परिवर्तनके होता है, तो वह ऐसी सोनेकी जंजीर होगा, जिसे कि मजर्री-कमकर अपने लिये स्वयं गढ़ते हैं। वास्तविक तौरसे देखने पर संचयनकी प्रक्रियाके साथ-साथ पूँजीकी सजीव बनावटमें एक बड़ी क्रांति पैदा होती है। श्रमकी बढ़ती हुई उत्पादकता उत्पादन-साधनोंके समूहको उससे अधिक शीघ्रताके साथ बढ़ती है, जितनी शीघ्रतासे कि श्रम-शक्तिका समूह उनमें सम्मिलित होता है। पूँजीके संचयनके अनुपातसे श्रम-शक्तिकी माँग बढ़ती नहीं बल्कि अपेक्षाकृत घटती है। जो पूँजीका संचयन होता है, वह अपने संचयनसे पुथक एक दूसरे रूपमें उसी प्रभावको पैदा करता है, क्योंकि पूँजीवादी प्रतियोगियोंके कानूनके कारण बड़े पूँजीपति छोटे पूँजीपतियोंको निगलते जाते हैं। तब संचयनकी प्रक्रियासे जो अधिक पूँजी तैयार हुई है, उसे अपनी मात्राकी अपेक्षा बराबर कम से कम कमकरोंकी आवश्यकता होती है। उसी समय पुरानी पूँजी जो कि नई बनावटमें पुनरुपादित हुई है—अपने पहलेरे रख्ने हुए कमकरोंमें से अधिकाधिककी छँटनी करती है। इस प्रकार वहाँ कमकरोंका एक सापेक्ष अतिरिक्त-समूह पैदा होता है—सापेक्ष पूँजीके उपयोगकी आवश्यकताके ख्यालसे—और इस प्रकार औद्योगिक रिजर्व-सेना तैयार हो जाती है, जिसे बुरे या मंदीके समय अपनी श्रम-शक्तिके मूल्यसे कम मजर्री मिलती है, साथ ही उसे लगातार नौकरी भी नहीं मिलती, और जो काम न मिलनेके समय सार्वजनिक सहायताकी मुहताज होती है। इसके साथ ही वह हर समय काममें लगे कमकरोंके प्रतिरोधको निर्वल बनानेमें सहायता करती उनकी मजर्रीके तलोंको नीचे गिराती है।

(४) सर्वहारा—यह औद्योगिक रिजर्व-सेना (बैकार मजरूर) पूँजी-संचयनकी इस प्रक्रिया अथवा पूँजीवादी आधारपर धनकी बृद्धिकी आवश्यक उपज है, जो साथ ही यह उत्पादनके पूँजीवादी हंगके रक्कक पुर्जोंका काम करती है। श्रमकी उत्पादकताके विकासके साथ तथा पूँजीके संचयन द्वारा, श्रमके उत्पादनके विकासके साथ पूँजीके एकाएक विस्तारकी शक्ति भी बढ़ती है, प्रियसके लिए तुरन्त नई बाजारों अथवा उत्पादनकी नई शाखाओंमें कामपर

संगानेके लिये, दूसरे क्षेत्रोंमें उत्पादनके काममें वाधा डाले बिना कमकरोंके भारी समूहकी जरूरत होती है। आधुनिक उद्योग-धन्वेकी उल्लेखनीय धारा छोटे-छोटे दूटनोंके साथ औसत कार्यप्रवणता, वडे जोरके साथ उत्पादन तेजी और मन्दीके दशवार्षिक चक्करका रूप-आव्यागिक रिजर्व सेनाके लगातार निर्माण, उसके कम या बेशी काममें खपने और पुनर्निर्माणपर आधारित है। सामाजिक दंग, काममें लगी पूँजीका परिणाम, उसकी वृद्धिका विस्तार और शक्ति, और इसलिए कमकर जनताके परम विस्तार और उसके श्रमकी उत्पादकता जितनी ही अधिक बढ़ती है, उसीके अनुसार अपेक्षाकृत मात्रासे अधिक जनसंख्या अथवा औद्योगिक रिजर्वसेना बढ़ती है, इसका तुलनात्मक आकार-प्रकार धनकी वृद्धिके साथ बढ़ता जाता है। कार्यरत औद्योगिक सेनाकी अपेक्षा जितनी ही अधिक आव्यागिक रिजर्वसेना (बेकार मजदूर) होंगे, उतने ही अधिक कमकरोंके बह भाग होंगे, जिनकी गरीबी अपने श्रमके उत्पीड़नके उलटे अनुपातमें है। और अन्तमें जितना ही अधिक मजूर-वर्गका लावेकार भाग अधिक होगा, उतना ही बड़ी औद्योगिक रिजर्व सेना, और उनकी संख्या अधिक होगी, जिनको कि सरकारी तौरसे मिलमंगा या दरिद्र बतलाया जाता है। पूँजीवादी संचयनका यह परम सामान्य कानून है।

उपरोक्त कानूनके अनुसार पूँजीवादी संचयनके विकासका ऐतिहासिक मुकाब देखा जाता है। पूँजीके संचयन और केन्द्रीकरणके साथ-साथ दृढ़ता-पूर्वक आगे बढ़ते हुये पैमानेपर श्रम-प्रक्रियाके सहकारी रूपकी निम्न प्रकार वृद्धि होती है : उत्पादन सजग हो साइन्सके टेक्नीकों का उपयोग, जमीनका संगठित और समिलित कर्षण, उत्पादनके साधनोंका उस रूपमें परिवर्तित करना, जिसमें कि वह केवल मिलकर ही लोगों द्वारा इस्तेमाल किये जा सके, और सामाजिक श्रमके संयुक्त उत्पादन-साधनोंके रूपमें इस्तेमाल करके उत्पादन साधनोंके खर्चको कम करना। अब उन महासेठोंकी संख्या लगातार कम होती जाती है, जो कि इस औद्योगिक परिवर्तनकी प्रक्रियाके सभी लाभों पर हाथ साफ करते इजारादारी करते हैं। महासेठोंकी संख्याकी कमीके अनुसारही दरिद्रता उत्पीड़न, दासता, पतन और शोषणका परिमाण बढ़ता है, लेकिन उसके साथ

मजदूर वर्गका लोग अपने परिमाण में बढ़ता मजूर वर्गका ही मजूर-वर्गको उत्पादनकी पूँजीवादी ग्रकिया की बनावटकी सहायतासे प्रशिक्षित, एकजूट और संगठित करता है। अंततः पूँजीकी इजारादारी, उसके नीचे बढ़े उत्पादनके ढंगके लिये बेड़ी बन जाती है। उत्पादन-साधनोंका केन्द्रीकरण और श्रमका समाजीकरण बढ़ते-बढ़ते उस सीमापर पहुँच जाता है, जब कि वह पूँजीवादी खोलके भीतर अपनेको बन्द नहीं रख सकता। उसी समय पूँजीवादी वैयक्तिक सम्पत्तिकी अतिम घड़ी आ जाती है, और लूनेवाला स्वयं लुट जाता है।

वैयक्तिक श्रमके आधारपर वैयक्तिक सम्पत्ति पुनः स्थापित होती है, लेकिन वह पूँजीवादी युगकी सफलताओंके आधारपर ही स्वतन्त्र कमकरोंके सहयोग और और भूमि तथा उत्पादन-साधनोंमें उनकी समिलित सम्पत्तिके रूपमें श्रम द्वारा उत्पादित-आधारपर। यह स्वामाविक है, कि उत्पादनके सामाजिक ढंगपर आधारित पूँजीवादी सम्पत्तिका सामाजिक सम्पत्तिके रूपमें व्ववहारतः परिवर्तित करना उतना कठिन और दुष्कर काम नहीं है, जितना कि वैयक्तिक श्रमपर आधारित विवरी हुई सम्पत्तिका पूँजीवादी सम्पत्तिके रूपमें परिवर्तित करना। पहली अवस्थामें विशाल जनसमूहको थोड़ेसे लुटरेने लूटकर अपनी सम्पत्ति बनाई, दूसरी अवस्थामें विशाल जनसमूह थोड़े से लुटरेके हस्तगत सम्पत्तिको अपनी बनायेगा।

३. द्वितीय और तृतीय जिल्द

यह बतला चुके हैं, कि मार्क्सने अपने महान् ग्रंथकी तीनों जिल्दोंका हस्त-लेख अपने लीबनमें ही तैयार कर लिया था, लेकिन उसके एक भागको प्रथम जिल्दके रूपमें प्रेसके लिये तैयार करनेमें उनका एक वर्षसे अधिकका समय लगा था। विना प्रेस कापी तैयार किये ही वह दूसरी और तीसरी जिल्दके हस्तलेखको छोड़ नये थे। यदि एंशेल्स जैसा योग्य सहकारी और उत्तराधिकारी न मिलता, तो वाकी दोनों जिल्दोंको छोपेका मँहूँ देखना—विशेष कर मार्क्सकी इच्छाके अनुरूप—नहीं हो सकता था। इसमें शक नहीं, यदि मार्क्स स्वयं अपने हाथसे इस कामको कर जाते, तो वह वाकी दोनों जिल्दें भी प्रथम जिल्दकी तरह ही

सर्वतोमद्र रूपसे हमारे सामने होती। लेकिन, मार्कर्टका जीवन आगे के सोलह वर्षोंमें एक और जहाँ अध्ययन तथा दूसरे कामोंमें व्यस्त था, दूसरी और उनका स्वास्थ्य सुधरनेकी जगह गिरता ही जा रहा था, जिसके कारण वह इस कामको नहीं कर सके। मार्कर्टकी छोड़ी हुई सामग्री कितने ही स्थलों पर अस्त-व्यस्त और संकेत रूपमें थी। इसे १८६१ से १८७८ ई० तकके समयमें बीच-बीचमें बिराम लेते हुये मार्कर्टने चमा किया था। मार्कर्टका कभी अपने महान् ग्रंथके बारेमें यह स्थाल नहीं था, कि वह एक निर्भान्त कम्युनिस्ट बाइबलका स्थान लेगा। वह यही आशा रखते थे, कि इसको देखकर आगे आनेवाले मनीषी और भी वैज्ञानिक अनुसन्धान करते सत्यके पास पहुँचनेकी कोशिश करेंगे। दूसरी और तीसरी जिल्दे वस्तुतः पहली जिल्दके आवश्यक परिशिष्ट तथा विकास हैं, तो भी सारी मार्कर्टीय शास्त्रशैलीको समझनेके लिये उनकी अनिवार्य आवश्यकता है। पर, बाकी दोनों जिल्दों तक न पहुँच सकनेवाले पहली जिल्दके सहारे मार्कर्टीय तत्वसे वंचित नहीं रहते। पहली जिल्दमें मार्कर्टने राजनीतिक अर्थ-शास्त्रके मूल प्रश्न—धनकी उत्पत्ति कैसे, लाभका स्रोत क्या—की विवेचना की है। मार्कर्टके अनुसन्धानके पहले इस प्रश्नका उत्तर परस्पर भिन्न दो तरीकोसे दिया जाता था। पूँजीवादी हुनियाके “वैज्ञानिक” समर्थक पूँजीवादी धनकी व्याख्या करते सत्यपर पर्दा डालनेकी कोशिश करते कहते हैं : हरेक मालिकको अपनी पूँजीको खतरेमें डालनेकी क्षतिपूर्ति, कारबारके “बौद्धिक प्रवन्ध” के इनाम आदि उत्पादक कामोंके लिये पूँजी देनेकी उदारताकी क्षतिपूर्ति, मालोंके दामोंमें बराबर बुद्धिका परिणाम यह धन है। इन व्याख्याकारोंका उद्देश्य सदा यही रहा है, कि भगवान् या पूनर्जन्मके माननेवालोंकी तरह मुट्ठीभर लोगोंको घनाढ़वता और विशाल जनसमुदायकी गरीबीको उचित ठहराया जाये।

मार्कर्टसे पहलेके बूर्जवा-समाजके आलोचक जितने भी समाजवादी सम्प्रदाय थे, वह पूँजीपतियोंके धनको धोखाघड़ी, कमकरोसे चोरी आदि कहकर छुट्टी ले लेते थे।

प्रथम जिल्दमें मुख्यतः मूल्यके कानून और उसके कारण पैदा हुई मजदूरी और अतिरिक्त-मूल्य अर्थात्—इस बातकी व्याख्या की गई है, कि कैसे मजदूरी-

श्रमकी उपन अपनेको स्वामाविकरूपेण बिना हिंसा या जालसाजीके एक और मज़रूरी-कमकरकी कौड़ियोंमें और दूसरी ओर पूँजीपतियोंके लिये अप्रयास लब्ध अपार धनके रूपमें परिणत करती है। “कपिटल” की प्रथम जिल्दका सबसे बड़ा ऐतिहासिक महत्व है, यह दिखलाना कि शोषण केवल तभी खत्म किया जा सकता है, जब कि श्रम-शक्तिकी बिक्री अर्थात्, मज़रूरी-व्यवस्थाका खातमा कर दिया जाय।

द्वितीय जिल्द—“कपिटल” की दूसरी जिल्दमें मार्क्स प्रसंगवश बतलाते हैं, कि पूँजीवादी जीवनका अत्यावश्यक अंग है पावना॥ । यही उत्पादन और मालके बाजार पूँजीके इन दो रूपोंके बीच एवं वैयक्तिक पूँजीके अनियमित से दिखाई पड़नेवाले संचारके बीच जोड़नेवाली शृंखला है। यही उत्पादनका समाजमें उत्पादन और उपभोगका स्थायी प्रचार (परिभ्रमण) सारे समाजके तौर पर वैयक्तिक पूँजीयोंकी गड़बड़ीमें इस स्थायी प्रचारको बराबर गतिशील बनाये रखता है। वह इस प्रकार काम करता है, कि पूँजीवादी उत्पादनके लिये आवश्यक स्थितियाँ खतरेमें न पड़ें : उत्पादनके साधनोंका उत्पादन, कम्पकर-वर्गको कायम रखने और पूँजीपति-वर्गके बराबर अधिकाधिक धनी होनेको कायम रखा जाये—अर्थात् समाजकी सभी पूँजीके अधिक बढ़ते हुये संचयन और कार्यरत होनेके कायम रख जाये। दूसरी जिल्दमें मार्क्स इस बातकी खोज करते हैं, कि कैसे वैयक्तिक पूँजीकी असंख्य विषयस्थ गतियोंसे एक सम्पूर्ण पूँजी विकसित होती है, कैसे सम्पूर्ण (जीको इस गमनागमन, बाजारकी तेजीके वर्षोंके अतिरिक्त, धन और आर्थिक संकटके वर्षोंके ध्वन्सके बीच, वह आगा-पीछा करता, पुनः-पुनः ठीक अनुपातमें पहुँचता है। किन्तु उसका यह काम और अधिक जर्ददस्त और भारी परिमाणमें लौटकर उसी तरफ चल पड़ता है ? किस तरह इससे और भी अधिक शक्तिशाली और भारी आकारोंमें उस चीजका विकास होता है, जो कि आजकलके समाजके लिये—समाजके अपने अस्तित्व को कायम रखने और अपनी आर्थिक प्रगतिका केवल साधनमात्र है ? वह

उसको भी विकसित करता है, जो कि इसका लक्ष्य है, अर्थात् पूँजीका लगातार बढ़ते हुये संचयन। मार्क्सने अन्तिम हल यहाँ नहीं बतलाया है, लेकिन अर्थशास्त्री ऐडम स्मिथके बादके सौ वर्षोंमें पहली बार उन्होंने सम्पूर्ण पूँजीको निश्चित नियमोंकी मजबूत नींव पर स्थापित किया है।

ऐसा होने पर भी पूँजीपति अपने कंटकाकीर्ण मार्गको पूरी तौरसे नहीं पार कर सकता, क्योंकि यद्यपि लाभ पैसेके रूपमें लगातार बढ़ते हुये परिमाणमें बन रहा है, तो भी समस्या उठ खड़ी होती है, कि लूटको बॉटा कैसे जाय? पूँजीपतियोंके बहुतेरे मिन्न-भिन्न समुदाय लूटपर अपना-अपना दावा पेश करते हैं। कारखाना-मालिक के अतिरिक्त व्यापारी अपना दावा रखता है, और देनेवाला पूँजीपति और भूमिपति भी इसमें हिस्सा बैटाना चाहते हैं। हरेकने मजबूती-कम्कर के शोषण और उसके मजबूती द्वारा पैदा किये मालोंके बैचनेमें हाथ बैटाया है, इसलिये उनमेंसे प्रत्येक लाभ-शुभमें अपना हिस्सा माँगता है। यह बैटवारा जितना देखनेमें सीधा-साधा लगता है, व्यवहारमें वह उससे कहीं अधिक पेचीदा है, क्योंकि कारखानेवालोंमें स्वयं कारखानोंसे तुरन्त प्राप्त लाभोंके अनुसार भारी मतभेद है। उत्पादनकी एक शाखामें माल पैदा किये जाते और तुरन्त बेचे जाते हैं, तथा थोड़ेसे समयके भीतर वूँजी और उसके साथ सामान्य अतिरिक्त-मूल्य व्यवसायमें लौट आता है। ऐसी स्थितिमें कारवार और लाभ बड़ी तेजीसे होते हैं। लेकिन, उत्पादनकी दूसरी शाखाओंमें उपज वर्षों तक रक्की रहती, लम्बे समयके बाद ही लाभ देती है—जैसे भारी उद्योग-घन्वेमें। उत्पादनकी कुछ शाखाओंमें मालिकको अपनी पूँजीके अधिकतर भागको उत्पादनके निर्जीव साधनों, इमारतों, कीमती मशीनों आदि—अर्थात् ऐसी चीजोंमें लगाना पड़ता है, जो कि लाभ बनानेके लिये चाहे कितनी ही आवश्यक क्यों न हों, लेकिन स्वयं लाभ नहीं प्रदान करती। उत्पादनकी दूसरी शाखाओंमें ऐसी शाखाये भी हैं, जिनमें ऐसी चीजोंमें मालिकको अपनी बहुत थोड़ीसी पूँजी लगानी पड़ती है और उसका अधिकाश भाग वह उन कम्करोंके काममें लगानेमें खर्च करता है, जिनमें से हरेक पूँजीपतिके लिये सोनेका अरडा देनेवाली परिश्रमी वस्तक है।

इस प्रकार वैयक्तिक पूँजीपतियोंके बीच लाभ कमानेकी प्रक्रियामें भारी मतभेद खड़ा हो उठता है। चूर्चा-समाजकी दृष्टिमें यह मतभेद पूँजीपति और कमकरके बीच होनेवाले विलक्षण “विनिमय” की अपेक्षा बहुत अधिक तुरन्तका “आन्याय” (अनौचित्य) है। उनके सामने केवल यही समस्या है, कि कैसे ऐसा प्रबन्ध किया जाय, जिसमें लूटका विमाजन “उचित” रूपसे हो सके और हरेक पूँजीपति “अपने भाग” को पा सके। सबसे बढ़कर बात यह एक ऐसी समस्या है, जिसे बिना किसी सजग और व्यवस्थित योजनाके अनुसार हल करना है, क्योंकि आजकलके समाजमें उत्पादन जैसे ही वितरणमें भी अराजकता है। सामाजिक उपायके अर्थमें वस्तुतः यहाँ कोई “वितरण” है ही नहीं, और जो कुछ होता है, वह है केवल विनिमय, मालका परिभ्रमण, क्रय और विक्रय।

तृतीय जिल्द—“कपिटाल” की तीसरी जिल्दमें मार्कर्स इस सवालका जवाब देते हैं, कि कैसे अनियमित मालका विनिमय प्रत्येक वैयक्तिक शोषकको और शोषकोंके प्रत्येक मिश्र समुदायः सर्वहाराकी श्रम-शक्ति द्वारा उत्पादित घनमें भाग प्राप्त करने देता है, जो कि पूँजीवादी समाजकी दृष्टिमें पूँजीपति या पूँजीका “आधिकार” माना जाता है। प्रथम जिल्दमें मार्कर्सने पूँजीकी उत्पत्तिकी विवेचना करते हुये लाभ कमानेके रहस्यको खोला। दूसरी जिल्दमें उन्होंने कारखाने और बाजारके बीच, समाजके उत्पादन और उपभोगके बीच पूँजीके गमनागमनका वर्णन किया। इस तीसरी जिल्दमें उन्होंने सारे पूँजीपति-वर्गके बीच लाभके वितरणका विवेचन किया है। वह हर वक्त पूँजीवादी समाजके तीन मौलिक उिद्दानोंको आधार मानते हुये ऐसा करते हैं : प्रथम, यह कि पूँजीवादी समाजमें जो कुछ धृष्टि होता है, वह स्वेच्छाचारी शक्तियोंके परिणामस्वरूप नहीं, वल्कि निश्चित तथा नियमपूर्वक काम करनेवाले नियमोंके अनुसार होता है, चाहे वह नियम स्वयं पूँजीपतियोंको अशान हों। द्वितीयतः, यह कि पूँजीवादी समाजके आर्थिक सम्बन्ध हिसा, लूट और धोला-घड़ीपर आशारित नहीं हैं, और तृतीयतः, सारे समाजकी गतिविधि पर नियंत्रण करने-वाली यहाँ कोई सामाजिक बुद्धि काम नहीं कर रही है। पूँजीवादी अर्थशास्त्रकी

सभी घटनाओं और सभी सम्बन्धोंको पूँजीवादी समाजके विनियम-यत्रके आधार पर—अर्थात् उससे उत्पन्न होनेवाले मूल्य और अतिरिक्त मूल्यके कानूनके आधार पर—मार्क्स एकके बाद सुव्यवस्थितस्वप्से नंगा करके रख देते हैं।

तीनों जिल्दोंवालों इस महान् ग्रंथको पूरी तौरसे लेनेपर पहली जिल्दने मूल्य, मजूरी और अतिरिक्त-मूल्यके कानूनका प्रति विवेचन, तथा आजकलके समाजके आधारको नंगा करके रख दिया है, और दूसरी तथा तीसरी जिल्दोंने इन आधारोंके ऊपर खड़ी इमारतको दिखलाया। दूसरी तरहसे कहनेपर पहली जिल्दने सामाजिक शरीरके हृदयको दिखलाया है, जो कि सबीब रसको पैदा करता है। दूसरी तथा तीसरी जिल्दोंने सामाजिक शरीरमें किस तरह रक्तका संचार और शोषण होता है, इसे बतलाया है। दूसरी और तीसरी जिल्दोंने पूँजीवादी दुनियामें नियमपूर्वक होनेवाली तेजी-मन्दीके संकटके बारेमें पूरी अन्तव्यिष्ट देनेका प्रयत्न किया है।

४. “कपिटल” का स्वागत

एगोहसने प्रथम जिल्दके तैयार हो जानेके बाद मार्क्सके बारेमें जो आशा प्रकट की, कि अब “तुम बिलकुल दूसरे ही आदमी बन जाओगे” वह आंशिक रूपसे ही पूरी हुई। मार्क्सके स्वास्थ्यमें जो बुधार हुआ, वह भी स्थायी नहीं था। आंशिक परेशानी अब भी कम नहीं हुई। इसी समय बल्कि मार्क्सने जेनेवामें जाकर रहनेका विचार सिर्फ़ इस खगलसे किया था, कि वहाँ सस्तेमें रहा जा सकता है। लेकिन, वह लन्दनके ब्रिटिश-म्युजियमको कैसे छोड़ सकते थे? उनको आशा थी, कि शायद “कपिटल” का अग्रेजी अनुवाद यहाँ रहते प्रकाशित हो सके, इससे भी उन्होंने लन्दनसे जानेका ख्याल छोड़ दिया। परिवारके व्यक्तियोंके जीवनमें जो परिवर्तन हुये, उनसे उन्हें सतोष जरूर हो सकता था। १८६६ ई० के अगस्तमें मार्क्सकी द्वितीय कम्या लौकाका व्याहू चिकित्साशालके विद्यार्थी पावल लाफार्गके साथ होना निश्चित हो गया, लेकिन यह तै कर लिया गया था, कि व्याहूसे पहले लाफार्गको अपनी गेड़िकल कालै

की पढ़ाई खतम कर देनी होगी। लीयेरमें* विद्यार्थी-कॉंग्रेसमें भाग लेनेके कारण पैरिस युनिवर्सिटीने लाफार्गको दो सालके लिये निकाल दिया था। इन्हें शनलके सम्बन्धमें वह लन्दन आया। पहले वह प्रधोंका अनुयायी था और तोलेंके कार्डको वहाँ रख आनेके शिष्टाचारके अतिरिक्त मार्क्ससे साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, लेकिन होनी कुछ दूसरी ही थी, जैसा कि मार्क्सने एंगेल्सको लिखा था : “पहले इस नौजवानने मेरे साथ सम्बन्ध स्थापित किया, लेकिन देर नहीं हुई कि उसने वापकी अपेक्षा बेटीको अधिक आकर्षक पाया। वह एक भूतपूर्व प्लान्टर-परिवारकी एकमात्र सन्तान है और उसकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी है।” मार्क्सके वर्णनानुसार लाफार्ग सुन्दर, बुद्धिमान, कर्मठ, शरीरसे सुविकसित और सुहृदय, किन्तु थोड़ा सा बिगड़ा हुआ था। लाफार्ग क्यूबा-द्वीपके सन्तियागो शहरमें पैदा हुआ था, लेकिन जब अभी वह नौवर्षीका ही था, तभी उसके पिंडा-माता उसे फ्रांस ले आये। उसकी दादी मुलायो थी, अर्थात् दादीके द्वारा निग्रो-रक्त उसके शरीरमें वह रहा था, जिसे लाफार्ग खुले तौरसे स्वीकार करता था। लेकिन इसका असर उसके चमड़ेपर बहुत हल्का सा, तथा आँखोंमें अधिक सफेदीके सिवा और कुछ नहीं था। उसमें कुछ जिद्दीपन भी था, जिसके कारण कमी-कभी मार्क्स कुछ रंज और मजाक करते हुये उसे “निग्रो खोपड़ी” कह देते थे। सुरु-दामादका सम्बन्ध हमेशा बहुत अच्छा रहा। मार्क्सके लिये लाफार्ग केवल उनकी प्रिय पुत्री लौरा-के आनन्दमें सहायक दामाद ही नहीं था, वल्कि वह उनके बौद्धिक दायमापका विश्वासपात्र रक्षक तथा योग्य और मेहनती सहायक भी था।

इस समय मार्क्सकी मुख्य परेशानी अपनी किताबके बारेमें थी। २ नवम्बर १८६७ को उन्होंने एंगेल्सको लिखा था : “मेरी पुस्तकके भाग्य में क्या है यह मुझे खिला कर देता है। मैं कुछ नहीं सुन और देख पाया। जर्मन वडे अच्छे पढ़े हैं। अंग्रेजों, फ्रेंचों और वल्कि इतालियनोंके भी लग्न-भग्नके तौरपर इस द्वेषमें उनकी सफलताओं से निस्तर्देह वह मेरी कृतिकी उपेक्षा करनेका अधिकार

* Liege.

रखते हैं। वहाँके हमारे मित्र नहीं जानते, कि कैसे आन्दोलन करना चाहिये। इस बीच हमें रुसी चालको देखते प्रतीक्षा करनी होगी। रुसी कूटनीति और सफलताका रहस्य धैर्य है, लेकिन हम केवल एक बार ही जिन्दगी पानेवाले गरीबी प्राणी हैं, इस बीचमें भुखमरीके शिकार हैं।” “कपिटाल” की प्रथम जिल्दके प्रकाशित हुये दो ही महीने हुये थे। इतने बीचमें पुस्तककी वास्तविक और पूरी समालोचना करना संभव नहीं था, तो भी एंगेल्स और कुण्डलमानने भरसक उसके बारेमें प्रचार करनेकी हरेक कोशिश की। कितने ही पत्रोमें “कपिटाल” के बारेमें पहले हीसे सूचना प्रकाशित करनेमें भी उन्होंने सफलता पाई। एक जीवनी-सम्बन्धी विज्ञापन छुपानेका भी प्रबन्ध किया गया, जिसको रोकते हुये मार्क्सने लिखा था : “मैं समझता हूँ, इस तरहकी बात हितकी जगह अनिष्ट ज्यादा कर सकती है। जो भी हो मैं इसे साइन्सके आदमीकी प्रतिष्ठाके प्रति कूल समझता हूँ। उदाहरणार्थ बहुत दिन पहले मेररके विश्वकोषने मुझसे जीवनी-सम्बन्धी नोट माँगी थे, अपेक्षित सूचना देनेकी बात तो अलग रही, मैंने उनके पत्रका जवाब तक नहीं दिया। हरेक आदमीकी अपनी रुचि होती है”। एंगेल्सने जो जीवनी-सम्बन्धी लेख लिखा था, अन्तमें वह योहान आको-बीके पत्र “डी जूकून्स” में प्रकाशित हुआ, उसे पीछे लीबकनेखटने “डेमोक्राटिश-वोलेन्लाट”* में पुनः प्रकाशित किया।

पीछे “कपिटाल” की कुछ अच्छी समालोचनाये छपी, जिनमें एक सीवब-नेख्टके उक्त पत्रमें छपी। लाजेलके शिष्य श्वाइटजेरने “सोजियाल डेमोक्राट” में अपनी आलोचना प्रकाशित की, योजेफ डीटजगेनने भी एक आलोचना छपाई। श्वाइटजरकी आलोचनासे मार्क्सको यह संतोष हुआ, कि उसने किताबको पूरी तौरसे पढ़ा और उसके महत्वको समझा था। डीटजगेनका नाम मार्क्सने यहाँ पहली बार सुना और उसके सन्दर्भ दार्शनिक दिमाग को उन्होंने पसन्द किया।

१८६७ ई० में ही एक “विशेषज्ञ” ने भी मार्क्सके इस ग्रंथपर कलम चलाई-

और यह था प्रोफेसर युगेन ड्वरिंग* मार्क्ससे निराश होनेके बाद जिसे विस्माकर्सने अपनी नौकरीमें रखा था। ड्वरिंगने मेर्यर्सके विश्वकोषके एक परिशिष्टमें “कपिटल” की आलोचना छपाई। मार्क्स इस आलोचनासे असंतुष्ट नहीं हुये। एंगेल्स ड्वरिंगकी आलोचनाको उतनी अच्छी दृष्टिसे नहीं देखते थे। पीछे ड्वरिंगने ग्रंथको बुरी तरहसे लथाड़ा।

कवि फ्राइलिग्रथके साथ १८५६ ई० से मार्क्सका मित्रतापूर्ण सम्बन्ध था, यद्यपि कभी-कभी उसमें मामूली गड़बड़ी भी हो जाती थी। कविने बहुत सालों तक एक जर्मन बैंककी लन्दन शाखामें काम किया था। प्रायः साठ वर्षकी अवस्थामें बैंकके बन्द हो जानेपर बुढ़ापेमें उन्हें अपने मित्रों और साहित्य-प्रेमियों द्वारा संचित की जानेवाली निधिसे जीवनयापनके प्रबन्ध होनेकी आशा थी और वह जर्मनी जानेके लिये तैयार थे। “कपिटल” की प्रति पाकर कविने उसके लिये धन्यवाद तथा तरुण लाफागके साथ लौराके व्याहका हृदयसे अभिनन्दन भेजा। पुस्तकको पढ़कर भी उसने हर्ष प्रकट किया, और कहा कि इसकी सफलता यद्यपि तुरन्त और सनसनी पैदा करनेवाली नहीं होगी, लेकिन वह बहुत गहरी और स्थायी बस्तु होगी। मार्क्सका पुराना साथी रूगे कम्युनिज्मका अब जबर्दस्त विरोधी था। मार्क्सके साथ भी उसका सम्बन्ध बहुत दिनोंसे ब्रिगड़ा हुआ था, लेकिन उसने ग्रंथको युगप्रवर्तक, बड़ी चमत्कारिक और आँखोंको चौधिया देनेवाली कृति कहनेमें संकोच नहीं किया। मार्क्सने उसकी विद्वत्ता गम्भीरता और उसकी कुशाग्र बुद्धिकी सराहना की।

“कपिटल” जर्मन भाषामें लिखा गया और उसीमें वह पहले-पहल प्रकाशित हुआ। इसे शायद, आकस्मिक घटना नहीं कहना होगा, कि प्रथम जिल्द की छपनेके दूसरे ही साल उसके रूसी अनुवादके तैयार होनेके बारेमें १२ अक्टूबर १८६७ को कुगेलमानने मार्क्सको सूचित किया : पितरबुर्गके एक प्रकाशकने रूसी अनुवादको छपाना शुरू किया है, वह उसमें देनेके लिये मार्क्सका फोटो माँग रहा है। रूस, उसके शासन और समाजकी मार्क्स हमेशा कहीं आलोचना किया करते थे और एक तरह वह रुचियोंसे निराश से थे,

* Eugene Dubring

लेकिन रुसी ही उनकी इस महान् आमरकृतिके प्रथम कदरदान निकले । मार्क्स के दिखलाये मार्गके अनुसार उन्होने ही पहले-पहल दुनियामें कम्युनिस्ट राज्य कायम किया । “कपिटाल” ही नहीं बल्कि मार्क्सकी पुस्तक “अर्थशास्त्रकी आलोचना” की बिक्री भी रुस जितनी अधिक कही नहीं हुई । रुसी “कपिटाल” १८७२ है० में प्रकाशित हुआ । अनुवादक दानियलसन अपने उपनाम “निकोलाई-ओन” के नामसे ज्यादा प्रसिद्ध था । “कपिटाल” के महत्वपूर्ण अध्यायोंके अनुवादमें एक साहसी तरण क्रान्तिकारी लोपातिनने मदद की थी, जिसका मार्क्ससे १८७० है० में परिचय हुआ था । यद्यपि मार्क्सके राजनीतिक विचार रुसी शासकोंको मालूम थे, लेकिन तो भी उन्होने पक्के वैश्वानिक ढगसे लिखे होनेके कारण ग्रंथको प्रकाशित करनेकी आज्ञा दे दी । २७ मार्च १८७२ में पुस्तक प्रकाशित हुई । और २५ मई तक तीन हजारके संस्करणकी एक हजार कापियों बिक गई । इसी समय फ्रेच अनुवाद छुपने लगा था और द्वितीय संस्करणमें जर्मन मूल-ग्रंथ भी दो भागोंमें निकाला जाने लगा था । फ्रेच अनुवादमें ज० रायको मार्क्सने स्वयं काफी सहायता करते शिकायत की थी : अनुवाद सुधारनेसे कम समय लगता, यदि मैं स्वयं उसे फ्रेचमें कर डालता । इससे एक बात जरूर हुई कि “कपिटाल” का फ्रेच अनुवाद उतना ही प्रामाणिक है, जितना कि जर्मन मूल । जर्मनी, रुस और फ्रासकी अपेक्षा इगलैडमें “कपिटाल” की प्रथम जिल्दको कम सफलता मिली । सिर्फ एक छोटी सी आलोचना “सउर्डे रिव्यू” * में निकली, जिसमें कहा गया था, कि मार्क्समें अत्यन्त रुखी अर्थशास्त्रीय वातोंको भी सुन्दर रूपसे रखनेकी प्रतिभा है । दूसरी लम्ही आलोचना एगेल्सने एक और पत्रिका † के लिये लिखी, लेकिन “अत्यन्त रुखा” कहकर उसे सम्पादकने लौटा दिया । पीछे प्रोफेसर बीसलोके प्रयत्नसे पत्रिकाने उसे स्वीकार किया । मार्क्स अपने जीवनमें “कपिटाल” के अँग्रेजी अनुवादको नहीं देख सके ।

अध्याय १६

इन्टरेशनलका मध्याह्न

“कपिटाल” के प्रथम जिल्दके प्रकाशित होनेके थोड़े ही समय बाद २-८ सितम्बर १८६७ को लोजान* में इन्टरेशनलकी द्वितीय कंग्रेस अधिवेशन हुई, लेकिन जेनेवाकी प्रथम कंग्रेसके मुकाबिलेमें यह नीचे स्तरकी सांबित्र हुई।

१. पश्चिमी यूरोपमें

इन्टरेशनल को कार्यक्रममें आये तीन साल हो रहे थे, लेकिन जुलाईमें जेनरल कौसिलने कांग्रेसमें काफ़ी सम्प्रयामें प्रतिनिधियोंके भेजनेकी जो अपील की थी, उसमें पहले जैसी बात नहीं थी। अपने यहाँकी प्रगतिकी रिपोर्ट करनेमें भी किनते ही देशोंने ढिलाई की। सिर्फ़ स्वीजलैंड और बेल्जियमने इसमें तत्प्रता दिखलाई थी। बेल्जियममें मार्शियान† में हड्डतालियोंकी हत्या की गई थी, जिसके कारण वहाँके सर्वहारामें उत्तेजना फैली हुई थी। १८४८ ई० से पहले सामाजिक समस्याओंके बारमें जर्मनी की अधिक दिलचस्पी थी, लेकिन अब उसका सारा ध्यान राष्ट्रीय एकताकी ओर लगा हुआ था। फ्रांसमें भी इन्टरेशनलकी प्रगति नहीं हो पाई, लेकिन १८६७ ई० के वसन्तमें वैरिसके पीतलके कमकरोंमें उत्तेजना फैली, जब कि मालिकोंने तालाबन्दी की, किंतु कमकर अपने संघर्षमें अन्तमें विजयी हुये। अपीलमें और देशोंकी स्थितिका वर्णन करते हुये इंगलैंडके मजदूर-आनदेलनकी शिथिलताकी शिकायत की गई, तो भी जनताके दबावके कारण अनुदार प्रधानमंत्री डिजराइलीके अपने पूर्वगामी ग्लेडस्टोनके विग (उदार) मंत्रिमण्डलकी अपेक्षा भी अधिक विस्तृत मताधिकार देनेके लिये मजबूर होना पड़ा। अब नगरके हरेक घरका प्रत्येक भाउंडर भाउंडरी रकमका कुछ ख्याल किये बिना बोटर स्वीकार किया गया था। युक्तराष्ट्र अमेरिकाका जिक करते हुये इस बात पर सन्तोष प्रकट किया गया, कि वहाँके कम-करोने किनती ही रियासतोंमें आठ घंटेके कार्य दिन मनवानेमें सफलता पाई।

* Lausanne † Mar chienne

जेनरल-कॉसिलके प्रतिनिधिके तौरपर इकेरियस और दुपो काग्रेसमें शामिल हुये। युंगकी अनुपस्थितिमें काग्रेसकी अध्यक्षता दुपोने की। प्रतिनिधियोंकी संख्या ७१ थी, जिनमें जर्मन प्रतिनिधि थे कुगोलमान, एफ० ए० लॉगोफ० लुडविग बुखनेर और लाडेनडोर्फ—लाडेनडोर्फ अच्छा बूर्ज्वा-जनतन्त्रावादी, लेकिन कम्युनिज्मका सख्त विरोधी था। जर्मनोंसे कहीं अधिक सख्या फ्रेंच और इतालियन प्रतिनिधियोंकी थी, जिनमें प्रूधोके अनुयायी प्रधानता रखते थे। काग्रेसमें मार्क्सने कोई भाग नहीं लिया। उसके प्रस्ताव और निर्णय भी परस्पर विरोधी हुये। सैद्धान्तिक निर्णयोंकी अपेक्षा काग्रेसके व्यावहारिक कार्य अधिक लाभदायक थे। इसी समय “शान्ति और स्वतन्त्रता लीगके” नामसे एक बूर्ज्वा-संगठन कायम हुआ था, जिसकी प्रथम काग्रेस इन्टर्नेशनलकी काग्रेसके थोड़े ही समय बाद होने जा रही थी। उसने कमकरोंका सहयोग भी मौंगा था, जिसके बारेमें काग्रेसका सीधा-सादा जवाब था : जहाँ-कहीं भी उसके द्वारा हमारे हितों-को आगे बढ़ाया जा सकता है, हम खुशीसे तुम्हारा समर्थन करेंगे।

काग्रेसके समाप्त होनेके कुछ ही दिनों बाद एक घटना घटी, जिसका परिणाम बहुत व्यापक हुआ। १८ सितम्बर (१८६७) के दोपहरको हथियारबन्द सिनफिनो (आयरलैंडके देशभक्तो) ने एक जेलखानेकी गाड़ीको घेर लिया, जिसमें दो सिनफिन बन्दी ले जाये जा रहे थे। गाड़ीके दरवाजेको तोड़कर पुलिसके एक सिपाहीको गोली मार अपने साथियोंको छुड़ा लिया। असली आदमियोंको पकड़नेमें अग्रेज सरकार कभी सफल नहीं हुई। कानून और व्यवस्थाके नामपर कितने ही दूसरे निरपराध आदमियों को पकड़कर उनपर हत्याका मुकदमा चलाया गया। कोई ठीक सबूत नहीं मिल सका, तो भी उन्हें मृत्युदण्ड देकर फॉसीपर चढ़ा दिया गया। इसके कारण इंग्लैण्डमें बड़ी सनसनी फैली और दिसम्बरमें कमकरो और निम्न-मध्यम-वर्गके मोहल्ले क्लैरेंसचेलके जेलखानेकी दीवारको सिनफिनोने उड़ा दिया, जिससे बारह आदमी मारे गये और सैकड़ों घायल हुये। इन्टर्नेशनलका इससे कोई सम्बन्ध नहीं था। उसने

व्हेरफेनवेलकी दुर्घटनाको एक वेचकूपीकी बात कहकर सिनफिलोके लिये अधिक हानिकारक बतलाया, क्योंकि इसके कारण अंग्रेज मजदूरोंकी सहानुभूति वह खो सकेंगे। लेकिन अंग्रेज सरकारने सिनफिलोके साथ उसी तरह साधारण चोर-डाकू अपराधियोंकी तरह वर्ताव किया, जिस तरह हम भारतमें अभी थोड़े ही दिनों पहले देख चुके हैं। इस अमानुषिक वर्तावको देखकर मार्क्सको जो ज्ञाम हुआ, उसे जून १८६७ के एंगेल्सको लिखे पत्रमें उन्होंने प्रकट किया: ‘‘यह जुणपनीय सुश्राव अपनी अंग्रेज मानवताकी शैली बघाइते हैं, जब कि वह अपने राजनीतिक वन्दियोंके साथ हत्यारों, जालसाजों, अप्राकृतिक व्यभिचारियोंकी अपेक्षा वेहतर वर्ताव नहीं करते’’। एंगेल्सको आयलैंडके क्रान्तिकारियोंके प्रति और भी अधिक सहानुभूति थी, जिसका एक कारण यह भी था, कि उनकी मृतप्रिया मेरीकी बहन एलिजावेथ वर्न्स (एंगेल्स-पत्नी) एक जबर्दस्त आइरिश देशभक्त थी।

आयलैंडकी स्वतन्त्रताके प्रति मार्क्सकी भी जबर्दस्त सहानुभूति थी। बिना काफी अध्ययन और मननके मार्क्सकी कोई प्रवृत्ति हो नहीं सकती थी। आयलैंडकी परतन्त्रताके इतिहासका गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कर वह इस नीतेपर पहुँचे थे, कि आयलैंडकी स्वतन्त्रताके बिना इंगलैंडका मजदूर-बर्ग स्वतन्त्र नहीं हो सकता, जिसका स्वतन्त्र होना यूरोपीय सर्वहाराकी स्वतन्त्रताके लिये आवश्यक है। इंगलैंडमें सामन्ती जर्मनीदारों और पूँजीवादी वनियोंका अजब गठबन्धन था, आयलैंडकी भूमिका बहुत बड़ा भाग अंग्रेज जर्मनीदारोंके हाथमें था, जिनका जमा हुआ पैर उखाइना सर्वहारा-स्वतन्त्रताके लिये आवश्यक था। उनको विश्वास था, कि आइरिश लोगोंको जैसे ही स्वतन्त्रता मिलेगी, जैसे ही वह अपनी विधान-सभायें और सरकार निर्वाचित करेंगे, वैसे ही विदेशी अंग्रेज जर्मनीदारोंके प्रति आइरिश जनताकी जबर्दस्त बृशा थी। अंग्रेज ऐंजीप्रियोंके लिये आयलैंड कारखानोंके लिये सबसे सर्से दामसे ऊन और दूसरी चीजें प्रदान करता था, और अपने सस्ते मजदूरोंको देकर इंगलैंडके मजदूरोंकी माँगोंको कमजोर करनेमें सहायता करता था। उनकी गरीबी, निरक्षरता और स्त्रेपनके

कारण अंग्रेज मजदूर उनके साथ समानताका वर्ताव नहीं करते। उन्हे सफेद चमड़ेवाला नीगर समझते थे। यह मेदभाव अमेरिका तकमे दोनों देशोसे गये मजदूरोंमे मिलता था, जहाँ आइरिश उतनी हीन अवस्थामे नहीं थे। इंगलैंडमे सर्वहारा-क्रान्तिके सूत्रपातके लिये यह आवश्यक था, कि आइरिश लोगोंके इंगलैंडके जुएसे निकाला जाय। इसीलिये इन्टर्नेशनल हमेशा खुलकर आय-लैंडका पक्ष लेती और इंगलैंडके मजदूरोपर जोर देता, कि वह अपने पडोसी-देशकी स्वतन्त्रताको सहानुभूतिकी दृष्टिसे देखे और उसमे सहायता करें।

पिछले वर्षोंमे मार्क्सने आयलैंडके प्रश्नपर वरावर ध्यान दिया। जब तीन सिनफिनोंको मेन्चेस्टरमे मृत्युदण्ड दिया गया, तो इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कौसिल-ने अंग्रेज-सरकारके पास आवेदनपत्र भेजनेके लिये संगठन किया, लेकिन अंग्रेज शासक क्यों उसे मानने लगे? उन्होने उन्हें फॉसीपर चढ़ा दिया। इसपर इन्टर्नेशनलने इसके विरुद्ध जबर्दस्त समाये कर इस फॉसीको कानूनी हत्या-घोषित की। जिसके कारण अंग्रेज सरकार नाराज हो गई और मौकेसे फायदा उठाकर फ्रेच सरकारने भी इन्टर्नेशनलपर आक्रमण किया। इससे पहले तीन साल तक बोनापार्टने इन्टर्नेशनलके मामलेमे कोई हस्तक्षेप नहीं किया था। वह चाहता था, कि इन्टर्नेशनलके आन्दोलन द्वारा फ्रासके पैर्जीपति उसके प्रतिकूल घबरा जायें। पैरिसमें इन्टर्नेशनलका अपना व्यूरो था। जेनेवा-काग्रेसने अपनी कार्यवाही बहीको स्वीजरलैंडमें उत्पन्न किन्तु इंगलैंडके नागरिक बन गये एक स्विस पुरुषके हाथ जेनरल-कौसिलके पास भेजा था। फ्रांसकी सीमापर उसे छीन लिया गया और विरोध करनेपर फ्रेच-सरकार कानमे तेल ढाले पड़ी रही। इसपर अंग्रेज विदेश-विभागने अपनी प्रजाके साथ ऐसे वर्तावके लिये विरोध-प्रकट किया, तब लुटेरोंको कागज-पत्र लौटानेके लिये मजबूर किया गया। बोनापार्टको इन्टर्नेशनल कैसे पसन्द आ सकता था? १८६६ ई० में मजदूरोंने अनेक हड्डियाँ और उच्चरी जर्मनी लीगके साथ लुग्जम्बुर्गको लेकर भगाड़ा उठ खड़ा हुआ। उस समय पैरिसके मजदूरोंने बर्लिनके मजदूरोंके साथ भाइचारा का सम्बन्ध स्थापित किया। यह सब बातें थीं, जिससे बोनापार्ट अब इन्टर्नेशनलके खिलाफ कुछ करनेके लिये तैयार हो, सिनफिन-षड्यत्रका-

उसे केन्द्र कहा। सिनफिन अंग्रेजोंके लिये कड़ी धूँढ थे। इस वहाने बोनपार्टने एक और इन्टर्नेशनलको ध्वस्त करना चाहा और दूसरी ओर अंग्रेजोंको खुश करना। जिना वारंटके रातको इन्टर्नेशनलके व्यूरोके बीस मेम्बरोंके घरों पर पुलिसने छापा मारकर गिरफ्तार किया। ६-२० मार्चको मुकदमा चलाकर पन्द्रह मेम्बरोंको अपराधी करार दे उनमेंसे हरेकको सौ फ्रांकका जुरमाना कर, व्यूरोको अन्द कर दिया गया। फैसलेकी अपील बेकार साबित हुई। मुकदमे के फैसलेके बाद नये मेम्बरोंका व्यूरो स्थापित किया गया, लेकिन २२ मईको नये व्यूरोके नौ मेम्बर भी अदालतमें पेश किये गये, जिनके मुकदमेके पैरवी चर्लिनें बड़ी योग्यतासे की, किन्तु उन्हें तीन महीनेकी सजा मिले जिना नहीं रही। फैंच सरकारकी यह तत्परता बतलाती है, कि पैरिसके मजदूरोंमें इन्टर्नेशनलका प्रभाव बढ़ चला था।

बेल्जियममें भी वहाँकी सरकारने मजदूरोंपर प्रहारका मौका हाथसे जाने नहीं दिया। वहाँके न्याय-मन्त्री दे बाराने* पार्लियमेन्टमें इन्टर्नेशनलके खिलाफ जहर उगाते हुये उसे दबानेकी धमकी देते कहा, कि इन्टर्नेशनलकी अगली कांग्रेस ब्रुशेल्समें नहीं होने पायेगी। लेकिन बेल्जियमके मेम्बर उसकी धमकीसे नहीं डरे और उन्होंने खुला पत्र लिखकर मन्त्रीको जवाब दिया, कि वहाँ न्याय-मन्त्री पसन्द करें या न करें इन्टर्नेशनलकी अगली कांग्रेस ब्रुशेल्समें होके रहेगी।

२. मध्य-युरोपमें

१८६६ ई० में जो मन्दी और आर्थिक संकट पूँजीवादी देशोंमें आया था, उसके कारण वहाँ चारों ओर हड्डतालें होने लगी थीं। इन हड्डतालोंके संगठन करनेमें यद्यपि जेनरल-कौसिलका साक्षात् हाय नहीं था, लेकिन उसकी सहानुभूति हड्डतालियोंके साथ थी और जहाँ तक होता था सलाह-मशूरे और दूसरी तरहसे वह उनकी सहायता करती थी। सबसे बड़ी बात उसने वह की थी, कि मिन्न-मिन्न देशों के मजदूरोंमें एकता स्थापित करके हड्डताल तोड़नेवाले सस्ते मजूर पूँजी-

* De Bara.

पतियोंको विदेशसे पाने नहीं दिया था। उन्होंने मजदूरोंको बतलाया, कि तुम अपनी मजूरीको ठीक स्तरपर तभी कायम रख सकते हो, जब कि अपने विदेशी साथियोंके मजरी-सम्बन्धी संघर्षमें सहायता करो। इसके कारण जहाँ हड्डताल तोड़नेमें पूँजीपतियोंको कठिनाई हो रही थी, वहाँ इस अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारेसे कमकरोंकी हिम्मत बढ़ी हुई थी। इसीलिये सच हो या मूठ शासक सबकी जिम्मेदारी इन्डनेशनलपर शोपते थे। प्रत्येक हड्डताल इन्डनेशनल द्वारा चालित हड्डवाल मानी जाती, और हरेक हड्डतालके बाद इन्डनेशनलकी शक्ति और बढ़ जाती।

बृज्जर्जिने हड्डतालोंको तोड़ने तथा मजदूरोंको पत्तहिम्मत करनेमें कोई कसर नहीं उठा रखी। उन्होंने कमकर-परिवारोंको उनके क्वार्टरोंसे निकाल बाहर किया, दूकानोंको उधार सौदा देनेसे रोका। त्वीजलैंडके पूँजीपतियोंने तो यहाँ तक धृष्टिकी, कि अपने आदमी लन्दन मेंजकर पता लगाया, कि इन्डनेशनलको पैसे कहाँ चे मिलते हैं। मार्कर्सने व्यंग करते हुए कहा था : “अगर यह भले तथा पक्के क्रिस्तान यदि ईसाइयतके आरम्भिक दिनोंने रहते, तो इन्होंने रोममें धर्मदूत पालके वैंक-एकौटके बारेमें जाँच करवाई होती।” सारी कोशिश करनेपर भी चाजेल त्वीजलैंडमें मकान बनानेवाले मजदूरोंने जो हड्डताल की थी, वह दूट नहीं सकी और मजूर इन्डनेशनलके पक्षनाती बने रहे। अन्तमें जब उनकी विचाय हुई तो उन्होंने एक बड़ा जलूस निकाला और बाजारके चौरल्लेपर बड़ी सभा करके अपना विजयोत्सव मनाया। उन्हें सभी देशोंसे सहायता मिली थी। उनके संघर्षका प्रभाव एडलान्डिक पार युक्तराष्ट्र अमेरिकामें भी दिखाई पड़ा, जहाँपर एफ० ए० जोरो द्वारा इन्डनेशनल अपनी जड़ जमा रही थी—सोर्गें १८१८ ई०में देशसे राजनीतिक शरणार्थी हो निकलन्न और अब न्यूयार्कमें संगीतका अन्धापक था।

हड्डताली आन्दोलनने जर्मनीमें भी इन्डनेशनलके लिए रात्ता चाफ किया। अभी तक वहाँकी छिप्प-फुट् ढुकड़ियाँ इन्डनेशनलको नानती थीं। लाजेलने

वाद उसके अनुयायियोंका नेतृत्व धीरे-धीरे श्वाइट्जेरके हाथमें गया, जो कि उत्तरी जर्मन पालियामेन्टके लिए एल्वरफैल्ट ब्रैंनों^{*} से मेम्र चुना गया, जब कि उसका पुराना प्रतिद्वन्द्वी तथा मार्क्सका एक योग्य शिष्य लीबन्नेष्ट स्टोलवेर्ग-श्नीवेर्ग[†] से चुना गया। १८५६ ई० की शरदमें लीबन्नेष्टने सेक्शन जनता पार्टी कायम करनेमें भाग लिया था। लीगने समाजवादी नहीं, बल्कि उद्यवादी-जनतांत्रिक प्रोग्राम स्वीकार किया था और १८६८ ई० से लाइप्जिंगसे “डेमो-क्रांति वोखेनब्लाट”[‡] के नामसे अपनी पार्टीका मुख्यन्त्र निकालना शुरू किया था। श्वाइट्जेर “अल्पोमाइनेर ड्वाशेर अर्वाइटेरवेराइन”[§] नामके अपने दलके पत्रका सम्पादक था। श्वाइट्जेर और लीबन्नेष्टमें वरावर नोक-भोके रहती थीं। यद्यपि उसके युह लाजेलका मार्क्सके साथ बहुत अच्छा सम्बन्ध नहीं था, लेकिन लाजेल मार्क्सके कामके महत्वको समझता था। श्वाइट्जेरने जर्मन कम्करोंमें “कपियल” की प्रथम जिल्दका प्रचार करनेमें लीबन्नेष्टसे भी अच्छा काम किया था। अप्रैल १८६८ ई० में उसने मार्क्ससे भी कुछ उत्ताह मार्गी थी। यद्यपि निजी तौरसे श्वाइट्जेरका सम्बन्ध उतना अच्छा नहीं कहा जा सकता, लेकिन मार्क्स भी श्वाइट्जेरके मजदूर-आन्दोलनके “समझदारी और जोर” के साथ नेतृत्व करनेकी सराहना की, और जेनरल-कौसिलमें सदा वह श्वाइट्जेरका चिक पराये आदमीकी तरह नहीं करते। उसे जर्मनीके मजदूर-नेताओंमें सबसे अधिक योग्य और कर्मठ मानते थे। १८६८ ई० के अगस्तके अन्तमें हार्बर्गमें अल्पोमाइनेर ड्वाशेर अर्वाइटेरवेराइन” (श्वाइट्जेरके मजदूर संगठन) का बड़ा अधिवेशन हुआ, जिसमें इन्फ्रैशनलसे सम्बद्ध करनेका प्रस्ताव श्वाइट्जेरने स्वयं रखा। उसका संगठन इन्फ्रैशनलके उद्देश्योंके साथ अपनी उदानुभूति प्रकट कर सकता था, उससे सम्बन्ध करनेमें उसे गैर कानूनी होना पड़ता। अधिवेशनने मार्क्सको मजदूर वर्गके लिए उनकी वैज्ञानिक सेवाओंके लिये जर्मन कम्करोंका धन्यवाद स्वीकार करनेके लिये निमंत्रित किया, लेकिन मार्क्स ब्रूशेल्स-कांग्रेसकी तैयारीमें व्यस्त होनेसे नहीं आ सके। इस

* Elberfeld-Barmen. † Stollberg Schneeberg. ‡ Demokratisches Wochenblat. § Allgemeiner Deutscher Arbeiter Verein.

प्रकार लाजेलके समयसे चले आते विलगावकी खाई* श्वाइट्ज़ेरके प्रयत्नसे बहुत कुछ मिट गई, लेकिन मार्क्सके शिष्य लीब्कनेल्ट और श्वाइट्ज़ेरकी प्रतिदंदिता अब भी उसी तरह जारी रही। मार्क्सने श्वाइट्ज़ेरको कई पत्र लिखे, विशेषकर १३ अक्टूबर १८६८ के पत्रमें इसी बातका समर्थन मिलता है। वहे अधिकेशनके कुछ दिनों बाद नूरेम्बर्गमें जर्मन कम्फर संगठनोंके एसोसियेशनकी कांग्रेस हुई और इसने भी बहुमतसे इन्हेंशनलके नियमोंको अपना राजनीतिक प्रोग्राम स्वीकार किया, और “डेमोक्राटिशे बोखेनब्लाट” को उसका पत्र स्वीकार किया। कुछ सप्ताह पीछे “डेमोक्राटिशे बोखेनब्लाट” ने वहे-वहे अच्छरोंमें घोषित किया, कि स्ट्राईट्में जर्मन जनता-पार्टीकी कांग्रेसने नूरेम्बर्गके प्रोग्रामको स्वीकार करनेका निश्चय किया है। श्वाइट्ज़ेर और लीब्कनेल्टके संगठन नियमों और प्रोग्रामोंमें एक दूसरेके बहुत नजदीक आ गये, और मार्क्सने दोनोंके बीचमें पह-कर जर्मन मजदूर-वर्गके आन्दोलनको एक करनेकी कोशिश भी की, किन्तु उसमें सफलता नहीं हुई। आन्दोलन जितना ही बढ़ता गया, उतना ही मार्क्स को संगठनकी ओर विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता थी, आपसी फूटको अधिक बढ़नेसे वही रोक सकते थे।

३ बकुनिन

हम बतला चुके हैं कि किस तरह लोके सम्बन्धसे लड़ी क्रांतिकारी मिलाइल बकुनिनका मार्क्ससे परिचय हुआ। आगे चलकर बकुनिनने अराजकतावादका दूसरा रास्ता लिया, पीछे निराश हो जार और जारशाहीका खुशामदी बनकर जान छुड़ानेकी कोशिश करनेवाले बकुनिनका श्रमाव कम्फरोंके एक भागपर उस समय और पीछे भी रहा। ६-१३ सितम्बर १८६८ को ब्रुशेल्समें इन्हेंशनलकी तीसरी कांग्रेस हुई। पहले और पीछे भी होनेवाली कांग्रेसोंकी अपेक्षा इस कांग्रेसमें सबसे अधिक प्रतिनिधि आये थे, जिनमें अधिक संख्या वेलजियनोंकी थी। फ्रेच प्रतिनिधि पंचमांश थे, इज़लैएडके ११, जिनमें जेनरल-कौंसिलके ६ सदस्योंमें एकेरियस, युंग, लेसनेरन् तथा मजूर-संघी लुकास मां थे।

* Liebknecht † Lessner.

स्वीजलैंडसे द प्रतिनिधि आये थे, लेकिन जर्मनी अपने ३ ही प्रतिनिधि भेज सकी थी, जिनमें कोलोनसे आनेवाला मोजेज हेस था। शवाइट्जेरको^{*} भी निमंत्रण मिला था, लेकिन अपने किसी मुकदमेके कामसे वह जर्मनी नहीं छोड़ सका, पर एक सन्देश भेजकर उसने इन्टर्नेशनलके उद्देश्योंके साथ अपने संगठनकी सहानुभूति घोषित की, और बतलाया कि कानूनी बाधाके कारण हम इन्टर्नेशनलके साथ अपनी संस्थाको सम्बन्धित नहीं करा सकते। अपनी आयुके चौथे सालमें इन्टर्नेशनलकी शक्ति और धारा पहले से भी ज्यादा बढ़ गई थी। यद्यपि मार्क्सने इस कांग्रेसके प्रस्तावोंको तैयार करनेमें माग नहीं लिया था, लेकिन कांग्रेसकी कार्रवाईसे उनको असंतोष नहीं था। हास्तर्ग और नूरेन्बर्गकी कांग्रेसोंकी तरह इस कांग्रेसने भी अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहाराकी ओरसे अपने लिए किये मार्क्सके वैज्ञानिक कार्यकी सराहना करते हुये धन्यवाद दिया। जेनेवाके प्रतिनिधियोंके ज्ञान देनेपर इन्टर्नेशनलने युद्धके बादलोंको सिरपर मँडराते देख उसके विरुद्ध आम हड्डतालका प्रस्ताव स्वीकार किया था, जिसे मार्क्सने मूर्खतापूर्ण बतलाया, पर “शान्ति स्वतंत्र लीगसे” सम्बन्ध-विच्छेद करनेके निर्णयको पसन्द किया। लीगकी द्वितीय कांग्रेस कुछ ही समय पहले बर्न (स्वीजलैंडमें) हुई थी, जिसमें उसने इन्टर्नेशनलसे मित्रता करनेका प्रस्ताव किया था लेकिन इन्टर्नेशनल-ने उसको कड़ा जवाब देते हुए प्रस्ताव किया कि लीगको बन्द कर देना चाहिये और उसके मेम्बरोंको इन्टर्नेशनलके भिष-भिष भागोंमें सम्मिलित हो जाना चाहिये। बकुनिन लीगकी प्रथम कांग्रेसमें सम्मिलित हुआ था, बुशेस्टकी कांग्रेस-के कुछ ही महीने पहले इन्टर्नेशनलमें शामिल हुआ था। जब इन्टर्नेशनलने लीगके बिलाफ अपना प्रस्ताव पास कर दिया, तो उसने लीगकी बर्न-कांग्रेसमें अब सभी राज्योंके खतम करनेका प्रस्ताव करते हुये उसके ध्वंसपर सभी देशोंके “स्वतंत्र उत्पादक एसोसियेशनों (सभाओं) के फेडरेशन (संघ)” की स्थापना करनेका समर्थन लिया। लेकिन, वहाँ उसकी बात नहीं चली। अब बकुनिनने योहान फिलिप, वेकेर तथा दूसरे कितने ही अल्पमतमें रहे व्यक्तियोंके साथ

मिलकर “समाजवादी जनतत्रता (अन्तर्राष्ट्रीय) मैत्री*के” नामसे एक दूसरा इंटर्नेशनल खड़ा किया, जिसने बिना किरी शर्तके इंटर्नेशनलमें सम्मिलित होनेका निश्चय किया। बकुनिनके एलाएंस (मैत्री) की स्थापनाकी घोषणा बेकरने “डेर फोरबोटेके” सितम्बर अकमे प्रकाशित कर इसका उद्देश्य घोषित करते हुए कहा, कि फ्रास, इताली और स्पेनमें—जहाँ कि “मैत्री”का प्रभाव है—वह इंटर्नेशनलका श्रंग बनकर रहेगी। तीन महीने बाद १५ दिसम्बर १८६८ को बेकरने जेनरल-कौसिलसे प्रार्थना की, कि “मैत्री” को इंटर्नेशनल स्वीकार कर ले। लेकिन, इसी बीचमें फ्रेच और बेल्जियन फेडरल कौसिलने इस प्रार्थनाको अस्वीकार कर दिया था। एक सप्ताह बाद २२ दिसम्बरको बकुनिनने जेनेवासे मार्क्सिको लिखा : “मेरे प्रिय मित्र, मै इस समय सदासे अच्छी तरह और साफ तौरसे जानता हूँ, कि तुम आर्थिक कातिके महान् पथका अनुसरण करते हमें अपने साथ चलनेके लिए निमत्रित करते उन लोगोंकी निंदा करते हुए कितने ठीक रास्तेपर थे, जो कि अशतः और कभी-कभी पूरी तौरसे राज-नीतिक साहसोंकी पगड़ियोंमे हमारी शक्तियाँ बरबाद कर रहे थे। इस बक्त मैं अब वही काम कर रहा हूँ, जो कि तुम पिछले बीस सालसे कर रहे थे। बर्न काग्रेसमे बूज्जबीजीके साथ मेरे पक्के और सर्वजनिक सम्बंध विष्णुदेके बादसे कम्पकरोकी दुनियाके सिवाय मेरा अब न कोई दूसरा समाज है और न कोई दूसरा वातावरण। मेरी पितृभूमि अब इंटर्नेशनल है, जिसके प्रधान-संस्थापकोंमें तुम हो। इस प्रकार मेरे प्रिय मित्र, तुम देखते हो कि मैं तुम्हारा शिष्य हूँ, जिसका मुझे अभिमान है। मेरे अपने मनोभाव और वैयक्तिक सम्मतियोंके बारेमें यह बात है।” हो सकता है उस समय यह शब्द बकुनिनके हृदयसे निकले हों।

बकुनिनने कितने ही सालो बाद प्रूधो और मार्क्सिके बीचमें तुलना करते हुये लिखा था : “मार्क्स एक बहुत गम्भीर और संजीदा अर्थशास्त्रीय विचारक है। प्रूधों की अपेक्षा उसको एक सबसे जबर्दस्त सुभीता यह भी है, कि वह

चस्तुतः एक भौतिकवादी है। प्रूधोने पुराने विज्ञानवादकी परम्पराओंसे अपनेको मुक्त करनेकी बहुत कोशिश की, तो भी वह अपने सारे जीवनमें वैसा ही विज्ञानवादी बना रहा, किसी क्षण वह बाइबलकी और मुक्तता तो दूसरे क्षण रोमन कानूनकी ओर (जैसा कि मैंने उसकी मृत्युसे दो महीने पहले कहा था), वह सदा सिरसे पैर तक एक शास्त्रान्ति (वेदान्ति) रहा। उसका यह बड़ा दुर्योग था, कि उसने कभी प्राकृतिक विज्ञानका अध्ययन नहीं किया और न उसके ढंगको अपनाया। उसके पास एक मजबूत नैसर्गिक बुद्धि थी, जो उड़ती हुई उसे ठीक रास्ता बताता जाती, लेकिन अपनी बुद्धिके बुरी और विज्ञानवादी आदतोंके कारण वह अब पथभ्रष्ट हो पुनः-पुनः अपनी पुरानी गलतियोंमें पड़ जाता। इस प्रकार प्रूधों एक स्थायी परस्पर विरोधोंका समूह बन गया, यद्यपि एक शक्तिशाली प्रतिभावान् और क्रान्तिकारी विचारकोंके तौरपर वह लगातार विज्ञानवादके मायावादसे लड़ता रहा, पर उसे हटानेमें सफल नहीं हुआ।” ब्रुनिनने मार्क्सके बारेमें लिखा था, “विचारकोंके तौरपर मार्क्स ठीक रास्तेपर है। उसने इस सिद्धान्तको जमा दिया कि इतिहासमें सभी धार्मिक, राजनीतिक और वैधानिक विकास आर्थिक विकासोंके कारण नहीं विद्युक्त उनके कार्य हैं। यह बहुत बड़ा और लाभदायक विचार है, लेकिन इसका सारा श्रेय मार्क्सको नहीं है। उससे पहले भी बहुतोंने इसका कुछ पता पाया था और अंशतः इसको व्यक्त भी किया था, लेकिन अन्तिम इसका श्रेय मार्क्सको देना ही पड़ेगा, क्योंकि उसने इस विचारको वैज्ञानिक तौरसे विकसित किया और इसे अपने सारे आर्थिक विचारोंका आधार बनाया। दूसरी ओर मार्क्सकी अपेक्षा प्रूधों स्वतन्त्रता के विचारको अधिक अच्छी तरह समझता और पसन्द करता था। जिस समय सिद्धान्तों और शेखाचिल्ली शाहियोंके आविष्कारमें नहीं लगा रहता था, उस समय प्रूधोंके पास क्रान्तिकारीकी प्रामाणिक निर्सर्गज बुद्धि होती थी। वह शैतान-को मानता और अराजकताकी धोषणा करता था। यह बिल्कुल सम्भव है कि मार्क्स प्रूधोंकी अपेक्षा भी वेहतर बुद्धिपूर्वक स्वतन्त्र्य व्यवस्थाको विकसित करे, लेकिन उसके पास प्रूधों जैसी निर्सर्गज बुद्धि नहीं है। एक जर्मन और यहूदी होनेके कारण वह सिरसे पैर तक अधिकारवादी है।”

बकुनिनने प्रधोके अराजकतावादमें मार्क्सवादी ऐतिहासिक भौतिकवादकी पुट डालकर अपना एक नया पंथ खड़ा किया। प्रधोसे बकुनिनका अध्ययन अधिक विस्तृत था, वह मार्क्सको उसकी अपेक्षा अच्छी तरह जानता था, लेकिन उसने जर्मन-दर्शनका अध्ययन नहीं किया था और न पश्चिमी युरोपके वर्ग-संघर्षका गहराईसे अध्ययन किया था। अर्थशालमें तो वह पूरा भकुवा था, जो कि उसके लिये प्रधोके प्राकृतिक विज्ञानके अशानसे भी अधिक हानिकारक था।

१८४८ के गर्मियोंमें—जब कि बकुनिनके साथ मार्क्सका परिचय अमीर बहुत दिनोंका नहीं था, “नोये राइनिशे जाइटुंग” में बकुनिनपर आक्षेप किया गया, कि वह रूसी सरकार का एजेंट है। यद्यपि इसका पूरा प्रमाण न होनेके कारण यह आक्षेप हटा लिया गया और पीछे वर्लिनमें मिलनेपर मार्क्स और बकुनिनकी पुरानी मित्रता फिर कायम हो गई, और प्रशियन सरकार द्वारा निष्कासित होनेपर “नोये राइनिशे जाइटुंग” ने उसका पक्ष भी लिया था, लेकिन बोल्शेविक-क्रान्तिके बाद जारशाहीके दफ्तर जब खुले, तो मालूम हुआ कि “नोये राइनिशे जाइटुंग” का १८४८ ई० वाला आरोप गलत नहीं था। ग्राफ श्रोलॉफके सुभावपर बकुनिनने जारके पास उस समय अपना “प्रायश्चित्त नामा” मेजा था, जब कि आस्ट्रियन सरकारने उसे पकड़कर जारशाही पुलिसके हाथमें दे दिया। इस प्रायश्चित्त-पत्रको १५ सितम्बर १८५१ को बकुनिनने लिखकर खत्म कर तुरन्त ही जारके पास मैज दिया था। जारने अपने युवराज-को उसे पढ़नेके लिये दे दिया और फिर दुःख्यात ओखराना (खुफिया पुलिस) के दफ्तरमें दाखिल कर दिया गया। लेनिनग्रादमें केन्द्रीय अमिलेखागारमें १६११ ई० में मिलने पर “प्रायश्चित्त” को तुरन्त ही प्रकाशित कर दिया गया। १४ फरवरी १८५७ का लिखा जारके नाम बकुनिनका एक पत्र भी मिला था, जिसे भी प्रकाशित कर दिया गया। इन दोनों अमिलेखों द्वारा बकुनिन यही चाहता था, कि उसको कड़ा दरड न दिया जाय। उसने अपराध स्वीकार करने वाले पापीके तौरपर अपनी प्रार्थना जारके सामने रखा। १४ फरवरी १८५७ वाला पत्र तो “प्रायश्चित्त” से भी मद्दा है : “किस नामसे मैं अपने अतीत जीवनको मुकालौँ ? मृगतृष्णा और निष्कल प्रयत्नोंसे आरम्भ करके उसका अन्त अपराधों

में हुआ |...मैं अपनी भूलों, अपनी कुदाइयों और अपने अपराधोंपर लानव भेजता हूँ...|” जारशाहीके चरणोंमें पड़े इस पुराने पापीका दिखलाया राजनीतिक मार्ग किस तरहका होगा, इसे कहनेकी अवश्यकता नहीं, लेकिन जिस तरह त्रोत्स्की, राय या दूसरे पथपतितोंके अनुयायी आजपनी मिल सकते हैं, उसी तरह बकुनिनके भक्तोंका भी अग्रव नहीं है।

१८६७ ई० की शरदमें बकुनिन जेनेवामें जाकर रहने लगा। वहाँ उसने अपनी स्थापित की हुई शुस सभाके पक्षमें “शान्ति-स्वातंत्र्य लीगको” करनेकी कोशिश की। उसमें असफल होनेके बाद इन्टर्नेशनलके साथ सम्बन्ध जोड़नेकी कोशिश की। मार्क्सके दिलमें अब भी क्रान्तिकारी बकुनिनके लिये सहाय्यति थी। वह दूसरोंके आलोचनेसे उसकी रक्षा करनेका प्रयत्न करते थे। बकुनिनने समाजवादी जनतंत्रता मैत्री (एलायन्स) के लिये जिस दिन जेनरल-कौसिलको पत्र लिखा, उस समय तक उसने वेकेरकी मैत्री हुई गार्थनाको अस्वीकार कर दिया था और इस अस्वीकृतिमें मार्क्सका बड़ा हाथ था।

बकुनिनने अब भी आशा नहीं छोड़ी और २२ जूनको उसके संगठनने घोषित किया, कि अब मैत्रीको बन्द कर इसके भिन्न-भिन्न विभागोंको इन्टर्नेशनल का विभाग बन जाना चाहिये। जेनेवा-विभाग, जिसका नेता बकुनिन था, इन्टर्नेशनलमें जेनरल-कौसिलके एकमतसे ले लिया गया। बकुनिनने अपनी शुस सभाको भी तोड़ देनेकी बात की थी, लेकिन वह किसी न किसी रूपमें मौजूद रही। १८६८ ई० की शरद् तक बकुनिन कभी जेनेवा-सरोवर, कभी जेनेवा और कभी वेवे अथवा क्लारेन्समें रहता था। केंच इतालियन भाषी स्विस कम्परोंपर उसका काफी प्रभाव था। जनवरी १८६९ में बकुनिनकी प्रेरणासे उन्होंने एक संयुक्त फेडरल कौसिल बनाई और उसकी ओरसे काफी प्रभावशाली “ला एगालेटे” (समानता) नामक एक साप्ताहिक निकाला, जिसमें बकुनिन, वेकर, एकेरियस, चालिन तथा इन्टर्नेशनलके दूसरे प्रमुख सदस्योंके लेख निकला करते थे।

४. चौथी कांग्रेस (१८६८ ई०)

इन्टर्नेशनलकी चौथी कांग्रेस ५ और ६ सितम्बर (१८६८ ई०) को

बाजेलमें* हुई, जिसमें इन्टर्नेशनलके पॉचवे वर्षके कामोका लेखा-जोखा लिया गया। इस समय भी युरोपमें कमकरोंका वर्ग-संघर्ष चल रहा था, इन्टर्नेशनलकी शक्ति और प्रभाव कम होनेकी जगह बढ़ता जा रहा था। बूज्जर्जी और उनकी सरकारोंने अब इन्टर्नेशनलको खूनी पंजेसे दबानेका निश्चय कर लिया। इंगलैंड में भी हड्डताली खनको और सेनाके साथ खूनी मुठमेड़ हुई। ल्वारकी खानवाले इलाकेमें शराबी सिपाहियोंने रिकामेरीके† पास खूनकी होली खेली और बीस आदमियोंको मार डाला, जिनमें दो लियाँ और एक बच्चा भी था। वेलिंगम की सरकार इंगलैंडकीसे भी आगे थी, जिसके बारेमें मार्क्सने लिखा था : “पृथ्वी अपनी कक्षापर अपनी वार्षिक यात्राको उससे अधिक निश्चिततापूर्वक नहीं पूरा करती, जितना कि वेलिंगम सरकार अपने कमकरोंके वार्षिक खूनकी होलीको।” “१८६८ ई० के वसन्तमें नये मताधिकारके अनुसार इंगलैंडमें प्रथम चुनाव हुआ, लेकिन थैलीशाहोंके सामने एक भी कमकर पार्लियामेन्टके लिये नहीं चुना गया। ग्लेड्स्टोनका मंत्रिमण्डल फिर शासनालूद हुआ, लेकिन उसके दलने निर्वाचनके समयकी बातोंका कुछ भी न ख्याल कर आखलैंडके साथ समझौता या मजदूरोंकी शिकायतोंको दूर करनेकी कोई कोशिश नहीं की। १८६८ ई० में चर्मिशममें इंगलैंडकी मजदूर-सभाओं (ड्रेड्यूनियनो) की वार्षिक काग्रेस हुई, जिसमें अपील की गई, कि ब्रिटेनके सभी मजदूर-संगठनोंको इन्टर्नेशनलके साथ सम्बन्धित हो जाना चाहिये, यह हसीलिये नहीं, कि वह मजदूर-वर्गके हितोंका समर्थक है, वहिंकि इसलिये भी कि इन्टर्नेशनलके सिद्धान्त ही तुनियाके लोगोंके बीच स्थायी शान्ति कायम कर सकते हैं। १८६८ ई० की गर्मियोंमें इंगलैंड और युक्तराष्ट्र अमेरिकामें लडाई छिड़नेका डर पैदा हो गया था। मार्क्सने उस समय युक्तराष्ट्र की राष्ट्रीय मजदूर संघके लिये एक अभिभाषण तैयार किया, जिसमें लिखा था : “युद्धका रोकना अब यह तुम्हारी बारी है। युद्धका अनिवार्य परिणाम होगा अट्लान्टिकके दोनों किनारोंके बढ़ते हुये मजदूर-वर्गोंय आन्दोलनोंका पीछे हटना।” फ्रासमें मजदूर-वर्गकी गतिविधिसे परेशान हो पुलिस इन्टर्नेशनलके नये समर्थकोंका दमन कर रही थी। जर्मनीमें अचरथा कुछ भिज थी, ज्योंकि राष्ट्रीय

* Basle. † Rucamarie.

प्रश्नको लेकर वहाँ मजूरोंमें फूट पड़ गई थी। १८६६ हॉ के बाद आस्ट्रिया-
हंगरीमें मजूर-आदोलन जड़ पकड़ता आगे भी बढ़ रहा था।

सब मिलाकर वडी अच्छी स्थिति थी, जब कि सितम्बरके प्रथम सप्ताहमें चावेलमें इन्द्रेनेशनलकी चौथी कांग्रेस बैठी। उसमें ७८ प्रतिनिधि नौ देशोंसे आये थे। जेनरल-कौसिलके चार प्रतिनिधि थे—एकेरियस* युग्न† एप्लगर्थ‡ और लुकफूट। फ्रांसके २६, बेल्जियमके ५, जर्मनीके १२, आस्ट्रियाके २, स्वीजैलैंडके २३, इतालीके ३, स्पेनके ५ और युक्रेनियाके १ प्रतिनिधि थे। लीब्वक्नेस्ट और मोजेज हेस भी थे, और वकुनिन भी। सभापतिका पद युग्नने सम्भाला। कांग्रेसके सामने सबसे बड़ी सैद्धानिक समस्या थी जमीनकी समिलित मिलाकियत, तथा दायभागके अधिकारका प्रश्न। पहला प्रत्याव ब्रुशेल्स-कांग्रेसने तैयार किया था, इसलिये उसके बारेमें बहुत बहस-मुवाहिसेकी जल्दत नहीं पड़ी। २४ बोटोंसे कांग्रेसने निश्चय किया, कि समाजको भूमिपर समिलित मिलाकियत कायम करनेका अधिकार है, और ५३ बोटोंसे वह भी तैयार किया कि सारे समाजके हितके लिये ऐसी कार्रवाईकी जल्दत है। दायभागके उत्तराधिकार-के बारेमें जेनरल-कौसिलने एक रिपोर्ट तैयार की थी, जिसमें मार्क्सकी समर्थ ले खानीका थोड़ेसे शब्दोंमें बहुत से भावोंको प्रकट करनेका चमत्कार देखनेमें आता है : दूसरे सारे वृद्धि-विवानोंकी तरह उत्तराधिकारके विधान (कानून) भी उत्पादन-साधनोंमें निजी सम्पत्ति पर आधारित समाजके आर्थिक संगठनका कानूनी परिणाम है। उत्तराधिकार-सम्बन्धी कानून कारण नहीं बल्कि कार्य—आर्थिक संगठनोंका कानूनी परिणाम है। दायोंको दायभागमें पानेका अधिकार दायताका कारण नहीं था, बल्कि दायता दायोंके दायभागमें पानेके अधिकारका कारण थी। यदि उत्पादन-साधनोंको निजी सम्पत्तिकी जगह समिलित सम्पत्ति बना दिया जाय, तो सामाजिक महत्वके तौरपर दायभागका अधिकार लुप्त हो जायगा, क्योंकि तब आदमी अपने उत्तराधिकारियोंको उतना ही दायभागके तौरपर छोड़ सकेगा, जो कि अपने जीवनमें उसके पास है।

* Eccarius, † Gung. ‡ Appleearth.

इसलिये मजूर-वर्गका प्रधान लक्ष्य है उन संस्थाओंको तोड़ देना, जो कि बहुतों के श्रमके फलको लूटनेके लिये आर्थिक शक्तिको चन्द्र हाथोंमें देती हैं। किन्तु, उससे पहले सामाजिक क्रातिके आरम्भ करनेके तौरपर दायभागके कानूनको उठा देनेकी घोषणा उसी तरह फूलकी होगी, जिस तरह खरीदारों और विक्रेताओंके बीच शर्तनामेके कानूनको तब उठा देनेकी घोषणा, जब कि आजकलकी माल-विनियमयकी व्यवस्था जारी है। ऐसी घोषणा सिद्धान्तमें गलत और व्यवहारमें प्रतिक्रियाकारी होगी। दायभागके अधिकारमें तभी फेर-फार उसी संकान्ति कालमें किया जा सकता है, जब कि एक और समाजका वर्तमान आर्थिक आवार हटाया नहीं गया है, और दूसरी और समाजको पूरी तौरसे रूपान्तरित करनेके लिये आवश्यक कार्रवाइयोंको पूरा करनेके बास्ते मजूर वर्गके पास काफी शक्ति आ चुकी है। संकान्तिकालीन कार्रवाईके तौरपर जेनरल-कॉर्टिल मृत्यु करके बढ़ाने और दायभागके अधिकारोंको सीमित करनेको परिवारके दायभागके अधिकारसे अलग सिफारिश करती है।

लेकिन, जिस कमीशनको यह सबाल सपुर्द किया गया था, उसने दायभाग अधिकारके उठा देनेको मजूर-वर्गकी मौलिक मौग घोषित की। इसका समर्थन बकुनिनने किया। बस्तुतः बकुनिनका ही यह प्रस्ताव भी था। लेकिन, अन्तिम फैसला इसके बारेमें कुछ नहीं हो सका, क्योंकि उसके पक्षमें काफी प्रतिनिधि नहीं थे। तो भी इस प्रस्तावके सम्बन्धमें जो विचार प्रकट किये गये थे, उनसे भूमि-सम्बन्धी प्रस्तावका प्रभाव भिज-भिज देशोंमें देखा गया। प्रस्तावको फ्रेच, इतालियन, स्पेनिश, पोलिश और रुसी भाषाओंमें अनुवादित करके खबर बाँटा गया। लन्दनमें “भूमि और श्रम-संघकी” एक बड़ी सभामें स्थापना करते नारा लगाया गया “भूमि लोगोंके लिये!”

मार्क्स बाबेल-काग्रेसकी कार्रवाइयोंसे बहुत संतुष्ट हुये। उस समय वह अपनी बड़ी लड़की जेनीके साथ स्वास्थ्य-सुधारके लिये जर्मनीमें यात्रा कर रहे थे। २५ अगस्तमरको उन्होंने हनोवरसे अपनी लड़की लौराको लिखा : “मुझे यह जानपर प्रसन्नता हुई, कि बाबेल-काग्रेस समाप्त हो गई। उसके निकर्ष अपेक्षाकृत अच्छे हैं।” बकुनिन भी काग्रेसकी कार्रवाइसे मार्क्ससे अधिक

निराश नहीं हुआ। कहा जाता है, बकुनिन अपने दायमांगके उत्तराधिकारावाले प्रस्ताव द्वारा मार्क्सको हराना चाहता था, लेकिन यह बात समसामयिक अभिलेखोंसे गलत साक्षित होती है।

बकुनिनकी आर्थिक अवस्था खराब हो गई थी। उसकी थीवीको बच्चा होनेवाला था। उसने लोकानीमें बसकर वहाँसे मार्क्सके “कपियाल” की प्रथम जिल्डका रुपीमें अनुवाद करनेका निश्चय किया। उसके एक भक्तने एक रुपी प्रकाशको भी ठीक कर लिया और अनुवादके परिश्रमिकके तौरपर निश्चय किये गये बाहर सौ लक्खोंमेंसे तीन सौ बकुनिनके पास पहुँच भी गये। बकुनिनको रुपी एजेंट कहनेवालोंको अब भी कमी नहीं थी, जिसका जवाब वह भी “जर्मन वहूदी” कहकर देता था, यद्यपि लाजेल और मार्क्सको वह अपवाद बतलाता था। रुपी क्रान्तिकारी विचारक हैंसेन बकुनिनके पक्षमें था, लेकिन वह यह पसन्द नहीं करता था, कि छोटे-मोटे “जर्मन वहूदियों” पर आक्रमण किया जाय और मार्क्सको अबूतू रखा जाय। २८ अक्टूबरको बकुनिनने इसका कारण बतलाया, कि मैं क्यों मार्क्सपर आक्रमण करनेसे अपनेको रोकता हूँ : “वाहे कितनीही बुरी चालें उसने हमारे साथ चर्ली कमसे कम मैं समाज-वादके लिये उसकी जर्वर्दस्त सेवाओंकी उमेदा नहीं कर सकता, जिसे कि उसने अर्नेटट्टि, शक्ति और निःस्वार्थ भावसे प्रायः पचीस वर्षों तक किया है। इसमें निस्तर्नेह वह हम सबसे आगे बढ़ा-चढ़ा है। वह इन्नेशनलका एक संस्थापक, वाल्क मुद्रण संस्थापक था और मेरी दृष्टिमें यह एक ऐसी जर्वर्दस्त सेवा है, जिसको मैं सदा स्वीकार करूँगा, चाहे मार्क्सने हमारे खिलाफ कुछ भी किया हो।” लेकिन बकुनिनका मार्क्सके ऊपर सीधे आक्रमण न करनेका एक कारण यह भी था, कि इन्नेशनलके तीन-चौथाई लोग मार्क्सके ऊपर आक्रमण करनेपर उसके विरोधी हो जाते।

बकुनिन और मार्क्सके अनुयायियोंका झगड़ा बढ़ता ही गया। १८ फरवरी (१८७० ई०) के एक पत्रमें बकुनिनपर कुछ पैसे-कौड़ीके मामलेमें सन्देह प्रकट किया गया, जिसका सबूत बकुनिनके एक अनुयायी कत्कोफके आधारपर दिया गया था। कत्कोफ अपनी जवानीमें बकुनिनका अनुयायी रह चुका था,

लेकिन पीछे प्रतिक्रियावादियोंके दलमें मिल गया। मार्क्सने इस आक्षेपको ठीक न कहकर लिखा : “ऐसा उधार लेकर काम चलाना रुसियोंमें साधारण सी बात है” । बकुनिनका विरोध यद्यपि बढ़ रहा था, लेकिन मार्क्सको इसका चन्तोष था, कि इन्टर्नेशनल अब रूसी क्रान्तिकारियोंमें जड़ पकड़ रही है—यह भी उल्लेखनीय बात है, कि इसी समय (१८७० ई० में) लेनिनने जन्म लिया था, जिन्हें कि मार्क्सका सबसे योग्य डत्तराधिकारी होनेका सौभाग्य प्राप्त होनेवाला था ।

इतीं साल ४ अग्रैलको ला शो-दे-फॉन्दू मे फ्रेच-इतालियनभाषी स्त्रिय फेडरेशनकी द्वितीय वार्षिक कांग्रेस हुई । बकुनिन मैत्रीकी जेनेवा शाखाने इन्टर्नेशनलमें सन्वन्धित था । उसने कांग्रेससे माँग की, कि फेडरेशन इन्टर्नेशनलको स्वीकार करे और हमें भी फेडरेशनमें दो प्रतिनिधि भेजनेकी आशा दी जाय । ऊतिननें^१ इसका विरोध करते हुये आक्षेप किया, कि यह सब बकुनिन-की चाल है । इसके बारण कांग्रेसमें फूट पड़ गई । बकुनिनके पक्षमें १८ वोट और विपक्षमें २१ आये । अल्पमत पक्षने निर्णयको स्वीकार नहीं किया, जिसके कारण दो कांग्रेसे बन गईं ।

५. ड्यूयलैंड और फ्रांस

१८६८-७० ई० के जाझोंमें फिर मार्क्सका स्वास्थ खराब हो गया, लेकिन अब लगातार पीछा करनेवाली आर्थिक कठिनाइयों नहीं रह गई थीं । ३० जून (१८६८) को एंगेल्सने “सौरे व्यवसाय” से कुट्टी ले ली थीं, इससे छः महीने पहले उन्होंने मार्क्ससे पूछा था, कि ३५० पौँड वार्षिकसे काम चल जायेगा या नहीं । एंगेल्सने अपने फर्मके साथ ऐसा ब्रेदोवत्त किया था, कि जिसमें पॉच-छः वर्षों तक यह एक मार्क्सको बराबर मिलती रहे । एंगेल्सने इस प्रबन्धसे पॉच-छः ही वर्ष नहीं, बल्कि अपने अन्तिम समय तकके लिये मार्क्सकी आर्थिक कठिनाइयाँ दूर हो गई थीं । इस समय दोनों मित्रोंका ध्यान आइरिश-समस्यामें लगा हुआ था । एंगेल्सने आइरिश-आन्दोलनके ऐतिहासिक विकासका

* La Chauxde Fords † Utin

विस्तारपूर्वक अध्ययन किया था। मार्क्सने इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कौसिलपर जोर दिया था, कि वह आइरिश-आन्दोलनका समर्थन करे, अनियामित तौरसे दंडित सिनफिल्मोंकी आम माफीकी माँग करे, जिनके साथ कि जेलमें बहुत वुरा वर्ताव किया जा रहा था। जेनरल-कौसिलने आइरिश जनताकी अपने अधिकारोंके लिये लाइनमें ढटा, उदारता और हिम्मतकी सराहना की। उसने ग्लैडस्टोनकी नीतिकी निन्दा की, जिसने कि निर्वाचनके दिये हुये वचनको तोड़कर आइरिश देशमक्कोंको आम माफी देनेसे इन्कार कर दिया, और उसके लिये ऐसी शर्तें पेश कीं, जो कि आयलैंडवालोंके लिये अपमानजनक थीं। आइरिश-आन्दोलनमें मार्क्सकी सबसे बड़ी लड़की जेनी भी भाग ले रही थी। उसकी सफलताको देखकर मार्क्सको बड़ी प्रसन्नता हुई। इंगलिश पन्थ आयलैंड-वासियोंके ऊपर होते बवरतापूर्ण अत्याचारों पर मौन रहना चाहते थे। जेनी मार्क्सने बन्दी सिनफिल्मोंके ऊपर होते अत्याचारों का वर्णन कई लेखोंमें लिखकर विलियमके नामसे रोकफोर्टके पत्र “मार्सेंड”* में छपाया—१८५० बाली शादीमें मार्क्सने भी विलियमके नामसे लेख लिखे थे। जेनीके लेख बड़े जोरदार थे। वह फ्रैंच पत्रमें निकलकर यूरोपमें इंगलैंडकी भारी बदनामी कर रहे थे। इसपर ग्लैडस्टोनको मजबूर हो सिनफिल्मोंको जेलसे मुक्त करना पड़ा। “मार्सेंड” नकली बोनापार्टका जवर्दस्त विरोधी था। बोनापार्ट इन्टर्नेशनलके मेम्बरोंसे बहुत नाराज था। उसने चम-शृङ्खलामें भाग लेनेका दोष लगाकर उन्हें फँसाना चाहा। लेकिन शृङ्खलाको सांवित करना जब असम्भव हो गया, तो वह दोष तो हटा लिया गया। पुलिसने इन्टर्नेशनलके मेम्बरोंके पास एक गुप्त-संकेत वाले कागज-पत्र पकड़नेकी घोषणा की। ताप्रकार शार्ट्स† ने इस अदालतके सामने अपने साथियोंकी ओरसे जवर्दस्त सफाई दी। तब भी ६ जुलाईको बोनापार्टी सरकार एक सालके जेल और एक साल नागारिक अधिकारसे वंचित करनेका दंड दिलानेमें सफल हुई, यद्यपि उसके थोड़े ही समय बाद वह सरकार सदाके लिये खत्म हो गई। शार्ट्स ने पीछे पेरिस-कम्यूनके मेम्बरके तौरपर बहुत काम किया।

* Marseillaiz † Chatuin

अध्याय १७

पेरिस कम्यून

१. सेदाँकी पराजय (१८७० ई०)

१८४८ ई० की जर्मन-क्रान्ति के असफल होनेके बाद प्रशियन सरकारने जनताकी शक्तिको दूसरी ओर करनेके लिये सभी जर्मनोंकी एकताके आन्दोलन को बढ़ाना शुरू किया। वस्तुतः यह एकता का प्रयत्न नहीं, बल्कि सभी जर्मन राज्योंपर प्रशियाका प्रभुत्व कायम करना था। जहाँ तक सारे जर्मन भाषा-भाषियोंकी एकताका सवाल है, इसमे मार्क्स, और एंगेल्स, लाजेल और स्वाइट-जेर, लीबवनेखट और वेवेल पूरी तौरसे सहमत थे। लेकिन कोनिग्रात्जमेस्ट्रा-आस्ट्रियाको हराकर प्रशिया जिस जबर्दस्त शक्तिको प्राप्त कर लिया था उसे वह अब प्रतिक्रान्तिके लिये इस्तेमाल करनेको तैयार थी। उसे देखकर उन्हें यह मानना पड़ा, कि ऐसी स्थितिमें राष्ट्रीय क्रान्तिकी सम्भावना नहीं है। उन्होंने यह भी समझा कि प्रशियाकी इस सफलतासे वर्ग-संघर्षके लिये स्थिति और अनुकूल होगी, इसलिये मार्क्स और एंगेल्स, तथा लाजेलके उत्तराधिकारी श्वाइटजेरने “उत्तर-जर्मन-लीग” को स्वीकार किया, जिसे कि प्रशिया-ने स्थापित किया था। लेकिन, लीबवनेखट और वेवेल उत्तर-जर्मन लीगकी अपेक्षा बृहत्तर जर्मनीके ही समर्थक रहे, १८६६ ई० के बाद भी उत्तर-जर्मन लीगके घटकोंके लिये काम कर रहे थे।

इस निर्णयके बाद १८७० ई० मे फ्रास और प्रशियाके बीच होनेवाली लड़ाईके प्रति भी उनका दृष्टिकोण निश्चित हो चुका था। उन्होंने इस युद्धके तुरन्तके उन कारणोंके बारेमे अपनी कोई राय नहीं दी, जो कि ये : विस्मार्क स्पेनेके सिहासनपर एक होइनजोलेर्न राजकुमारको वैठाना चाहता था और बोनापार्ट अपने वंशके राजकुमारको अथवा बोनापार्ट जर्मनीके दिलाफ फ्रास-आस्ट्रिया-इतालीका एक सयुक्त मोर्चा बनाना चाहता था। बोनापार्ट आस्ट्रियाको

अपनी ओर लंचकर जर्मनीकी राष्ट्रीय एकता के विरुद्ध काम कर रहा था, इसलिये वह मानते थे कि जर्मनी जो कार्रवाई कर रही है, वह अपनी प्रतिरक्षाके लिये है। २३ जुलाईको इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कौसिलकी ओरसे प्रकाशित होनेवाले अभिभाषणको मार्कर्ने तैयार किया था, जिसमें कि घोषित किया गया कि १८७० ई० की युद्ध-योजना १८५१ ई० के कूप-द-एता (राजविराजीका) एक सुधरा हुआ रूप है, लेकिन यह द्वितीय साम्राज्य (नकली बोनापार्टी वंश) के लिये मौतकी रसी होगी, जिससे वह उसी तरह खत्म होगा, जिस तरह कि उसका आरम्भ हुआ। तो भी यह भूलना नहीं चाहिये, कि यह युरोपकी सरकारें तथा शासक-वर्ग ही थे जिन्होंने कि बोनापार्टके एक पुनः स्थापित साम्राज्यके लिये अठारह वर्षों तक पाशांचिक प्रह्लादन खेलना सम्भव कर दिया। जहाँ तक जर्मनीका सम्बन्ध है, यह युद्ध प्रतिरक्षात्मक है, लेकिन जर्मनीको इस स्थितिमें ढालने में किसने मजबूर किया ? किसने लुई बोनापार्टको जर्मनीसे युद्ध करनेके लायक बनाया प्रशियाने कोनिग्रातज़^{*}के युद्धसे पहले विस्माकर्ने बोनापार्टके साथ मिलकर पद्ध्यंत्र रखा और कोनिग्रातज़के बाद विस्मार्कने कठोर दासतामें पढ़े फ्रांसके विशद्ध स्वतन्त्र जर्मनीकी स्थापना नहीं बल्कि द्वितीय साम्राज्यकी सारी वृणित चालों और धोखा-धड़ियोंको इस तरह इस्तेमाल किया, कि बोनापार्टीय शासन-व्यवस्था राइनके दोनों किनारोंपर स्थापित हो गई। इसका परिणाम युद्ध छोड़कर और क्या हो सकता था ? यदि जर्मन मजबूर-वर्ग वर्तमान युद्धके पक्षके प्रतिरक्षात्मक रूपको छोड़कर उसे फ्रैंच जनताके विशद्ध युद्धके रूपमें परिणाम होने देता है, तो विजय और पराजय दोनों एक समान खतरनाक होगी। तथाकथित स्वतन्त्रताके लिये युद्धोंके कारण जर्मनीकी भोगी सारी तकलीफें और दुःख और भी जद्दर्दस्त रूपमें बढ़ेंगी। इसमें मार्कर्ने यह भी लिखा था, कि बोनापार्टी आक्रमणके विशद्ध अपनी रक्षाके लिये अपने अधिकारके तौरपर जर्मन जो भी सहानुभूति पानेकी आशा रखते हैं, वह उहें नहीं मिल सकेगी, यदि उन्होंने प्रशिवन सरकारको कसाकों (जारशाही सैनिकों) से सहायता मांगनेका अवसर दिया।

इस अभिभाषणसे दो दिन पहले २१ जुलाईको उत्तर-जर्मन राइखस्टग (पार्लियामेन्ट) ने बारह करोड डालर युद्धके खर्चके लिये स्वीकार किये । लाजेलके अनुयायियोने पार्लियामेन्टमें इसके पक्षमें वोट दिया, लेकिन लीब-क्नेष्ट और वेवेलने किसी ओर वोट नहीं दिया । अपने लोगोंमें भी कितनोने उनके इस आचरणको पसन्द नहीं किया ।

प्रशियाकी सेनाओंका प्रतिरोध बोनापार्टकी सेना नहीं कर सकी, और सेदौंकी लडाईमें उसकी ओर पराजय हुई । लुई बोनापार्ट बन्दी बना और द्वितीय साम्राज्य घस्त हो गया । पैरिसमें बूर्जा गणराज्यकी घोषणा हुई । पैरिसके पहलेके देपुतियो (पार्लियामेन्ट सदस्यों) ने गणराज्यकी बागडोर अपने हाथमें ले अपनेको राष्ट्रीय प्रतिरक्षा सरकार घोषित किया । जर्मनोंके लिये अब यह लडाई राष्ट्रीय प्रतिरक्षाका युद्ध नहीं रह गया । प्रशियाके राजाने उत्तर-जर्मन-लीगके नेताके तौरपर अनेक बार घोषित किया था, कि हम फ्रैंच जनताके विरुद्ध नहीं, बल्कि फ्रैंच सम्राट्‌की सरकारके विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं । पैरिसकी नई सरकार जर्मनीको ज्ञातिपूर्ति देनेके लिये तैयार थी, लेकिन विस्मार्क पैसेसे सन्तुष्ट नहीं था, वह तो फ्रासकी भूमि अलसेस और लोरेनको चाहता था, जिसके लिये उसने युद्धको जारी रखना जरूरी समझा । इन्टर्नेशनलने बेकार ही इतने दिनों तक प्रयत्न नहीं किया । उसका प्रमाण कमकर जनतापर होना जरूरी था । ५ सितम्बरको बुन्देलिक कमेटीने मजदूर-जनताको फ्रैंच गणराज्यके साथ सम्मान सहित शान्तिके पक्षमें तथा अलसेस और लोरेनके हड्डपनेके विरुद्ध प्रदर्शन करनेकी अपील की । इस अपीलमें कमेटीके नाम लिखे मार्कर्सके पत्रका कुछ अश भी उढ़ूत किया गया था । अपीलपर दस्तखत करनेवाले सैनिक अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार हो वेढ़ी डालकर ६ सितम्बरको लोत्जेनके किलोमें पहुँचाये गये । योहान याकोवी को भी राजबन्दी बनाकर वही भेज दिया गया, क्योंकि उसने कोनिग्सबेरगमें फ्रैंच भूमागके हड्डपनेका विरोध किया था : “कुछ दिनों पहले हम लोग प्रतिरक्षात्मक युद्ध लड़ रहे थे, अपनी ग्रिय पितृभूमिके लिये धर्मयुद्ध लडाई कर रहे थे, लेकिन आज यह विजयका युद्ध यूरोपमें जर्मनिक जातियोंकी सर्वप्रभुता स्थापित करनेका युद्ध है ।” प्रशियाके सैनिक

आधिकारियोंने चारों ओर अत्याचार और दमनका राज्य स्थापित कर दिया। जिस दिन बुन्देशिक कमेटीके सेव्योंको जर्मनीमें गिरफ्तार किया गया, उसी दिन इन्टर्नेशनलकी जेनरल-कॉरिलने मार्सें और कुछ अंशमें एंगेल्स द्वारा तैयार किये अभिभाषणको प्रकाशित किया, जिसमें प्रशियाकी अनुचित महत्वाकांक्षा और देश-विजयकी भावनाकी सख्त निन्दा की गई। प्रशियाका दावा था कि अल्सेस और लोरेन पुराने समयमें जर्मन साम्राज्यके अंग थे। इसपर अभिभाषण लिखा था : “यदि पुराने ऐतिहासिक आधिकारोंके साथ यूरोपके नक्शोंको फिरसे बनाया जाय, तो हमें यह न भूलना चाहिये कि जहाँ तक कि उसके प्रशियाके भूभागका समवन्ध है ब्रॉडेनवर्गका निर्वाचक (शासक) किसी समय पोलिश गणराज्यका सामन्त था ।” अभिभाषणमें उन लोगोंका भी मुँह-तोड़ जावा दिया गया था, जो कहते थे कि प्रशियाकी भौतिक गारंटीके लिये अल्सेस और लोरेनका हमारे हाथमें रहना आवश्यक है। एंगेल्सने सैनिक दृष्टिसे इसपर विवेचना करते हुये बतलाया था, कि यदि राष्ट्रोंके भीतर सीमाओं के निर्धारित करनेमें सैनिक सुभीतेका ख्याल रखा गया, और इस सिद्धान्त-को मान लिया गया, तो आस्ट्रियाको वैनिसके प्रदेश तथा मिनसियों रेखा * तकको लेनेका आधिकार होगा और फ्रांसको पेरिसकी रक्षाके लिये राइन नदीकी माँग करनेका हक होगा। पैरिस को निश्चय ही उत्तर-पश्चिमसे आक्रमण होनेका उससे कहीं ज्यादा खतरा है, जितना कि बर्लिनको दक्षिण-पश्चिमसे। अगर सैनिक ख्यालसे राष्ट्रीय सीमान्त निर्धारित किये जाने लगे, तो भिन्न-भिन्न दावोंका अन्त नहीं होगा, क्योंकि हरेक सैनिक स्थिति अवश्य कहीं पर कमजोर होती है, और उसके लिये और अधिक भूभागको अपनेमें मिलाकर सदा मजबूत करनेकी इच्छा की जा सकती है। अन्तमें, इस तरीकेसे स्थापित की गई सीमायें कभी अनिम नहीं हो सकतीं, क्योंकि उन्हें विजेताओं द्वारा पराजितोपर जबर्दस्ती लादा जायगा, और इस प्रकार वह नये युद्धोंका बीज बोयेंगी ।”

अभिभाषणमें फ्रांसके बारेमें लिखते हुये कहा गया था, कि गणराज्यने

सिंहासनको फेंका नहीं, बल्कि केवल खाली उसकी पीठको अपने हाथमें ले लिया है। सामाजिक सफलताके तौरपर नहीं, बल्कि राष्ट्रीय प्रतिरक्षाके उपायके तौरपर धोषित किया गया है। गणराज्य एक अस्थायी सरकारके हाथमें है, जिसमें दुःख्यात ओर्लियॉ-पक्षी और किंतने ही बृद्धा गणवादी सम्मिलित हैं। उनमें वह लोग भी मौजूद हैं, जिन्होंने कि १८४८ के जूनके विद्रोहका विरोध किया था। विभागोंका बैटबारा भी छुरी तरहसे हुआ है। सेना और पुलिस जैसे महत्वपूर्ण विभाग ओर्लियानियोंके हाथ हैं और बात बनानेवाले विभाग नामधारी गणवादियोंके हाथमें। नई सरकारने जो पहले कदम उठाये हैं, उनसे साफ है कि उसने द्वितीय साम्राज्यसे उसकी ध्वंसराशिको नहीं, बल्कि उसके मजदूर-कर्मान्के प्रति भयको दायभागमें पाया है।

इस प्रकार फ्रेच मजदूर-वर्ग अत्यन्त कठिन स्थितिमें है। शत्रुके दरवाजो पर होनेके समय नई सरकारको उखाङ फेंकना दुस्साहसपूर्ण सूर्वता होगी। फ्रेच कमकरोंको अपने नागरिकताके कर्तव्य पालन करने होंगे, लेकिन उन्हें १७६२ ई० की राष्ट्रीय स्मृतियोंको अपनेपर काबू नहीं करने देना चाहिये, घोला नहीं खाना चाहिये, जैसा कि फ्रेच किसानोंने प्रथम साम्राज्यकी राष्ट्रीय स्मृतियोंमें घोला खाया था। उन्हें अतीतको दोहराना नहीं, बल्कि भविष्यका निर्माण करना है। उन्हें धैर्य और दृढ़तापूर्वक गणराज्यने जो स्वतन्त्रता प्रदान की है, उसके साधनोंको अपने वर्गको अच्छी तरह संगठन करनेमें लगाना चाहिये। उन्हें फ्रासके पुनरुद्धार और हमारे संयुक्तकरणीय—सर्वहाराकी मुक्ति—के लिये भीम जैसी शक्ति प्रदान करना होगा। गणराज्यका भाग्य उनकी शक्ति और बुद्धिपर निर्भर करता है।

इस अभिमाणणने फ्रेच कमकरोंमें एक नया जोश पैदा किया। उन्होंने अस्थायी सरकारके विरुद्ध संघर्ष करनेका ख्याल छोड़ अपने नागरिकके कर्तव्य पालन किये विशेषकर राष्ट्रीय गारदके रूपमें संगठित पेरिसके सर्वहारोंने फ्रेच राजधानीकी बीरतापूर्ण प्रतिरक्षाके लिए मुख्य तौरसे भाग लिया। १७६२ ई० की राष्ट्रीय स्मृतियोंसे उन्होंने अपनेको अन्धा नहीं होने दिया और वर्गके तौरपर बड़ी तत्परतासे अपना संगठन किया। जर्मन कमकरोंने भी अपने करणीयको

पूरा करनेमें कम योग्यताका परिचय नहीं दिया। दमन और जब्रदस्त खतरेकी पर्वाह न करके लाजेती और आइजेनाल दोनों कमकर-समूहोंने फ्रैंच गणराज्यसे सम्मानपूर्ण सन्धि करनेकी माँग की, जब दिसम्बरमें उत्तर-जर्मन-पार्लियामेन्ट फिर युद्धके नये खर्चपर बोट देनेके लिये इकट्ठा हुई, तो दोनों समूहोंके प्रति-निधियोंने अपना बोट खिलाफ दिया। लीक्सनेहृष्ट और वेवेलने विशेष तौरसे बड़ी निर्भयताका परिचय दिया, जिसके कारण पार्लियामेन्टके सत्रके खत्म होनेपर दोनोंको भारी देशद्रोहके मुकदमेमें फँसा दिया गया।

उस सालके जाङ्गोंमें मार्क्सके ऊपर फिर कामोंकी भीड़ थी। अगस्तमें डाक्टरोंने उन्हें समुद्रके किनारे मिजवाया था, लेकिन वहाँ उन्हें जब्रदस्त कामका सामना करके चारपाईपर पड़ा रहना पड़ा। उस महीनेके अन्तमें जब लन्दन लौटे, तो उनके स्वास्थ्यमें बहुत सुधार नहीं हुआ था। जेनरल-कौसिलके अधिकांश लोग पैरिस चले गये थे, इसलिए उसकी अन्तर्राष्ट्रीय लिखा-पढ़ीकी सारी जिम्मेवारी मार्क्सने अपने ऊपर ले ली थी। १४ सितम्बरके अपने पत्रमें उन्होंने कूगेलमानको लिखा था, कि ३ बजे सबरेसे पहले मुझे चारपाईपर जानेका मौका नहीं मिलता, लेकिन साथ ही यह आशा प्रकट की थी कि एंगेल्स लंदनमें बसनेके लिए आ रहे हैं, इसलिये मुझे कुछ आराम मिलेगा। इसमें सन्देह नहीं कि मार्क्स आशा रखते थे कि फ्रैंच गणराज्य प्रशियाकी विजयके युद्धके साथ सफलतापूर्वक प्रतिरोध कर सकेगी। १३ दिसम्बरको मार्क्सने कूगेलमानको लिखा था : “जान पड़ता है जर्मनीने केवल बोनापार्ट, उसके जेनरलों और उसकी सेनाको ही नहीं बल्कि उसके साथ सारी साम्राज्यवादी व्यवस्थाको भी निगल लिया, जो कि राइनके वृक्षोंवाले देशके हरेक गाँवों और गढ़ोंमें घर कर रही है।” प्रशियन विजेता जिस तरहका कठोर बर्ताव पराजित फ्रैंच लोगोंके साथ कर रहे थे, उससे बड़ा क्षोभ हो रहा था। यह ठीक है कि अँग्रेजोंने यही काम भारत, जमैका आदिमें किया है, लेकिन फ्रैंच हिन्दू, चीनी या निग्रो (हव्शी) नहीं है और न प्रशियन भगवान्‌के भेजे अँग्रेज। यह होहेनजुलेन वंशका विचित्र विचार है, कि अपनी स्थायी सेनाके हारकर छिन्न-मिन्न हो जानेपर जो लोग अपनी प्रतिरक्षाका प्रयत्न जारी रखते हैं, वह अपराधी

है।” फ्रेडरिक विलियमको भी यही विचार प्रथम नेपोलियनके युद्धमें सता रहे थे।

विस्मार्कने पेरिसपर बमबारी करनेकी धमकी दी थी, जिसे मार्क्सने भूठी चाल बतलाई : “सम्मवताके सभी कानूनोंके अनुसार इस तरहकी कार्रवाई पेरिसका बहुत ज्यादा विगड़ नहीं कर सकती। मान लो कुछ बाहरके मोर्चे उड़ा दिये गये, कुछ जगहोपर प्रतिरक्षाकी पंक्ति ढूँढ़ गई, तो इससे कितना फायदा होगा, जब कि हम जानते हैं कि घिरे हुये लोगोंकी सख्ता घेरनेवालोंसे कहीं आधिक है ! पैरिसको पराजित करनेके लिए एक ही वास्तविक उपाय है और वह है उसे भूखे मारना।” मार्क्स कोई सैनिक विशेषज्ञ नहीं थे, लेकिन पैरिसकी बमबारीके बारेमें जो बात उन्होंने कही थी, वही सलाह रूनश्छोड़कर विस्मार्कके सभी प्रधान जेनरलोंने दी थी। जब विस्मार्कने बहुत उदारताका नाट्य करते हुये कहा कि फ्रैंच सरकार प्रेस और पार्लियामेन्टमें विचारोंको स्वतन्त्रतापूर्वक प्रकट करनेमें बाधा डाल रही है, तो मार्क्सने १६ जनवरी १८७१ के “डेली न्यूज़” में इसे “बर्लिनका व्यंग” कहते हुये बतलाया था, कि पुलिस-राज्य द्वारा गला छुट्टे जर्मनीसे यह आवाज निकल रही है : “फ्रांस—और सौभाग्यसे उसकी सारी ही आशाये अपने लिए खत्म नहीं हो चुकी हैं—इस समय केवल अपनी ही राष्ट्रीय स्वतन्त्रताके लिये नहीं, बल्कि जर्मनी और युरोपकी स्वतन्त्रताके लिये लड़ रहा है।” सेदॉकी पराजयके बाद अब इस लड़ाईके बारेमें मार्क्स और एगेल्सका क्या सख था, यह ऊपरके बाक्यसे मालूम होगा।

२. फ्राँसमे गृह-युद्ध

२८ जनवरी १८७१ को पैरिसने आत्मसमर्पण किया। विस्मार्क और ज़्यूले फाब्रेने† मिलकर आत्मसमर्पणकी शर्तोंके बारेमें जो समझौता तैयार किया था, उसमें यह साफ तौरसे मंजूर कर लिया गया था, कि पैरिसके राष्ट्रीय गारदको अपने हथियार रखनेका अधिकार होगा। राष्ट्रीय एसेम्बलीका जो निर्वाचन हुआ, उसमें राजबादी-प्रतिगामियोंका बहुमत था। उसने पुराने पड़यंत्री थियेर-

* Roon, † Gules Favre. ‡ Thiers.

को गणराज्यका राष्ट्रपति चुना। अल्सेस और लोरेनको हाथसे देने और पाँच मिलियार्डन (अरब) प्रांक ज्ञातिपूर्ति स्वीकार करनेके बाद राष्ट्रीय एसेम्बलीने पैरिसको निःशब्द करनेका निश्चय किया, क्योंकि बूज्जी थियेर और प्रतिक्रियावादी जमीदार हथियारबद्द पैरिसको क्रांतिसे कम भयझड़ नहीं समझते थे। १८ मार्चको थियेरने राज्यकी सम्पत्तिका बहाना करके राष्ट्रीय गारदकी तोपोंको जब्त करना चाहा, यद्यपि उन्हें राष्ट्रीय गारदने घिरावेके समय अपने खर्चपर ढाला था और २८ जनवरीको उन्हें राष्ट्रीय गारदकी सम्पत्ति स्वीकार किया गया था। बनिये थियेरके प्रयत्नको गारद स्वीकार करनेके लिए तैयार नहीं हुआ, उसके खिलाफ जो सेना भेजी गई, वह ब्रिगड़कर जनताकी ओर हो गई, और इस प्रकार घट-घुद आरम्भ हो गया।

३. कम्यूनकी स्थापना

पैरिस अब दो दलोंमें विभक्त हो गई : एक ओर थियेरकी सरकार हथियार चमकाने लगी, जिसकी पीठपर जर्मन विजेता थे, और दूसरी ओर पैरिसकी साधारण जनता थी, जिसने २६ मार्च (१८७१ ई०) को कम्यूनके नामसे अपनी सरकार स्थापित की। कम्यूनके अधीन पैरिसके कमकरोने अद्भुत सहर और वलिदानका परिचय दिया, जब कि थियेरके वेरसाई दलने कानून और व्यवस्थाके नामपर कायरतापूर्ण पाशबिकता दिखलानेमें हृद कर दी।

मार्क्सने १२ अप्रैलको कूर्गेलमानको लिखा था : “कैसा पक्का और जबर्दस्त उत्साह, कैसी ऐतिहासिक आत्मप्रेरणा और कैसा आत्मत्याग ये पैरिसवाले दिखला रहे हैं। छ महीनेकी भुखमरी और धंसके बाद—जिसको लानेमें प्रकट शत्रुकी अपेक्षा भीतरी विश्वासवातियोंका हाथ ज्यादा रहा—वह बिद्रोहके लिए उठ खड़े हुये, मानो प्रांष और जर्मनीके बीच कोई लड़ाई ही नहीं हुई है, मानो प्रशियाकी संीनें अस्तित्व नहीं रखतीं, मानो शत्रु पैरिसके फाटकोपर मैजदूर नहीं है। इतिहासमें इतने भव्य रूपका कोई उदाहरण नहीं मिलता। अगर पैरिसवाले पराजित होंगे, तो अपनी ‘भलमनसाहत’ के कारण ही। जब सेवा और राष्ट्रीय गारदके प्रतिक्रियावादी अंश मैदान छोड़कर हट गये,

तो उन्हें तुरन्त वेरसाईके ऊपर कूच करना चाहिये था, लेकिन उनकी सदाशयताकी भावनाने उन्हें गृह-युद्ध छेड़ने नहीं दिया। मानो पैरिसको निहत्था करनेका प्रयत्न करके थियेरने वैसी कोशिश नहीं की। चाहे पैरिसवाले विद्रोहमें पराजित भी हों, तो भी जूतके विद्रोहके बादसे हमारी पार्टीका अत्यन्त यशस्वी काम यही होगा।” तुलना करो इन स्वर्गपर आक्रमण करनेवाले तीनोंकी प्रशिया-जर्मन पवित्र-रोमन-साम्राज्यके भक्त दासोंसे।

मार्क्सने यहाँपर पैरिस कम्यूनको “अपनी पार्टी” का काम बतलाया है। उनका यह कहना असुक्त नहीं था, क्योंकि कम्यूनका मेष्टदण्ड पैरिसका मजदूर-वर्ग था, विशेषकर इन्टर्नेशनलके पैरिसके सदस्य कम्यूनके सबसे निर्भय और योग्य योद्धा थे, यद्यपि कौसिलमें वह अल्पमतमें थे। बूर्जांजी उस समय इन्टर्नेशनलके नामसे चिढ़ती थी, और युरोपके सभी देशोंमें सभी गढ़बढ़ियों और संघर्षोंका कारण उसे मानती थी। पैरिसके पुलिसके अखबारने १६ मार्चको एक पत्र छापकर यह दिखलानेकी कोशिश की, कि इन्टर्नेशनलको कम्यूनका श्रेय नहीं देना चाहिये, जिसपर मार्क्सने “टाइम्स” में पत्र छापकर कहा कि वह उक्त पत्र झूठी जालसाजीका नतीजा है। मार्क्स जानते थे कि इन्टर्नेशनलने कम्यूनको नहीं बनाया, लेकिन उसके आरम्भसे ही इन्टर्नेशनल उसका अभिन्न अंग हो गया था। कम्यूनकी कौसिलमें बलाकेके अनुयायियोंका बहुमत था। उसके बाद अल्पमत यद्यपि इन्टर्नेशनलसे संबंध रखता था, लेकिन उसके विचार अधिकतर प्रधोंके थे, इस प्रकार दोनों ही पक्ष मार्क्सके समर्थक नहीं थे। कम्यूनके कालमें मार्क्सने उसके अल्पमतके साथ संबंध कायम रखनेकी कोशिश की। मार्क्सके पत्रके जवाबमें (जो कि लोक-कार्य-विभागके एक प्रतिनिधि ल्यूफ्राकेलके पास सुरक्षित रहा) २५ अग्रैलको लिखा गया : “मुझे बड़ी खुशी होगी, यदि आप यथासम्भव मुझे अपनी सलाहसे सहायता करें, क्योंकि इस समय लोक-कार्य-विभागमें जो भी तुधार मैं करना चाहूँ, उसके लिए मैं पूरी तौरसे जिम्मेवार हूँ। तुम्हारे पिछले पत्रकी एक या दो पंक्तियों इस बातको बतलानेके लिए काफी थीं, कि तुम सभी लोगों और सभी कम्करों, लासकर जर्मन कम्करोंको यह समझानेके लिए हर सम्भव तरीकेसे प्रयत्न

करेगे कि पैरिस कम्यूनकी ओवा आदमके जमानेवाली जर्मन-कम्यूनसे कोई समानता नहीं है। जो भी हो, इसके बारेमें हमारे उद्देश्यके लिये आप अच्छी सेवा करेगे।” मार्क्सने इस पत्रक क्या जबाब, क्या सलाह दी थी, इसका पता नहीं। फ्रैंकल और वर्लिन द्वारा भेजा गया दूसरा पत्र भी खो गया, लेकिन उसके जबाबमें १३ मईको मार्क्सने जो लिखा था, उसके कुछ अंश निम्न प्रकार हैं : “प्रत्राहकसे मैंने बात की है। क्या यह अच्छा विचार नहीं होगा, कि वेरसाइके लुन्चे^१ के लिए ऐसे विश्वासधाती कागजोंको एक सुरक्षित स्थानमें रख दिया जाय ? इस तरहकी सावधानीकी कार्रवाईसे कोई हानि नहीं हो सकती। बोर्डेर्से एक पत्र सुके मिला है, जिससे मालूम होता है, कि पिछले म्युनिसिपल चुनावमें इटनेंशनलके चार मेम्बर विजयी हुए। अब मुफसिलमें भी घटनायें घटने लगी हैं, वद्यपि दुर्भाग्यसे उनका प्रभाव स्थानीय तथा शान्तिपूर्ण है। हमने दुनियाके सभी कोनोंमें जहाँपर भी हमारे संबंध हैं—कितने ही सौ पत्र आपके बारेमें लिखे हैं। अत्यु, आरभसे ही मजूर-वर्ग कम्यूनके पक्षमें है। अँग्रेज दूर्जा आखदार भी प्रारम्भिक शत्रुताके भावको अब छोड़ चुके हैं। समय-समय-पर उनके कालमोंमें एकाध अनुकूल लेख दुसेहनेमें मैं सफल हुआ हूँ। सुके जान पड़ता है, कि कम्यून महत्वहीन विवरणों और वैयक्तिक भागड़ोंमें अपना बहुत सा समय बरवाद कर रही है। यह साध है कि उसमें सर्वहाराके अतिरिक्त दूसरोंके प्रभाव भी काम कर रहे हैं। लेकिन इससे कोई हर्ज नहीं, यदि अंतिम समयमें तुम अपनेको ठीकठाक कर सको।” अन्तमें मार्क्सने इस जल्दी कार्रवाई करनेकी आवश्यकतापर यह कहते जोर दिया, कि तीन दिन पहले फ्रांकफर्ट (माइन तरीय) में जर्मनी और फ्रांसके बीच सन्धि हो चुकी है। कम्यूनको दबा देनेके लिए अब विस्मार्क भी थियेरकी तरह ही उत्सुक है, विशेषकर इस ख्यालसे कि संघिपर हस्ताक्षर होनेके साथ ही युद्धकी ज्ञातिपूर्तिकी आदायगीका काम शुरू हो जायगा। मार्क्सने कम्यूनके पास अपने सलाह-मशौरेके पतों द्वारा दिये, लेकिन कम्यूनके भीतर सीधे भाग लेनेकी इच्छा नहीं प्रकट की, जैसा कि उन्होंने पीछे कम्यूनकी असफलताके बाद किया। कम्यूनकी जिम्मेदारी उन्होंने

* Canaille.

अपने ऊपर ली, लेकिन वह चाहते थे कि स्वयं जा वहाँ अधिनायक बननेका ख्याल छोड़ स्थानीय लोगोंको सब काम अपनी इच्छा अनुसार करने देन्ह चाहिये।

२८ मईको कम्यूनके अन्तिम योद्धा मैदानमें गिरे। मार्क्स कम्यूनकी रोज-रोजके जीवनको कितनी बारीकीसे देख रहे थे, यह इसीसे मालूम होगा, कि उसके दो दिन बाद उन्होने जेनरल-कौंसिलके सामने “फ्रासमें घट्युद्ध” के नामसे एक अभिभाषण पेश किया। यह मार्क्सकी लेखनीसे निकली अत्यन्त चमत्कारिक कृतियोंमें से है, और आज तक कम्यूनके बारेमें जितनी जिल्दें निकली हैं, उसके भीतर यह हीरेकी तरह चमकता है। जंगलके बीचसे अपने पथको ढूँढ निकालना, कूड़े-करकटके बीचसे वास्तविक तत्वको चुनना मार्क्सका ही काम था। अभिभाषणके दो, चौथे और अन्तिम अनुच्छेदमें पहले घटनाक्रमका वर्णन किया गया है, उसमें उन सच्चाइयोंका प्रकाश किया गया है, जिसके एक वाक्यका भी पीछे कभी खंडन नहीं हुआ। पैरिस कम्यूनको मार्क्स मानव-इतिहासकी अद्वितीय घटना मानते थे। इतिहासमें यही पहली बार सर्व-हारोने एक बड़े नगरके शासनको हाथमें लेकर अपनी सूझ और साधनोंके अनुसार भीषण शत्रुओंसे लड़ते हुये राज्य चलानेकी कोशिश की थी। २६ मार्च से २८ मई तक अद्भुत वीरता और निःस्वार्थताके साथ इस ऐतिहासिक और महान् शासन तजर्बेको उन्होने कर दिखाया था। भविष्यमें सर्वहाराके स्थायी शासन दुनियाके बड़े-बड़े देशोंमें कायम होंगे। एक समय सारे विश्वमें वर्गहीन समाज स्थापित करके सर्वहारा अपना शासन स्थापित करेगे, लेकिन यही हमेशा कहना पड़ेगा, कि दो महीनेके पैरिस कम्यूनका शासन इतिहासकी इस प्रकारकी पहली घटना है। अपने इस निबन्ध द्वारा मार्क्सका काम कम्यूनके विस्तृत इतिहास लिखनेका नहीं था। वह अपनी लेखनी द्वारा कम्यूनके सम्मानकी प्रतिरक्षा करना चाहते थे, जिसे कि शत्रु कलकित करनेका प्रयत्न करते थे। इसे खड़नात्मक रूपमें कम्यूनके बकीलके तौरपर मार्क्सने लिखा था। “ग्रत्येक क्रान्तिमें क्रान्तिके वास्तविक प्रतिनिधियोंसे विल्कुल भिन्न आचरणवाले लोग अपनेको दूसरोंकी पक्षिमें छुसेड़ देते हैं। इनमेंसे कुछ पहिलेकी क्रान्तियोंके

अबशेष हैं, जिनके साथ उनका पूरा गठबंधन है। ऐसे लोग वर्तमान क्रांतिको समझते हैं असमर्थ हैं, लेकिन अपनी प्रसिद्ध हिम्मत और उच्च चरित्रत या शायद केवल परंपराके कारण साधारण जनतापर उनका अब भी काफी प्रभाव है। दूसरे ऐसे लोग भी होते हैं, जो कि केवल हल्ला-गुल्ला करनेवाले हैं, जो विद्यमान सरकारके विरुद्ध वर्षों उत्ती तरहकी बकवास दोहराते रहते हैं। इस प्रकार भूठे दोगोंसे उन्हें प्रथम श्रेणीके क्रांतिकारी होनेकी ख्याति मिल जाती है। १८ मार्चके बाद ऐसे लोग भी वहाँ प्रकट हुये, कितनी ही बार इन्होंने ग्रधान पार्टी भी अदा किया। जहाँ तक उनसे हो सका, उन्होंने उसी तरह मजूर-वर्गकी वास्तविक कार्रवाईमें बाधा डाली, जैसा कि पहलेकी सारी क्रांतियोंके पूरे विकासमें डाला था।” मार्क्सने बतलाया कि ये लोग अनिवार्यतया आमौजब होनेवाली हुगराइयाँ थीं। अगर समय मिला होता, तो ऐसे लोगोंसे कम्यूनने छुट्टी ले ली होती, लेकिन उसे तो केवल दो महीनेका समय मिला था।

अभिमानशक्तिके तीसरे अनुच्छेदमें कम्यूनके ऐतिहासिक रूपकी विवेचना की गई थी, जिसका खास महत्व है। मार्क्सने सूक्ष्मदर्शिताके साथ कम्यून और उस जैसी मालूम होनेवाली दूसरी ऐतिहासिक संस्थाओंके बारेमें मध्यशुरुआत कम्यूनसे प्रशियाकी पौर (म्युनिसिपल) व्यवस्थाके भेदको बतलाया: “केवल एक विस्मार्क... केवल (उसके जैसे) मनोमाय पैरिस कम्यूनको १७८१-८० के पुराने फ्रेंच म्युनिसिपल संविधानके अनुकरण करनेकी चाह रखनेका श्रेय देनेकी बात कह सकते हैं। प्रशियन पौर म्युनिसिपल-व्यवस्थाने अपने पौर शासन-प्रबन्धमें केवल प्राप्तियन राज्य-मरीनिका एक मामूली सा पुर्जा बननेका रूप लिया था।” मार्क्सने बतलाया कि यह कम्यून बख्तुतः एक राजनीतिक ढाँचा था, जो कि आसानीसे अपनेको बढ़ा सकता था, जब कि सभी शासनके ढाँचे केवल मुख्यतः दमनकारी रूप रखते थे: “इसका वास्तविक रहस्य यह था, कि वह सारतः मजूर-वर्गकी सरकार थी और उत्पादक और हड्डपक वर्गोंके बीचके संघर्षसे पैदा हुई थी। यह अन्तिम राजनीतिक ढाँचा आविष्कृत हुआ था, जिसके अधीन श्रमकी आर्थिक सुकृति हो सकती थी।

यद्यपि कम्यूनके प्रोग्राम और कार्रवाइयाँ विस्तारपूर्वक नहीं तैयार हुई थीं, लेकिन उसने अपने दो महीनेके जीवनमें व्यवहारतः राज्य-संचालनके लिये जो कुछ किया था, उसके आधारपर मान्यताने बलाया, कि कम्यूनने ऐसी नीतिका अनुसरण किया, जिसका एक मुख्य उद्देश्य राज्यका घंस था—राज्य अपने अत्यन्त भ्रष्टाचारपूर्ण (द्वितीय साम्राज्यके) त्वपने समाजके शरीरपर एक “जोकसी बुद्धि” से अधिक कुछ नहीं था, जो कि समाजबीं शक्तिको चूसकर उसके स्वतन्त्र विकासमें बाधा ढाल रहा था । कम्यूनकी पहली डिग्री (घोषणा) द्वारा स्थायी सेनाको हटाकर उसकी जगह हथियारखन्द जनताको स्थापित किया गया । कम्यूनने अब तक सरकारकी केवल हथियार वनी पुलिस-शक्तिको सभी राजनीतिक अधिकारोंसे बंचित करके उसे कम्यूनके लिये जबाब्देह औजारके रूपमें परिषित कर दिया । पुरानी सरकारके भौतिक हथियार-स्वतंत्र स्थायी रेना और पुलिसको खतम करनेके बाद कम्यून उसके दमनके आधारित हथियार-पादरियोंकी शक्तिको तोड़ने चली । उसने अपनी घोषणा द्वारा सम्पत्तिके मालिक के तौरपर सभी चच्चोंको खतम कर उनकी सम्पत्ति छीन ली । उसने सभी शिळ्ड-संस्थाओंको जनताके लिये निःशुल्क खोल दिया, और राज्य तथा चर्चकी ओरसे ऐसी संस्थाओंमें होनेवाली सारी बाधाओंसे हटा दिया । अन्तमें कम्यूनने पुरानी नौकरशाहीको बड़-मूलसे खतम कर दिया, जब कि उसने जबों (न्यायाधीशों) सहित सभी सरकारी अफसरोंको निर्वाचित तथा किसी समय भी वर्खास्त कर देने का नियम बना राज्यके नौकरोंका सर्वाधिक वेतन छु हजार फ्रांक (बार्थिक) निश्चित कर दिया । कम्युनिस्ट-घोषणापत्रमें मान्यताने यद्यपि रव्हाहार-क्रान्ति द्वारा बूर्जा-राज्यकी राजनीतिक संस्थाओं और शासन-यंत्रके खतम करनेकी बात उठा देनेकी बात लिखी थी, लेकिन वहाँ उन्होंने इसे धीरे-धीरे होनेकी बात कही थी । पैरिस कम्यूनके तब्बेने बतला दिया कि क्रान्तिकी सफलताके लिये पुराने शासन-यन्त्रका—पुरानी नौकरशाहीका—तुरन्त खातमा बहुत जल्दी है । क्रान्ति-की बात तो छोड़िये, हमारे भारत जैसे देशमें कुछ अधिक सुधार करनेमें भी अग्रेजोंके समयसे चली आती नौकरशाही आज उच्चे लब्दस्त बाधा दीख पड़ रही है । क्रान्तिके लिये इस शासन-यंत्रका तुरन्त उखाड़ फेंकना चलरी है । यही

समझकर जून १८७२ में कम्युनिस्ट-बोधणापत्रके नये संस्करणके प्रावक्तव्यमें मार्क्स और एंगेल्सको अपनी पुरानी राय बदलनी पड़ी और कहना पड़ा कि विजयी कम्कर राजशक्ति पर अधिकार करके पहले ही से तैयार राज्य-यन्त्रका अपने उद्देश्यके लिये इस्तेमाल नहीं कर सकते। इस बातको जारकी नौकरशाही-को हयकर सोवियतों (जन-निर्वाचित पंचायतों) के रूपमें नये शासन-यन्त्रको स्थापित करके रुसी-क्रान्तिने सफलता पाई, इसे आज सभी जानते हैं।

अपने अभिभाषणका उपसंहार करते हुये मार्क्सने लिखा था : “कम्करों और उनके कम्यूनकी पेरिस हमेशा नये समाजके वशस्ती सन्देशवाहकके तौर-पर सदा याद की जायगी। उसके शहीद मजदूर-वर्गकी विशाल हृदयमें प्रतिष्ठान-सित रहेंगे। उसके ध्वंसकर्ता अभी ही इतिहास द्वारा धृषास्पद सावित हो गये हैं। वह ऐसे अभिशापसे अभिशापत हैं, जिस अभिशापसे उनके पादरियों और पुरोहितोंकी प्रार्थनायें उन्हें मुक्त नहीं कर सकतीं।” अभिभाषणका प्रभाव तुरन्त देखा गया, जब कि चारों ओरसे मार्क्सपर वागवाणीकी वर्षा होने लगी। मार्क्सने कूगलमानको इसके बारेमें लिखा था : “इस (अभिभाषण) ने शैतानके कूलहें पर ठोकर मारी है। इस क्षण लन्दनमें सबसे अधिक गाली खानेवाले और धमकाये जानेवाला आदमी होनेका सम्मान मुझे प्राप्त है। वह मेरे लिये अच्छा है, वीस सालके लम्बे और उबा देनेवाले दलदलमें रहनेवाले मैंठक जैसे बेकासे एकान्तवासके बाद इसने मेरे लिये अच्छा किया। सरकारी पत्र “ब्रॉन्जवर्ड” मुझपर मुकदमा चलानेकी धमकी तक दे रहा है। आवें वह भी कोशिश करके देख लैं।” जैसे ही वह बवंडर शान्त हुआ, मार्क्सने दोषित किया कि अभिभाषणका लेखक मैं हूँ। आगे चलकर मार्क्सके ऊपर आङ्ग्रेप किया गया, कि उन्होंने कम्यूनकी सारी लिम्मेवारी लेकर इन्दरेशनलको खतरेमें डाल दिया, लेकिन मार्क्स कम्यूनको इन्दरेशनलसे अलग करके देख नहीं सकते थे, और न वह इतिहासको मुट्ठलाना चाहते थे।

४. इन्टर्नेशनल और पेरिस कम्यून

पेरिस कम्यूनके बाद इन्टर्नेशनलके शबुओंकी संख्या और बढ़ गई। दुनियामें चारों ओरके प्रतिक्रियावादी उसे खुलकर गालियाँ देने लगे, जिसका

एक यह फायदा जरूर हुआ, कि उसके कारण इंगलैंडके आखबारोंमें जेनरल-कौसिलको जवाब देनेका मौका मिला, जो घाटेका सौदा नहीं था। इन्टर्नेशनलके लिये एक बड़ी समस्या और उठ खड़ी हुई थी, कम्यूनके नष्ट कर दिये जानेपर उसके लिये काम करनेवाले बहुसंख्यक लोग वेलिंगम, स्वीजलैंड विशेषकर लन्दनमें भाग गये। इन्टर्नेशनलके पास पैसेकी शक्ति नहीं थी और इन शरणार्थियोंको सहायता करनेके लिये पैसे जमा करनेके बास्ते बहुत मेहनत करनी पड़ती थी। कई महीनों तक उसका सारा प्रयत्न इसी ओर लगा रहा। अब सरकारोंने भी इन्टर्नेशनलको खतम करनेका बीड़ा उठाया। युरोपके सभी देशोंमें उसके खिलाफ सरगर्मीसे काम होने लगा। कोशिश यह भी की गई, कि सभी देशोंकी सरकारें मिलकर एक साथ हमला कर दे, और वर्ग-चेतना रखनेवाले सर्वहारोंको दबा दे, लेकिन आपसके विरोधी स्वार्थोंके कारण सभी सरकारे एकतावद्ध नहीं हो सकीं। ७ जून १८७१ को फ्रेच सरकारकी ओरसे ज्ञाने फाब्रेने दूसरी सरकारोंके पास परिपत्र भेजा था, लेकिन बिस्मार्क तकने भी उसकी ओर कोई ध्यान देनेकी आवश्यकता नहीं समझी, यद्यपि वह जानता था कि जर्मन समाजवादी जनतांत्रिकताके लाजेलीय और आइजेनाख दोनों दल कम्यूनके समर्थक थे। कुछ समय बाद स्पेनकी सरकारने भी इसके लिये सरगर्मी दिखलाई, और उसके विदेश-मन्त्रीने सभी सरकारोंके पास परिपत्र भेज कर कहा : “यह काफी नहीं है कि सरकारे अलग-अलग इन्टर्नेशनलके विद्ध आवश्यक कड़े उपाय काममें लाये, और अपने-अपने देशोंमें उसके विभागोंके खिलाफ कड़ा कदम उठाये। सभी सरकारोंको एकतावद्ध हो इस पापको खतम करनेके लिए एकतावद्ध होना चाहिये। शायद इसका कुछ प्रभाव पड़ता, लेकिन अग्रेज सरकारने इसका उत्तर बड़े उपेक्षापूर्वक दिया और लार्ड ग्रेनविलने कहा : “इस देशमें इन्टर्नेशनलने अपने कामोंको सुख्यतः हड्डतालोंमें सलाह देने तक सीमित रखता है, और ऐसी कार्रवाईको समर्थन करनेके लिये उसके पास बहुत ही सीमित फ़ाउट है। इन्टर्नेशनलकी कान्तिकारी योजनायें केवल उसके विदेशी मेम्बरोंकी राय हैं। त्रिटिश कम्करोंसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है, जिनका कि ध्यान मुख्यतः मज़रूरीके सम्बन्धमें रहता है। विदेशी इंगलैंडमें देशके कानूनकी दृष्टिसे

वही श्रधिकार रखते हैं, जो कि ग्रिटिंश प्रबाजन, इसलिये उनके खिलाफ बिना दूसरे कारणोंके कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती।”

यद्यपि शत्रुओंने मिलकर इन्टर्नेशनलके विरुद्ध घर्मयुद्ध लड़नेका मौका नहीं पाया, लेकिन यूरोपके मिलभिन्न देशोंमें उसकी शाखाओंको दमनका सम्पन्न करना पड़ा था। इस दमनसे भी ज्यादा इन्टर्नेशनलके लिये बुरी चाह हुई कि इंगलैंड, फ्रांस और जर्मनीके जिस मजदूर-वर्गपर उसका बहुत ज्यादा भरोसा और अभिमान था, उसमें त्रिव शिथिलता पैदा होने लगी थी। फ्रांसमें यितेर और फ्रांसकी राजवादी-प्रतिगामी राष्ट्रीय एसेम्बलीने इन्टर्नेशनलके विरुद्ध जवर्दस्त कानून पास किया, जिसने फ्रैंच मजदूर-वर्गको लूंज बना दिया, यह इसे कारण भी कि इससे वहले ही सुनकी होली खेलकर उसे दबाया जा चुका था। इन कसाईयोंने हतने हीसे सत्तोष नहीं किया, बल्कि स्वीजलैंड और इंगलैंडकी सरकारोंसे वहाँ भागकर शरण लेनेवाले कम्यूनियोंको लौटानेकी माँग की। इसके बाद इन्टर्नेशनलके जेनरल-कॉर्सिलका समवेत फ्रैंच कम्यूनोंसे दूर गया। उसने उनके प्रतिनिधिके तौरपर कम्यूनमें भाग लेनेवाले इन्टर्नेशनलके पुराने मेम्बरों तथा कुछ नये अक्योंको भी ले लिया। लेकिन, यद्यपि इसका उद्देश्य था कम्यूनको सम्मानित करना, लेकिन इसके कारण आपसमें जो संघर्ष उठ खड़ा हुआ, उसके कारण इन्टर्नेशनलको बहुत नुकसान पहुँचा। नवम्बर १८७१ तक फ्रैंच शरणार्थियोंके इस तृतीय मैरीटे परेशान होकर मार्क्सको लिखना पड़ा। “उनके पक्षमें अपने करीब पाँच महीनोंको खर्च करने और अभिमानमें उनके सम्मानके लिये लड़नेका मुक्ते यह पारितोषिक मिल रहा है।”

एक तरफ फ्रैंच शरणार्थियोंकी यह दशा थी, दूसरी तरफ अँग्रेज कंमकरों भी इन्टर्नेशनलसे अपना हाथ ढाँच लिया। ब्रुकाफ्ट, ओडगेर जैसे जेनरल कॉर्सिलके प्रमुख मेम्बरोंने मार्क्सके फ्रांसमें गृह-युद्धवाले अभिमानणके कारण कॉर्सिलसे इस्तीफा दे दिया। अब अँग्रेज मनूर-समाजोंका लक्ष्य था पैंचवांदी समाजके आधारपर मजदूरोंकी हालतमें सुधार करना, जिसके लिये वह कोई डॉक्टरिन्कारी संवर्ध करनेके लिये तैयार नहीं थे। इंगलैंडका मनूर-वर्ग इन्टर्नेशनलकी सहायता तक तक हो चाहता था, जब तक कि उसके दबाव से सुधार-

बिल पास हो जाये। जब सुधार-बिल पास हो गया, तो मजूर-नेताओंने पार्लिया-मेन्टमें अपने लिये जगह बनानेके लिये उदार-दलियोंकी खुशामद करनी शुरू की। इंगलैंडके मजूर-वर्गके इन्टर्नेशनलसे अलग हो जानेपर मार्क्सने साफ तौरसे कह दिया था, कि इन्होंने उदार-मंत्रालयके हाथमें अपनेको बेच दिया। १८७०-७१ ई० में इंगलैंडकी मजूर-सभाओं और मजूर-वर्गके अधिकाशा भाग तथा उनके सभी नेताओंने जो रास्ता अखिलयार किया, तो “वही रफ्तार बेदगी जो पहले थी सो अब भी है।” मजूर-सभाओंके नेता १८७१ ई० में ही कहने लगे थे—जैसा कि उनमेंसे एकने रायल-कमीशनके सामने गवाही देते हुये कहा था—कि हड्डियाले कमकरों और उनके मालिकों दोनोंके पैसे और शक्तिकी केवल मूर्खतापूर्ण बरबादी है। इंगलैंडके जिन कमकर संगठनोंने अब भी इन्टर्नेशनलके साथ अपना सम्बन्ध बनाये रखता था, उन्होंने भी मॉर्ग की, कि हमारे लिये एक खास फेडरल कौसिल कायम की जाये। मार्क्सको अन्तमें इसे मानना पड़ा। पेरिस कम्यूनके परनके बाद नई क्रान्तिकी सम्भावना दूर हो गई थी, इसलिये मार्क्स अब जेनरल-कौसिलके प्रति उतनी लगन नहीं दिखला सकते थे। फेडरल कौसिलकी स्थापनाके बाद, जहाँ तक इंगलैंडका सम्बन्ध था, इन्टर्नेशनल का बाकी बचा असर भी खत्म होने लगा। उधर बकुनिन भी अपनी नेताशाही कायम करनेके लिये चाले चल रहा था।

अध्याय १८

इन्टर्नेशनलकी अवनति

१. अवसाद

१८६६ ई० में बाजेलकी कांग्रेसने पेरिसमें इन्टर्नेशनलकी दूसरी कांग्रेस जुलानेका निश्चय किया था, लेकिन वहाँकी राजनीतिक स्थिति ऐसी नहीं थी, कि पेरिसमें कांग्रेस की जाती, इसलिये जुलाई १८७० ई० में जेनरल-कौसिलने मरेन्स* में कांग्रेसका अधिवेशन करनेका निश्चय किया। प्रशिया और कांस्टंकी लडाईने मरेन्समें भी कांग्रेसको होने नहीं दिया। मिन्न-मिन्न देशोंकी सरकार जो दबाव डाल रही थीं, उससे मालूम हो रहा था, कि वहाँसे प्रतिनिधियोंका आना सम्भव नहीं होगा। इसपर जेनरल-कौसिलने यही निश्चय किया, कि १८६५ ई० की तरह लन्दनमें एक निजी कान्फ्रेंस की जाय और सार्वजनिक कांग्रेस जुलानेका खाल छोड़ दिया जाय। इस कान्फ्रेंसमें बहुत कम संख्यामें लोग (कुल २३) उपस्थित हुये थे। कान्फ्रेंस १५-२३ नितम्बर तक रही। इन प्रतिनिधियोंमें ६ वेलिंग्यम, २ स्वीजलैंड और १ स्पेनसे आये थे। इन्टर्नेशनलके ऊपर जो जबर्दस्त आक्रमण शानुओंकी ओरसे हो रहे थे, उससे कान्फ्रेंसको बचाना था।

लन्दन-कान्फ्रेंसने बाजेल-कांग्रेसके कार्यको जारी रखते हुये कुछ प्रस्ताव स्वीकृत किये, जिनका भतलव था स्वतन्त्र एसोसियेशनों और स्वावलम्बी शाखाओंका जेनरल-कौसिलके हाथमें पूर्णतया केन्द्रित एक संगठन रूप देना। जेनरल-कौसिलको यह भी अधिकार दिया गया, कि वह अगली कांग्रेसवर्ष उसकी जगहपर कान्फ्रेंस करनेके स्थान और समयका निश्चय स्वयं करे। स्वीजलैंड अब इन्टर्नेशनलका प्रधान अवलम्ब रह गया था, लेकिन वहाँ मी पैरोंके नीचेसे जमीन खिसकने लगी, जब “जर्मन-भाषी शास्त्र”——जेनेवामें

* Mayence

इन्टर्नेशनलकी सबसे पुराना और सबसे मजबूत संगठनमें फूटमें पकड़कर १८७१ ई० में “स्विस कम्कर पार्टीका” निर्माण हुआ। १८७२ ई० में मार्क्स और एंगेल्सने इन्टर्नेशनलको खतम ता समझकर उसके साथ सहयोग देना छोड़ दिया। १८७४ ई० में एंगेल्सने स्वीकार किया, कि इन्टर्नेशनलका समय अब खत्म हो गया है—एक नये इन्टर्नेशनलके—सभी देशोंकी सभी सर्वहारा पार्टियोंकी मैत्री—पुराने इन्टर्नेशनलके स्थानपर आनेके लिये मजदूर-वर्ग-आन्दोलनको ऐसी ही आम पराबद्धकी हुई आवश्यकता है, जैसी कि उसने १८४४-१८५४ ई० के बीचके समयमें खाई थी।

२. हेग-फांग्रेस (१८७२ ई०)

जेनरल-कौसिलके ४ मार्च (१८७२ ई०) वाले परिपत्रने सूचित किया, कि वार्षिक कांग्रेस सितम्बरके आरम्भमें होगी; किन्तु इसी बीचमें मार्क्स और एंगेल्सने तै किया कि जेनरल-कौसिलका आफिस न्यूयार्कमें हटा दिया जाय। कुछ लोगोंका कहना है, कि मार्क्स और एंगेल्सने इस तरह इन्टर्नेशनलकी अन्त्येष्ठि करके छुट्टी लेनी चाही, लेकिन यह बात गलत मालूम होती है, जब कि हम देखते हैं, कि आगे भी वह भरसक इन्टर्नेशनलका समर्थन करते उसे जीवित रखना चाहते थे। कुण्डलमानको २६ जुलाईके पत्रमें मार्क्सने जो लिखा था, उससे भी इसी बातकी पुष्टि होती है : “इन्टर्नेशनल कांग्रेस (हेगमें २ सितम्बरको शुरू होनेवाली) इन्टर्नेशनलके लिये जीवन और भरणका सबाल है। उससे अलग होनेसे पहले मैं कमसे कम ध्वसकारी शक्तियोंसे उसकी रक्षा करना चाहता हूँ। ” यह विनाशकारी शक्तियों लन्दनमें जेनरल-कौसिलके रहनेपर बहुत खतरनाक साचित हो रही थीं, इसीलिये मार्क्स और एंगेल्सने मुख्य-कार्यालयको न्यूयार्कमें ले जानेका प्रयत्न किया। इकेरियस और युग घरोंसे मार्क्सके बहुत विश्वासपात्र सहकारी रहते चले आये थे, लेकिन अब उनका भी सम्बन्ध विगड़ने लगा, और मई १८७२ में मार्क्स और इकेरियसका सम्बन्ध-विच्छेद हो गया, जब कि इकेरियसने इन्टर्नेशनलके जेनरल-सेक्रेटरीके साप्ताहिक वेतन पन्द्रह शिलिंगको दूना करनेकी इच्छा प्रकट की। इकेरियसने समझा था, कि

मेरे बिना काम नहीं चलेगा, इसलिये मजबूर होकर मेरी माँग माननी पड़ेगी। इक्केरियसकी जगह पर अंग्रेज जान हेल्सको जेनरल-सेक्रेटरी निर्वाचित किया गया। इसी समय युग्मका एटोल्ससे भन्सुदाब हो गया। हेल्स यद्यपि इन्हेशनलके खिलाफ इक्केरियसके प्रवत्तनोंको विफल करनेमें समर्थ हुआ क्योंकि उसे अंग्रेज मजबूर-वर्गका समर्थन प्राप्त था, लेकिन पीछे वह स्वयं खुलकर जेनरल-कौसिलका विरोध करने लगा, जिसपर अगस्तमें उसे अपने पदसे हटा दिया गया। जेनरल-कौसिलके फ्रेंच सदस्योंपर ब्लांकेकी विचारधाराका अधिक प्रभाव था। मानस्को डर लगने लगा था, कि कहीं ब्लांकीय जेनरल-कौसिलपर अधिकार न कर लें।

हेंग-कांग्रेस २-७ सितम्बर १९७२ को हुई, जिसमें ६१ प्रतिनिधि शामिल हुये थे, और अब भी बहुमत मार्कर्टके पक्षमें था। इन प्रतिनिधियोंमें जर्मन D थे: बन्हार्ड वेकार (ब्रन्चिंग) क्रोनोफ (स्टुद्यार्ट) डीट्जेन (डेसेन), क्रोलमान (केल) मिलकेन (व्हिलिन) रीटिंगहाउजेन (मुनखेन), शोफ (बुटेर्सर्ग) और शुसाखेर (सोलिगेन)। इतालियन बुकुनिनवादियोंने अपने प्रतिनिधि कांग्रेसमें नहीं भेजे। उन्होंने रिमिनीमें ब्रागस्तर्में आपनी कार्फेस कर, जेनरल-कौंसिलसे सम्बन्ध-विच्छेद करनेका निश्चय किया। स्पेनके ५ प्रतिनिधियोंमें लाफार्को छोड़कर बाकी बुकुनिनके अनुयायी थे। इस प्रकार ब्लॉकें बुकुनिन और मार्कर्टके समर्थकोंका गहाँ जो सम्मिलन हुआ, उसमें आरम्भ हीमें भड़े वाद-विवाद उठ रखे हुये, जब कि प्रतिनिधियोंके प्रमाणपत्र (मेंटेट) के बारेमें पूछताछ शुरू हुई। लाफार्को प्रतिनिधि न रखनेके लिये बड़ी जबरदस्त कीशिश की गई। चौथे दिन कांग्रेसकी वास्तविक कार्रवाई शुरू हुई, जिसमें जेनरल-कौंसिलकी रिपोर्ट पढ़ी गई। रिपोर्टको मार्कर्टने स्वयं तैयार किया था और उन्होंने उसे जर्मनमें पढ़ा। उरके अंग्रेजी अनुवादको सेक्सटनने क्रैंचको लायेंग और डचको (फ्लैमिश) को अंग्रेजीलाने पढ़ा। इन्वेंशनलके विरुद्ध जो जुलम किये गये, पैरिस कम्यनको जिस तरह खनी द्वायेसे दबाया गया,

* Cuno † Milke ‡ Schen § Rimini. ¶ Languet.

चर्मनीमें जिस तरह देशद्रोहके मुकद्दमे चलाकर कमकरोंको दबानेकी कोशिश की गई, इन सबकी रिपोर्टमें अच्छी खबर ली गई। इसके बाद रिपोर्टने संचेपमें हालैंड, डेन्मार्क, पोर्तुगाल, आयलैंड, स्काटलैंडमें के भीतर प्रवेश करने और न्यूयार्क, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और बूनोआयरसमें अपने कामकी प्रगतिको बताया। रिपोर्टको काग्रेसने बड़ी प्रसन्नताके साथ स्वीकार किया, और मुकिके लिये सर्वद्वारा-संघर्षमें जो शहीद या उत्तीकृत हुये, उनके प्रति सम्मान और सहानुभूति प्रकट की। आगे मार्क्सने एक लग्भे भाषणमें जेनरल-कौंसिलके पहिलेके अधिकारोंको कम करनेकी जगह उसे बढ़ानेकी माँग करते कहा, कि जेनरल-कौंसिलको केवल लेटर-बक्स बना देनेकी जगह उसे बिलकुल उठा देना बेहतर होगा। मार्क्सके विचारको ६ के विशद् ३६ बोटोंसे स्वीकार किया गया, १५. ने किसी और बोट नहीं दिया। इसके बाद एंगेल्सने प्रस्ताव रखा, कि जेनरल-कौंसिलका केन्द्र कमसे कम एक सालके लिये लन्दनसे न्यूयार्कमें बदल दिया जाय। प्रस्ताव एकाएक रखा गया था, जिसपर कितने ही प्रतिनिधियोंको आश्चर्य हुआ, किन्तु अन्तमें जेनरल-कौंसिलके स्थान-परिवर्तन २३ के विशद् २६ बोटोंसे स्वीकार किया गया और ६ तटस्थ रहे। जब न्यूयार्कमें स्थान-परिवर्तन करनेका प्रस्ताव आया, तो पक्षमें ३० ने बोट दिये। काग्रेसके अन्तिम और छठवें दिन तक चलनेवाली बहसमें भाग लेने रॉवियेर* वेलॉ† और दूसरे ब्लॉकानुयायी जेनरल-कौंसिलके न्यूयार्कमें स्थानान्तरिक करनेके निश्चयके बाद कॉग्रेसको छोड़ गये और उन्होंने एक पुस्तिका प्रकाशित करके घोषित किया, कि “इन्टर्नेशनल खत्म हो गई, वह क्रातिके मारे अतलातिक महासागर पार भाग गई।”

बकुनिनका व्यवहार भी बहुत बुरा रहा, इसलिये काग्रेसके अन्तिम दिन उसके ऊपर विचार किया गया, और अन्तमें ७ के विशद् २७ बोटोंसे बकुनिन-को इन्टर्नेशनलसे निकाल देनेका प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, ६ तटस्थ रहे।

* Rauvier † Vaillant

३. इन्टर्नेशनल का अंग

मार्क्स और एगेलसने इन्टर्नेशनलको जीवित रखनेकी यद्यपि बहुत कोशिश की, किन्तु हेग-कांग्रेसके साथ प्रथम इन्टर्नेशनलका इतिहास खत्म हो गया। अमेरिकामें इन्टर्नेशनलको मजबूती के साथ पैर जमानेका मौका नहीं मिला, क्योंकि वहाँ भी आपनी विवाद उठ लड़े हुये। जेनरल-कौसिलका सबसे बड़ा आधार सोर्गे था, जिसे अमेरिकन स्थितिका पूरा पता था, इसीलिये उसने न्यूयार्कमें स्थान-परिवर्तनका पहले विरोध किया था। पीछे वही जेनरल-सफ्रेडरी चुना गया और उसने उसके लिये काम करनेका पूरा प्रयत्न भी किया। लावक्सेल भी स्थानपरिवर्तनके विरुद्ध था। उसने इसे हमेशा गलत कहा, लेकिन उस समय वह वेवेलके साथ हूबेरदुसर्बुर्ग* में बढ़ी था।

जेनरल-कौसिल न्यूयार्कमें चले जानेका प्रभाव इंगलैंडमें भी बुरा पड़ा। द सितम्बरको हेल्सने ब्रिटिश फेडरल कौसिलमें मार्क्सके विरुद्ध निन्दाका प्रत्यावरण कह करके रखा, कि उन्होंने इंगलिश मज्जू-वर्ग नेताओंके ऊपर बुरे आलेप किये हैं। निन्दाका प्रत्यावरण स्वीकृत हुआ, लेकिन इस संशोधनको स्वीकार नहीं किया गया, कि मार्क्सने खुदगार्जीके लिये ऐसा किया था। हेल्सने मार्क्सको इन्टर्नेशनलसे खारिज करनेका भी प्रत्यावरण किया था। एक दूसरे मेम्बरने हॉग-कांग्रेसके निश्चयोंको रद करनेका प्रत्यावरण रखा। हेल्स अब इकेरियस और युंगका जवर्दस्त सहकारी बन गया था। युंग तो कुछ समय बाद मार्क्स और एगेलसके विरोधियोंने नई इन्टर्नेशनल-कांग्रेस बुलानेकी आसफल कोशिश की, लेकिन ब्रिटिश फेडरल कौसिलमें भी आपसमें बहुत मतभेद हो गया था।

न्यूयार्ककी जेनरल-कौसिलने इन्टर्नेशनलकी छठी कांग्रेस द सितम्बरको जेनेवामें बुलाई, जो कि इन्टर्नेशनलके लिये मृत्युका प्रमाणपत्र साक्षित हुई। अकुनिनने इससे पहले १ सितम्बरको आपनी विरोधी कांग्रेसका अधिवेशन किया था, जिसमें हेल्स और इकेरियस इंगलैंडके प्रतिनिधि बनकर गये थे। उनके

* Hubertusburg.

अतिरिक्त वेल्जियम, प्राप्त और स्पेनके ४-५, हतालीके ४, हालैंडका १ और ६ जूरा-पार्टीके प्रतिनिधि सम्मिलित हुये थे। मार्कर्टीय कांग्रेसमें अधिकतर स्विस प्रतिनिधि थे, जिसमेंसे अधिकाश जेनेवा निवासी थे। बेनरल-कौसिल स्वयं अपना कोई प्रतिनिधि नहीं मेज सकी। इंगलिश, फ्रेच, स्पेनिश वेल्जियम और इतालियन कमकरोके कोई प्रतिनिधि नहीं थे और जर्मनी तथा आस्ट्रियाके केवल एक-एक प्रतिनिधि थे। मार्क्सने साफ तौरसे स्वीकार किया, कि कांग्रेस केवल तमाशा रही। मार्क्स और बकुनिनके रास्तोंका अब सीधा सघर्ष था। बकुनिनका प्रभाव अब भी रूसके कमकर-आन्दोलनमें वैसा ही बना रहा, जबकि मार्क्सका आरम्भ होते प्रभावको धक्का लगा। बकुनिन और बकुनिनवादियोंके विरुद्ध एंगेल्स और लाफार्गने “समाजवादी जनतात्रिकता मैत्री तथा अन्तर्राष्ट्रीय कमकर एसोसियेशन” नामसे एक पुस्तिका लिखी, जिसके सम्मादन तथा एक-दो अन्तिम पृष्ठोंके जोड़ने भरका काम मार्क्सने किया था। इस पुस्तिकाके कारण यद्यपि बकुनिनको हमेशाके लिये मैदान छोड़नेके लिये मजबूर होना पड़ा, लेकिन उसके अनुयायियोंपर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। बकुनिनने मैदान छोड़ते समय लिखा था : “तरशोंको आगे बढ़ना चाहिये। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, सभी जगह विजयी प्रतिक्रियावादके विरुद्ध। पर्यट लुटकाना जारी रखनेके लिये मेरे पास न ताकत है, और न शायद आवश्यक विश्वास। इसलिये मैं संघर्षसे हट रहा हूँ और मैं अपने योग्य समसामयिकोंसे केवल एक-एक बात माँगता हूँ : विस्मरण। अबसे मैं किसीको परेशान नहीं करूँगा, और न कोई मुझे परेशान करे।” जूराके कमकरोंको सम्बोधित करके लिखे विदाईके पत्रमें उसने मार्क्सपर तीव्र आक्षेप करते हुये कहा था, कि मार्क्सका समाजवाद विस्मार्ककी कूटनीतिसे कम प्रतिक्रियावादका केन्द्र नहीं है, इसलिये उसके विरुद्ध कमकरोंको भयकर संघर्ष जारी रखना होगा। शायद बकुनिनके अनुयायी अब भी पूँजीवादकी साथामे पलते अपने शुरुकी परम्पराको कायम रखना चाहते हैं, लेकिन इतिहासका फैसला विल्कुल दूसरा ही है। प्रतिक्रियावाद मार्क्सके समाजवादके पास नहीं फटक सकता, हाँ, वह मार्क्सवाद के विरोधियोंको अपने लपेटमें लिये त्रिना नहीं रह सकता। बकुनिन १ जुलाई

१८७६ को वेर्न (स्वीजलैंड) में मरा । आदमीके पतनकी प्रक्रिया जितनी चेत्कीके लिये कही जा सकती है, उतनी बङुनिनकी नहीं, किन्तु जारके सामने छुटना टेककर प्रायश्चित करनेवाले इस भूतपूर्व क्रान्तिकारीको सिरपर उठानेवाले लोगोंकी संख्या तब तक कुछ बनी ही रहेगी, जब तक कि पूँजीवादकी काली छाया भूमण्डलके किसी भी कोनेपर मौजूद है ।

अध्याय १६

जीवन-संघर्ष

१. बीमारी

१८५३ ई० में कम्युनिस्ट लीगको समाप्तिके बाद मार्क्सने अपनेको लेखन और अध्ययनमें लगा दिया था, जोकि सर्वहाराके लिये भारी महत्वका काम था। इन्टर्नेशनलके भी मरणासच होनेके बाद १८७८ ई० से अब फिर उन्होने उधरसे अपना हाथ सदाके लिये खींच लिया। पेरिस-कम्यून मार्क्सके लिये बहुत आशा लेकर आई थी, लेकिन उसके पतनका प्रभाव मार्क्सके ऊपर बहुत चुप पड़ा। १८७३ ई० के शरदीयों ही उनको बीमारीने घेरना शुरू किया और जाजबक लकवा मारनेका सख्त खतरा भी पैदा हो गया था। दिमागी अवस्था ऐसी उनके मनमें लिखनेकी बिल्कुल इच्छा नहीं रह गई थी। एगोल्स्के मित्र डा० गम्पर्ट[#] ने मैन्वेस्टरमें कई सप्ताह मार्क्सकी चिकित्सा की, जिससे स्वास्थ्यमें कुछ सुधार हुआ। डा० गम्पर्टकी सलाहसे वह स्वास्थ्य सुधारनेके लिये कार्लस्ट्राड (जर्मनी) में १८७४, १८७५ और १८७६ ई० के तीन वर्षों तक जाते रहे। इसके बारेमें मार्क्सकी सबसे छोटी लड़की एलिनोर (दूसी) ने लीबक्सेस्टके पास मैंचे अपने पत्रमें लिखा था :...कार्लस्ट्राड हम पहली बार १८७४ ई० में गये। उचिद्रिता और पेटकी शिकायतके कारण मूर (मार्क्स) को वहाँ मेजा गया था। वहाँके पहले निवाससे उनको काफी फायदा हुआ था, इसलिये अगले साल १८५७ ई० में वह अकेले वहाँ गये। फिर अगले साल १८७६ ई० में मै उनके साथ थीं, क्योंकि पिछले साल मेरे न रहनेका अभाव उन्हें खटकता था। कार्लस्ट्राडमें बहुत सबग रहकर उन्होने अपनी चिकित्सा की और डाक्टरने जो कुछ बतलाया, उसीके अनुसार सब काम किया। वहाँ हमने बहुतसे मित्र बनाये। सहयात्रीके तौरपर मूर वहे ही आनन्दी पुरुष

थे, हमेशा प्रसन्न मन रहते, और चाहे कोई सुन्दर दृश्य हो या वियरका एक ग्लास, हरेक चीज़में आनन्द लेनेके लिये तैयार थे। अपने विस्तृत इतिहास-शानसे रास्तेमें आनेवाले हरेक स्थानको अधिक सजीव और सप्त करके वह हमारे सामने रखते थे।...१८७४-७५ ई० में लाइप्जिङमें हमने एक दूसरों अन्तिम बार देखा। वहाँसे लौटते समय हम बिगेनका चक्कर काटने गये, जिसे मूर मुझे दिखलाना चाहते थे, क्योंकि वहाँ ही उन्होंने मेरी माँके साथ अपनी मधुमास बिताया था। इसके अतिरिक्त इन दोनों यात्राओंमें हम ड्रेसडेन, बर्लिन, प्राग, हाम्बुर्ग, नूरेनबेर्गमें भी गये थे।¹³

१८७७ ई० में मार्क्स स्वास्थ्यके ख्यालसे बाड नोयेनार्ह* गये। कार्ल स्वाड वह नहीं जा सके, क्योंकि जर्मनी और आस्ट्रिया दोनोंकी सरकारें उनके विरुद्ध आशा निकालनेवाली थीं। पेटकी तकलीफ अब भी मौजूद थी और यकाचट हद दर्जेकी थी, जिसके कारण सिरदर्द और उकिदाताकी तकलीफ बराबर बनी रही। यदि मार्क्स अपनेको पूर्ण विश्वास देनेके लिये तैयार होते, तो शायद स्वास्थ्यमें कुछ सुधार होता। लेकिन उनका दिमाग जीवित रहते कैसे नियंत्रिय रह सकता था। ऐगेल्सने कहा था : “जिस आदमीने हरेक चीजका उसके ऐतिहासिक आरम्भ और विकासकी स्थितियोंके पता लगाने के लिये परीक्षण किया, निश्चय ही उसके लिये प्रत्येक नया उठनेवाला प्रश्न नये प्रश्नोंकी माला खड़ा कर देता था। तृतीय चिल्ड (कवियाल) के बारेमें पहलेसे अधिक पूर्णताके साथ विवेचन करनेके लिये मार्क्सने प्राचीन इतिहास, कृषिशास्त्र, रसी और अमेरिकन जर्मांदारी-सभ्बन्ध, भूगर्भशास्त्र आदिका विशेष तौरसे अध्ययन किया। सभी जर्मन-वृशीय और नई-लातिनवंशीय भाषाओंको सुनामताके साथ वह पढ़ते थे। फिर उन्होंने पुरानी ख्लाव, ख्ली और सविन भाषाओंको सीखा।” यह उनके दिनके कामका सिर्फ़ आधा साग़ था। यद्यपि सक्रिय राजनीतिसे वह हट गये थे, लेकिन अब भी यूरोप और अमेरिकाके मजदूर-आन्दोलनोंमें उनकी उसी तरह दिलचस्ती थी और भिन्न-भिन्न

देशोंके प्रायः सभी मजदूर-नेताओंके साथ उनका पत्रव्यवहार था । लड़के सर्वहारा बराबर उनसे सलाह लेते और मार्क्स उन्हें निराश नहीं करते थे ।

२. मित्रों की दृष्टिमें मार्क्स

१. लाफार्गकी दृष्टिमें

पावल लाफार्गका जिक्र हम पहले कर चुके हैं । वह १५ जनवरी १८४२ को कूबामें पैदा हुआ था । बचपनमें ही मॉ-बाप उसे पेरिस ले आये, जहाँ उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई । तब (१८५१ ई०) से थोड़े समयके निर्वासनके अतिरिक्त वह पैरिसमें ही रहा, जहाँ १८११ ई० में उसकी मृत्यु हुई । मार्क्सकी लड़की लौरासे इसका न्याह हुआ था, यह हम बतला आये है । लाफार्ग पैरिस युनिवर्सिटीके मेडिकल कालेजका विद्यार्थी था, लेकिन राजनीतिमें भाग लेनेपर उसे युनिवर्सिटीसे निकाल दिया गया । अपनी डाक्टरीकी शिक्षा समाप्त करनेके बाद वह पैरिस लौटा और वहाँके समाजवादी आन्दोलनके प्रमुख नेताओंमें हो १८७१ ई० में पैरिस कम्यूनमें भी उसने भाग लिया । कम्यूनके समाप्त कर देनेपर वह स्पेन भाग गया, और वहाँ कितने ही समय तक मार्क्सवादके प्रचारस्वर्ग लगा रहा । १८८२ ई० में वह फिर फ्रास लौटा और जूल ग्विदे (१८४४-१८२१ ई०) के साथ उसने फ्रासमें समाजवादका सैद्धान्तिक नेतृत्व किया और राजनीति, अर्थशास्त्र और दर्शनपर उसने कितनी ही स्वतंत्र पुस्तकें और पुस्तिकाएँ लिखीं । ऐतिहासिक भौतिकवादपर उसका विशेष अधिकार था । मार्क्स और एंगेल्सकी कई पुस्तकोंके उसने फ्रेचमें अनुवाद किये । लेनिन-की नजरोंमें लाफार्ग “मार्क्सवादके विचारोंके प्रचार करनेवालोंमें एक बहुत ही साधन-सम्पन्न और अत्यन्त प्रतिभाशाली” पुरुष था ।

लाफार्गने अपने समुद्रका संस्मरण लिखा है, जो मार्क्सके व्यक्तित्वपर बहुत अच्छा प्रकाश ढालता है । उसके कुछ अश निम्न प्रकार हैं :

“पहली बार मैने फरवरी १८६५ में कार्ल मार्क्सको देखा । २८ सितम्बर १८६४ को सेन्ट मार्टिनहालमें इन्नेशनलकी स्थापना हुई । मैं पेरिससे इस अभिनव संगठनके कार्यकी प्रगतिकी खबर लेकर आया था । मेंशिये तोलें...ने मुझे एक परिचयपत्र दिया था ।”

“मैं उस वक्त २४ वर्ष का था। पहली मुलाकात के समय जो उनका प्रभाव मेरे ऊपर पड़ा, उसे मैं जीवन भर नहीं मुला सकता। उस समय मार्क्स का स्वास्थ खराब था, और वह “कपिटल” की प्रथम जिल्द के लिये कड़ी मेहनत कर रहे थे (जो दो साल बाद १८६७ ई० में प्रकाशित हुआ)। उन्हें इसकी चड़ी चिन्ता थी, कि शायद वह उसे समाप्त न कर सके। वह तरश्य-जनका बहुत स्वागत करते थे। कहा करते थे—‘मुझे आदमियोंको सिखालाकर तैयार करना है, जिससे मेरे चले जानेपर वह कम्युनिज्म प्रचारको जारी रख सकें।’”

“कार्ल मार्क्स उन दुर्लभ आदमियोंमेंसे थे, जोकि विज्ञान और सार्वजनिक जीवन दोनोंमें प्रथम पंक्तिके बोग्य होते हैं। इतनी धनिष्ठताके साथ हन दोनों जीवनसे उनका सम्बन्ध था, कि हम उन्हें समझ नहीं सकते, यदि एक ही साथ उन्हें साइंसके आदमी और समाजवादी योद्धा दोनों नहीं समझ सकते।... (उनका कहना था) : ‘साइंट (विज्ञान) स्वार्थी आनन्दके लिये नहीं होता चाहिये। जो इतने सौभाग्यशाली हैं कि अपना समय साइंसके अनुसरण और अनुरंधानमें लगा सकते हैं, उन्हें सबसे पहले अपने ज्ञानको मानवताकी देवामें लगाना चाहिये।’ उनका बहुत प्रिय वचन या ‘दुनियाके लिये काम करो।...’

“मार्क्सने अपने कार्बोक्सको अपनी जन्मभूमि ही तक सीमित नहीं रखा। वह कहा करते थे ‘मैं दुनियाका नागरिक हूँ। जहाँ भी हूँ मैं वहीं काम करता हूँ।...’”

“पहली बार जब मैंने उन्हें मेटलेन पार्क रोडमें उनके अध्ययन-कक्षमें देखा, उस समय वह सुके एक अद्वितीय और अनथक समाजवादी आनंदोलक के तौरपर नहीं, बल्कि विद्वान्में रूपमें मालूम हुये। सभ्य दुनियाके सभी भागों से पार्टीके साथी उनके अध्ययन-कक्षमें समाजवादी विचारधाराके आचार्यसे राय लेने आते थे। वह कमरा अब ऐतिहासिक बन गया है। जो कोई मार्क्सके बौद्धिक जीवनके अन्तरंग पहलूको समझना चाहता है, उसे इस कमरे से परिचित होना चाहिये। वह पहली मंजिलपर था। बर्गचेकी और खुलनेवाले एक चौड़ी बंगलेसे उसमें काफी प्रकाश आता था। आग जलानेके स्थानकी दोनों तरफ, और जंगलेके सामने भी कितावदानोंसे कमरा भरा हुआ था। कितावदानोंके

ऊपर अखबारों और हस्तलेखोंके पैकेट छत तक गेजे हुये थे। जंगलोंकी एक तरफ दो मेजे थीं, जिनपर भी उसी तरह फुटकर पत्र, अखबार और किताबें मरी हुई थीं। कमरेके बीचमें सबसे अधिक प्रकाश रहता था, वहीं पर ३ फुट लम्बी, २ फुट चौड़ी सीधी-सादी लिखने की मेज और एक लकड़ीकी आरामकुर्सी थी। एक किताबदान और इस कुर्सीके बीचमें ज़ंगलोंकी ओर मुँह किये चमड़ेसे ढँका एक सोफा था, जिसपर विश्राम करनेके लिये समय-समय मार्कर्ट लेट जाया करते थे। आगदानके ऊपरबाले छुञ्जे पर और भी किताबें थीं, जिनके बीच-बीचमें सिगार, दियासलाईके बक्स, तम्बाकूका डब्बा, पेपरवेट, अपनी लङ्कियों, बीबी, फ्रेडरिक एंगेल्स और विलहेल्म बोल्फके फोटो थे।

मार्कर्ट बहुत ज्यादा तम्बाकू पीते थे। उन्होंने मुझसे कहा था : ‘कपिटल उतना भी पैसा नहीं ले आयेगा, जितनेकी कि इसके लिखते समय मैंने सिगार पी डाले।’ दियासलाईयोंके इस्तेमालमें तो वह बहुत ही फजूलखर्च थे। वह अपने पाइप या सिगारों जलाते वक्त अक्सर भूल जाते। जल जानेके बाद भी वह एकके बाद एक दियासलाईयों जलाकर उसे सुलगाते हुये थोड़े ही समयमें एक पूरी दियासलाईकी डिबिया खत्म कर देते।

“वह अपनी किताबों और कागजोंको ठीकठाक करके रखनेके लिये किसी-को कभी इजाजत नहीं देते थे—वस्तुतः वह ठीकठाक करना नहीं, बल्कि गड़-बड़ी पैदा करना था। किताबें जो देखनेमें अस्त-च्यस्त रखती मालूम होती थीं, वह सिर्फ बाहरी तौरसे ही, नहीं तो हरेक चीज अपने ठीक स्थानपर थी, और बिना ढूँढनेका प्रयत्न किये वह जिस किताब या हस्तलेखको चाहते, उसे हाथसे उठा लेते थे। बातचीत करते समय भी वह अक्सर स्वयं किताबमेंसे तत्सम्बन्धित वाक्य या तसवीर दिखानेके लिये रुक़ जाते। अपने अध्ययन-कक्षसे वह एक हो गये थे, वहाँ किताबें और कागज-पत्र उसी तरह उनकी आज़का अनु-सरण करते थे, जैसे उनके शरीरांग।

“वह अपनी किताबोंको ठीकसे रखनेमें बाहरी एकरूपताका विल्कुल ध्यान नहीं करते थे, एक ही पाँतीमें पास-पास क्वार्टों (चारपेजी), अटपेजी जिल्डें तथा छोटी-छोटी पुस्तिकार्यें रखती रहतीं। वह अपनी पुस्तकोंको आकारके अनु-

सार नहीं, बल्कि विषयके अनुसार लगते थे। उनके लिये किताबें शौकीनीकी चीज़ नहीं, बल्कि बौद्धिक हथियार थीं। वह कहा करते थे ‘ये मेरी दारियाँ हैं, इन्हें मेरी इच्छानुसार सेवा करना होगा।’ वह पुस्तकोंके रूप, जिल्ड, कागज या छपाईकी सुन्दरताका जरा भी ख्याल न रखते थे—वह पन्नोंके कोने मोड़ देते, बास्टोंके नीचे पेन्सिल लींच देते और हाशिये को पेन्सिलके निशानों से ढाँक देते। वह अपनी पुस्तकोंपर नोट नहीं लिखा करते थे, किन्तु प्रश्न-चिह्न या आरचर्चर्चिह्न किये किना नहीं रहते थे।...पेन्सिलके निशान करने-का उनका तरीका ऐसा था, कि उससे वह बड़ी आसानीसे अपेक्षित वाक्यको ढूँढ़ निकालते थे। कुछ वर्षोंके अन्तरसे अपनी नोटबुकों और किताबोंमें चिह्न किये वाक्योंको अपनी स्मृति ताजा करनेके लिये फिरसे पढ़नेकी उनकी आदत थी—उनकी स्मृति असाधारण तीव्र और निर्णीत थी। बहुत बचपनसे ही अपरिचित भाषके पद्धोंको कंठस्थ करनेकी हेगलकी हिदायतके अनुसार उन्होंने अपनी स्मृतिको अभ्यस्त किया था। हाइने और गोयथे उन्हें कंठस्थ थे और वातचीतमें अक्सर उनका उद्धरण देते थे। कवियोंकी कृतियोंको वह लगातार पढ़ा करते। सभी यूरोपीय भाषाओंके कवियोंकी कृतियोंको चुनकर वह लगातार पढ़ा करते थे।...

“...अपनेको विश्वाम देते वह कमरेके एक छोरसे दूसरे छोर तक टहला करते, जिसके कारण लंगला और दरवाजेके बीचके कालीनका तार-तार हो एक पगाढ़ी बन गई थी, जो उसी तरह बिल्कुल स्पष्ट थी जैसे किसी घासके मैदानकी पगाढ़ी। कभी-कभी वह सोफापर लेटकर उपन्यास पढ़ते। वह अक्सर दो दीन उपन्यास एक साथ शुरू किये रहते और उन्हें बारी-बारीसे पढ़ते—डारविन की तरह वह उपन्यास पढ़नेके बड़े प्रेमी थे। १८ वीं शताब्दीके उपन्यासोंको वह ज्यादा पसन्द करते थे, और फ़ारिंगड़गकी “टॉम जॉन्ज” विशेष तौरसे उन्हें प्रिय था। आधुनिक उपन्यासकारोंमें उन्हें सबसे अधिक पसन्द थे पाले दे काक चार्ल्स लीवर, ज्येष्ठ दूमा और सर वाल्टर स्काट—स्काटकी ‘ओल्ड मॉर्टलिटी’*

* Old Mortality.

को वह मास्टरपीस समझते थे। साहसयात्राओं और व्यंगात्मक कहानियोंको पढ़नेकी उन्हें विशेष रुचि थी। सेर्वाते और बालजक को वह उपन्यासके महान् आचार्य मानते थे...बालजकके साथ उनका इतना गहरा सम्मानका भाव था कि वह “लाकमदी ऊमेन”* की समालोचना लिखना चाहते थे।...

“मार्क्स युरोपकी सभी प्रमुख भाषाये पढ़ सकते थे, और उनमें से तीन— जर्मन, फ्रेंच और हंगलिशमें इतने सुंदर ढगसे लिख सकते थे, कि जिसे देख उन भाषाओंसे परिचितोंके दिलमें सम्मान पैदा होता। वह कहा करते थे : ‘जीवन-संघर्षमें विदेशी भाषा हथियारका काम देती है।’ उन्हें भाषाओंके सीखने की बड़ी प्रतिभा थी, जिसे उनकी लड़कियोंने भी दायमागमें पाया था। पचास वर्षके हो चुके थे, जब कि उन्होंने रसी सीखना शुरू किया।...छ महीनेके भीतर उन्होंने इतनी प्रगति कर ली, कि रसी कवियों और लेखकों खास करके पुश्किन, गोगल और श्वेदरिनकी कृतियोंको मूल भाषामें पढ़कर आनन्द ले सकते थे।...

मानसिक विश्वासके लिये कविता और उपन्यास पढ़नेके अतिरिक्त मार्क्सका गणितके लिये अत्यधिक प्रेम था। अलजब्रा उन्हें हार्दिक सतोष देता था... अपनी पत्नीकी अनितम बीमारीके दिनोंमें अपने वैज्ञानिक कार्योंको वह यथापूर्वी... नहीं कर सकते थे। पत्नीके दुस्सह कष्टोंके विचारसे अपनेको बचानेके लिये वह गणितमें छूट जाते थे। आतंरिक दुस्सह पीड़के इस कालमें उन्होंने “आनन्तलव कलन”† पर एक निबन्ध लिख डाला था, जो कि जानकार गणितज्ञोंके मतानुसार प्रथम श्रेणी के महत्वका है।...

मार्क्सके पुस्तकालयमें एक हजारसे अधिक जिल्दे थीं, जिन्हें अपने अनुसंधानके जीवनमें उन्होंने बड़ी मेहनतसे जमा किया था और जो उनकी आवश्यकताओंके लिये अपर्याप्त थीं। अनेक वर्षों तक वह लगतार ब्रिटिश म्युजियमके बाच्चनालयमें जाया करते थे।

“यद्यपि वह सदा वहुत देरसे सोने जाते थे, लेकिन सबेरे D और E के

* La Comedie humaine. † Infinitesimal calculus.

बीच सदा उठ खड़े होते। काली काफीका एक प्याला पीकर वह दैनिक पढ़ते, फिर अपने अध्ययन-कक्षमें चले जाते, जहाँ वह रातके दो-तीन बजे तक काम करते—बीचमें सिर्फ खानेके समय उठते और (जब मौसिम अच्छा होता) तो हेमस्टेडहीथमें ठहलने जाते। दिनमें सोफापर एक या दो घंटे सो जाते। जवानी में सारी रात पढ़ने-लिखनेमें बिता देनेकी उन्हें आदत थी। मार्क्सके लिये काम एक बीमारी थी और वह उसमें इतने लीन हो जाते कि अपना भोजन भी भूल जाते थे। अक्सर उन्हें बार-बार बुलाया जाता, तब वह नीचे उतरकर भोजन-शालामें आते और मुश्किलसे अन्तिम कौर खतम करते ही वह फिर अपनी भेजकी ओर लौट पड़ते। वह अल्पभोजी थे और भूख उन्हें कम लगती थी, जिसको उत्तेजित करनेके लिये वह बहुत मसालेदार अधिक तली चीजों—हैम, भूनी मछुली, मुरब्बा और अचार खाया करते थे। दिमागकी जबर्दस्त मेहनत के लिये उनके भेटको दशड भोगना पड़ता। सचमुच इसके लिये ही उनका सारा शरीर बलिदान हुआ। चिंतन उनके परम आनन्दकी बस्तु थी। शारीरिक व्यायाममें केवल चहलकदमी वह करते थे। वह धंदे टहल सकते थे और दात करते तथा पाइप-सिगार पीते जरा भी थकावटका परिचय दिये पहाड़ोंपर भी चढ़ जाते थे। कहा जा सकता है, अपने अध्ययन-कक्षमें ठहलते समय भी वह अपना काम करते थे। ठहलनेके समय जो विचार उनके दिमागमें आता, उसे कागजपर उतारनेके लिये थोड़ी देर वह अपनो मेजपर बैठ जाते थे।...

“मार्क्सके हृदयको जानने और उनके प्रेमको... अच्छी तरह देखनेके लिए उन्हें अपने परिवारके बीचमें, इतवारकी शामको अपनी मित्रमंडलीके बीच देखना चाहिये था। ऐसे समय वह बड़े ही आनन्दी साथी, हाजिर-जवाही, अनुत्तमजाकी दिखाई पड़ते—उनका ठहाका हृदयके अन्तस्तमसे आता था।...

“वह बच्चोंके लिये भद्र, कोमल और दूसरोंके भावोंका सम्पान करनेवाले पिता थे। वह अक्सर कहा करते थे : ‘बच्चोंको अपने माता-पिताको शिक्षित करना चाहिये।’ उनकी वेदियाँ उन्हें बहुत प्यार करती थीं, और वाप और उनके बीचके समन्वयमें कहीं पैतृक-शासनका चिन्ह भी नहीं मिलता था।... उनकी लड़कियाँ उन्हें मित्र जैसा समझतीं और साथ खेलके साथ जैसा बराब

करतीं। वह उन्हें बापू नहीं, बल्कि 'मूर' कहकर सम्मोचित करतीं। अपेक्षाकृत अधिक श्यामल रंग और आबनूस जैसे काले बालों तथा दाढ़ियोंके कारण उन्हें यह नाम मिला था। १८४४ ई० में भी, जब कि ३० वर्षके भी नहीं हुये थे, कम्युनिस्ट लीगके उनके साथी मेम्बर उन्हें 'बापू मार्क्स' कहा करते थे। वह अपने बच्चोंके साथ धंटों खेला करते थे।"

२. लीबकनेल्ट की नजरोंमें

लीबकनेल्ट २६ मार्च १८२६ नें (मार्क्ससे सात साल पीछे) पैदा हुआ था। उसने अध्यापक बननेकी तैयारी की थी, लेकिन तस्खाईमें ही क्रान्तिने अपनी ओर लींच लिया। २२-२३ सालकी उमरमें १८४८-४९ ई० की जर्मन-क्रान्तिमें उसने भाग लिया, जिसके असफल होनेपर उसे भागकर लन्दन चला जाना पड़ा, जहाँ वह मार्क्सके प्रभावमें आया। १८६२ ई० में वह जर्मनीमें लौटकर मजदूर-आन्दोलनमें जुट पड़ा। जर्मन-मजदूरोंके दूसरे प्रमुख नेता आगस्ट बेबल (१८४०-१८१३ ई०) के साथ मिलकर लीबकनेल्ट १८६८ ई० में सामाजिक-जनतात्रिक पार्टी कायम की और पार्टीके पत्र "फोक्स्टाट" (जन-राज्य) और पीछे "फोरवैट्स" (अग्रगामी) का सम्पादन किया। दूसरे पत्र का सम्पादन करते हुये ७ अगस्त १८६० को उसकी मृत्यु हुई। फ्रास-प्रशिया-युद्ध के समय वह राइखस्टाग (पार्लियामेन्ट) का समाजवादी सदस्य था। अल्सेस-लोरानके हृष्पपेनके खिलाफ तथा युद्धके खर्चके विरुद्ध बोट देनेके कारण बिस्मार्कने उसे जेलमें डाल दिया। वह जन्मजात जननेता, प्रतिमाशाली वक्ता और कमकरोंके लिये लेखों और पुस्तिकाओंके लिखनेमें दक्ष लेखक था। लीबकनेल्टने १८६६ ई० में कार्ल मार्क्सकी जीवनी प्रकाशित की थी, जिससे मार्क्सके जीवनके वैथकिक पहलूपर कितना ही प्रकाश पड़ता है :

"मैं १८५० ई० की गर्मियोंमें स्वीजलैंडसे लन्दन पहुँचा।...मार्क्स-परिवार से उन्हीं गर्मियोंमें लन्दनके नजदीक कहीं...मिला, मुझे याद नहीं ग्रीनविचमें या हेम्पटनकोर्टमें।..."

१८५० ई० से १८६२ ई० तक प्रायः बारह वर्षों तक लीबकनेल्ट लन्दनमें रहा। वहाँ वह मार्क्सके परिवारका एक व्यक्ति हो गया था। बच्चोंके प्रति

मार्कर्सके प्रेमके बारेमें लीबनेस्टने लिखा है : “मार्कर्स मजबूत और स्वरूप स्वभाववाले सभी व्यक्तियोंसे प्रेम करते थे, बच्चोंसे तो उन्हें असाधारण प्रेम था। वह ऐसे अत्यन्त कोमल पिता थे, जो कि अपने बच्चोंके साथ घर्टों बच्चों बच्चन सकता था। गास्टेमें मिलनेवाले अपरिचित बच्चों, विशेषकर असहाय और गरीब बच्चोंके प्रति तुम्बकी तरह उनका मन खिच जाता था। ऐकड़े नार गरीबोंके मोहल्लेमें धूमते समय अलग हो चिथड़ेमें लिपटे दरवाजेपर बैठे किसी बच्चे के छोटे से हाथमें एक या आधा पेन्स रखने, तथा उसके बालोंको सहलानेके लिये वह हमारा साथ छोड़कर चले जाते।...”

“शारीरिक कमजोरी और असहायावस्था हमेशा उनके हृदयमें सहानुभूति पैदा कर देती।...एक शामको उनके साथमें ओनीबसके ऊपर सवार हो इम्फेड रोडकी ओर जा रहा था। वहाँ...अड्डेपर हमने लोगोंकी भीड़ देखी, जिसके भीतरसे एक छींचिला रही थी—‘खून ! खून !’ मार्कर्स बिजलीकी तरह नीचे उतरकर चले और मैं उनके पीछे-पीछे था। मैं उन्हें पकड़कर रोकना चाहता था, जो नंगे हाथोंसे बन्दूकी गोली पकड़ रखने जैसा प्रयत्न था। एक चालमें ही हम भीड़में पहुँच गये। लोगोंकी भीड़ हमारे पीछे घेरे हुई थी। ‘क्या बात है ?’—जो बात थी, वह जल्दी ही स्पष्ट हो गई। एक शराबी औरतने अपने पतिसे झगड़ा कर लिया था। पति उसे घर ले जाना चाहता था और वह भगाड़ रही थी, ऐसी चिल्ला रही थी, मानों भूत चढ़ा हुआ हो।...हमने देखा, कि वहाँ हमारे दखल देनेकी कोई जरूरत नहीं है। झगड़नेवाले दम्पतीने भी इसे देखा और दुरन्त ही उहोंने आपसमें शान्ति स्थापित कर ली, पिर वह हमारी ओर टूट पड़े। चारों ओरकी भीड़ ‘सारे विदेशियों’ के विशद् भयानक कांड करनेके लिये तैयार दीख पड़ी। ली लास तौरसे मार्कर्सके खिलाफ आगांगला हो गई थी। उसने उनकी मध्य चमकीली काली दाढ़ीपर आक्रमण करना चाहा। मैंने व्यर्थ ही तुफानको शान्त करनेका प्रयत्न किया। अगर लड्डूके मैदानमें उसी समय दो मजबूत कान्स्टेबल न आ गये होते, तो हम भीतर दखल देनेकी उदारशयताका बहुत मँहगा मोल छुकाते। जरा भी बाल बाँका हुये बिना निकल कर ओम्बीवस्त पर बैठ घरकी ओर रवाना होते समय हमने अपने प्राप्तको

सराहा । इसके बाद इस तरहके दखल देनेके प्रथत्वमें मार्क्स अधिक साधान रहा करते ।

यदि कोई विज्ञानके इस नायकके माओकी गम्भीरता और बचपनका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहता “तो मार्क्सको अपने बच्चोके भीतर देखनेकी जरूरत थी । अपने कुट्टीके क्षणों या टहलनेके समय उन्हें वह साथ लिये-लिये फिरते और उनके साथ अत्यन्त हर्षोन्मत्त हो खेल खेलते, बच्चोके बीच बच्चे जैसे मालूम होते । हेम्स्टेड्हीथमें हम अक्सर ‘घोडसवार’ का खेल खेलते : मैं क्षोटी-क्षोटी बच्चियोमेंसे एकको अपने कन्धेपर उठाता और मार्क्स दूसरेको । फिर हम दोनों कदम और कुदान करते एक दूसरेसे होड़ करते—कभी-कभी घोडसवारोंके बीच क्षोटी लड़ाई भी हो जाती । लड़कियाँ लड़कोंकी तरह ही अनियत्रित स्वभावकी थीं, और जिना रोये मार सह सकती थी । मार्क्सके लिये बच्चोंका सत्सग बहुत आवश्यक था—उनके द्वारा वह अपनी थकावट भूल कर ताजगी अनुभव करते । जब उनके अपने बच्चे बड़े हो गये या मर गये, तो उनका स्थान नातियों और नातिनोने लिया । नहीं जेनीने १८७० वाली दशाव्दीके आरम्भ-में लाखेसे व्याह किया । लाखे पैरिस कमूनके शरणार्थियोमेंसे था । इनके कई मनसुखी बच्चे घरमें थे । सबसे बड़ा जीन या (जानी)...अपने नानाका बहुत प्रिय था । उनके साथ वह जो चाहे सो कर सकता था, वह वह जानते थे । एक दिन जब मैं लन्दन गया हुआ था, जानी...के दिमागमें एक चमत्कारिक विचार पैदा हुआ : मूर (मार्क्स) को ओम्नीबस (बगी) बनाया जाय । कोचवानकी गहीपर अर्थात् मार्क्सके कन्धोपर वह स्वयं बैठा और एंगेल्स तथा मैं बगी के धोड़े बने । जब हम ठीक तरहसे जुट गये तो मेट्लेडपार्क रोडमें मार्क्सके कुटीरके पीछेकी क्षोटी सी फुलबाबीमें एक जबर्दस्त दौड़—मैं कहना चाहूँगा भयंकर दौड़—शुरू हुई । शायद रिजेन्पार्कमें एंगेल्सके घरमें यह हुआ हो । ..धोड़े दौड़े जा-ओ ! अन्तर्राष्ट्रीय पुकार थी, जर्मनमें, इगलिशमें और फ्रेंचमें—गो आँन ! प्लि विता !* हुर्रा । मूरको भी इतना दौड़ना पड़ा, कि उनके चेहरेसे पसीना चूने लगा । यदि एंगेल्स या मैं अपनी गति कुछ धीमा

* Go on ! Plus vita

करना चाहते थे : निष्ठुर कोचवानका कोड़ा दुरन्त हमारी पीठपर पड़ता : हुम बदमाश थेड़े ! आँ आवाँ इत्यादि । अन्तमें ऐसी हालत हुई, कि मार्कर्सके लिये और आगे बढ़ना मुश्किल हो गया । फिर जोनीसे समझौतेकी बात चली और अन्तमें विराम-सन्धि स्वीकृत हुई ।”

३. विरोधी

जीवनकी अनित्म दशाबिद्योंमें मार्कर्स अब पहलेकी अपेक्षा लोगोंमें प्रसिद्ध और सम्मानकी दृष्टिसे देखे जाते थे, तो भी वह अलग-थलग रहना पसन्द करते थे । उनके अपने घरमें अब लोगोंका आना-जाना बहुत था । शरणार्थी हमेशा उनसे सहायता और सलाह पाये बिना नहीं रहते थे । शार्ल लांग्वेने १८७२ ई० में मार्कर्सकी लड़की जेनीसे व्याह किया था, लेकिन योग्य होते हुये भी अपने श्वसुर-कुलसे उसकी बैसी वैयक्तिक या राजनीतिक घनिष्ठता नहीं स्पष्ट हुई जैसी कि लाफार्गकी । सबसे छोटी लड़की एलिनोर एक फैंच लेवक लिङ्गारेको व्याही जानेवाली थी, लेकिन मार्कर्सको वह अन्धा नहीं लगता था । अन्तमें कुछ आगा-पीछा करनेके बाद यह व्याह नहीं हो सका ।

“कपिटाल” की दुरी आलोचना करनेवालोंमें ड्रिंग भी एक था, जिसको अपने समाजवादका बड़ा अभिमान था । २४ मई १८७६ को एंगेल्सने मार्कर्सको लिखा था : “वह साफ मालूम होता है कि इन लोगोंके दिमागमें तुम्हरे ऊपर नीचतापूर्ण आक्रमण करनेके कारण ड्रिंग अजेय हो गया है* । यदि हम उसकी सैद्धान्तिक खुराकातोंकी खिल्ही उड़ायें तो यह उसके ऊपर हमारा वैयक्तिक बदला छोड़ और कुछ नहीं होगा ।”...किन्तु अन्तमें एंगेल्सको ड्रिंगकी ओर ध्यान देना ही पड़ा, और उन्होंने “फोर्केट” में १८७७ ई० के आरम्भसे कई लेख उसके विशद लिखे, जो “कपिटाल” के बाद मार्कर्सवादका एक बड़ा ही सुन्दर और सबल ग्रंथ साबित हुआ । (मई १८७७ में) गोथामें जो पार्टीकी कांग्रेस हुई, उसमें एंगेल्सके इन लेखोंके विशद बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ और उनके पार्टीके मुख्यत्र “फोर्केट्स” में छापे जानेका विरोध किया गया । किन्तु अन्तमें समझौता हो किसी तरह बला टली ।

* En avant.

१८७७ ई० में गोशा-काग्रेसने यह भी निश्चय किया, कि उसी सालके सितम्बरमें घेन्टमें होनेवाली विश्व-समाजवादी-काग्रेसमें पार्टीके प्रतिनिधि बनकर लीबकनेरूट भेजे जायें। इस काग्रेसको वेल्जियमके साथियोंने बुलाया था, जिनका मन अब अराजकवादसे भर गया था और वह हांग-काग्रेसमें हुई फूटको मिटाने-की कोशिश करना चाहते थे। बकुनिनके अनुयायियोंने अपनी काग्रेसे १८७३ (जेनेवा) में, १८७४ ई० (ब्रूखेल्स) में और १८७६ ई० (बर्न) में की थीं, लेकिन प्रतिनिधियोंकी सख्तासे मालूम हो रहा था, कि उनका सगठन कमज़ोर होता जा रहा है। लीबकनेरूट कभी बकुनिनका मित्र नहीं रहा, लेकिन बाजेल-काग्रेसके समय वह उतना आगे नहीं बढ़ सका। दूसरी ओर जूल ग्विदे (फ्रास), चार्लो चाफियेरो (इताली), कैसर दे पेपे (वेल्जियम) और पॉल अखेलराद (रुस) हांग-काग्रेसके समय और उसके बादमें भी देर तक बकुनिन के जबर्दस्त समर्थक रहे। पीछे जब बड़े उत्साही मार्क्सवादी बन गये, तब भी वह यह स्वीकार करते थे, कि हमने मार्क्ससे सहमत और बकुनिनके सम्मिलित विचारोंके आधारपर प्रगति की है। बकुनिनका अराजकवाद दिनपर दिन गिरता ही गया। उसके सैद्धान्तिक विचार ही अंडबड़ नहीं थे, बल्कि व्यवहारतः भी आधुनिक सर्वहारोंके तुरन्तके किसी हितके प्रश्नमें वह कोई सहायता नहीं दे सकते, जिसके कारण बकुनिनवाद एक आशा और विश्वासहीन सम्प्रदायसे आगे नहीं बढ़ सका। १८७६ ई० में बर्नमें १८७७ ई० में घेन्टमें विश्व-समाजवादी-काग्रेसका बुलाना इस बातका सबूत था, कि अराजकवाद जनताको अपनी ओर करनेमें बिल्कुल असफल रहा। यह काग्रेस E-१५ सितम्बर तक घेन्टमें हुई, जिसमें ४२ प्रतिनिधि शामिल हुये। इसके ११ अराजकवादी प्रतिनिधियोंमें गुहश्वोमङ्क और क्रोपत्किन (रुसी) मी थे। इसके पुराने समर्थकोंमें से बहुत से अब समाजवादी पक्षकी ओर मिल गये, जिनमें वेल्जियन प्रतिनिधियोंके अतिरिक्त अंग्रेज हैल्स भी था। इस पक्षके नेता लीबकनेरूट, ग्रोलिंच और फैंकेल थे।

आराजकवादी भी अपनी कमजोरियोंको समझते थे, इसलिये उन्होंने बहस-मुबाहिसेसे कड़वाहट पैदा करनेकी जगह अधिकतर समझौता करनेका प्रयत्न किया, किन्तु समझौतेका कोई परिणाम नहीं निकला।

इसी समय रूस और तुर्कीकी लड़ाई शुरू हो गई। मार्क्सने अपने विचार लीबकनेटको लिखे पत्रोंमें अपनी सलाह दी थी। ४ फरवरी १८७८ के पत्रमें मार्क्सने लिखा था : “हम निश्चित तौरसे तुर्कोंके पक्षमें हैं, जिसके दो कारण हैं : सबसे पहले इसलिये कि हमने तुर्क-किसानों अर्थात् तुर्क-जनसाधारणका अध्ययन करके देखा, कि वह यूरोपीय किसानोंके अत्यन्त सक्षम और चरित्रबलमें बहुत पक्के प्रतिनिधि हैं। दूसरी बात यह, कि रूसकी पराजय सामाजिक परिवर्तनको बहुत जल्दी ला सकती है, क्योंकि इस सामाजिक परिवर्तनके तत्व रूसमें सभी जगह मौजूद हैं। इस परिवर्तन द्वारा सारे यूरोपका भी परिवर्तन शीघ्र गतिरेहोगा।” तीन महीने पहले मार्क्सने सोरेंको लिखा था : “यह संकट यूरोपीय इतिहासका एक नया मोड़ है। मैंने मौलिक स्रोतों, सरकारी और गैर सरकारी दोनों (सरकारी स्रोत बहुत थोड़े से लोगोंको प्राप्त हैं, मैंने उन्हें पीतरखुर्गके मित्रोंकी सहायतासे प्राप्त किया) के अध्ययन से रूसी स्थितियोंका अध्ययन किया है। रूस बहुत दिनोंसे क्रान्तिके देहलीपर खड़ा है, और वहाँ सभी आवश्यक तत्व तैयार हैं। तुर्कोंने केवल रूसी सेना और रूसी कोश ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत तौरसे रूसी राजवंश (जार, युवराज और छ. दूसरे रोमनोफो) को भी लथाड़ते विस्फोटको जल्दी कर समयमें वधोंकी कमी कर दी। रूसी विद्यार्थियोंका मूर्खता पूर्ण खिलवाड़ अपने भीतर व्यर्थका है, लेकिन वह एक निदान है। रूसी समाजके सभी अंग आर्थिक, नैतिक और बौद्धिक तौरसे छिप-मिन्होने की अवस्था में हैं।”

मार्क्सकी मृत्युके पाँच साल पहले लिखे गये इन पंक्तियोंसे मालूम होता है, कि अधिक अध्ययन और गम्भीरतापूर्वक विचार करनेके बाद मार्क्स इस नसीजेपर पहुँचे थे, कि रूसमें क्रान्तिकी सम्भावना उससे कम नहीं है, जितनी कि पश्चिमी यूरोपमें। अस्तु तुर्कोंकी पीठ ठोकनेवालोंके बिश्वासघात तथा अपनी वेवकूफियोंके कारण रूस-तुर्क-युद्धके परिणामस्वरूप रूसमें क्रान्ति नहीं होने

पाई, और न पश्चिमी यूरोपमें उसका विस्तार हुआ। इसके विरुद्ध अब विस्मार्कने जर्मनीमें कम्पकरोपर दमन शुरू किया। संगठनकी फूट और शिथिलताके कारण पार्टीकी किस ओर लिचे बूज्जा भी अपनी आदतके अनुसार इस दमनमें साथ छोड़कर भागने लगे। जर्मन पार्लियामेन्टमें चुने गये समाज-वादी मेम्ब्रोमें घोर फूट पड़ गई। उनमें एक पक्षका नेता मेक्स कैजेर* था। उसके एक भाषणपर कार्ल हर्शने जवर्दस्त आक्रमण किया, जिसका राहखस्यागके समाजवादी गिरोहने विरोध किया, क्योंकि कैजेरने उनकी अनुमतिसे उक्त भाषण दिया था। कार्ल हर्श एक तरण पत्रकार था, जो लीवक्सेल्टके जेलमें रहनेके सालोंमें उस पक्षकी ओरसे आगे बढ़ा था। पीछे वह पेरिसमें भाग गया, जहाँसे जर्मनीमें आम ज्ञामादानके बाद लौटा। अब उसने फिर जर्मन-पार्टीके लिये काम करना शुरू किया। १८७८ के दिसम्बरके मध्यमें “ही लाटेने” के नामसे एक साप्ताहिक पत्र ब्रेदा (वेल्जियम) से निकालने लगा। हर्शपर मार्क्स और एंगेल्सका पूरा विश्वास था। वह उसके पत्रके लिये लेख लिखनेको भी तैयार थे। पार्टीकी तरफसे जूरिचसे पत्र निकालनेका निश्चय हुआ। वहाँ रहनेवाले पार्टीके तीन मेम्ब्र श्रम्म, कार्ल होखवेर्ग और एडवर्ड वेर्नस्टाइन उसके संचालक नियुक्त किये गये। बहुत देर करके जुलाई १८७८ में वह “सामाजिक विज्ञान और सामाजिक राजनीतिका वर्षपत्र”† के रूपमें निकला। वर्षपत्रके लेखों उसमें विशेष करके होखवेर्ग‡ और श्रम्म द्वारा लिखे तथा वेर्नस्टाइन द्वारा कुछ पंक्तियाँ जोड़े ‘समाजवादी आन्दोलनकी आलोचना’ नामक लेख को पढ़कर मार्क्स और एंगेल्स बहुत चुन्धु हुये। इसके बाद हर्शने भी उसके साथ सम्बन्ध रखनेसे इन्कार कर दिया। होखवेर्गने लन्दन जाकर मार्क्ससे तो नहीं लेकिन एंगेल्सने मुलाकात की, लेकिन उसकी विचार-संवैधी गडवड़ीका एंगेल्सके ऊपर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। १८ सितम्बर १८७८ में मार्क्सको सोरेंके पास पत्र लिखते हुये कहना पड़ा था, कि यदि नये पार्टीके नये पत्रकी यही रफ्तार रही,

* Die Laterne. † Das Jahrbuch für Sozialwissenschaft und sozialen Politik. ‡ Hochberg.

तो हमें खुलकर उसके विशद्द लिखना पड़ेगा। आगे इसकी जरूरत नहीं पड़ क्योंकि वर्षपत्रको तीनों और आगे नहीं चला सके। जूरिचके “सोजियाल डेमोक्राट” (समाजवादी जनतांत्रिक) के सम्पादनका भार फोलमरने ले लिया लेकिन वह अच्छी हालतमें नहीं निकल रहा था। जर्मन समाजवादियोंको कितनी कठिनाईके भीतर काम करना पड़ता था, इसे मार्क्स अच्छी तरह समझते थे, इसीलिये ५ नवम्बर १८८० के पत्रमें उन्होंने सोर्गेंको लिखा था : “जिन लोगोंको दूसरे देशोंमें अपेक्षाकृत शान्ति और निश्चन्तताका जीवन बितानेका अवसर मिला है, उन्हें अत्यन्त कठिन परिस्थितियोंमें और भारी चलिदानके साथ जर्मनीमें काम करनेवालों में रहा है, बूज्जबीको खुश करनेका कारण बननेके लिये कठिनाईयाँ उत्पन्न करनेका अधिकार नहीं है । ”

कुछ सप्ताह बाद आपसी भगड़े खत्म करके शान्ति स्थापित हुई। २१ दिसम्बर १८८० को बोलमरने सम्पादक पदसे इस्तीफा दे दिया, और जर्मन पार्टीके नेताओंने उसकी जगह कार्ल हिर्श* को नियुक्त किया। यह मार्क्स और एंगेल्सका संतुष्ट करनेका प्रयत्न था। हिर्श उस बत्त लन्दनमें रहता था। उसको राजी करने तथा मार्क्स और एंगेल्सके साथ परिस्थितियोंपर पूरी तौरसे विचार करनेके लिये बेवल स्वयं लन्दन आया। वह अपने साथ बेर्नस्टाइनको भी लेता गया था। कार्ल हिर्शने लन्दनमें रहकर काम करनेकी बातें कही। वर्षपत्रके कारण बेर्नस्टाइनके खिलाफ जो भाव पैदा हुये थे, उन्हें दूर हटानेकी कोशिश बेवेलने की। इसमें उसे कितनी सफलता हुई, यह इसीसे मालूम होगा कि बेर्नस्टाइनको पञ्चांशस्थायी सम्पादक नियुक्त कर दिया गया—और अन्तमें बेर्नस्टाइन स्थायी सम्पादक भी बन गया। मार्क्स और एंगेल्सके जीवित समय तक बेर्नस्टाइनका रवैया ठीक रहा, लेकिन हम जानते हैं, पीछे मार्क्स बादके शत्रुभूत अनुयायियोंमें बेर्नस्टाइनका नाम सबसे पहले आया। मार्क्सके वास्तविक उत्तराधिकारी लेनिनको इस अवसरवादी समाजवादीके मुहरों जवाब देनेके लिये कलम उठानी पड़ी।

* Hirsch.

फ्रासमें भी बहुत से उतार-चढ़ावके बाद पार्टीके काममें शुगबुगाहट शुरू हुई। शुइदे अब काममें जुट पड़ा था। वह पेरिससे “एगालिते” (समानता) पत्र निकालने लगा था। १८८० ई० के वसन्तमें गिर्दे लन्दन गया। वह तरह समाजवादी पार्टीके निर्वाचन-प्रोग्राम तैयार करनेमें मार्क्स, एगोल्स और लाफार्गसे सहायता लेना चाहता। जो प्रोग्राम तैयार हुआ, उसे मार्क्सने फ्रेच कम्करोंकी मुक्तिके लिये मारी कदम बतलाया। मार्क्स इतने सतुष्ट थे, कि उन्होंने अपने दोनों फ्रेच दामादों को आम चमादानके तुरन्त ही बाद फ्रास लौटनेके लिये सहमति प्रकट की। लाफार्गने लौटकर शुइदेके साथ काम करना शुरू किया, और लाग्वेने एक प्रभावशाली पत्र “ला जुस्तिस” (न्याय) को संभाला।

रूसमें स्थिति खराब थी, लेकिन मार्क्सकी दृष्टिमें वह अधिक आशाप्रद थी। उनके “कपिटाल” का वहाँ ज्यादा प्रचार हुआ। उसके महत्वको और देशोंसे अधिक रूसमें माना गया—विशेषकर विज्ञान और साहित्यके क्षेत्रमें तरहोंने उसका दिल खोलकर स्वागत किया। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि अभी इस समय लेनिन दस वर्षके बालक थे। उन्हें “कपिटाल” में हाथ लगानेके लिये चार-पाँच सालोंकी और देर थी। तो भी वहाँके दो प्रमुख राजनीतिक दल—जन-इच्छा पार्टी और काली वितरण पार्टी—मार्क्सकी विचारधाराको बिल्कुल पसन्द नहीं करते थे। दोनों पार्टीयों अपना सबसे बड़ा लक्ष्य किसानोंको अपनी और खीचना समझती थीं, और इसमें वह पूरी तौरसे बकुनिनवादी थीं। मार्क्स और एगोल्सने इसपर एक मुख्य प्रश्न उठाया था : क्या रूसी किसान सगतः—जो कि भूमिकी प्राचीन समिलित प्रभुताके अत्यन्त विहृत रूप है—भूमिके प्रभुत्वके उच्चतम कम्युनिस्ट रूपमें सीधे विकसित हो सकती है, अथवा उन्हें सबसे पहले उसी तरहके विघटनकी प्रक्रियासे शुजरना यहेगा, जो कि पश्चिमी यूरोपीय देशोंके ऐतिहासिक विकासके दौरानमें देखा गया है ? इसका जवाब मार्क्स और एगोल्सने वेरा जाप्तुलिच द्वारा कम्युनिस्ट

बोषणापत्रके नये अनुवादमें निम्न शब्दोंमें दिया था : “यदि रूसी क्रान्तिने पश्चिममें कमकरोकी एक ऐसी क्रान्तिकी पूर्व-सूचना दी, जिसमें कि दोनों क्रांतियाँ एक दूसरेकी पूरक बनें, तो रूसकी वर्तमान सम्मिलित सम्पत्तिका रूप कम्युनिस्ट विकासके आरम्भ स्थान का काम दे सकेगा ।” इन्हीं विचारोंके कारण मार्क्स जन-इच्छा (नरोदनया बोल्या) पार्टीका बहुत समर्थन करते थे, जिनकी आतंकवादी नीतिके कारण जारका इधर-उधर खुलकर घूमना बन्द हो गया था और वह एक तरहका बन्दी जीवन बिताता था । मार्क्स काला-वितरण-पार्टीके जवर्दस्त विरोधी थे, क्योंकि वह सभी तरहके राजनीतिक और क्रांतिकारी कार्र-वाइयोंको छोड़कर अपनेको प्रोपेंगेंडा तक ही सीमित रखती थी—अखेलराद और प्लेवानोफ जैसे मार्क्सवादी प्रचारक यद्यपि काला-वितरण-पार्टीसे सम्बन्ध रखते थे, लेकिन जबानी जमा खर्च और अकर्मण्यताको मार्क्स पसन्द नहीं कर सकते थे ।

मुख्यके दो साल पहले जून १८८१ ई० में मार्क्सने इंगलैंडमें भी कुछ नई सुगवुगाहट देखी, जब कि हिंडमेनकी पुस्तक “इंगलैंड सबके लिये” प्रकाशित हुई, और जो जनतांत्रिक फेडरेशनके प्रोग्रामके तौरपर लिखी गई थी । फेडरेशन की शाखायें हंगलैंड और आयलैंडके कितने ही स्थानोंपर स्थापित हुई थीं । वह अर्ध-वूज्वा और अर्ध-सर्वहारा उग्रवादी समाजोंको मिलाकर बना था । पुस्तकके अम और पूँजीवाले अध्यायोंमें मार्क्सके “कपिटाल” से बहुतसे सीधे उद्धरण और कितने ही विचार लिये गये थे । तो भी हिंडमेनने मार्क्सका नाम नहीं लिया था, जिसके लिये उसका बहाना था कि मार्क्सका नाम यहाँके लोगोंको पसन्द नहीं है, और अँग्रेज विदेशियोंसे सीख लेना पसन्द नहीं करते । मार्क्स ऐसे आदमीके साथ अपना सम्बन्ध कैसे कायम रख सकते थे ?

४. पत्नी-वियोग (१८८१ ई०)

१८८८ ई० के बाद स्वास्थ्यकी खराबीके कारण मार्क्स कुछ काम नहीं कर सकते थे । इसी समय मार्क्स-पत्नी ज़ेनीका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ चला, जिसका बड़ा दुरा प्रभाव मार्क्सपर पड़ना जरूरी था । अपनी सास (ज़ेनी) के बारेमें लाफार्गने लिखा है :

“मार्क्स के बल १७ वर्ष के थे, जब कि उनकी मृगनी हो गई थी, लेकिन दोनोंको नौ वर्ष तक इन्तिजार करना पड़ा, तब १८४३ ई० में उनका व्याह हुआ। उसके बाद वह फिर एक दूसरे से बब तक अलग नहीं हुये, जब तक कि अपने पतिसे कुछ ही समय पहले फ्राउ मार्क्सका देहान्त नहीं हो गया। जैसी यद्यपि एक जर्मन सामन्त-परिवारमें पैदा हो पाल-पोस्टर की हुई थीं, लेकिन उनके जैसा समानताका भाव रखनेवाला व्यक्ति मिलना मुश्किल था। सामाजिक भेद और लॉच-नीचका भाव उनके लिये अस्तित्व नहीं रखता था। उनके घरमें, उनकी मेजपर, कामके अपने मोटे-झोटे कपड़ोंमें कमकरोका उतनी ही नम्रता और खुले दिलसे स्वागत होता था, जितना कि किसी ड्यूक या प्रिन्सका। सभी देशोंके बहुतेरे कमकर उनका आतिथ्य प्राप्त करते थे। मुक्ते निश्चय हैं, उनका वह इतनी सादगी और अकृत्रिम स्लेहके साथ स्वागत करती थीं, कि वह कभी खालमें भी नहीं ला सकते थे, कि हमारी स्वागत करने वाली महिला माताकी ओरसे अर्गाइलके ड्यूकी सन्तान है, उसका भाई प्रशियाके राजाका राज्य-मन्त्री रहा है। यह बाते एक ज्ञानके लिये भी उनके दिमागमें नहीं आ सकती थीं। सामन्ती सब बाते अपने कार्लका अनुगमन करते समय वह क्लोड आईं। उन्होंने जो यह त्याग किया, उसका कभी उनके दिलमें अफसोस नहीं हुआ—उन दिनोंमें भी जबकि अभावका पहाड़ उनके ऊपर गिरता रहा।

“उनमें गम्भीरता और सदा प्रसन्न रहनेका स्वभाव था। अपने मित्रोंके लिये उन्होंने जो पत्र लिखे हैं, वह एक सजीव तथा मौलिक दिमागकी अधिकार-पूर्ण उपज तथा उनकी बुलभुलेखनीके स्वरस निकले भावोंठेक हैं।...जान फिलिप वेकरने इनमेंसे कुछको प्रकाशित किया है। निष्ठुर व्यगकार (कवि) हाइने मार्क्सके परिहासोंसे डरता था, लेकिन फ्राउ मार्क्सकी तीक्ष्ण और भाव-पूर्ण बुद्धिका वह बहुत बड़ा प्रशंसक था। जब मार्क्स-दम्पती पेरिसमें रहते थे, तो वह उनके घरमें बराबर आतिथि बनता था। मार्क्स अपनी पत्नीकी बुद्धि और विवेककी इतनी कदर करते थे, जैसा कि १८६६ ई० में उन्होंने मुझसे कहा था, ‘मैं अपने सभी हस्तलेखोंको उसके सामने पेश करता हूँ और उसके

फैसलेको बहुत मूल्यवान् समझता हूँ ।’ मार्क्सकी कृतियोंको प्रेसमें भेजनेसे पहले वह उनकी कापी उतार लेती थीं ।

“फ्राउ मार्क्सकी बहुत सन्तानें हुईं । उनमेंसे तीन अत्यन्त छोटी उमर हीमें मर गये ।... उस समय जब कि १८४८ ई० की क्रान्तिके बाद लन्दनमें शरणार्थीके तौरपर सोहो स्वायरकी डीन स्ट्रीटकी दो कोठरियोंमें रहते थे, मैं उनकी तीन लड़कियोंको ही जान सका हूँ । १८६५ ई० में जब मैं पहले-पहल मार्क्ससे मिला, तो सबसे छोटी लड़की (आजकल श्रीमती एवर्लिंग) एक बड़ी आनन्दी बच्ची थी, जो देखनेमें लड़कीकीं अपेक्षा ज्यादा लड़के जैसी मालूम होती थी । मार्क्स अक्सर कहा करते थे—मेरी पत्नीने एलिनोरको दुनियामें लानेके समय लिंगके बारेमें भूल कर दी । दूसरी दो लड़कियाँ बड़ी सुन्दरी और सुशीला थीं—एलिनोरसे उलटी । सबसे बड़ी लड़की जेनी (आजकल मदान लांगे) अपने बापकी तरह ही (अपेक्षाकृत साँचले रंग, काली आँखों और काले बालों-वाली थी । उससे छोटी लौरा (वर्तमान मदाम लाफार्ग) अपनी माँ जैसी रंग में सफेद, गालोंसे लाल और सुनहले धुँधराले बालोंवाली थी ।... ”

“मार्क्स और उनकी पत्नी पारस्परिक निर्भरताके बन्धनोंसे घनिष्ठतया आकद्ध थे । जेनीका सौंदर्य मार्क्सके लिये आनन्द और अभिमानकी चीज थी । क्रान्तिकारी समाजवादीके तौरपर उनके भिन्न-भिन्न जीवनोंके साथ अद्भूत रूपसे सम्बद्ध गरीबीको सहन करनेमें जेनीकी कोपलता और भक्ति उनके लिये बड़ा सम्बल सिद्ध हुआ । जिस बीमारीकी भीषण यातनाने फ्राउ मार्क्सको कब्रमें पहुँचाया, उसने उनके पतिकी आयुको भी कम कर दिया । उनकी दीर्घ और यातनापूर्ण बीमारीमें मार्क्स शारीरिक और मानसिक दोनों तरहसे विशीर्ण हो गये ।... उन्हें नींद नहीं आती थी ।... ”

१८७८ ई० के शरदमें मार्क्सने सोर्गेंको लिखा था, कि मेरी पत्नी बहुत चीमार है । एक साल बाद फिर लिखा था : “मेरी पत्नी अब भी खतरनाक रूपसे चीमार है और मैं ठीक तरहसे अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता हूँ ।” पहले चीमारी का पता नहीं लगा, किन्तु काफी समयके बाद यह मालूम हो गया, कि

मार्कर्स-पत्नी असाध्य नास्त्रसे पीड़ित हैं, जो कि धीरे-धीरे और भयंकर यातनाएँ के बाद मौतके मुख में ढाले बिना नहीं छोड़ेगा। जेनीने जीवन भर मार्कर्सके लिये जिस तरह अपनेको भुलाकर सब कुछ सहा था, उनके जीवनकी अन्तिम घड़ियों-में मार्कर्सने भी उसी तत्परतासे पत्नीकी पाई नहीं छोड़ी। परिवारकी सभी चिन्ताओं और विपत्तियोंके बोझोंसे दबी जाती जेनीने हमेशा पतिके सामने मुस्कुराते हुये आनेका प्रयत्न किया था। इतिहासमें जेनी जैसी पत्नी बिरले ही महान् विचारकोंको प्राप्त हुईं।

१८८१ हृ० की गर्मियोंमें, जब कि बीमारी काफी बढ़ चुकी थी, जेनीने हिम्मत करके अपनी विवाहिता लड़कियोंसे मिलनेके लिये पेरिसकी यात्रा की। बीमारी छूटनेकी आशा नहीं थी, इसलिये डाक्टरोंने यात्राके खतरेसे रोकनेकी कोशिश नहीं की। मदाम लाग्वेको पत्र लिखते हुये २२ जून १८८१ को मार्कर्स ने अपनी यात्राके बारेमें लिखा था : “तुरन्त जवाब दो, क्योंकि मामा तब तक यहाँसे नहीं प्रस्थान करेगी, जब तक जान न ले, कि तुम लन्दनसे क्या चीज़ लाना पसन्द करती हो। तुम तो जानती हो, कि वह ऐसी बातें पसन्द करती है।” यात्रा अच्छी तरह सम्भल हुई, लेकिन लौटने पर मार्कर्सपर पार्श्व-शूल (फुफ्फुस) की सूजन) का जबर्दस्त आक्रमण हुआ, जिसके साथ खाँसी और निमोनिया भी मिल गई। यह बड़ी खतरनाक बीमारी थी, लेकिन अपनी लड़की एलिनोर और परमभक्त लेनचेन देमुथके स्वार्थत्याग और सेवाओंसे वह उस समय ब्रच गये। एलिनोरके लिये यह बड़े परेशानीके दिन थे। उसने लिखा था : “१८८० हृ० की शरदमें मेरी प्यारी माँ इतनी बीमार हो गई, कि वह अपनेको चारपाईसे खड़ा नहीं कर सकती थी। इसी समय मूर भी फुफ्फुस-शोथके भयकर आक्रमणसे पीड़ित हुआ। यह इतनी भयंकर इसीलिये हो उठी, कि उसने सदा अपनी बीमारी की उपेक्षा की थी। डाक्टर (हमारे श्रेष्ठ मित्र फनकिन) का विचार था, कि अवस्था बिल्कुल निराशाजनक है। भयंकर समय था। सामनेके बड़े कमरेमें हमारी माँ पढ़ी हुई थी, और पीछेवाले छोटे कमरेमें मूर। वह दोनों जो एक दूसरेके इतने घनिष्ठ थे, अब एक ही कमरेमें नहीं रह सकते थे।

“हमारी भली पुरानी लेनचेन (तुम जानते हो, हमारे लिये वह क्या थी ?)

और मैं दोनों की देखभाल करते थे। डाक्टरने कहा था, कि हमारी सेवा-सुधूषा-ने मूर के प्राण बचा लिये। जो भी हो, मैं अच्छी तरह जानती हूँ, कि न तो हेलेन (लेनचेन) और न मैं ही तीन सप्ताह तक कभी चारपाईंपर गई। हम रात दिन खड़ी रहतीं, और जब कभी पूरी तौरसे अशक्त हो जातीं, तो बारी-बारीसे एक-एक घंटा आराम करतीं। मूर एक बार फिर अपनी बीमारीसे उठ खड़ा हुआ। मैं उस प्रातःकालको भूल नहीं सकती, जब कि उसने माँके कमरेमें जाने-हुए। मैं उस प्रातःकालको भूल नहीं सकती, जब कि उसने माँके कमरेमें जाने-के लिये अपने पास काफी शक्ति पाई। दोनों फिर एक साथ तरुण हो गये—वह एक व्यारी तरुणी और वह एक प्यारा तरुण, दोनों मानों एक साथ जीवन-में प्रवेश कर रहे थे। उनका यह मिलन बीमारीसे कंकाल मात्र एक बूढ़े आदमी और मरती हुई एक ऐसी बुदिया लड़िया मिलन नहीं था, जो दोनों अपने जीवन में एक दूसरेसे अनितम बिदाई ले रहे थे।

“मूरका स्वास्थ्य बेहतर हो गया, यद्यपि वह अभी बल नहीं प्राप्त कर सका था, तो भी वह देखनेमें मजबूत मालूम होता था।...इसी समय २ दिसम्बर १८८१ को माँ मर गई। उसने अपने अनितम शब्द—अग्रेजीमें यह उल्लेखनीय है—अपने कालीको सम्बोधित करके कहे थे। जब हमारे प्यारे जेनरल (एंगेल्स) आये, तो उन्होंने कहा जिसने मुझे करीब-करीब कुदूध कर दिया—“मूर भी मर गया।”

“...(मेरी माँ) एक महीने तक नास्तरकी भयंकर यातनाको सहती मरणा-सन्न पड़ी रही, तो भी उसकी सुन्दर प्रकृति, असीम हाजिरजवाबी—जिसे कि तुम स्वूच्छी तरह जानते हो—एक ज्ञानके लिये भी उससे अलग नहीं हुई। उसने लड़केकी तरह अधीर होकर उस समय (१८८१ ई०) हो रहे जर्मनीके निर्वाचनके परिणामोंको पूछा, और हमारी विजयोंको सुनकर वड़ी प्रसन्न हुई। अपने मृत्युके समय तक वह प्रसन्न-हृदय रही और मजाक करते हुये हमारे दिलमें पैदा हुई आशंकाओंको हटानेकी कोशिश करती थी। भयंकर यातनामें पड़ी रहने पर भी वह हँसी करती—वह डाक्टर और हम सबकी हँसी उड़ाती, क्योंकि हम बीमारीके द्वारमें इतनी विकलता अनुभव करते थे। करीब-करीब अनितम ज्ञान तक वह पूरी तौरसे होशमें रही। बोल सकने से पहिले उसका

अन्तिम शब्द 'काल' सम्बोधित करते निकला और उसने हमारे हाथोंको दबाकर मुस्कुरानेकी कोशिश की ।"

५. मार्क्सिका निघन (१८८३ ई०)

मार्क्सिकी लड़की एलिनोरने अपने पिता के अन्तिम समय के बारेमें लीब-क्नेखट्को लिखा था : "१८७७ ई० में मूरको फिर कालस्वाड जाना था, लेकिन जब पता लगा, कि जर्मनी और आस्ट्रियाकी सरकारे उन्हें निकाल बाहर करनेका इरादा रखती हैं, तो यात्राके लम्बेपन और खर्चका ख्याल करके वह फिर कालस्वाड नहीं गये । ..हम बर्लिन गये, जिसका मुख्य उद्देश्य था मेरे पिता के विश्वासपात्र मित्र तथा मेरे मामा एडगर फान वेस्टफालेनसे मुलाकात करना । हम कुछ ही दिनों बहाँ रहे । मूरको प्रसन्नता हुई, जब कि हमने सुना कि पुलिस हमारे होटलमे तीसरे दिन—हमारे स्थान छोड़नेसे ठीक एक घटा बाद—दूँढ़ने आई थी ।..."

"मौके प्राणोंके साथ मूरके भी प्राण चले गये । उसने जीवनको कायम रखनेके लिये बहुत सघर्ष किया, क्योंकि वह अन्त तकका योद्धा अब जीर्ण-शीर्ण पुरुष था । उसका स्वास्थ बिगड़ता ही गया । अगर वह स्वार्थी होता, तो सभी चीजोंको छोड़ देता, किन्तु उसके लिये बाकी सभी चीजोंसे जो ऊपर थी—वह थी अपने आदर्शके प्रति ईमानदारी । वह अपनी महान् कृतिको पूरा करनेकी कोशिश कर रहा था, इसलिये अपने स्वास्थ-लाभके लिये उसने दूसरी यात्रा करना स्वीकार किया । १८८२ ई० के वसन्तमे वह पेरिस और अर्जांत्वीः गया, जहाँ मै उसे मिली और हमने जेनी और उसके बच्चोंके साथ सचमुच ही कुछ सुखमय दिन बिताये । इसके बाद मूर फ्रान्सके दक्षिणमें और अन्तमे अल्जियरकी ओर गया । अल्जियर, मीस और कानेसके निवासके सारे समयमे उसे बुरे मौसिमका सामना करना पड़ा । अल्जियरसे उसने मेरे पास लम्बे पत्र लिखे, जिनमेसे बहुतोंको मैंने खो दिया, क्योंकि मूरके कहनेपर मैंने उन्हें चेनीके पास भेज दिया, और उसने बहुत कम्पको मेरे पास लौटया ।

“अन्तमें जब नूर घर आया, तो वह बहुत बीमार था। हमें अब अत्यन्त-अनिष्टका डर होने लगा। डाक्टरकी सलाहसे उसने शरद और जाङोंको बाइट द्वारपके बेट्टनरम् (कस्टे) में बिताया। मैं इसका चिक करना चाहूँगी, कि उस समयके मूरकी इच्छानुसार मैंने जेनीके सबसे छोटे लड़के जीन (जोनी) के साथ इतालीमें बिताया। १८८३-८५ के बसन्तमें अपने साथ जॉनीको लिये मैं मूरके पास लौटी। जानी अब भी मूरके नातियोंमें विशेष प्रिय था। मुझे लौट जाना पड़ा, क्योंकि मुझे पढ़ाने के काममें लगना था।

“और अब अन्तिम भीषण प्रहार हुआ: जेनीकी मृत्युकी खबर आई। जेनी पहिलौठी और मूरकी प्रिया उप्री एकाएक (द जनवरीको) मर गई। हमें उस समय मूरके पत्र मिले थे, वह उस समय भेर सामने हैं उनमें वह लिखता है: ‘जेनीका स्थाय बेहतर है और तुम (हेलेन और मैं) को भय खानेकी जल्लत नहीं।’ जिस पत्रमें मूरने उपरोक्त बात लिखी थी, उसके एक घंटा बाद जेनीके मरनेका तार हमें मिला। मैं तुरन्त बेट्टनोर गई।

“अपने जीवनमें मैंने बहुत से शोकपूर्ण घंटोंका सामना किया है, लेकिन कोई इस जैसा शोकपूर्ण नहीं था। मैं महसूस कर रही थी, कि मैं अपने पिताके पास मृत्युदंड लिये जा रही हूँ। उत्तुकतापूर्ण लम्ही यात्रामें मैं अपने दिमागको वह सोचनेमें परेशान कर रही थी, कि कैसे इस खबरको उसे ढूँ। मुझे इसे कहनेकी जल्लत नहीं थी, चेहरेने भेर खोल दिया—मूरने तुरन्त कहा ‘हमारी जेनी मर गई।’ और इसके बाद उसने मुझसे तुरन्त पेरिस जाकर बन्धोंकी सहायता करनेके लिये कहा। मैं उसके साथ रहना चाहती थी—लेकिन वह किसी बातको मुननेके लिये तैयार नहीं था। मैं सुशिक्लसे आधघंटा बेट्टनरमें रह पाई थी, पिर तुरन्त पेरिसके लिये रखाना होनेके बास्ते लन्दनकी शोक-पूर्ण यात्राके लिये तैयार हो गई। मूरने जो कुछ बन्धोंके बारेमें कहा था, मैंने वह किया।

“मैं अपनी बहाँकी यात्राके बारेमें नहीं कहूँगी—मैं काँपते हृदयसे उस समय

की याद भर कर सकती हूँ—वह मानसिक यातना, वह सास्त—और कुछ उसके बारेमें नहीं। यही पर्याप्त है—मैं लौट आई और मूर घर लौटा मरनेके लिये।...

“अब, चूंकि मूरके दक्षिणमें प्रवासके बारेमें कुछ और बात तुम चाहते हो। हमने—मैं और वह—१८८२ ई० के आरम्भमें कुछ सप्ताह जेनीके साथ अरजांतीमें बिताये। मार्च और अप्रैलमें मूर अल्जियरमें था, मईमें मोतेकार्ल, नीस, कानेसमें। जूनके अन्त तथा सारी जुलाई वह फिर जेनीके साथ था, उस समय लेनचेन भी अरजांतीमें थी। अरजांतीसे लौराके साथ मूर स्वीजलैंड, वेवे आदि गया। सितम्बरके अन्त या अक्टूबरके आरम्भमें वह इंगलैंड लौटा और फिर तुरन्त ही वेन्टनोर गया, जहाँ जानी और मैं उसके पास गये।

“और अब दूसरे बच्चोंके बारेमें तुम्हारे प्रश्नोंके लिये—हमारा नन्हा एडगर (मूर) १८७४ ई० में पैदा हुआ था—पर मैं इसे निश्चयपूर्वक नहीं कह सकती—और वह १८८५ ई० के अन्तमें मरा। नन्हा फॉक हाइनरिख ५ नवम्बर १८८६ को पैदा हुआ और वह जब मरा, तो दो वर्षका था। मेरी नन्ही बहन फ्रांसिस्का १८८१ ई० में पैदा हुई, और करीब ११ महीनेकी हो शैशवमें ही मर गई।”

प्रिया पत्नीके मरने (२ दिसम्बर १८८१) के बाद मार्क्स (मृत्यु १४ मार्च १८८३) के १५ महीनोंके समयमें फिर दोनों मित्र अधिकतर एक दूसरेसे अलग रहने का एक फायदा यह हुआ, कि अब फिर उसके बीचमें पहलोकी तरह पत्रव्यवहार शुरू हो गया, जिसमें जीवनकी दुःखपूर्ण घडियोंका मार्मिक वर्णन मिलता है और पता लगता है कि इस शक्तिशाली पुरुषको भी, सभी मनुष्योंके भाग्यमें जीवनका जो निष्ठुर विघटन बदा है, उसका सामना करना पड़ा। इस समय भी अभी मार्क्सको अपनी बाकी शक्ति अपने जीवन-उद्देश्यको पूरा करनेमें लगानेका ख्याल था। १५ दिसम्बर १८८१ को उन्होंने सोर्गेंको लिखा था : “पिछली बीमारीसे मैं डबल लुंब हो निकला हूँ : मानसिक तौरसे लुंब अपनी पत्नीके मरनेके कारण और शारीरिक तौरसे इस-

लिये कि बीमारीके कारणने फुफ्फुस-शोथ और स्वास्थनालीकी बढ़ी हुई खरखरा-हटके मेरे साथ लगा दिया। अपने स्वास्थ्यको फिरसे प्राप्त करनेके प्रयत्नमें मुझे अपने समयका कुछ भाग हाथसे खोना पड़ेगा।” लेकिन, जो समय मार्क्सको देना पड़ा, वह जीवनके अन्तिम क्षणों तक का था। वह फिर अपने स्वास्थ्यका सुधार नहीं कर सके।

सितम्बर (१८८२ ई०) में जब वह गेनेवा-सरोवरसे लौटे थे, तो काफी मजबूत मालूम होते थे और अक्सर हेप्टाइट्डहीथ ठहलने जाया करते थे। वह उनके घरसे ३०० फुट ऊँचा था, तो भी चलनेमें उन्हें भारी थकावट नहीं मालूम होती थी। अब उन्होंने फिर अपने काममें लगनेका इरादा किया। डाक्टरोंने उन्हें जांडोमें लन्दनमें रहनेसे मना कर दिक्षिणी समुद्रतट पर रहनेकी अनुमति दी थी। नवम्बरमें लन्दनकी धुन्द बढ़ने लगी, तो वह फिर वेन्टनर गये, लेकिन वहाँ भी बदली और धुन्द उली तरहकी मिली, जैसी कि पिछले जांडोमें अल्जियर और मोतेकालोंमें मिली थी। फिर उन्हें सर्दी लग गई, ताजी हवामें स्वास्थ्यकर च्छलकदमी करनेकी जगह वह अपने घरमें रहकर अधिक और अधिक कमजोर होनेके लिये मजबूर हुये। अब लिखने-पढ़नेका कुछ भी काम करना असम्भव था, यद्यपि साइन्सकी प्रत्येक प्रगतिकी ओर उनका ध्यान लगा रहता था। जब फ्रांसमें तरुण कमकरोंकी पार्टीमें फिर हलचल शुरू हुई, तो वह अत्यन्त असंतुष्ट हो अपने दोनों दामादोंके बारेमें कह उठे : “लांबे चरम प्रूनवादी और लाकार्ग चरम ब्रकुनिनिस्ट। शैतान उन्हें ले जाये।” इसी समय मार्क्सके मुँहसे वह बात्य निकला था, जिसे समाजवादके विपीणण दोहराया करते हैं : ‘जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, निश्चय ही मैं मार्क्सवादी नहीं हूँ।’ यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि मार्क्स किसी तरहके रुदिवादके विरुद्ध थे, और वह लकीरका फकीर किसीको देखना नहीं चाहता था।

११ जनवरी १८८३ को अपनी ज्येष्ठा पुत्री जेनीके मरनेका जबरदस्त प्रहार मार्क्सके हृदयपर पड़ा। उसके साथ ही सर्दी-खाँसी और कंठनालीकी अस्थी-पीड़ा आरंभ हुई। अब उन्हें कुछ भी निगलना मुश्किल हो गया। “भीषणसे भीषण पीड़ाओंको जो वेपर्वाहीसे सहन करते रहे, अब उन्होंने अधिक ठोक

आहारके लेनेका प्रयत्न फिर न करके दूध पीना अच्छा समझा, जिसे कि उह तमाम जीवनमें नापसन्द करते रहे।” फर्वरीमें एक फेफड़ेमें गाँठ निकली। कोई दबा अब काम नहीं कर रही थी—पन्द्रह महीनोंसे दबाइयाँ लेते-लेते अब शरीरपर उनका ग्रभाव नहीं पड़ रहा था। दबाओंने बल्कि भूखको बन्द और पाचनशक्तिको कम कर दिया। वह दिन-दिन घुलते जा रहे थे, लेकिन डाक्टर निराश नहीं थे, क्योंकि पीछे गलेकी शिकायत और खांसी दूर होनेसे निगलना आसान हो गया। लेकिन, यह केवल ऊपरी दिखावा था। मार्क्स के पास मृत्यु ढिंढोरा पीटकर नहीं आना चाहती थी। १४ मार्च १८८३ के अपराह्नमें चुपचाप आरामकुर्सीपर बैठे मार्क्सको बिना किसी पीड़ाके मृत्युने अपने कोमल हाथोंसे अनन्त निद्रामें सुला दिया।

एंगेल्सको अपने आजीवन बल्कुके प्रति जितना प्रेम था, उसके कारण उन्हें जो दुःख हुआ, उसे आसानीसे समझा जा सकता है। बुद्धके शब्दोंमें वह भी कह सकते थे “कुतोथ लभा” (वह—मृत्युसे छुटकारा—कहाँ मिलनेवाला है)। एंगेल्सने कहा था : “डाक्टरोंका कौशल शायद एक असहाय व्यक्तिके जीवनको एकाएक नहीं, बल्कि हंच-हंच करके मरनेके लिये, तथा डाक्टरी पेशेके यशको बढ़ाते कुछ और सालों तक घसीटकर ले जाना सम्भव कर देता। लेकिन, हमारे मार्क्स कभी इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। अपने सामने इतनी मात्रामें अपूर्ण कामको देखना, उसे समाप्त करनेकी तरसानेवाली इच्छाका बर्दाश्त करना तथा यह समझना कि मैं कभी उसे नहीं कर सकूँगा—यह उससे हजार गुना कड़वा होता, जितना कि कोमल मृत्युने उन्हें ले कर किया, एपिकुर्स्की तरह वह कहा करते थे : ‘मरनेवालेके लिये मृत्यु कोई दुःखकी बात नहीं, बल्कि उनके लिये दुःखकी बात है जो बच रहते हैं।’ इस महान् प्रतिभाको डाक्टरी विद्याके भारी यश...के लिये छुलानेसे हजार गुना बेहतर है, जो कि हम उन्हे उस कब्र-की ओर ले जा रहे हैं, जहाँ उनकी पली पड़ी है।’

इस प्रकार १४ मार्च १८८३ को मेट्लैंड पार्कमें मार्क्स लड़कीके शब्दोंमें : . तुम जानते हो कि मैट्लैंड पार्कमें अपने शयनकक्षसे अव्ययनकक्षमें गये, आरामकुर्सीपर बैठे और शान्तिके साथ सो गये।

“जेनरल (एंगेल्स) ने उस कुर्सीको जीवनभर अपने पास रखा, फिर अब वह मेरे पास है ।”

१५ मार्च १८८३ को एंगेल्सने अपने अमेरिकन मित्र सोसायटी को लिखा था :

“कल अपराह्नमें ढाई बजे उनसे मिलनेके सबसे अच्छे समय में उन्हें देखने गया । सबकी आँखोंमें आँसू थे, जान पड़ता था प्रलय आं गई । मैंने पूछताल करते बातकी सच्चाई तक पहुँचनेकी कोशिश की, जिसमें कि सान्त्वना दे सकूँ । हल्कासा रक्खाव हुआ था, और एकाएक सर्वनाश आ मौजूद हुआ । हमारी भली पुरानी लेना—जिसने उससे कहीं बेहतर सेवा-मुश्किल की, जितनी कि माँ अपने बच्चेके लिये करती है—ऊपर गई और फिर नीचे आई । ‘वह अर्धनिदित है’—उसने कहा और यह भी कि ‘मैं ऊपर जा सकता हूँ ।’ जब हम भीतर गये, तो वहाँ लेटे पड़े थे, सोये थे फिर कभी न जागनेके लिये । नाड़ी और साँस बन्द हो गई थीं, इन दो मिनटोंके भीतर बिना पीड़ाके शान्तिपूर्वक वह अनंतनिद्रामें चले गये ।...मानवताके पास अब एक सिर कम है, लेकिन सचमुच आजका वह अत्यन्त महत्वपूर्ण सिर था । मजदूर-बर्गका आनंदोलन अपने मार्क्सका अनुसरण करेगा, लेकिन उसका वह केन्द्रविन्दु चला गया, जिसकी ओर निर्णयिक लक्ष्योंमें अपनी इच्छासे फ्रेंच, रूसी, अमेरिकन और जर्मन ऐसी स्पष्ट निर्भान्त सलाहको पानेके लिये सदा आते थे, जिसे केवल एक प्रतिभा और पूर्ण अधिकार रखनेवाला ही दे सकता था ।”

६. अन्तिम विश्वास-स्थान

मृत्युके तीन दिन बाद १७ मार्च सनीचर के दिन (१८८३ ई०) कार्ल मार्क्सको उनकी सती पल्नी जेनीकी कब्रमें लिया दिया गया । एक ओर यह महान् प्रतिभा दुनियासे बिदाई ले रही थी, दूसरी ओर उसी समय उसका वास्तविक उत्तराधिकारी १३ वर्षका हो रहा था, यद्यपि अभी उसे यह नहीं मालूम था, कि मार्क्सकी ज्योति उसके हृदय और मस्तिष्कमें समाने जा रही है । मार्क्स के कामको पूर्णता तक पहुँचाना उसीके हाथमें बदा था । उसीने मार्क्सके आदर्शोंको दुनियाके एक छठे हिस्सेपर सजीवरूपसे सफलतापूर्वक स्थापित किया,

किन्तु इस दूसरी महान् प्रतिभा (लेनिन) के बारेमे हम अन्यत्र कहनेवाले हैं। # मार्क्सीकी इच्छाके अनुसार परिवारने इस अन्त्येष्टि-क्रियाको बहुत सीधे-सादे-दंगसे किया। कब्रिस्तानमें मार्क्सीके थोड़ेसे मित्र पहुँचे जिनमें एंगेल्स, लेस्लेर, लोखनेर (कम्युनिस्ट लीगके जमानेके उनके दोस्त), फ्राससे दोनों दामाद लाफार्ग और लाग्वे, तथा जर्मनीसे उनके शिष्य लीबन्नेहट उपस्थित थे। साइन्सके दो प्रमुख अग्रदूत रसायनशास्त्री शोरलेमेर और प्राणिशास्त्री रेलेकेस्टर मौजूद थे। एंगेल्सने अंग्रेजीमें विदाईका भाषण दिया, जो कि उसी तरह मानवताकी एक मधुर थाती और पथ-ग्रदर्शनके लिये भारी सहारा है, जिस तरह लेनिनकी कब्रपर स्तालिन के मुँहसे निकले शब्द :

१४ मार्चके अपराह्नमें पैने ३ बजे जीवित महानतम चिन्तकने चिन्तन छोड़ दिया। दो मिनट अकेला रहनेके बाद जब हम भीतर गये, तो देखा, कि वह कुर्सीपर आरामसे, किन्तु सदाके लिये सोये हैं।

इस द्वितीया मात्राकन करना असम्भव है, जो कि इस पुरुषकी मृत्युके साथ यूरोप और अमेरिकाके लड़ाके सर्वहारा और ऐतिहासिक विज्ञानने उठाया है। जल्दी ही हम उस विच्छेद (मेदन) को काफी अनुभव करेंगे, जिसे कि इस जबर्दस्त पुरुषकी मृत्युने पैदा किया है।

“जैसे डारविनने प्रकृतिमें विकासके नियमके कानूनका आविष्कार किया, उसी तरह मार्क्सने मानव-इतिहासमें विकासके कानूनका आविष्कार किया : यह सीधा-सादा तथ्य, जो कि पहले बादोके जङ्गलमें छिपा हुआ था—कि मानव प्राणीको सबसे पहले खाने, पीने, वास और पहननेकी ज़रूरत होती है, इसके पहले कि उसका ध्यान राजनीति, साइन्स, कला और धर्मकी ओर जाये। इसी-लिये जीवनके नजदीकके भौतिक साधनोंका उत्पादन अतएव लोगोंके आर्थिक विकासकी सीढ़ी या काल वह आधार है, जिसके ऊपर राज्य-स्थायें, कानूनी सिद्धान्त, कला और ज्ञानोंके धार्मिक विचारभी विकसित हुये हैं।

“लेकिन, इतना ही नहीं, मार्क्सने आजकलके पूँजीवादी उत्पादनके ढग,

“लेनिन”, जिसे लिखा जा चुका है।

उससे उत्पादन और बूज्वा समाज-व्यवस्था उत्पादन के विकासके विशेष कानूनका आविष्कार किया। अतिरिक्त-मूल्यके आविष्कारके साथ ही उन्होंने उस अन्धकारपर एकाएक प्रकाश ढाला, जिसमें कि बूज्वा और समाजवादी दोनों ही प्रकारके दूसरे अर्थशास्त्री भटक रहे थे।

“इस तरहके दो आविष्कार किसी एक जीवनके लिये पर्याप्त थे। सचमुच वह सौभाग्यशाली है, जो कि इनमेंसे एकको भी ढूँढ़ निकालनेमें सफल हो। लेकिन मार्क्सने जिस किसी द्वेषमें अनुसन्धान किया (ऐसे द्वेष बहुत थे और उनमेंसे कहीं भी मार्क्सका अनुसन्धान पल्लवग्राही नहीं था।) उन्होंने स्वतन्त्र आविष्कार किये—गणितके द्वेषमें भी।

“वह एक साइन्सके पुरुष थे, लेकिन इससे ही उनका व्यक्तित्व पूरा नहीं होता। मार्क्सके लिये साइन्स एक सृजनात्मक ऐतिहासिक और क्रांतिकारी शक्ति थी। सैद्धान्तिक साइन्सके इस या उस द्वेषमें ऐसे नये आविष्कारसे उनको आनन्द जरूर प्राप्त होता था, जिसके व्यावहारिक फल शायद अभी दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। किन्तु और भी बड़ा नया आविष्कार था, जो एक क्रान्तिकारी दंगरसे औद्योगिक विकासको, सारे ऐतिहासिक विकासको लेरे, तुरन्त प्रभावित करता है। उदाहरणार्थ बिजली साइन्सके द्वेषमें आविष्कारोंके विकास और अन्तिम समयमें मार्सेल देपरेजके कामको वह बहुत दिलचस्पीके साथ देख रहे थे।

“चूंकि सबसे ऊपर मार्क्स एक क्रांतिकारी थे। जीवनमें उनका महान् लक्ष्य था पैंजीवादी समाज और उसके द्वारा पैदा की गई राज्य-संस्थाओंको उलट फेंकनेमें सहयोग देना, और उस आधुनिक सर्वदाराकी मुक्तिके प्रयत्नमें सहयोग देना, जिसके लिये उन्होंने पहले-पहल उसकी मुक्तिके लिये आवश्यक दिघियोंका ज्ञान प्रदान किया। इस संघर्षमें उनका असली रूप दिखाई पड़ता था। वह वहे उत्साह तथा ऐसी सफलताके साथ लड़ते रहे, जो कि बहुत कमको मिली है—पहले १८४२ ई० में “राइनिशो जाइटुंग”, पेरिसमें १८४४ ई० में “फोरवार्ड”, १८४७ ई० में “ड्वाशे-बूजेलेर जाइटुंग”, १८४८-४९ ई० में “नोवे राइनिशो जाइटुंग”, १८५२-६१ ई० में “न्यूयार्क ट्रिन्यून”—और फिर

बहुत सी खंडनात्मक कृतियाँ, पेरिस, ब्रूशेल्स और लन्दनमें संगठन-सम्बन्धी काम और अन्तमें इन सबसे बढ़कर महान् इन्टर्नेशनल कम्कार-एसोसियेशन सचमुच यही अकेला जीवनका अभिमान करने लायक काम होता, चाहे उसके निर्माताने और कुछ भी नहीं किया होता ।

“और इसीलिये मार्क्स अपने युगके सबसे अधिक वृण्ठि और अत्यधिक गाली पानेवाले पुरुष थे । निरकुश और गणतंत्री दोनों प्रकारकी सरकारोंने उन्हें अपने देशसे निकाल बाहर किया, टोरी और चरम जनतात्रिक बूज्वा भी उन्हें कलंकित करनेके अभियानमें होड लगाये रहे । उन्होंने इस सबको मकड़ी के जालेकी तरह एक ओर बुहार दिया, उपेक्षित किया । और मजबूर होनेपर ही जबाब दिया । वह साइबेरियन खानोसे यूरोप होते अमेरिकाके कलिफोर्नियाके तट तक करोड़ों क्रातिकारी कम्कारों द्वारा सम्मानित स्नेहपात्र हो उन्हें शोकाकुल करते मरे । मैं यह कहनेकी हिम्मत रखता हूँ, कि यद्यपि उनके बहुतसे विरोधी थे, लेकिन वैयक्तिक शत्रु मुश्किलसे कोई था ।

“उनका नाम शताब्दियों तक जीता रहेगा, और उसी तरह उनकी कृतियाँ भी” । मार्क्सकी समाधि लन्दनके हाईगेटकी कब्रोंके जंगलमें है, जिसका पता लगाना आसान काम नहीं है । १६३२ ई० में इन पक्षियोंके लेखकने मानवता-के उस परम पुनीत तीर्थकी यात्रा करते हुये निम्न पंक्तियोंको लिखा था :

“हे नवम्बरको श्री एलिस मेरे साथ हुये । ऋषि मार्क्सकी समाधि देखने जाना था । टैक्सी करके हम लोग हाईगेटके उस कब्रिस्तानपर चले, जहाँ संसारका वह महान् उद्घारक और तत्ववेत्ता आखिरी नींद ले रहा है । जानेपर मालूम हुआ, कि वहाँ इस नामके दो कब्रिस्तान हैं—एक रोमन कैथलिकोंके लिये और दूसरा दूसरोंके लिये । रोमन कैथलिक कब्रिस्तानमें भला उस धोर नास्तिकों कहाँ जगह मिल सकती थी ? हम लोग दूसरे कब्रिस्तानकी ओर गये । फाटकपर फूल बिक रहे थे । हम तो देवताके स्थानपर जा रहे थे, इसलिये श्री एलिससे कहा कि फूल ले लीजिये । कब्रिस्तानके सिपाहीसे पूछा । वह उस त्राणकर्ताकी कब्रसे वाकिफ नहीं था । दूसरे (आदमी) ने बतलाया—मैं जानता हूँ । योड़ी दरमें छोटी-छोटी (यानी गरीबोंकी) कब्रोंको पारकर हम उस कब्रके

सामने पहुँच गये। गरीबीके उद्धारको गरीबोंके बीच ही सोना चाहिये, और सो भी एक गरीब ही गड्ढेमें। आस-पासकी कब्रोंसे इतना ही फर्क है, कि ऐसिरहाने किसीने काँच जड़े गौखेमें कुछ नकली फूल और शायद लाल भंडा रख दिया है। इसी चार हाथ लंबी दो हाथ चौड़ी जमीनके नीचे—जिसके ऊपरी भागमें सिर्फ गच्छ की हुई चौकोर मेखला मात्र है—कार्ल मार्क्स, उनकी खीं, उनका नाती एक और...चार प्राणी लेटे हुये हैं। गरीबोंके हितके लिये अपने जीवनमें वह यातनायें सहता रहा, दरबदर फिरता रहा और आज वह ऐसी गुमनाम जगहमें सोया पड़ा है, जबकि मनुष्य जातिके एक पंचमांशने उसको अपना गुरु मान लिया है, और बाकी जगहोंमें भी यदि उसकी दबाको समझकर पूछा जाय, तो तीन-चौथाई लोग उसीके होंगे।”

लीबकनेरट्टने आजसे आधी शताब्दी पहले लिखा था :

“हम समाजवादी-जनतांत्रिकोंके पास न सन्त हैं और न सन्तोंकी समाधियाँ, क्षेकिन करोड़ों मानव श्रद्धा और कृतशताके साथ उस पुरुषकी ओर देखते हैं, जो कि लन्दनके उत्तरके इस क्षितिस्तानके भीतर विश्राम कर रहा है। आजसे एक हजार वर्ष बाद—उस समय जब कि मजदूर वर्गकी मुक्तिके प्रयत्नके लिये जिस वर्वरता और संकीर्ण हृदयताका मुकाबिला करना पड़ रहा है, अतीतकी अविश्वसनीय कथा बन जायेगी—स्वतन्त्र और भद्र मानव उस समय भी नंगे सिर इस समाधिके पास खड़े होकर अपने बच्चोंको कहेंगे : ‘यहाँ सोया है कार्ल मार्क्स !’

मार्क्सके महान् जीवनसे इतिहासमें यदि दिमाग और विशाल हृदयतामें किसीकी कुछ तुलना की जा सकती है, तो वह बुद्ध ही हो सकते हैं। उनके मृत्युस्थानके बारेमें भी कहा गया था : “श्रद्धालु कुलपुत्रके लिये यह...स्थान दर्शनीय...है।...श्रद्धालु यहाँ...आवेंगे दर्शनार्थ।”

समाधिके ऊपर संगमरमरकी पट्टीपर निम्न अभिलेख उक्तीर्ण है :

“जेनी फान वेस्टफालेन

प्रिया पत्नी

कार्ल मार्क्सकी

जन्म १२ फरवरी १८१४

मृत्यु २ दिसम्बर १८८१

और कार्ल मार्क्स

जन्म ५ मई १८१८, मृत्यु १४ मार्च १८८३

और हेरी लांग्वे

उनका नाती

जन्म ४ जुलाई १८७८, मृत्यु २० मार्च १८८३

और हेलेन डेमुथ

जन्म १ जनवरी १८२३, मृत्यु ४ नवंबर १८६०”

७. हेलेन डेमुथ

हेलेन डेमुथके रूपमें सर्वहारा साकार बनकर मार्क्सके सामने बना रहा।

हेलेन जिसे लेनचेनके नामसे भी पुकारा जाता था, आयुमें मार्क्ससे पॉच वर्ष जेनी वेस्टफालेनसे नौ वर्ष छोटी थी। वह एक किसानकी लड़की थी और जेनी के मार्क्ससे व्याह करनेसे पहले ही छोटी उमरमें ही वेस्टफालेन सामन्त-परिवारों में नौकरानी बनकर आई। हेलेनका जेनीके साथ बड़ा प्रेम हो गया था। व्याहके बाद वह फ्राउ मार्क्सको छोड़नेके लिये तैयार नहीं थी। वह जेनीके साथ मार्क्सके परिवारमें चली आई। उसके बादसे आजीवन वह मार्क्स परिवारका एक व्यक्ति बनकर रही और अपने सर्वस्वत्यागमें वह सामन्ती युगके किसी अत्यन्त त्यागभूर्ति त्वामिभक्त ली से भी बढ़कर थी। जब परिवार पेट-भर खाता, तो हेलेन भी तृप्त रहती थी। जब दाने-दानेके लाले पड़ते, तो वह भी कभी शिकायत नहीं करती। घरकी वह नौकरानी नहीं, बल्कि परिवारकी माता और प्रवन्धिका, रसोईदारिन, घरकी सेविका थी। वह बच्चोंको कपड़ा पहनाती और उनके लिये फ्राउ मार्क्सकी सहायतासे कपड़ा सीती। वह यहकी चौकीदारिन थी और साथ ही उसकी मालकिन भी। मार्क्सके बच्चे उसे माँ-की तरह प्यार करते थे, और वह भी अपने प्रेमके कारण उनके ऊपर माँ जैसा

प्रभाव रखती थी। मार्क्स और उनकी पत्नी दोनों उसके साथ अपने प्रिय मित्रकी तरह बर्ताव करते थे। मार्क्स हेलेनके साथ शतरंज खेला करते और कितनी ही बार इस किसान-पुत्रीसे बुरी तौरसे हारते। हेलेनका परिवारके प्रति अन्धा-पक्षपात था—वहाँ जो कुछ होता वह सब ठीक था, भली बात छोड़कर वहाँ कोई दूसरी बात नहीं की जा सकती। मार्क्सकी जरा भी आलोचना हुई कि भिड़का छुत्ता छू दिया। जिन लोगोंका मार्क्स-परिवारके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था, उसके लिये हेलेनका हृदय सदा स्थागतके बास्ते तैयार था। मार्क्स और उनकी पत्नीके मरनेके बाद वह एंगेल्सके पास चली गई, तश्याइसे ही उसका एंगेल्सके साथ परिचय था और मार्क्स-परिवारकी तरह ही एंगेल्सके साथ उसका प्रेम था।

लीब्रेकनेल्सने लेनचेन (हेलेन) के बारमें लिखा है : “जबसे मार्क्स-परिवार स्थापित हुआ, तबसे ही लेनचेन मार्क्सकी, एक लड़कीके शब्दोंमें सर्व-श्रेष्ठ अर्थोंमें धरकी आत्मा, सभी कामोंकी करनहारी बन गई। क्या कोई भी ऐसी चीज़ थी, जो उसे न करना पड़ता हो ? क्या ऐसी कोई चीज़ थी, जिसे वह आनन्दपूर्णक न करती हो ? इसके लिये मैं उसकी उन अत्यन्त नापसन्दको भी करनेके लिये मजबूर उन बहुत सी रहस्यमय यात्राओंकी याद दिलाऊँगा, जोकि वह हितकारी, तीन पीतलकी घंटियोंकाले “चचा” के पास जानेके लिये करती थी। वह सदा प्रसन्नमन हँसती और सहायता करनेके लिये तैयार रहती। यही नहीं वह कुछ भी हो जाती थी, और मूरके शत्रु उसे बड़ी भयंकर वृणाकी दृष्टिसे देखते थे।

“अगर फ्राउ मार्क्स स्वस्थ न होती, तो लेनचेन माँकी जगह काम करती— दूसरे समयोंमें भी बच्चोंके लिये वह दूसरी माँ थी और उसका बड़ा ही मजबूत और दृढ़ मनोव्रत था, जिसका होना वह आवश्यक समझती थी।

“लेनचेन, जैसा कि हमने कहा, एक प्रकारसे अधिनायकताका बर्ताव करती थी। वरके सम्बन्धके बारमें ठीक तरहसे बतलानेके लिये मैं कह सकता हूँ : घरमें लेनचेन अधिनायक (डिक्टेटर) थी, फ्राउ मार्क्स शासक और मार्क्स मेमनेकी तरह इस अधिनायकताको शिरोधार्व करते थे। कहा जाता है,

आरने सेचककी आँखोमें कोई भी बड़ा आदमी नहीं है। निश्चय ही मार्कर्स भी लेनचेनकी आँखोमें दैसे ही थे। लेनचेनने उनके लिये अपनेको बलिदान कर दिया वह उनके, फ्राड मार्कर्स और प्रत्येक बच्चेके लिये आवश्यक तथा सम्भव होनेपर सौ बार कुर्बान हो सकती थी—सचमुच उसने ऐसा ही किया आरने जीवनको बलिदान दिया। किंतु मार्कर्स उसपर प्रभाव नहीं ढाल सकते थे। वह उनके सभी मूँडों और कमजोरियोको जानती थी और उन्हें अपनी कानी अँगुलीपर नचाती थी। मार्कर्सका मूढ़ किसी समय चाहे कितना ही चिङ्गिचिङ्गा हो, चाहे वह ऐसे तूफानी क्रोधमें पड़े हों, कि दूसरा हरेक आदमी उनसे अलग रहनेमें ही खेरियत समझता हो, लेकिन लेनचेन सीधे सिहकी माँदमें ज़ज़ी जाती। अगर वह गुरुर्ती, तो वह जबर्दस्ती लेबिटेकसके वाक्योंको उनके सामने पढ़ती और सिंह पालतू भेषना बन जाता।”

मार्कर्सकी पुत्री एलिनोरने लेनचेन बारेमें लिखा है : “हेलेन...मेरे माता-पिताके पास उनके विवाहसे तुरन्त बाद पेरिस जानेके पहले आई या पीछेकु यह मैं नहीं बतला सकती। मैं इतना ही जानती हूँ, कि मेरी नानीने इस तरण लड़कीको मेरी माँके पास यह कहकर भेजा कि सबसे बढ़िया चीज़ जो भेज़ सकती हूँ, वह मेरी ईमानदार प्रिय लेनचेन है। और ईमानदार प्रिय लेनचेन हमारे माता-पिताके साथ सदा बनी रही। कुछ समय बाद उसकी छोटी बहन मरियम भी आ गई।”

लीबनेल्टने लेनचेनके मार्कर्स और एंगेल्सकी कब्रके भीतर जगह पानेका चिक्क करते हुये लिखा है : “परिवारकी कब्रमें केवल मृत पुत्र और नातियोने ही स्थान नहाँ, बल्कि उस भक्त लेनचेन, हेलेन, डेमुथने भी स्थान पाया, जो कि खूनका सम्बन्ध न होनेपर भी परिवारकी थी। उसे परिवारकी कब्रमें रखना होगा, इसका निर्णय फ्राड मार्कर्सने ही कर लिया था, जिसे उनके बाद, मार्कर्सने भी स्वीकार किया। एंगेल्स और एकहार्टने मिलकर भक्त लेनचेनके प्रति इस कर्तव्यको पूरा किया। . .” लीबनेल्टके माँगनेपर एलिनोरने अपने माता-पिता के बारेमें लिखने हुये कहा था : “लेनचेनको न भूलना !” इसपर लीबनेल्ट लिखता है : “मैं लेनचेनको नहीं भूला, उसे कभी नहीं भूल सकता। क्या वह

सचमुच मेरे लिये चालीस सालों तक मित्र नहीं थी ? क्या लन्दनके शरणार्थी दिनोंमें सचमुच अक्सर वह मेरे लिये 'भाग्य' नहीं बनी ? कितनी बार उसने मेरा पाकेट खाली रहनेपर मुझे ६ पैन्स देकर नहीं सहायता की, यह ऐसे समय जब कि मार्क्सके परिवारकी स्थिति बहुत हीन नहीं होती, यदि वह हीन होती तो लेनचेनको कुछ मिलनेवाला नहीं था। कितनी ही बार जबकि मेरी दर्जोंकी कला प्रथापत नहीं होती तो वह मेरे कुछ अत्यन्त आवश्यक कपड़ोंको—जिन्हें उस समय आर्थिक कठिनाइयोंके कारण नया बनाने की कोई सम्भावना नहीं होती—वह बड़े कला पूर्ण ढंगसे रफू करके कुछ सप्ताह और पहनने लायक नहा देती।

“जब मैंने लेनचेनको पहले-पहल देखा, उस समय वह २७ वर्षकी थी। यद्यपि उसे सुन्दरी नहीं कहा जा सकता, तो भी वह बहुत आकर्षक चेहरेवाली, हट्टी-कट्टी तथा प्रियदर्शना थी। उसके लिये प्रेमियोंकी कमी नहीं थी। उसे बार-बार व्याहका अच्छा अवसर मिला, किन्तु बिना किसी तरह की शपथ लिये उसके ईमानदार हृदयके बास्ते साधारण सी बात थी, कि वह मूर, फ्राउ मार्क्स और बच्चोंके साथ बनी रहे। वह बनी रही—उसकी जबानीके वर्ष बीत गये। अभाव और दरिद्रता, सौमाय और दौर्माय में वह बनी रही। उसका पहला विश्राम उस समय आया, जबकि मृत्युने उस छी और पुरुषको मार गिराया, जिन के साथ उसने अपने भाग्यको जोड़ दिया था। उसने एंगेलसके यहाँ विश्राम पाया और उसके यहाँ ही अन्त तक अपनेको बिल्कुल भूलकर वह मरी। अब वह परिवारकी कब्रमें आराम ले रही है।

८. मार्क्सके सम्बन्धमें

मार्क्सके मौलिक सिद्धान्तों—दार्शनिक भौतिकवाद, इतिहासकी भौतिक व्याख्या, आर्थिक सिद्धान्त—मूल्य, अतिरिक्त-मूल्य, समाजवाद और चर्ग-संघर्षका बहुत संक्षिप्त और सुन्दर विवेचन उनके उत्तराधिकारी लेनिनने किया है, जिसे हम “लेनिन” में देंगे। अपनी दोनों वेणियों जेनी और लौराके साथ पहेलीके रूपमें मार्क्स निम्न प्रश्नोत्तर कराते थे :

तुम्हारा प्रिय शुण—सादगी
 मनुष्यमें तुम्हारा प्रिय शुण—शक्ति (बल) ।
 खोमे तुम्हारा प्रिय शुण—निर्बलता ।
 तुम्हारी सुख्य विशेषता—लक्ष्यके प्रति एकात् भक्ति ।
 सुखके बारेमें तुम्हारा विचार—लडना ।
 दुःखके बारेमें तुम्हारा विचार—आत्मसमर्पण ।
 अत्यन्त त्याज्य तुम्हारे लिये दुर्गुण—द्वुदता ।
 सबसे बुरा जिस दुर्गुणको तुम मानती—दास-मनोबृत्त ।
 तुम्हारी धृणाकी वस्तु—मार्टिन ट्यर ।
 प्रिय व्यवसाय—किताबका कीडा बनना ।
 कवि—शेषसंपियर, एशिलस, गोयथे ।
 गद्य-लेखक—दिद्रेरो ।
 नायक—स्पार्टेक्स, केपलेर ।
 नायिका—ग्रेशेन ।
 फूल—डेफनी ।
 रंग—लाल ।
 नाम—लौग, जेनी ।
 थाल—मछुली ।
 प्रिय सूत्र—कोई मानवोचित वात मेरे लिये पराई नहीं ।
 प्रिय आदर्श-वाक्य—हरेक चीजपर सन्देह करो ।

अध्याय २०

एंगेल्स (१८५०-६५ ई०)

१. योग्य सहकर्मी

एंगेल्सके बारेमें हम देख चुके हैं, कि वह मार्क्सके लिये एक प्राण दो शरीर जैसे थे। मार्क्सकी लड़कियाँ उन्हें द्वितीय पिता मानतीं और प्यारसे “जेनरल” कहकर पुकारतीं। वह मार्क्सके बहिश्चर प्राण थे। बहुत सालों तक जर्मनीमें दोनोंके नाम एक साथ लिये जाते थे और इसमें शक नहीं इतिहास-में सदा उनका नाम साथ-साथ लिया जायगा। जब एंगेल्सने मैन्चेस्टरसे १८७० ई० में विदाई ले लन्दनमें आकर रहनेका निश्चय प्रकट किया, तो मार्क्सके परिवारमें कई दिनों तक इसकी चर्चा रही और मार्क्स तो आगामनके अद्वितीय दिन बच्चोंकी तरह अधीर होकर एक-एक घड़ीकी प्रतीक्षा कर रहे थे। फिर वह शुभ घड़ी आई, दोनों मित्रोंने सारी रात चुरुट और शाराब पीने तथा बातें करनेमें बिता दी। तबसे १८८३ ई० में मृत्युके समय तक लन्दनमें रहते शायद ही कोई दिन बीतता, जबकि एक या दूसरेके घरमें दोनों न मिलते।

मार्क्स एंगेल्सकी रायको सबसे ज्यादा मानते। एंगेल्स उनके लिये सबसे योग्य सहकारी थे। एंगेल्स मानो उनके लिये सारी जनता थे। यदि एंगेल्सको उन्होंने मना लिया, तो सारी दुनिया मान लेगी—मार्क्सका यह विश्वास था। एंगेल्सकी रायको बदलकर अपनी बात मनवानेके लिये छोटी-छोटी बातोंके बास्ते, वह तथ्योंको ढूँढते कितनी ही जिल्दें पढ़ जाते। मार्क्सको अपने मित्रका भारी अभिमान था। लाप्पार्गने लिखा है : “उन्होंने अपने मित्र (एंगेल्स) के सभी नैतिक और बौद्धिक गुणोंको बड़ी प्रसन्नतासे दोहराया और मुझे एंगेल्सको दिखलानेके लिये मैन्चेस्टरकी एक विशेष यात्रा की। एंगेल्सके ज्ञान की भारी गम्भीरताकी वह बड़ी प्रशংসा करते थे और उनके साथ कोई दुर्घटना न हो जाये, इसके लिये वडे चिन्तित रहते थे। एक दिन मार्क्सने उनसे कहा—

“मैं सदा कौपता रहता हूँ। देशके आरपार पागलों जैसे घोड़ा दौड़ानेमें कहीं वह नीचे न गिर जाये।”

२. मैन्चेस्टरमें (१८५० ई०)

एंगेल्सके जीवनकी कुछ बातें हम पहले बतला चुके हैं। सक्रिय साहित्यिक और राजनीतिक जीवनसे अलग होकर अपने पिताके व्यवसायमें लग जानेके लिये एंगेल्सका मजबूर होना मार्क्सको आर्थिक सहायता देनेके ख्यालसे था। वह समझते थे, कि वैयक्तिक महत्वाकान्धाको दबाकर यदि मैं इस महान् तत्त्व-दर्शीको आर्थिक चिन्तासे मुक्त कर सकूँ, तो यह भेरे जीवनका सबसे बड़ा काम होगा। इसी ख्यालसे वह १८५० ई० में मैन्चेस्टर लौट गये और वहाँ अपने पिताकी एरमेन और एंगेल्स कपड़ा मिलमें कलर्कें तौरपर काम करने लगे। उसी साल दिसम्बरमें अपने बच्चेके मरनेपर एंगेल्सकी सहानुभूतिके पत्रका जवाब देते हुये जेनी मार्क्सने लिखा था :

“मेरा पति और हम सभी तुम्हारी अनुपस्थितिको बहुत महसूस करते हैं और अक्सर हमारे मनमें चाह होती है, कि तुम हमारे साथ होते। तो भी, मैं यह जानकर प्रसन्न हूँ, कि तुम चले गये और अब एक बड़े कपास-राजा बननेके रास्तेमें हो।...” एंगेल्सको अपने पिताके लिये अति उपयोगी बननेकी सलाह देते जेनीने फिर लिखा है : “अभीसे अपनी कल्पनामें तुम्हें ज्येष्ठ एंगेल्सके छोटे भागीदार फ्रेडरिक एंगेल्सके रूपमें देख रही हूँ, लेकिन सबसे अच्छी बात यह है, कि कपासके व्यापारी होते हुये भी तुम पुराने फिटज बने रहोगे।... और स्वतन्त्रताके पवित्र उद्देश्यसे मुँह नहीं मोड़ोगे।... बच्चे चचा एंगेल्सके बारेमें बहुत बड़बड़ाते रहते हैं, और छोटा टिल तुम्हारी सिखाई हुईं गीतको बहुत अच्छी तरह गाता है।...”

अगले बीस वर्षोंके लिये एंगेल्स मार्क्सकी आँखोंसे ओफल हो गये। दोनों मित्र कभी ही कभी कुछ समयके लिये मिलते। लेकिन, इससे इतिहासको एक बड़ा फायदा उन पत्रोंका यह हुआ, जो कि दोनोंके बीच प्रायः रोज ही आते-जाते रहते थे, जिनमें तात्कालिक जीवनकी कितनी ही बातोंके साथ-साथ

साहित्यिक, राजनीतिक, सांख्यिक तथा दूसरे विषयों पर भी विचार-विनिमय होता रहता था। जैसे ही अर्थशास्त्र, दर्शन या किसी और विषय पर कोई विचार एकके दिलमें आता, वह तुरन्त ही उसके बारेमें दूसरेको लिखकर उसकी राय पूछता। इस प्रकार विचारोंको स्पष्ट करनेमें उन्हें बड़ी सहायता मिलती।

मेन्चेस्टरमें पिताके मिलमें काम करते एंगेल्सने पढ़ने-लिखनेको छोड़ नहीं दिया, विशेष कर सैनिक इतिहास-और विज्ञानपर उनका अध्ययन बड़ी गम्भीरताके साथ होता रहा। प्राकृतिक विज्ञान और तुलनात्मक भाषाशास्त्र भी उनके दिलचस्प विषय थे। १८५२ के मार्चमें अपने रुसी भाषाके अध्ययनके बारेमें उन्होंने कम समय निकालनेकी शिकायत की : “मैंने रुसीको चौदह दिनों देखा-भाला और व्याकरण काफी अच्छा हो गया। दो या तीन महीने और देने पर मुझे आवश्यक शब्दावली मालूम हो जायगी और तब मैं कुछ दूसरी बात करना आरम्भ करूँगा। मुझे इस वर्ष स्लाव भाषाओंको अवश्य खतम कर देना है, और वह वस्तुतः उतनी अधिक कठिन नहीं है।...बकुनिन इसीलिये कुछ अधिक महत्वका बन गया है, क्योंकि दूसरा कोई रुसी नहीं जानता। पुरानी चूहत्तर-स्लावका चालको—कि पुरानी स्लाव सामूहिक सम्पत्ति-अधिकारको सम्बन्धमें परिवर्तित किया जा सकता है, और रुसी किसान जनजात कम्युनिस्ट समझे जाने चाहिये—फिर बड़े पैमानेपर फैलाया जायगा।

हम देख चुके हैं, कि इतालियन-युद्धके समय १८५४ ई० में एंगेल्सने “मेरो और राइन” नामक पुस्तिकाको बिना नामके प्रकाशित कराया था, जिसे मार्क्सने बहुत पसन्द किया था। इतालियन-युद्धकी समाप्तिके बाद एंगेल्सने सबाय, नाइस और राइन, पुस्तिका लिखी, फिर १८६४ ई० में “प्रशियन उनिक समस्या और जर्मन मजर पार्टी” के नामसे एक पुस्तिका लिखी।

३. पिताके स्थानपर (१८६० ई०)

१८६० के मार्चके अन्तमें एंगेल्सके पिता मर गये। १८६४ ई० के सितं भरमें अब वह पिताके फर्ममें पार्टनर (भागीदार) बन गये थे, जिसका अर्थ

या उनके ऊपर कामकी और जिम्मेवारी और समयकी और कमी हो गई । मई १८६० में ही मार्क्स को पत्र लिखते हुये एंगेल्सने कहा था : “मैं अपने सहभागी-के साथ कंट्राक्टो ऐसा कठिन बनाना चाहता हूँ, जिसमें वह खुशीसे मुझे छोड़ दे । लेकिन, वह नहीं हो सका । पार्टनर बन जानेसे, अब एंगेल्सकी आमदनी बढ़ गई थी, जो कि उस समय कम महत्वकी बात नहीं थी । लेकिन एंगेल्स अपने पत्रोंमें इस तरहके जीवनसे^१ बराबर अस्तोष प्रकट करते थे, जिससे मार्क्स भी सहमत थे, लेकिन वैसा करना शुनाह बेलज्जत नहीं था ।” उन्होंने एक पत्रमें लिखा था : “मैं किसी चीजकी उतनी चाह नहीं रखता, जितना कि इस सौर व्यापारसे छुट्टी पानेको, जो कि समयकी वरचादीके साथ-साथ मुझे पूर्णतया पूरा भ्रष्ट कर रहा है । बब तक इसमें हूँ, मैं किसी चीजके लिये भी उपयुक्त नहीं हूँ । खासकर जबसे मैं पार्टनर हो गया, तबसे और बहुत बुरा हो गया, क्योंकि जिम्मेवारियों आधिक बढ़ गई हैं । यदि आधिक आमदनीका ख्याल न होता, तो मैं फिर कल्कि होना पसन्द करता ।” लेकिन, जब-जब व्यवसायसे हटनेका ख्याल उनके दिमाग में आता, तब-तब उनके दिमागमें यह परेशानी भी उठ खड़ी होती, कि तब मार्क्सको आर्थिक सहायता कैसे पहुँचाऊँगा । कुछ वर्षों बाद उन्होंने व्यवसाय छोड़नेका निश्चय जरूर कर लिया था, लेकिन फिर वही चिन्ता उपस्थित हुई । इसीलिये वह चाहते थे कि व्यवसाय छोड़नेसे पहले मार्क्स अपने ग्रंथों द्वारा आर्थिक तौरसे स्वतन्त्र हो जायें ।

एंगेल्सके आत्मत्यागको मार्क्स अच्छी तरह समझते थे । अपने पत्रोंमें वह आशा करते रहते थे, कि एकाध सालमें अपने पैरोंपर खड़े होनेकी संभावना है, किन्तु साथ ही वह यह भी कहते थे : “तुम्हारे बिना मैं अपनी कृति (कपिटाल) को नहीं पूरा कर पाये होता । मैं तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मेरे दिमागपर पहाड़की तरहका एक भार सदा पड़ा रहता है : खासकर मेरे ही लिये तुमने अपनी अद्भुत प्रतिमा को बेकार होने और व्यापारमें मुर्चा खाने दिया ।”

१८६५ ई० में अपनी मारी आर्थिक कठिनाइयोंके बारेमें कहते हुये मार्क्सने लिखा था : “इन सभी स्थितियोंमें एक ही ख्याल मुझे सहारा देता है, वह यह

गे कि हम दोनों एक व्यवसायी कम्पनी हैं, जिसमें मैं सेह्तातक बातोंके लिये समय देता हूँ...”

एंगेल्स अपनी कमाईके पैसे से ही मार्क्सको सहायता नहीं करते थे, बल्कि १८५१ ई० के आरम्भसे “न्यूयार्क ड्रिव्यून” के लिये मार्क्सजो लेख लिखने लगे थे, और जिसका भी उद्देश्य या कुछ पैसे कमाना, उसमें भी एंगेल्स मदद करते थे। अभी मार्क्सका इंग्लिश भाषापर अधिकार नहीं था, इसलिये एंगेल्स उनके लेखोंका अनुवाद कर देते। जब समयाबाद या किसी और कारणसे मार्क्स लेख न लिख पाते, तो एंगेल्स त्वयं लेख लिख देते। अपने और कामोंके अतिरिक्त वह प्रति सप्ताह एक-दो ऐसे लेख लिख दिया करते थे, जो मार्क्सके हस्ताक्षरके साथ ड्रिव्यून में भेज दिये जाते। १८५७ के ६ अग्रेलको अन्ने एकलाई पुनर्जै भर जानेपर मार्क्सने लिखा था : “बेचारा मूशा (एडगर) अब नहीं रहा।...मैं कभी इसे नहीं भूलूँगा, जो कि तुम्हारी मित्रताने इस संयंकर समयमें हमारी सहायता की।...” एक सप्ताह बाद फिर मार्क्सने लिखा था : “जवसे प्रिय बच्चा मरा थर, हाँ, विलकुल अस्त-व्यस्त और निर्जन है।...यह कहना असंभव है, कि कैसे चारों ओर हम बच्चेके अभावको अनुभव करते हैं। मुझे सभी प्रकारके दुर्मियोंको खेलना पड़ा, लेकिन केवल अभी मैं समझ पाया हूँ, कि वास्तविक दुःख क्या है।...इन दिनों जिन संयंकर यातनाओंके भीतरसे मैं गुजरा हूँ, तुम्हारे और तुम्हारी मित्रताके ख्यालने मुझे सहारा दिया और आशा दिलाई कि हम अभी भी साथ मिलकर हुनियामें कुछ बौद्धिक काम कर सकेंगे।”

१८५७ ई० में एंगेल्सकी सख्त बीमारीकी खबर पाकर मार्क्सने लिखा था : “हमारे सभी दुर्मियोंके हेनेपर भी तुम्हें निर्णित रहना चाहिये, कि मैं और मेरी पत्नी तुम्हारे स्वास्थ्यकी अवस्थाके पिछले वर्षोंको सुनकर आपमीठीका बहुत कम ध्यान रखते हैं।” मार्क्सने एंगेल्सपर जोर दिया, कि स्वास्थ्यके लिये समृद्धके किनारे जाना चाहिये। एंगेल्सने भी अपने मित्रकी सलाह स्वीकार की। यद्यपि मार्क्सने “ड्रिव्यून” के लिये लेखका ख्याल छोड़ देनेके लिये कहा था, लेकिन समुद्रतटसे भी उन्होंने मार्क्सके पास लेख लिखकर भेजते अस्तोत्र प्रकट किया, कि मैंने तुम्हारे पास शराबका एक अच्छा बदल नहीं

मेज़ा। एंगेल्स शरावके प्रेमी थे। उनके तहखानामें वरावर अच्छी शरावकी बोतलें भरी रहतीं और उनको वरावर ध्यान रहता कि मार्क्सके घरमें चाहे और किसी चीज़का अभाव हो, लेकिन शरावकी कमी न होने पाये।

मार्क्स अपनी कृतियोंकी सबसे बड़ी कसौटी एंगेल्सको मानते। उनकी सलाहों से वरावर फायदा उठानेके लिये तैयार रहते थे। जून १८५६ को उन्होंने “राज-नीतिक अर्थशास्त्र आलोचना” के बारेमें एंगेल्सको लिखा था : “सबसे पहले यह कहने दो, कि मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि तुम प्रथम भागको पसन्द करते हो। इस विषय में केवल तुम्हारा ही फैसला मेरे लिये महत्व रखता है।” १८६७ के जूनमें “कपिटाल” की कुछ शीटोंको भेजते हुये मार्क्सने लिखा था : “मुझे विश्वास है कि इन चार शीटोंसे तुम संतुष्ट होगे। तुम्हारा सन्तोष...मेरे लिये बाकी सारी दुनियासे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। एंगेल्स अपनी राय हमें हों मिलानेके लिये नहीं दिया करते थे। उनकी आलोचना गुण-दोषको दिखलाते होती थी, जिसको पाकर मार्क्स अक्सर अपनी कृतियोंमें फेर-बदल करते थे।

“कपिटाल” की प्रथम जिल्दके अन्तिम प्रूफको देख लेनेके बाद १६ अगस्त १८६७ को मार्क्सने एंगेल्सको निम्न पत्र लिखा था :

“प्रिय फ्रेड, अन्तिम प्रूफ-शीटका संशोधन अभी-अभी समाप्त किया। परिशिष्ट—छोटे अक्षरोंमें तवा चार प्रूफ शीटोंके हैं।

“प्राक्कथनको कल संशोधित कर लौटा दिया। इस प्रकार यह जिल्द समाप्त हो गई। यह केवल तुम्हारी सहायता थी, जोकि यह संभव हो सका। मेरे लिये तुमने जो आत्मत्याग किया, उसके बिना मैं तीनों जिल्दोंके लिये विशाल कामको कमी नहीं पूरा कर सकता था। मैं कृतज्ञतापूर्ण हो तुम्हारा आर्द्धेंगन करता हूँ।

“शोधित प्रूफकी दो शीटें यहाँ साथ हैं।

“अत्यन्त सधन्यबाद पन्द्रह पौँड पाया।

“अभिनन्दन, मेरे प्रिय स्नेही मित्र—

“तुम्हारा, काठ मार्क्स।”

४. क्षणिक मनमुटाव (१८६२ ई०)

मार्क्स और एंगेल्सकी आजीवन घनिष्ठ मित्रताके लम्बे असेंमें सिर्फ़ एक ही बार (जनवरी १८६३) ऐसा अवसर आया, जबकि दोनोंके मनमें कुछ दुर्भाव पैदा हुआ।

मैच्चेस्टरमें रहते एंगेल्सका परिचय बन्स नामक एक आहारिश प्रिय परिवार-के साथ था। परिवारकी एक लड़की मैरीके साथ उनका प्रेम हो गया। दोनों कानूनी तोरसे विवाह किये बिना पति-पत्नीकी तरह एक साथ रहते रहे। मैरी सुन्दर तथा साथ ही बड़ी समझदार छी थी। एंगेल्सपर उसका बहुत स्वेच्छा था। वर्षों साथ रहनेके बाद ६ जनवरी १८६३ को एकाएक मैरीकी मृत्यु हुदय-रोगसे हो गई। पिछली ही शाम एंगेल्स उसके साथ थे, वह बिल्कुल स्वस्थ थी। उसकी मृत्युसे एंगेल्सके हुदयको भारी घटका लगा। एंगेल्सने जब अपने दुःखों प्रकट करते इसके बारेमें मार्क्सको लिखा, तो मार्क्सका उत्तर उस तरहका नहीं आया, जैसा कि उन्हें आशा थी। इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि मार्क्सके लिये अत्यधिक भावुकतापूर्ण बाक्यावलीका लिखना वैसे भी कठिन था। मार्क्सने कुछ वाक्योंमें मैरीके मरनेपर शोक प्रकट करते हुये, फिर अपने घरकी कठिनाइयोंको लिख डाला। एंगेल्सको यह बात बहुत खटकी। छ दिनों तक मनमें सोचते हुये उन्होंने कोई जबाब नहीं लिखा। फिर पत्रमें मार्क्सके इस “ठंडे” व्यवहारके लिये शिकायत करते हुये कहा : मेरे सभी मित्रोंने...मेरे दुखमें उससे कहीं अधिक सहानुभूति और सौहार्दभरी स्थितिके बारेमें प्रकट की, जितना कि मैं तुमसे आशा करता था।”

मार्क्सको अब अपनी गलती पूरी तौरसे मालूम हुई और उन्होंने बहुत-बहुत चमा माँगते हुये एंगेल्सको पत्र लिखते हुये बतलाया। “उस समय मेरे घरमें अन्न नहीं था, लड़की जेनी बीमार थी और उधार देनेवाले सामान नीलाम करानेके लिये घरमें पहुँचे हुये थे। यही कारण था, जो मैं एकान्तचिन्तसे मेरीके मरनेपर अपने भावोंको प्रकट नहीं कर सका।”

एंगेल्सके लिये मार्क्सकी मित्रता प्राणोंसे भी अधिक मूल्यवान् थी। उन्होंने

तुरन्त मार्कर्टको ज्ञाना करते हुये लिखा : “तुम्हारी सच्चाईके लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ तुम स्वयं समझ सकते हो, कि तुम्हारे पहलेवाले पत्रने मेरे ऊपर क्या प्रभाव डाला ? कोई आदमी किसी जीके साथ इतने दिनों तक जीवन बिताते हुये उसकी मृत्युसे भयंकर रूपसे ढुखी हुये बिना नहीं रह सकता। मैंने अनुमति किया, कि उसके साथ मैं अपनी जवानीके अन्तिम अवशेषोंको दफना रहा हूँ। जब मुझे तुम्हारा पत्र मिला, तब आभी वह अपनी कब्रमें नहीं गई थी। मैं तुम्हें बतलाता हूँ, कि तुम्हारा पत्र सारे सप्ताहभर मेरे दिमागमें घूमता रहा, मैं उसे भूल नहीं सकता था। कोई पर्वा नहीं, तुम्हारे पिछले पत्रने उन ठीक कर दिया और मुझे प्रसन्नता है कि मेरीके साथ-साथ मैंने अपने सबसे पुराने और सबसे अच्छे मित्रको नहीं खो दिया ।”

मार्कसने भी अपने जवाबमें उसी तरह लिखा : “अब जिना किसी बाहरी दिखलावेके तुम्हसे कह सकता हूँ, कि इन पिछले कुछ हप्तोंमें जितनी कठिनाइयोंसे मैं शुजरा, उनके होते भी किसी चीजका बोझ उसे पासंग भी नहीं मालूम हो रहा था, जितना कि हम दोनोंकी मित्रताके दृटनेका भय ।”

१८६४ ई० के अन्तमें मेरी बन्दियाँ वहन लिजी एंगेल्सकी पत्नी बनी और १८७८ ई० में लिजीके मरनेके समय तक दोनोंने बड़े आनन्दपूर्वक जीवन बिताया। लिजी एंगेल्स बड़ी ही समझदार महिला थी। वह अपने पतिके आदर्शोंको मानती थी। साथ ही वह आयरिश स्वतन्त्रताके योद्धाओ—सिन-फिलो—की आजन्म पक्षपातिनी रही। दोनोंको कोई संतान नहीं हुई, लेकिन उन्होंने लिजीकी भतीजी मेरी एलेन (पम्पस) को अपने यहाँ रखकर बेटीकी तरह पढ़ाया-लिखाया था।

५. मित्रके पास

१८६८ ई० के अन्तमें एंगेल्सको फिर व्यवसायसे भारी विरक्ति होने लगी। उनके पार्टनर गार्फीड एमेनने भी इस शर्तपर काफी पैसा देना स्वीकार किया, कि एंगेल्स अपने हिसेको बेचकर अलग उसी तरहके व्यवसायको न खोले। एंगेल्सको इसका कोई ख्याल भी नहीं हो सकता था। उनको केवल यहीं चिंता

थी, कि पैसा इतना मिले, जिसमें वह और खचोंके अतिरिक्त मार्क्सिको प्रतिवर्ष ३५० पौंड दे सकें—कमसे कम पाँच-छु लालोके लिये। पाँच-छु सालोके बाद क्या होगा, यह एंगेलस्को मालूम नहीं था, लेकिन उन्हें आशा थी, कि तब भी कमसे कम डेढ़ सौ पौंड वह प्रतिवर्ष दे सकेगे। ३५० पौंड वार्षिक पर्याप्त होगा या नहीं, यह पूछनेपर मार्क्सने उसे पर्याप्त कहा। अन्तमें १ जुलाई १८६६ को एंगेलस्के अपने पत्रमें लिखा : “हुर्रा ! आज मैं मधुर व्यापारसे पिंड कुड़ा एक स्वतन्त्र मनुष्य हूँ।...गाडफ्रीड (एमेन) ने सभी बातें मान लीं। दुसी (मार्क्सकी सबसे छोटी लड़की एलिनोर, जो कि उस समय एंगेलस्के सम्पत्तिके साथ कुछ सप्ताहसे रही रही थी) और मैंने अपने प्रथम मुक्ति-दिवस को आज सुबह देहतमें एक लम्बी च्छलकदमी करते हुये मनाया।...”

“हिसाब-किताब और बकील कुछ सप्ताह और मुझे बाँधे रहेंगे—लेकिन इसका अर्थ अब पहले जैसी समयकी भारी ज्ञाति नहीं होगी।...”

मार्क्सने इसके जवाबमें लिखा था : “बन्धनसे तुम्हारी मुक्तिके लिये सभसे अच्छे अभिनन्दन ! इस घटना के सम्मानमें एक और भ्लास पान लिया, किन्तु प्रशियन ऐनिकोंकी तरह सबेरेसे पहले नहीं, बल्कि शामको दरसे।...”

एंगेलस्की पत्नी लिजीके सम्बन्धी भी अन्तमें राजी हो गये और १८७० के सितम्बरके अन्तमें अपने सहुरालवालों मेनेचेष्टरसे विदाई ले एंगेलस्के लन्दन चले आये। अब दोनों मित्र आपसी सलाहसे कामका बँटवारा कर काममें लग गये। मार्क्सने अपने जिम्मे मौलिक अर्थशालीय और दार्शनिक सिद्धान्तोपर कलम चलानेका काम लिया। और एंगेलस्ने हन खिदूधान्तोके प्रकाशमें तत्कालीन महत्वपूर्ण समस्याओंके हल और खंडन-भंडनको संभाला।

(१) सामयिक लेख—समस्याओंपर एंगेलसने बहुत भारी संख्यामें लेख और पुस्तिकार्य लियीं। उनमेंसे बहुतोंका केवल ऐतिहासिक महत्व नहीं, बल्कि आजकलकी समस्याओंमें उपयोग हो सकता है, जैसे “घरोंका प्रश्न” जो कि १८६२ ई० में कई लोगोंके रूपमें निकला, जिसमें प्रूधों और मूलवेरेंगेर छोटे

चिपके निम्न बूज्जा-अनुयायियोंके विचारोंका खड़न किया गया है। एंगेल्सने लिखा है : “घरोंकी समस्या कैसे हल की जाय ? वैसे ही जैसे कि आजकल समाजमें कोई दूसरा सामाजिक प्रश्न हल किया जाता है : माँग और पूर्तिके क्रामशः आर्थिक तालमेल द्वारा । यह ऐसा हल है, जोकि नये तौरसे उसी सवाल को पैदा करता है, और इसलिये वह हल नहीं है । सामाजिक क्राति कैसे इस प्रश्नको हल करेगी ? वह प्रत्येक अवस्थामें मौजूदा परिस्थितियोंपर ही केवल निर्भर नहीं करती, बल्कि उसका सम्बन्ध और भी दूर तक पहुँचनेवाले प्रश्नोंसे है, जिनमेंसे एक अत्यन्त मौलिक प्रश्न है नगर और गाँवके बीचके विरोधों का खतम करना ।... एक बात निश्चित है : ‘यदि उनके बुद्धिपूर्वक उपयोगको स्वीकार किया जाय, तो वास्तविक घरोंकी कमीको तुरन्त पूरा करनेके लिये बड़े शहरोंमें अभी भी रहनेके लिये काफी मकान मौजूद हैं। यह आसानीसे हो सकता है, यदि वर्तमान स्वामियोंसे उन्हें लेकर और बेघरवाले या पहले घरोंमें अत्यधिक भरे हुये कमकरोंको इन घरोंमें बसा दिया जाय । राजनीतिक शक्ति को जैसे ही सर्वहारा अपने हाथमें ले लेंगे, तुरन्त सार्वजनिक हितके उद्देश्यसे इस तरहकी कार्रवाई उसी तरह आसानीसे की जा सकती है, जैसे वर्तमान राज्य द्वारा दूसरेकी सम्पत्तिको हाथमें लेना और घरमें बसाना ।’”

(१) ह्यरिंग-संबंधन—मार्कर्सवादपर यह बहुत ही सुन्दर पुस्तक है, जिसमें अन्नेपोंका जवाब देते हुये मार्कर्सके सिद्धान्तोंका स्पष्टीकरण किया गया है। इस पुस्तकके दूसरे संस्करण के प्राक्कथनमें एंगेल्सने लिखा है : ”

“जहाँ तक इन पुस्तकमें विवेचन और इटिकोणकी प्रणालीके विकासकी व्याख्याका सम्बन्ध है, उनका श्रेय बहुत अधिक मार्कर्सको है और बहुत थोड़े परिमाणमें सुझे भी । हम दोनोंके बीच यह बात तैसी थी, कि विना मार्कर्सके ज्ञानके मेरी यह व्याख्या प्रकाशित न हो । छपनेसे पहले मैंने सारे इस्तलेखको उनके सामने पढ़ा और अर्थशास्त्रपर दसवें अनुच्छेदको तो मार्कर्सनेही लिखा । मैंने इतना ही किया, कि उसे थोड़ा छोटा कर दिया ।... विशेष विषयोंमें हम एक दूसरे की सहायता करनेके आदी हैं ।

(२) डूरिंग-खंडन (१८७५ ई०)—एंगेल्स की यह प्रसिद्ध पुस्तक १८७५ ई० में “फोरवेटर्स” में वैज्ञानिक परिशिष्टके तौरपर प्रकाशित हुई। और इसके अन्तिम भागको “समाजवाद उटोपियन और वैज्ञानिक” के नामसे अलग भी प्रकाशित किया गया। १८७० वाली शताब्दीके आरम्भमें जर्मनीमें समाजवादी जनतंत्रताका काफी प्रचार हो गया और उसकी ओर उदारवादी बूज्बाजी भी लिंचने लगी। ऐसे लोगोंके समाजवाद और मजदूर-संगठनमें आनेमें कोई आपत्ति नहीं हो सकती, लेकिन यह जरूरी है कि उनके पुराने मनोभाव चिल्कुल दूर हो गये हों और उन्होंने सर्वहारा क्रान्तिकारी आनंदोलनको अच्छी तरह आत्मसात् कर लिया हो। फैशनके लिये सर्वहारा वर्गके संगठनमें ऐसे लोगोंके आने या समाजवादी बननेसे हानि छोड़ लाभ नहीं हो सकता। यूरेन डूरिंग इसी तरहका एक प्रतिभाशाली बूज्बा-नेता था, जिसने समाजवादीकी तरफ अपने झुकावको दिखलाकर तरुणों पर काफी प्रभाव डालना शुरू किया। उसने बहुत से विषयोंका अध्ययन किया था, जो चंचुआही पांडित्य-से अधिक नहीं था। पर उसकी कलममें शक्ति थी। इस प्रकार वह कितनी ही बार गलत-सलत बातें कहकर लोगोंको पथ-भ्रष्ट करनेमें सफल होता। एंगेल्सने यद्यपि अपने इस ग्रंथको डूरिंगके विचारोंके खंडनके लिये ही लिखना शुरू किया था, लेकिन अपनेको उतने ही तक सीमित नहीं रखा और जिस विषयको भी लिया, उसपर गम्भीरतापूर्वक अपने विचारोंको प्रकट करते हुये इस पुस्तकको वैज्ञानिक साम्यवादका एक सुन्दर और स्पष्ट प्रकरण-ग्रंथ बना दिया। उन्होंने इसमें सारे आधुनिक साइंसकी विवेचना मार्क्सीय भौतिकवादी हाण्डिकोणसे की।

सबसे पहले इस पुस्तकमें ऐतिहासिक भौतिकवादके स्रोतोंका अनुसन्धान करते हुये अपने और मार्क्स द्वारा इस्तेमाल किये गये द्वन्द्वात्मक-अनुसन्धान-प्रणालीका विवेचन कर, उसे विज्ञान तथा दर्शनके क्षेत्रमें उचित स्थान दिलाया। इस ग्रंथमें पुराणके भीतर नवीनके उगनेके द्वन्द्वात्मक सिद्धान्तका उदाहरण दिया गया है, और यह भी कि इसके परिणामस्वरूप विकास अथवा परिपक्वताकी एक निश्चित मंजिलमें पहुँचकर पुरानेका स्थान नवीन अनिवार्य-तया ग्रहण करता है। एंगेल्सने इस सिद्धान्तकी व्याख्या भिन्न-भिन्न प्रकारकी

भौतिक, प्राकृतिक और प्राणिशास्त्रीय विज्ञानों परं इतिहास, दर्शन आदि के चेत्रों के उदाहरणों से की है :

द्वन्द्वात्मकता (द्वन्द्ववाद) वस्तुओं और उनके विचारों, उनके आपसी सम्बन्धमें सारतः अपने परिणाममें अपनी गति, अपने जन्म और मृत्युमें उपरोक्त प्रक्रियाये द्वन्द्ववादकी अपनी व्यवहार-प्रणालीके उतने प्रकारके पुष्टीकरण हैं। प्रकृति द्वन्द्ववादकी कसौटी है ।...

“इसीलिये विश्व, उसके विकास और मानव-जति के विकास तथा मानव-मस्तिष्कमें इस विकासके प्रक्षेपणकी ठीक तौरसे प्रतिमूर्ति केवल द्वन्द्वात्मक तरीकेसे ही आम क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं, प्रगतिशील अथवा प्रतिगतिशील परिवर्तनोंके रुक जानेका लगातार ध्यान रखते ही द्वन्द्वात्मक तरीकेसे निर्मित की जा सकती है ।” वस्तुतः ‘‘द्वन्द्ववाद प्रकृति’’ मानव-समाज और विचारमें गति और विकासके विश्वजनीन नियमके साइन्सके “सिवा और कुछ नहीं है ।” आचार, सत्य और न्यायके सनातन नियमोंकी दुहाई देनेवालोपर आन्दोलन करते हुये एंगेल्सने लिखा है :

“हम यहाँ उस प्रथलकी ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं, जो कि हमारे ऊपर एक प्रकारके आचारिक मतवादको सनातन, अन्तिम, कूटस्थ, आचारिक नियमके बहानेसे लादा जाता है, कि आचारिक नियम विघानमें वह स्थिर सिद्धात निहित है, जो कि इतिहास और वैयक्तिक लोगोंके भेदोंके प्रभावसे परे है । इसके विरुद्ध हम मानते हैं, कि जहाँ तक सभी आचारिक वादोंका सम्बन्ध है वह अन्ततः किसी विशेषकालमें एक समाजमें प्रचलित कुछ अर्थिक स्थितियों के अस्तित्वकी एक गवाही है ।”

“और जैसे चूँकि अब तक समाज वर्ग-विरोधमें चलता आ रहा है, इसलिये आचार, नियम सदासे एक वर्ग-आचार रहा है । इसने या तो शातकवर्गके प्रभुत्व और हितोंको उचित ठहराया, अथवा जैसे ही उत्तीडित वर्ग काफी शक्ति, शाली हो गया, उसने इस प्रभुता और उत्तीडितोंके भावी स्वार्थोंके विरुद्ध विद्रोहका प्रतिनिधित्व किया ।...जो कि उनके सभी दुख और विलासके प्रकट,

दरिद्रता और समुद्धिके असह्य विरोधोंके साथ श्रमकी उपजोंके वितरणके वर्तमान ढंगमें क्रान्तिके लिये अधिक सुरक्षित होने नहीं देते, तो यह धारणा (चेतना) अन्तमें फैलकर रहेगी, कि वितरणका यह ढंग अन्यायोचित है, न्यायको अन्तमें हावी होना पड़ेगा, नहीं तो हम दुर्गतिमें पड़ वहाँ चिरकाल तक रहेंगे ।...

“दूसरी शब्दोंमें यह हुआ : आधुनिक पूँजीवादी उत्पादनके तरीकेकी उत्पादक शक्तियाँ तथा उसपर आधारित आधुनिक पूँजीवादी वितरण-व्यवस्था स्वयं उत्पादन-व्यवस्थासे इतना विरोध रखती है, कि उत्पादन और वितरणके ढंगमें ऐसी क्रान्ति होनी अनिवार्य हो गई है, जो कि सभी वर्ग-विभेदों को नष्ट करे, अन्यथा सारा आधुनिक समाज पतनके खड़में गिरेगा । यह वास्तविक भौतिक तथ्य हैं, जो कि शोषित सर्वहाराके मनमें और अधिक स्पष्ट करते जा रहे हैं, कि यह उन किताब कीड़ोंके न्याय और अन्याय-सम्बन्धी ज्ञानकी नहीं, बल्कि वास्तविक भौतिक तथ्योंको शोषित सर्वहाराके लिये और स्पष्ट करके आधुनिक समाजवादकी विजयके विश्वासकी नींव बनते हैं ।”

द्वारिंगने कितने ही बूज्वार्ड-उदारवादियोंकी तरह जोर देकर कहा था, कि वर्ग-घुलामीका कारण राजनीतिक शक्ति मुख्य कारण हैं, आर्थिक स्थितियाँ वर्गभेद-के गौण कारण हो सकती हैं । इसके जवाबमें एंगेल्सने बतलाया, कि किस तरह प्रचीन लोगोंमें वैयक्तिक सम्पत्तिका आरम्भ हुआ : आम तौरसे जबर्दस्ती लट्ट द्वारा नहीं बल्कि आरम्भिक कवीलाशाही कम्यून (संघ) में कुछ चीजोंके अभाव-के कारण वैयक्तिक सम्पत्तिका आरम्भ हुआ, इसलिये विनिमयकी आवश्यकता पड़ी, और उपयोगकी जगह विनिमयके लिये मालका उत्पादन शुरू हुआ । इसके द्वारा वितरणके तरीकेमें भी परिवर्तन हुआ, और व्यक्तियोंकी सम्पत्तिमें असमानता पैदा हुई । याहरी हिंसात्मक स्वेच्छाचारिताके होते भी शताब्दियों तक पुराण-सम्बन्धीय कायम रहा, लेकिन महान् उद्योगकी उपजोंकी होड़ने अपेक्षाकृत थोड़े समयमें वह खत्म हो गया ।

बूज्वार्ड-कान्तिके बारेमें एंगेल्सने बतलाया, कि उसने सभी सामन्ती वेडियोंको तोड़ फेंका : किन्तु, हेर द्वारिंगके सिद्धान्तके अनुसार राजनीतिक स्थितियोंके अनु-

कूल आर्थिक-व्यवस्थाके तालमेल द्वारा नहीं ..' बल्कि उससे डलटे पुराने जीर्ण-शीर्ण राजनीतिक कूड़े-करकटको अलग हटाकर ऐसी राजनीतिक स्थितियोंके निर्माण द्वारा हुई, जिसमें कि नवीन "आर्थिक-व्यवस्था" मौजूद रहते विकसित हो सके। अपनी आवश्यकताओंके अनुकूल राजनीतिक तथा कानूनी वातावरणमें, वह इतने अद्भुत चमलकारके साथ विकसित हुआ, कि १७८८ ई० में बूर्जा-जीने करीब-करीब उस स्थानको प्राप्त कर लिया, जो कि पहिले सामन्तोंका था। अब बूर्जाजी केवल सामाजिक रूपसे ही अधिकाधिक कृजूल नहीं होती जा रही है, बल्कि वह एक सामाजिक चाधा बन रही है, उत्पादक कार्रवाइयोंसे अधिकाधिक अलग होती, पुराने सामन्तवर्गकी तरह अधिकाधिक केवल मालणुजारी लेनेवाला वर्ग बनती जा रही है। इस क्रान्तिमें उसने अपनी स्थितिको ठीक करते हुये किसी तरहका बलाकार किये, शुद्ध आर्थिक तरीकेसे एक नये वर्ग—सर्वहारा—का सृजन किया।

इस प्रकार मालूम होगा, कि "हूरिंग-खड़न" में एंगेल्सने केवल हूरिंगकां तत्कालोपयोगी खड़नमर नहीं किया, बल्कि मार्क्सवादके सिद्धान्तोंकी सरली-और स्पष्ट विवेचना की है।

६. मार्क्सके बाद—(१८८३-६५ ई०)

(१) "कपिटाल" का सम्पादन—हम देख चुके हैं, कि मार्क्सने अपने नहान् ग्रंथ "कपिटाल" (पैंजी) को तीन जिल्दोंमें तैयार किया था; जिनमें केवल प्रथम जिल्दको ही वह प्रेसके लिये तैयार करके अपने सामने छोड़ा देखा था, वाकी दो जिल्दे अब भी ऐसी स्थितिमें नहीं थीं, कि उन्हें प्रेसमें दिया गा सकता। मार्क्सकी मृत्युके समय (१८८३ ई०) में एंगेल्स ६३ सालके हो चुके थे, लेकिन सौभाग्यसे अभी उन्हें बारह साल और जीना था। दुनियाँके उर्वहारा-संगठनों और नेताओंकी अब एंगेल्सकी ओर नजर लगी, इसलिये उनका समय उनको सलाह देने और दूसरे कामोंमें लगता था, तो भी उन्होंने अपने अवशिष्ट जीवनका उद्देश्य रखा था—शत्रुओंके मार्क्सवादपर होते म्हारका विफ़ज़ करना तथा "कपिटल" के वाकी दोनों जिल्दोंको ठीक करके

प्रकाशित करना। १८८४ ई० में “कपिटल” की तीसरी जिल्दके प्रावक्तव्यमें शूगेल्सने स्वयं लिखा है :

“पहली बात यह है, कि मेरी आँखोंकी कमज़ोरी है, जो कितने ही वर्षोंसे अल्पतम मात्रामें भी लिखनेमें मुझे अपने समयका उपयोग करने नहीं देती, और आजकल भी कभी-कभी कृत्रिम प्रकाशन ही लिखनेका मौका देती है।... इसके अतिरिक्त दूसरे भी काम थे, जिनसे मैं इन्कार नहीं कर सकता था, जैसे कि मार्क्स और मेरी अपनी पहलीकी कृतियोंके नये संस्करण और अनुवाद, संशोधन, प्रावक्तव्य, परिशिष्ट, जिनके लिये अक्सर विशेष अध्ययन आदिकी आवश्यकता पड़ती थी। सबसे ऊपर इस ग्रंथकी प्रथम जिल्दके अँग्रेजी संस्करण का सवाल था, जिसके लिये अन्तिम जिम्मेवार मैं हूँ और जिसने मेरा बहुत सा समय लिया। जिस किसीने पिछले दस वर्षोंमें अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी साहित्यकी प्रकांड वृद्धि, विशेष कर मार्क्स और मेरी पहलोंकी कृतियोंके बहुसंख्यक अनुवादोंको देखा होगा, वह मुझसे सहमत होगा..., कि कुछ परिमित संख्यामें ही ऐसी भाषायें हैं, जिनमें कि मैं किसी अनुवादकी सहायता कर सकता हूँ। यह काम संशोधनकी माँग माननेके लिये मुझे मजबूर करता है।

“किन्तु, साहित्यकी यह वृद्धि स्वयं अन्तर्राष्ट्रीय मजूर-आन्दोलनकी वृद्धिकी साक्षी है, जिसने यह नई जिम्मेवारियाँ मेरे ऊपर लाई। हमारे सार्वजनिक जीवन के प्रथम दिनोंसे ही समाजवादियोंके राष्ट्रीय आन्दोलन और कमकर-जनताके बीच समझौता करनेका काफी भार मार्क्स और मेरे कन्धोंपर पड़ा।... इस बोझको अपने मृत्युके समय तक मार्क्सने उठाया। उनके बाद बराबर छढ़ते हुई कामको केवल मुझे करना पड़ा।

“इसी बीच मिन्न-मिन्न राष्ट्रीय मजूर पार्टियोंके बीच सीधा सम्बन्ध स्थापित होना आम हो गया और सौभाग्यसे वह अधिकाधिक होता जा रहा है। तो भी, मेरे सैद्धान्तिक अध्ययनोंको ख्यालमें रखते हुये जितना मुझसे बन सकता है, उससे कहीं अधिक सहायता अब भी माँगी जाती है।... हमारे इस उथल-पुथलवाले समयमें १६ वीं शताब्दीकी तरह सार्वजनिक कार्योंके सम्बन्धमें

थौरी (वाद) गढ़नेवाले केवल प्रतिक्रियावादियोंके दलमें ही देखे जाते हैं ; इसी कारण ये भद्रपुरुष वेदवाले वैज्ञानिक नहीं, बल्कि सिर्फ़ प्रतिक्रियावादके समर्थक हैं ।

“चूँकि मै लन्दनमें रहता हूँ, इसके कारण जाड़ोंमें पार्टीयोंके साथ मेरा सम्बन्ध केवल पत्र-ब्यवहारका रहता है, जबकि गर्भियोंमें मेरा अधिकाश समय वैश्विक भेट-मुलाकातमें चला जाता है ।

“यह तथ्य तथा कितने ही देशोंमें उदात्पूर्वक आगे बढ़ते आन्दोलनके अनुगमन करनेकी आवश्यकता, और उससे भी कहीं तेजीके साथ बढ़ती पर्टी-मुख्यपत्रोंकी सख्त्या मुझे इस बातके लिये मजबूर करती है, कि इतनी सामग्री सुरक्षित रखें, जिससे कि सालके जाड़ोंके महीनोंमें बाधा न खड़ी हो ।

“जब आदमी सत्तरसे ऊरका हो जाता है, तो उसके मस्तिष्कके जोड़नेवाले तन्हु कुछ बुरी सी लगनेवाली सुस्तीके साथ काम करते हैं, और आदमी पहलेकी तरह आसानी और शीघ्रताके साथ कठिन सैदूधान्तिक समस्याओंकी बाधाको सुलझा नहीं पाता । जिसका नतीजा यह होता है, कि एक जाड़ेका काम, यदि उस समय पूरा नहीं हुआ, तो अधिकतर अगले जाड़ोंमें करना पड़ता है ।

“यह बात खास करके अत्यन्त कठिन पंचम अनुच्छेदके बारेमें हुई ।

“पाठक निम्न बातोंसे देखेगे, कि तृतीय जिल्दके सम्पादनका कार्य द्वितीय जिल्दकी अपेक्षा बहुतः भिन्न था । तृतीय जिल्दके लिये प्रथम मसौदेके सिवा और कोई चीज़ मौजूद नहीं थी, और वह भी बहुत अपूर्ण था ।

“भिन्न-भिन्न अनुच्छेदोंके आरभिक भाग आम तौरसे अच्छी तरह सावधानीके साथ विस्तारित अथवा शैलीके तौरपर पालिश किये हुये भी थे, लेकिन आदमी जितना ही आगे बढ़ता है उतना ही देखता है कि वह अधिकतर ढाँचेके रूपमें तथा विश्लेषण अपूर्ण था ।...”

इस प्रकार हम देख रहे हैं ; कि अमर ग्रथ “कपिटाल” की अतिम दोनों महत्पूर्ण जिल्दोंका उद्घार करते उन्हें मार्क्सिक विचारोंके अनुसार ही रखनेका

व्यहान् काम एंगेल्सने किया, और केवल वही कर भी सकते थे, क्योंकि वही ‘अनु-मार्क्स’ थे।

(२) “परिवारकी उत्पत्ति” (१८८४ ह०)—मार्क्सकी मृत्युके अगले चालकी गर्भियोंमें एंगेल्सकी पुस्तक “परिवार, वैयक्तिक सम्पत्ति और राज्यकी उत्पत्ति” प्रकाशित हुई। मार्क्सवादके समझनेके लिये एंगेल्सका यह ग्रंथ अद्भुत सहायक है। प्रथम संस्करणके प्रावक्यनमें एंगेल्सने स्वयं लिखा है : “यह एक अर्थमें एक वसीयतको कार्यरूपमें परिणात करना है ।.. कार्ल मार्क्सने अपने समने यह भावी काम रखा था, कि मोर्गनके अनुसन्धानोंके परिणामोंको कुछ निश्चित सीमाओंमें वह अपने सिद्धान्तोंके प्रकाशमें...रखें...—हमारे भौतिकवादी इतिहास-सम्बन्धी परीक्षणके प्रकाशमें रखें, और इस प्रकार उसके पूर्ण महत्वको स्पष्ट करें, क्योंकि मोर्गनने अपने तरीकेसे ४० वर्ष पहले मार्क्स द्वारा आविष्कृत इतिहासकी भौतिकवादी धारणाका अमेरिकामें नये तौरसे पता -लगाया, और वर्वरता तथा सभ्यताकी तुलना द्वारा वह भी उन्हीं मुख्य तथ्योंपर पहुँचा, जिसपर कि मार्क्स पहुँचे ।...”

मोर्गनने अमेरिकाकी आदिम जातियोंके समाजके गम्भीर अध्ययनके बाद अपना ग्रंथ “प्राचीन समाज” लिखा, जिसमें उसने जन (कबीला) और परिवारके विकासको दिखलाया। एंगेल्सने इतिहासकी भौतिकवादी दृष्टि का प्रयोग करते हुये भिन्न-भिन्न मंजिलोंसे होते मानव-समाजके विकासको इस पुस्तकमें दिखलाया और बतलाया, कि सभी दूसरी सामाजिक संस्थाओंकी तरह परिवार भी अपने विकासका एक लभ्या इतिहास रखता है, और वह विकास समाजके विकास एवं वैयक्तिक सम्पत्तिकी वृद्धिके साथ हुआ है। परिवारका सबसे पुराना रूप जांगल-अवस्थाके अनुरूप था, जिसमें यूथ-विवाहका रवाज था।

समाजके विकासकी अगली सीढ़ी था वर्वर-समाज, जिसमें परिवार जोड़का परिवार था, जिसमें प्रत्येक आदमीकी एक मुख्य स्त्री और प्रत्येक स्त्रीका एक मुल्ला पति होता था। इस समाजमें नजदीकी सम्बन्धियोंके बीचमें व्याह अधिकाधिक निपट्य होता गया, लेकिन जब तक समाज जनताके रूपमें संगठित

रहा, तब तक आधुनिक अर्थोंमें माने जानेवाला समाज अस्तित्वमें नहीं आया। उस समय परिवार साम्यवादी रूपका था, जिसमें कि सभी या अधिकांश स्त्रियाँ एक जनसे आती थीं, जब कि पति भिन्न-भिन्न जनतोंसे। इस गृहस्थीमें सभी पुरुषकी दासी नहीं, बल्कि प्रमुख स्थान रखती थी। एंगेल्सने ऐसेर राइट्का इस विषयमें उद्घरण दिया है : “आप तौरते स्त्री-भाग धरका शासन करता । . भंडार सम्मिलित थे...चाहे पुरुषके कितने ही बच्चे हों अथवा जो भी सामान धरमे हो, उसे किसी समय हुक्म दिया जा सकता था, कि अपना कम्बल ले रास्ता नापे, और ऐसी आशाके बाद वह इन्कार करनेका प्रयत्न नहीं कर सकता था। धर उसके लिये कॉटा बन जाता और...उसे अपने जन (कबीले) की ओर लौटना पड़ता, अथवा जैसा कि अक्सर होता है किसी दूसरे जनमें जाकर नया वैवाहिक सम्बन्ध आरंभ करना पड़ता। स्त्रियाँ और सभी जगहोंकी तरह कबीलों (जनतो) में बड़ी शक्तिशालिनी थी। समयकी आवश्कता होनेपर वह ‘सींग टोड फेकने’ में भी आनाकानी नहीं करती—सरदारके सिरपर सींग उसका विशेष चिन्ह होता था—जिसे टोडकर उसे भाटोंकी पक्किमें लौटा देती ।

जनके संगठनके बारेमें एंगेल्स कहते हैं : “यह जन-संविधान अपनी बच्चों जैसी सादगी में एक अद्भुत संविधान है ! न सैनिक हैं, न मालिसिया न पुलिस, सामन्त हैं न राजा, न रिजेट (उपराज) न दंडनायक या न्यायाधीश, न जेल हैं न कानूनके मुकद्दमे—और सभी बातें सुव्यवस्थितरूपसे चल रही हैं। सभी भलाडे और मामले तत्सम्बन्धी सारे समूह, जनों या कबीलों अथवा जनतों द्वारा अपने भीतर ही तै कर लिये जाते हैं। केवल चरम अवस्थामें और अपवाद-रूपेण खूनके बदले खूनका खतरा पैदा होता है—और हमारा मृत्युदंड उसी खूनके बदलेके सम्य रूपके सिवा और कुछ नहीं है। . जनोंमें कोई गरीब या अमावग्रस्त सामूहिक गृहस्थी नहीं हो सकती थी। बृद्ध, वीमार और युद्धमें बेकार हुये आदमीके प्रति जन अपनी जिम्मेवारीको मानते थे। वहाँ सभी समान और स्वतन्त्र थे—स्त्रियाँ भी ।”

लेकिन, यह जन-संस्थायें अपने-अपने कबीलेके भीतर ही ऐसी स्थिति रखती थीं। एक कबीला दूसरे कबीलेका शत्रु था, और जैसे-जैसे वैयक्तिक सम्पत्ति

बढ़ती जाती थी, वैसे ही वैसे सबसे पहले दायभागके कानूनोंमें परिवर्तन हुआ, पैतृक कानून तथा बापकी सम्पत्ति पर बेटेके अधिकारका विकास हुआ, जिसके कारण विशेष परिवारोंकी शक्ति अधिक बढ़ी। जैसे-जैसे उत्पादनके साधन विकसित होते गये, अर्थात् धन-उत्पादन करनेका तरीका अधिक और अधिक श्रमकी माँग करने लगा, जन-समाजके बाद (दासताकी प्रथा) प्रचलित हुई। परिवार पहले पितृसत्ताके रूपमें अर्थात् आदिम साम्यवादी जन-समाजसे होते तीसरी मंजिलपर पहुँचा। पितृसत्ताके समाजमें श्रमकी माँगके कारण आरंभ हुई दासताने अब दासतामूलक समाजका जन्म दिया, और उसके साथ परिवार पितृसत्ताके रूपसे बहुत कुछ वर्तमान रूप ले चला, जिसके महत्वके बढ़नेके साथ जन-संस्था अधिकाधिक कमजोर होती गई और उसके भीतरसे आधुनिक समाज अपने प्राचीन रूपमें प्रकट हुआ, जिसमें कि सम्पत्तिशाली वर्ग सम्पत्तिहीन वर्गोंके शोषणपर शुजारा करता है, और समाजमें शोषितेका स्थान दास, अर्ध-दास या भजूर-दासके रूपमें रह गया है। मोर्गनने इन सभी परिवर्तनोंमें वैयक्तिक सम्पत्तिको मुख्य कारण माना है : “सम्पत्ति (वैयक्तिक) वह तत्व थी, जो कि परिवर्तनकी माँग कर रही थी। पौर जीवन और संस्थाओंका विकास, प्राकारबद्ध नगरोंमें सम्पत्तिका ढेर लगना, और उसके द्वारा जीवनके दंगमें बड़े परिवर्तन वह चीजें थीं, जिन्होंने कि जन-संस्थाओंके उत्खाइ फेंकनेके लिये रास्ता तैयार किया।”

समाजमें इतिहासी स्थिति, राज्य तथा और विषयोंपर भी एंगेल्सने अपनी लेखनी द्वारा बहुत से मौलिक तथ्योंका विश्लेषण किया।

(३) फ्रांसवास्त (१८८८-१९०)—हेगेलीय दर्शनके तत्कालीन प्रतीक फ्रांसवास्तकी विचारधाराका विवेचन और खंडन एंगेल्सने अपनी इस पुस्तकमें किया है, जो कि १८८८-१९० में प्रकाशित हुई। फ्रांसवास्तकी विश्लेषणवादकी ओर रक्खानोंकी आलोचना करनेके बाद इस ग्रंथमें एंगेल्सने बहुत ही स्पष्ट और सारांगभित शैलीमें इतिहासकी भौतिकवादी धारणाकी इस ग्रंथमें व्याख्या की है।

एंगेल्सकी अन्तिम कृति थी मार्क्सके “१८४८-५०१० से फ्रांसमें वर्ग-संघर्ष”

की भूमिका । इस ग्रन्थको उन्होने अपनी मृत्युसे केवल पाँच महीने पहले लिखा था । अब वह ७५ साल (जन्म २८ नवम्बर १८२० ई०) के हो रहे थे, लेकिन अब भी उनकी बुद्धि उसी तरह प्रखर और गम्भीर थी । उन्होने अपनी इस कृतिमें १८५० से १८६५ ई० तकके यूरोपीय समाजके इतिहासका सिंहावलोकन किया है ।

७. मृत्यु

१८६३ ई० में जूरिच-काग्रेसमें अन्तिम बार एंगेल्स सार्वजनिक मच्चपर आये । वह भाषणसे अधिक लेखनीके धनी थे । वैसे वह बीना और बैलिनकी काग्रेसोंमें भी शामिल हुये थे । १८६५ ई० के मार्चमें उनके गले में नास्रू (कैन्सर) हो गया, और जैसा कि इस घातक बीमारीका स्वभाव है, पाँच महीने तक यंत्रणा देते उसने ६ अगस्त (१८६५ ई०) को उनके प्राण हर लिये । एंगेल्सने प्रथम श्रेणीकी प्रतिभा और योग्यता पाकर भी हमेशा अपनेको पीछे रखना चाहा । मरने के बादके लिये भी मेरी लाशको बलाकर रात समुद्रमें फेंक देना—कहकर उन्होने साजित कर दिया कि उन्हें किसी प्रकारकी महत्वाकादा नहीं थी । लेकिन, इतिहास उनको महत्वहीन नहीं समझता । मार्क्सके साथ एंगेल्सका नाम सदा के लिये छुट गया और आज एकके सामने उपस्थित होने पर दूसरा स्वरः उपस्थित हो जाता है । उनकी चिताके पास उनके घनिष्ठ मित्र जमा हुये । मार्क्सकी पुत्री एलिनोर उस समय एंगेल्सके प्रिय समुद्रतट ईस्टवोर्न-पर पहुँची । उसने २७ अगस्त को एक नाव किराया करके महान् एंगेल्सकी मस्सको ले जाकर समुद्रमें डाल दिया । मार्क्सकी हड्डियाँ अब भी लन्दनके हाइगेट कव्रिस्टानमें मौजूद हैं, उनके शिष्य लेनिन और प्रशिष्य स्तालिनके शवोंको सबीव से रूपमें आज भी मास्कोके लालमैदानके समाधि-मन्दिरमें देखा जा सकता है, लेकिन एंगेल्स अब केवल अपनी कृतियोंमें ही जीवित हैं—जो उन अस्थियोंसे भी अधिक मूल्यवान् और अमर हैं, इसे कहने-की आवश्यकता नहीं ।

इति ।

परिशिष्ट

वर्षपत्र

सन्	स्थान	बटना-विवरण
१८१८ मई ५	द्रीर (ट्रेस)	कार्ल मार्क्सका जन्म
१८२४	"	पिता हाइनरिख मार्क्स इसाई बने
१८३५ अगस्त २५	"	द्रीर कालेजकी पढ़ाई समाप्त
१८३५-३६	बोन	कानूनकी पढ़ाई और जेनीसे सगाई
१८३६-४१	ब्रिलिन	कानून-दर्शन-इतिहासके विद्यार्थी, प्रथम लेख (कविता आदि)
१८३८	द्रीर	पिता मरे
१८४१	जेना	डाक्टरकी उपाधि
१८४२-४३	कोलोन	“राइनिशे-जाइटंग” का संपादन
१८४३	द्रीर	जेनी फान वेस्टफालेनसे विवाह
१८४३-४५	पेरिस	निर्वासित जीवन और लेखन आदि
१८४४	"	“जर्मन-फ्रेंच वर्षपत्र” का संपादन; एंगेल्ससे पहली मुलाकात, अर्थशास्त्र और दर्शनका विशेष अध्ययन
१८४५	ब्रुशेल्स	पेरिससे निष्कासन
१८४५-४८	"	एंगेल्सके साथ काम : “पवित्र परिवार” “जर्मन विचारधारा” कम्युनिस्ट लीगमें सम्मिलित, कृति :
१८४७	"	“दर्शनकी दरिद्रता” “कम्युनिस्ट लीग” का पुनः संगठन, ब्रुशेल्ससे निष्कासन, “कम्युनिस्ट धोषणापत्र” का प्रकाशन
१८४८	"	

सन्	स्थान	घटना विवरण
१८४८-४९	कलोन	“नोये राहनिशे जाहटुंग” का संपादन
१८४९	”	जूरी द्वारा मार्कर्स मुकदमेसे बरी, कलोनसे निष्कासन
१८४९-५०	लन्दन	निर्वासित जीवन और महान् कार्य एंगेल्स व्यवसायमें लगे
१८५१	मेन्चेस्टर	“न्यूयार्क ड्रिव्यून” में लेख शुरू (१८६१ तक)
१८५२	लन्दन	“न्यूयार्क ड्रिव्यून” में लेख शुरू (१८६१ तक)
१८५३	”	सबसे छोटी लड़कीकी मृत्यु
१८५४	”	भारतपर लेख
१८५५	”	एकमात्र पुत्र एडगर (मूश) की मृत्यु
१८५७-५८	”	नवीन अमेरिकन साइक्लोपीडियाके लिये काम
१८५९	”	“राजनीतिक अर्थशास्त्रकी आलो- चना” का प्रकाशन
१८६०	”	“हेर फोट” लिखना
१८६१-६२	”	“डी प्रेस” (बीना) को लेख
१८६१	”	जर्मनी की यात्रा, लाजेलसे मैट (बर्लिन)
१८६३	”	लाजेल द्वारा कमकर पार्टीकी स्थापना
” जनवरी	”	एंगेल्ससे दृष्टिक मनमुटाव
१८६४ सितंबर २८	”	प्रथम इंटर्नेशनलकी स्थापना, इसी साल लाजेल वोल्फकी मृत्यु
१८६५	”	लाजेलके संगठनसे सम्बन्ध-विच्छेद, “मूल्य, दाम और लाम” पर निय-

सन्	स्थान	घटना विवरण
१८६६	"	भाषण (२६ जून), आस्ट्रिया प्रशिया-युद्ध, घोर आर्थिक कष्ट
१८६७	"	जेनेवामें इंटर्नेशनली प्रथम कांग्रेस
१८६८	"	'कपिटाल' की प्रथम जिल्ड प्रकाशित
१८६८-६९	"	ब्रुशेल्समें इंटर्नेशनलकी तृतीय कांग्रेस पश्चिमी और मध्य-युरोपमें हड़ताल आन्दोलनकी वृद्धि
१८६९	लन्दन	ब्रुशेल्समें इंटर्नेशनलकी तृतीय कांग्रेस, ब्रुनिनसे सम्बन्ध विच्छेद
१८६९-७०	"	पश्चिमी और मध्य युरोपमें हड़ताल की वृद्धि
१८६९ सितम्बर ५, ६	"	चार्जेलमें इंटर्नेशनलकी चौथी कांग्रेस
१८६९-७०	"	मार्क्सका स्वास्य खराब
१८६९ जून ३०	"	ऐरोल्स व्यवसाय त्याग
१८७० सितम्बर	"	ऐरोल्स सदाके लिये लन्दनमें
१८७०	"	फ्रैंच-प्रशियन-युद्ध
" अप्रैल २२	सिन्हार्क (रस)	लेनिन का जन्म
१८७१	"	आत्मसमर्पण (जनवरी २८)
१८७२ सितम्बर ३	"	पेरिस कम्यून (२६ मार्च-२८ मई) "फ्रांसमें घृह-युद्ध" का लिखना हेगमें इंटर्नेशनलकी कांग्रेस, एस-टर्डममें मार्क्सका भाषण, इंटर्नेशनल की जेनरल कॉन्फिल न्यूयार्कमें स्थानान्तरिक
१८७३	"	ब्रुनिनके विलाप पुस्तिका, कड़ी बीमारी

सन्	स्थान	घटना-विवरण
१८७५	"	“गोथा मोग्रामकी आलोचना”
१८७६	"	बकुनिनकी मृत्यु
१८७७	"	‘ह्रिंग-खंडन’ में एंगेल्सकी सहायता चर्मनीमे समाजवाद-विरोधी कानून-की घोषणा
१८७८	"	मार्क्स सख्त बीमार
१८७८ दिसम्बर ११	गोरी	स्तालिनका जन्म
१८८१ दिसम्बर २	लन्दन	जेनी मार्क्सकी मृत्यु
१८८२	अल्जियर, फ्रान्स	स्वास्थ्यके लिये यात्रायें, प्रियपुत्री जेनीकी मृत्यु, जेनेवा सरोवर (सितम्बर)
१८८३ मार्च १४	लन्दन	मार्क्सकी मृत्यु
१८८३ मार्च १७	"	अन्त्येष्टि-क्रिया
१८८५		“कपिटाल” दूसरी जिल्द प्रकाशित
१८८८	लन्दन	एंगेल्सकी पुस्तक। “परिवारकी उत्पत्ति” प्रकाशित
१८८५		“कपिटाल” दूसरी जिल्द प्रकाशित
१८८८	"	एंगेल्सकी पुस्तक “फ्वारवाल” प्रकाशित “कपिटाल” की तीसरी जिल्द प्रकाशित
१८८४	"	एंगेल्स मार्चमें बीमार और २७ अगस्तको मृत
१८८५	"	साम्यवादी क्राति और प्रथम कम्कर
१८१७	रूस	राजकी स्थापना ~

मार्क्स के दर्शन की उपयोगिता और सार्थकता इससे सिद्ध है कि आज रूस, चीन आदि देशों के साथ एक विशाल भू भाग की मानवता मार्क्स के दर्शन का अनुसरण करके सुख और व्यापक सम्पन्नता के मार्ग पर उत्साह से अग्रसर है।

यह हर्ष और सन्तोष का विषय है, कि हिन्दी के एक महान विचारक, लेखक और मनीषि ने इस पुस्तक में विश्व के इस महान दार्शनिक का जीवन और दर्शन हिन्दी जगत के सामने प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत पुस्तक एक ऐसा व्यापक ग्रन्थ है जिसमें पाठक को न केवल मार्क्स के जीवन तथा कार्यशीलता की झाँकी मिल सकेगी वरन् वह मार्क्स के मानव-हित सम्बन्धी सिद्धान्तों तथा दर्शन को समझ सकेगा। मार्क्स के सम्पूर्ण साहित्य तथा उन पर लिखे गये साहित्य का मन्थन करके अकथ परिश्रम के बाद जो अमृत राहुल जी ने प्रस्तुत किया है, उसको पाठक जगत कृतज्ञता से स्वीकार करेगा इसकी हमें आशा है।